" रामचरितमानस और साकेत की नारी विषयक अवधारणा का अध्ययन वाल्मीकि रामायण के परिप्रेक्ष्य में"

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की

डी० फिल्० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध - प्रबन्ध
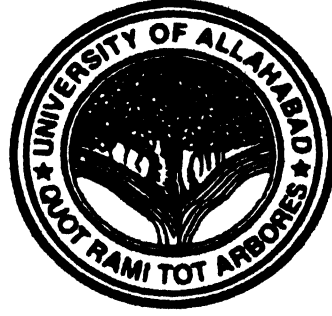
निर्देशिका

डॉ० निशा अग्रवाल

वरिष्ठ प्रवक्ता, हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

प्रस्तुतकर्ता

पंकजेश कुमार शुक्ल

हिन्दी विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद

2002

समर्पण

प्रकाश पुंज

स्वर्गीय बाबा

श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल

एवं

ममतामयी

स्वर्गीया दादी

श्रीमती रामलली शुक्ला

को

सादर

समर्पित

भूमिका

जिन काव्य कथाओ ने विश्व साहित्य पर सर्वाधिक गहरी एव अमिट छाप अकित की है, रामकथा का स्थान उनमे अप्रतिम है। भारतीय जनमानस मे रामकथा का सर्वाधिक महत्व है। सस्कृत के वैदिक मन्त्रो से नि सृत रामकथा वल्लरी सर्वप्रथम वाल्मीकि रामायण की अति उर्वर भूमि पर विकसित होती हुई 'रामचरित मानस' और 'साकेत' से होती हुई जनजीवन मे व्याप्त हो गयी। रामकथा के अनेक सर्जको ने जनरजन एव लोककल्याण की भावना को विकसित किया है। सस्कृत मे वाल्मीकि रामायण ने आदर्श राम की छवि को जनता के समक्ष प्रस्तुति का सफल प्रयास किया है। सस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी साहित्य मे 'करोडो जनता का पञ्चम वेद कहा जाने वाला तुलसी विरचित रामचरित मानस अपने आप मे अद्वितीय है। 'साकेत' राम काव्य परम्परा को अक्षुण्ण रखने मे पूरी तरह समर्थ रहा है।

रामकथा को जो इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई उसका कारण इसकी समग्रता है। रामकथा के आदि व्याख्याता वाल्मीकि ने जिस ढग से इसे प्रस्तुत किया वही इसकी लोकप्रियता का प्रमुख आधार है। आदिकवि वाल्मीकि ने इसमे इतिहास तो लिखा ही साथ ही साथ स्वस्थ समाज की सुदृढ स्थापना के लिए राम और रावण की कथा के माध्यम से कुछ मूल आदर्शों की विशेष प्रस्तुति की, जिसमे स्त्री पुरुष दोनो वर्गों के लिए सम रूप से आदर्श है। तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त ने रामकथा का उत्तरोत्तर विकास किया है।

रामकथा की लोक-प्रियता एव वर्तमान प्रासगिकता इसके पात्रो के चरित्र पर विशेष रूप से आधारित है। इस परिप्रेक्ष्य मे नारी-पात्रो का चित्रण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यूँ भी भारतीय सस्कृति मे नारी को बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान मिला है– 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के अत्यन्त उच्च आदर्श वाले परम-पवित्र भारत भूमि की सस्कृति और सभ्यता का प्रधान केन्द्र नारी ही रही है। नारी अक्षयशक्ति की

उद्गमस्थली है और शाश्वत सौन्दर्य की अभिव्यञ्जना भी। वस्तुत नारी का महत्व समाज मे, राष्ट्र मे, एव परिवार मे पुरुष से किसी भी स्तर पर कम नही है। नारी नरस्य समान धर्मा कही गयी है। नारी की शुचिता, व्यवहार कुशलता, मृदुलतापूर्ण दृढता, त्यागयुक्त सेवा-भावना से ही हमारी सस्कृति की उत्पत्ति हुई है। भारतीय सस्कृति नारियो से अनुवर्तमान है। अगर भारत की आत्मा को जानना है तो भारत की नारी को जानना होगा।

भारतीय सस्कृति मे नारी को पर्यकशायिनी तक ही सीमित नही रखा गया है, अपितु उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे अर्द्धांगिनी के रूप मे चित्रित किया गया है। वाल्मीकि रामायण मे वशिष्ठ ने पत्नी को पति की आत्मा कहा है– 'आत्मा हि दारा सर्वेषा दारा सग्रहवर्तिनाम्।' नारी को आदर-प्रेम, दया एव स्नेह का समुचित भाजन माना गया है।

समाज मे नारी की महत्वपूर्ण भूमिका से प्रभावित होकर ही मैंने इस विषय "रामचरित मानस और साकेत की नारी विषयक अवधारणा का अध्ययन वाल्मीकि रामायण के परिप्रेक्ष्य मे" का चुनाव किया है। बचपन से जिस नारी के स्नेह तले पला-बढा और जिसकी अगुलियो को पकडकर चलना सीखा, जिसकी छॉव मे दुख का अनुभव नही हुआ, सदैव सुख की अनुभूति करता रहा, उस नारी के प्रति हमारी सच्ची भावना का प्रतिदान है– यह हमारा प्रयास। रामकथा के नारी पात्रो का अध्ययन करने की लालसा बचपन से ही उत्प्रेरित कर रही थी वही भावना आज फलित रूप में हमारे इस प्रयास के रूप मे आ रही है। वाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस और साकेत के नारी पात्रो के अध्ययन के द्वारा हम रामकथा के नारी पात्रो को सही ढग से समझ सकते है, इन्ही पात्रो के माध्यम से नारी चरित्र के विकास की एक विहगम झॉकी को प्रस्तुत करने का हमने प्रयास किया है।

हमने अपने शोध-प्रबन्ध को पॉच अध्यायो मे बॉटा है। प्रथम अध्याय मे वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त कालीन परिस्थितियों– राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एव

सामाजिक का अध्ययन किया गया है। द्वितीय अध्याय मे वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त के प्रमुख नारी पात्रो के चरित्र पर प्रकाश डाला गया है। तृतीय अध्याय मे वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त के नारी पात्रो का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। चतुर्थ अध्याय मे वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। पञ्चम अध्याय उपसहार मे शोध-प्रबन्ध का सक्षिप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है।

पंकजेश कुमार शुक्ल
31/12/2002

पकजेश कुमार शुक्ल

आभार

मै अपनी श्रद्धेय गुरूवर्या डा० निशा अग्रवाल का आजीवन ऋणी रहूँगा, क्योकि उन्होने समय-समय पर मॉ की ममता दी है, गुरुता की असीम अनुकम्पा दी है, मेरी शोध-तृषा को स्नेहिल शीतल सलिल दिया है। ऐसी ममतामयी, दिव्य प्रकाशदायिनी श्रद्धेय गुरुवर्या के चरणो मे चुन-चुनकर जितने भी पुष्प चढाऊँ, वह उनकी महिमा के अनुरूप कम ही होगा। मेरा सम्पूर्ण शोधकार्य उनकी अनुकम्पा का फल है। मै श्रद्धेय गुरुवर्या के चरणो मे शत्-शत् नमन करता हूँ।

वात्सल्य की साक्षात् प्रतिमा पूजनीया मॉ श्रीमती गायत्री शुक्ला और पूज्य पिता श्री जगदम्बा प्रसाद शुक्ल के चरणो मे मै शत्-शत् नमन करता हूँ। उन्होने त्याग पूर्ण जीवन व्यतीत करते हुए मेरे इस ज्ञान-यज्ञ मे नि सकोच अर्थाहुति कर इस यज्ञ को पूर्ण करने मे जो सहयोग प्रदान किया है, उसका जन्म-जन्मान्तर मे कर्ज चुका पाना मेरे लिए सभव नही है।

जिन विद्वानो के विचारो से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से मुझे शोध-प्रबन्ध को तैयार करने मे सहायता मिली, उनमे विभाग के गुरुजनो प्रो० राजेन्द्र कुमार, प्रो० सत्यप्रकाश मिश्र, डा० शैल पाण्डेय, डा० मीरा दीक्षित, डा० कृपाशकर पाण्डेय आदि गुरुजनो के प्रति मै हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। इसी क्रम मे पूर्व गुरुजनो स्व० श्री गजाधर सिह (राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता), श्री रामनरेश सिह 'मजुल' एव श्री राजनारायण ओझा के प्रति मै आभार व्यक्त करता हूँ।

कुल पूज्य बाबा स्वर्गीय श्री कल्पनाथ शुक्ल, स्वर्गीय श्री सूर्य कुमार शुक्ल 'सरपच', स्वर्गीय श्री जगदीश प्रसाद शुक्ल एव श्री रामचन्द्र शुक्ल के चरणो मे, मै श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। मै आपके यश-कीर्ति की एक किरण बनने का आकॉक्षी हूँ। मै अपने चाचा श्री कालिका प्रसाद शुक्ल, श्री कृष्ण देव शुक्ल, श्री मगल देव शुक्ल, श्री शेषमणि शुक्ल एव श्री चिन्तामणि शुक्ल के आशीष का आकॉक्षी हूँ। मै अपने

अग्रज श्री सम्पूर्णानन्द शुक्ल एव अनुज मृदुल के प्रति विशेष रूप से आभार प्रकट करता हूँ जिनके अथक प्रयास से यह कार्य सभव हो सका।

मै अपने ग्रामवासियो (सकरदहा–बस्ती) का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होने बचपन से ही मुझे रामकथा के प्रति प्रेरित किया।

मै मानस के उन सभी विद्वानो, आलोचको और समीक्षको का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके विचार हमे उनके साक्षात्कार एव कृतियो के माध्यम से प्राप्त हुए। मै श्री कृपाशकर रामायणी जी, सन्त पुरुष श्री केदारनाथ पाण्डेय जी एव श्री शिव शरण त्रिपाठी जी का विशेष रूप से आभारी हूँ।

मै अपने सभी मित्रो, शुभ चितको, भाई-बहनो के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिनका सहयोग मुझे मिला।

मै उन सभी पुस्तकालयो तथा उनके कर्मचारियो के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिनसे मुझे पुस्तकीय सुविधा मिली इसमे हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय पुस्तकालय इलाहाबाद, सर गगानाथ झा पुस्तकालय, वाल्मीकि भवन अयोध्या एव श्री राम नाम बैक अयोध्या के पुस्तकालय का योगदान उल्लेखनीय है।

अन्त मे मै एक बार पुन अपनी श्रद्धेय गुरुवर्या के चरणो मे नमन करते हुए इन पक्तियो को उद्धृत करना चाहूँगा।

"बदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।"

पंकजेश कुमार शुक्ल
31/12/2002

पंकजेश कुमार शुक्ल

अनुक्रम

प्रथम अध्याय

वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त कालीन परिस्थितियाँ

वाल्मीकिकालीन

- राजनीतिक परिस्थिति
- धार्मिक परिस्थिति
- आर्थिक परिस्थिति
- सामाजिक परिस्थिति

तुलसीकालीन

- राजनीतिक परिस्थिति
- धार्मिक परिस्थिति
- आर्थिक परिस्थिति
- सामाजिक परिस्थिति

मैथिलीशरणगुप्तकालीन

- राजनीतिक परिस्थिति
- धार्मिक परिस्थिति
- आर्थिक परिस्थिति
- सामाजिक परिस्थिति

वाल्मीकिकालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थिति

वाल्मीकि रामायण भारत का राष्ट्रीय आदि काव्य है। धार्मिक एव नैतिक आदर्शों का भडार होने के साथ–साथ वह एक महत्वपूर्ण मानवीय समाजशास्त्र भी है, जो सहस्रो शताब्दियो पूर्व के भारतीयो के जीवनयापन का रोचक वृत्तान्त उपस्थित करता है। एक पुरातन युग की जीवित परम्पराओ, धारणाओ, चिताओ, आकाक्षाओ और भावनाओ का चित्रण करने के कारण वह प्राचीन भारतीय सभ्यता और सस्कृति की एक बहुमूल्य निधि है। "उसकी उपमा ऐसे पर्वत से दी जा सकती है जिसकी चोटी से हम प्राचीन आर्यों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एव कला सबधी क्रिया-कलाप का सम्यक् दर्शन कर सकते है।"[1] तत्कालीन भारतीय समाज के अनेक अस्पष्ट पक्षो पर वाल्मीकि रामायण से जैसा प्रकाश पडता है वैसा अन्य किसी स्रोत से नही। ऋग्वैदिक तथा उत्तर वैदिक भारत के सामाजिक इतिहास की शोध मे रामायण का योग और भी महत्वपूर्ण इसीलिए हो जाता है कि वह आज भी करोडो भारतीयो के धार्मिक विश्वासो के साथ अविच्छिन्न रूप से गुँथी हुई है। वाल्मीकि हमारे राष्ट्रीय आदर्शों के आदि विधाता है, धर्म और सत्यरूपी महावृक्षो के जो अमरबीज उन्होने बोये वे आज भी फल–फूल रहे है।

भारतीय सास्कृतिक परम्पराओ को समझने के लिए रामायण मे वर्णित सास्कृतिक परिस्थितियो से सुपरिचित होना आवश्यक है, क्योकि एक तो उनकी सस्कृति आज भी हमारे समाज मे न्यूनाधिक रूप मे परिलक्षित होती है, और दूसरे हमारी प्राचीन सभ्यता और सस्कृति राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन का जैसा सजीव वर्णन उनमे मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है। "वाल्मीकि ने आर्य–सस्कृति के एक अतिशय प्राचीन एव उत्कृष्ट युग को मानो साकार रूप मे रग मच पर उपस्थित कर दिया है और उनके सास्कृतिक तथ्य 'मिश्र या बेबीलोन की तरह

---

[1] रामायण कालीन समाज– डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पृष्ठ –१

किसी मृत सस्कृति के निर्जीव लक्षण नही है अपितु एक आत्मनिष्ठ और सुसस्कृत जाति के जागृत अस्तित्व और सजीव चेतना के पुरातन प्रतीक है।[२]

वाल्मीकि रामायण के सास्कृतिक अध्ययन की केवल सैद्धान्तिक या शैक्षणिक महत्ता नही है, उसकी व्यवहारिक उपयोगिता भी है, रामायण आर्य सस्कृति की आधार शिला रही है। भारतीयो ने रामराज्य को सदा से सुराज का पर्यायवाची माना है और आज भी वही हमारी शासन व्यवस्था का आदर्श है। रामायण मे उन कोमल भावनाओ का चित्रण है जिनसे हमारा कौटुबिक जीवन ओत–प्रोत रहता है। हिन्दुओ की रीति–नीति और धर्म-कर्म को प्रभावित करती हुई वह आज भी उनके सामने सत्य, सदाचार और कर्तव्य पालन का अनुकरणीय आदर्श उपस्थित करती है। अत ऐसे अमर ग्रथ की सस्कृति के व्यवस्थित अध्ययन की अपनी प्रचुर व्यवहारिक उपयोगिता भी है। सामान्यत भारतीय रामायणकाल को अपने समाज का स्वर्णयुग मानते है। "महाभारत के समान रामायण भी प्राचीन भारतीयो के आचार–विचार ज्ञान–विज्ञान और प्रज्ञा-प्रतिभा का विशाल भडार है उसमे आर्यो की राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक, नैतिक एव सामाजिक सभ्यता का प्रमाणिक विवेचन है। विद्वानो का कथन है कि "मानव जीवन का ऐसा कोई पक्ष नही जिसकी झॉकी रामायण मे न मिलती हो, अथवा ऐसा कोई सिद्धान्त नही, जिसका आभास उसमे न दिया गया हो।"[३]

अतएव आज के वैज्ञानिक युग मे, जबकि अतीत हमारे लिए केवल गौरव, भक्ति या स्वान्त सुख का विषय न होकर ज्ञानवर्धन और प्रगति का भी एक साधन है, हमे चाहिए कि वाल्मीकि के महाग्रथ का लौकिक दृष्टि से भी समुचित मूल्याकन करे। समाजिक जीवन के प्राय. सभी पहलुओ पर वाल्मीकि ने रोचक एव स्थायी महत्व की सामग्री प्रस्तुत की है। समाज और परिवार के विषय मे तत्कालीन आर्यो की धारणाऍ क्या थी? समाज और सगठन कैसा था? वर्णाश्रम की व्यवस्था कैसी थी? जन साधारण

---

[२] सुबोधचन्द्र मुखर्जी – दि कल्चरल हिस्ट्री आफ इण्डिया एन अपॉलाजी (इण्डियन कल्चर) भाग–६ पृष्ठ २१८

[३] रामयण कालीन सस्कृति – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पृष्ठ ४

की स्थिति पर क्या प्रतिक्रिया होती थी? उच्चवर्ण के लोगो को समाज क्या सुविधाएँ प्रदान करता था? निम्न वर्णों की क्या निर्योग्यताये थी और उनके जीवन का स्तर कैसा था? विवाह की प्रणाली कैसी थी? और प्रेम का क्या आदर्श था? स्त्रियो के साथ समाज मे कैसा व्यवहार किया जाता था? लोग अपनी आर्थिक आवश्यकताओ की पूर्ति किस प्रकार करते थे? शासन व्यवस्था, युद्ध सचालन, अस्त्र–शस्त्र कैसे थे? इन प्रश्नो का उत्तर ढूढने से पता चलेगा कि तत्कालीन समाज का ठोस और व्यवहारिक स्वरूप कैसा था?

यदि इस समाज शास्त्रीय दृष्टि से वाल्मीकि रामायण का महत्व ऑका जाय तो निश्चय ही हमारा अध्ययन अत्यन्त रोचक, हृदय-ग्राही और ज्ञान वर्धक सिद्ध होगा। श्रेष्ठ साहित्य स्वभावत युग–जीवन से जुडा होता है। वह अपने समय के सामाजिक यथार्थ को प्रकट या प्रतिफलित करता है। वाल्मीकि रामायण मे तत्कालीन युग जीवन के तत्व समग्रता के साथ मिलते है जिनका भारत की विराट सस्कृति से घनिष्ठ सबध है। अत हम वाल्मीकि कालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एव सामाजिक परिस्थितियो की समीक्षा करेगे–

राजनीतिक परिस्थिति

रामायण कालीन भारत मे कोई एक छत्र साम्राज्य नही था हिमालय और विध्य पर्वत मालाओ का मध्यवर्ती आर्यावर्त देश अग, काशी, कोशल, केकय, मगध, मत्स्य, मिथिला, वग, विशाला, सिधु, सौवीर, सौराष्ट्र, साकाश्या आदि स्वतन्त्र राज्यो मे विभक्त था।[४] दशरथ ने कैकेयी के समक्ष अपने को सारी वसुन्धरा का स्वामी बताया था– यावदावर्तते चक्र तावती मे वसुन्धरा।[५] और राम ने बालि से विवाद करते समय समस्त

---

[४] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड सर्ग १३ का श्लोक २१ से लेकर ३० तक

[५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १० श्लोक ३६

भारत पर अयोध्या पति भरत की प्रभुसत्ता का दावा किया था– इक्ष्वाकूणामिय भूमि सशैलवन कानता। परन्तु कोशल नरेश का प्रभाव पडोस के कुछ सामन्तो तक ही सीमित था। राम के राज्य मे कोशल की अतिशय बृद्धि हुई थी। प्रारम्भिक कोशल राज की दक्षिणी सीमा आधुनिक सई नदी तक ही थी।

रामायण मे किसी गणतन्त्र का उल्लेख नही है। तत्कालीन शासन का स्वरूप मर्यादित राजतन्त्र था। एक वैधानिक शासक द्वारा स्थापित सुदृढ शासन व्यवस्था मे जनता का परम विश्वास था। राजा का पद कुल–परम्परागत था। इक्ष्वाकुवश की वशावली से ज्ञात होता है कि राम से कई पीढियो पहले और बाद भी राजपद अनुवाशिक था किन्तु नये राजा की नियुक्ति के लिए सभा की अनुमति आवश्यक होती थी। राम को युवराज बनाने से पहले दशरथ ने अपनी सभा की स्वीकृति प्राप्त कर ली थी।

'यदिद मेऽनुरूपार्थं मया साधु सुमन्त्रितम्।
भवन्तो मेऽनुमन्यन्ता कथ वा करवाण्यहम्।।'[६]

प्राय ज्येष्ठपुत्र ही युवराज पद का अधिकारी होता था किन्तु साथ ही उसका गुणी और धर्मात्मा होना भी आवश्यक था। प्रजा के आग्रह पर राजा सगर ने अपने अत्याचारी ज्येष्ठ पुत्र असमज का राज्याधिकार छीनकर उसे देश से निर्वासित कर दिया था।

यदि किसी कारणवश नये राजा की नियुक्ति सभव न होती, तो राज्य का शासन सूत्र एक प्रबधक को सौप दिया जाता था। इस व्यवस्था के अनुसार भरत ने चौदह वर्ष तक अयोध्या के राज्य को एक न्यास मानकर उसका शासन प्रबन्ध किया था। राम के अयोध्या लौटने पर भरत ने राज्य की बाग-डोर देते हुए कहा था कि आप खजाना, कोठार, सेना आदि का निरीक्षण कर ले–

---

[६] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २ श्लोक १५

एतत्ते सकल राज्य न्यास निर्यातित मया
अवेक्षता भावान्कोश, कोष्ठागार गृहबलम्।।[७]

आर्य राष्ट्र नीति मे राजा प्रजावर्ग की समष्टि आत्मा का प्रतिनिधि है, विश्व के अर्न्तयामी नियन्ता का प्रत्यक्ष विग्रह-रूप है। राम ने बालि से कहा था कि "राजा लोग दुर्लभ धर्म, जीवन और लौकिक अभ्युदय के दाता होते है अत उनकी निन्दा, हिसा तथा उनके प्रति आक्षेप नही करना चाहिए। वे वास्तव मे देवता है जो मनुष्य रूप मे इस पृथ्वी पर विचरते है। मनुष्य पाप करके यदि राजा के दिये हुए दण्ड को भोग लेते है तो वे शुद्ध होकर पुण्यात्मा पुरूषो की भॉति स्वर्ग लोक मे जाते है।"[८]

आदर्श शासन प्रबन्ध के अन्तर्गत देश की समृद्धि होनी स्वाभाविक थी। राजा दशरथ के शासन काल मे सारे अयोध्यावासी प्रसन्न धर्मात्मा, धन-धान्य सम्पन्न तथा निर्लोभ थे। वे नाना प्रकार के वस्त्राभूषणो से सुसज्जित रहते थे। राम राज्य की विशेषताओ का परिगणन करते हुए कवि ने 'उसे एक अतिशय समुन्नत समय, न्याय और नीति पर आधारित भारतीय शासन-व्यवस्था का स्वर्णयुग बताया है। सदाचार, धर्म–परायणता, निष्कपटता, न्याय–प्रियता, वैभव, सुख–सतोष आदि की तब जो प्रधानता दीख पडती थी तथा अपराध, वर्ग–द्वेष, अशान्ति, कोलाहल, दु ख, शासक वर्ग के प्रति–असतोष आदि की जो शून्यता या अल्पता पायी जाती थी वह आज के इस वैज्ञानिक युग मे भी एक अनुकरणीय आदर्श के रूप मे हमारे सम्मुख प्रतिष्ठित है।[९]

महाराज दशरथ की मन्त्रि-परिषद (अमात्य और गुरूजन) महर्षि वशिष्ठ के नेतृत्व मे काम करती थी, जो राजपुरोहित एव वास्तविक प्रधान मन्त्री थे। अमात्यो से उनका निकट का सम्पर्क था। सभी राजकीय मामलो मे दशरथ अपने पुरोहितो, अमात्यो और मन्त्रियो के साथ परामर्श करते थे।

---

[७] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड सर्ग १२७ श्लोक ५५ तथा ५७

[८] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड सर्ग १८ श्लोक ४१, ४२

[९] रामायण कालीन सस्कृति – डा० शातिकुमार नानूव्यास पृष्ठ २८६

न्याय–वितरण की पद्धति वाल्मीकि के समय मे बडी सरल, सस्ती और तात्कालिक थी, क्योकि मुकदमे का फैसला राजा स्वय करता था। वादी–प्रतिवादी उसके पास बेरोक–टोक पहुॅच सकते थे। न्याय निष्पक्ष एवॅ शीघ्र होते तथा कठोर दण्ड के प्रावधान के कारण अपराध बहुत कम होते थे।

तत्कालीन न्याय का यह स्पष्ट सिद्धान्त था कि 'निरपराध होने पर भी यदि जिन लोगो को मिथ्या दोष लगाकर दण्ड दिया जाता है, उनकी ऑखो से निकले ऑसू पक्षपातपूर्ण शासन करने वाले राजा के पुत्र और धन–धान्य का नाश कर डालते है।

यानि मिथ्याभिशस्ताना पतन्त्यश्रूणि राघव।
तानि पुत्र-पशून घ्नन्ति प्रीत्यर्थमनुशासत ।।[१०]

न्याय के उक्त सिद्धान्त निम्नलिखित प्रश्नो से स्पष्ट हो जाते है। जो राम ने भरत से चित्रकूट मे पूॅछे थे। 'कभी ऐसा तो नही कि कोई मनुष्य किसी श्रेष्ठ निर्दोष और शुद्धात्मा पुरूष पर भी दोष लगा दे और शास्त्र ज्ञान मे कुशल विद्वानो से उसके विषय मे विचार कराये बिना ही, लोभ आदि के कारण उसे दड दे दिया जाता हो?'[११]

प्रजा के सभी वर्ग चाहे नर हो या नारी राजा के समीप उपस्थित होकर अपनी शिकायते रखने का अधिकार उन्हे था। राजा का आसन जिस पर बैठकर वह निर्णय करता था धर्मासन कहलाता था।

राम राज्य के उत्कृष्ट स्वरूप का वर्णन वाल्मीकि ने किया है वाल्मीकि राम के समकालीन थे। राम राज्य मे उस समय विधवाओ का विलाप नही सुनाई पडता था। सर्पादि दुष्ट जन्तुओ का भय नही था। रोगो की आशका नही थी कोई चोर नही था। पाप का कोई स्पर्श नही करता था। वृद्धो को बालको के अन्तेष्टि सस्कार नही करने

---

[१०] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १०० श्लोक ५६

[११] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १०० श्लोक ५६

पडते थे। सभी लोग प्रसन्न एव धर्मपरायण थे। स्त्रियॉ सदा सुहागन और पतिव्रता थी सभी नगर एव जनपद धन–धान्य से परिपूर्ण था।

इस प्रकार हम देखते है कि वाल्मीकि कालीन राजनीतिक परिस्थिति एक उच्च कोटि की थी जिसमे राजतन्त्रात्मक प्रणाली का शासन होते हुऐ भी उसमे गणतन्त्रात्मक विचारो का समावेश स्पष्टत दिखायी देता है। शासक प्रजा का सन्तान की तरह पालन करते थे। उस समय के शासक शक्तिशाली एवॅ कठोर न्यायप्रणाली को मानने वाले थे। न्याय अत्यन्त सरल एवॅ तात्कालिक था अत अपराध बहुत कम होते थे। प्रजा सभी प्रकार से प्रसन्नचित्त एवॅ धन–धान्य से परिपूर्ण थी।

धार्मिक परिस्थिति

भारत मे धर्म को सदैव ऊॅचा स्थान दिया गया है– प्राचीन भारतीयो के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे उसका सर्वोपरि प्रभाव था। यद्यपि रामायण का युग भौतिक–वैभव और समृद्धि एवॅ कला के विकास का समय था तथापि उसमे धर्म एव नैतिकता का प्रकटन हुआ है। लोगो के अध्यात्मिक दृष्टिकोण और धार्मिक क्रिया–कलापो को कवि ने स्थल–स्थल पर अकित किया है।

वेदो को सर्वोच्च धार्मिक महत्व प्राप्त था। तर्क–वितर्क के शुद्ध आक्षेपो से उन पर कोई ऑच नही आ सकती थी। जैसा कि जटायु ने रावण से कहा था– "जिस प्रकार न्याय के हेतुवाद से सनातन वेदश्रुति को कोई अन्यथा नही कर सकता, उसी प्रकार मेरे देखते हुए तुम सीता को जबरदस्ती ले जाने मे समर्थ नही होगे।"[१२]

रामायण कालीन आर्य वैदिक साहित्य मे उल्लिखित कर्म काण्ड के निष्ठावान अनुगामी थे। किसी क्रिया विशेष का वैदिक मन्त्रो के अनुसार सम्पन्न होना ही उसके

---

[१२] रामयण कालीन सस्कृति – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पुष्ठ २३६

सुचारू अनुष्ठान का मापदण्ड था। राम ने अपना बाण वेदोक्त विधि से अभिमन्त्रित कर रावण को मारने के लिए धनुष पर चढाया था।

अभिमन्त्र्य ततो रामस्त महेषु महाबल ।
वेद प्रोक्तेन विधिना सदधे कार्मुके बली।।[१३]

कवि ने वेद मतानुसारिणी वुद्धि की प्रशसा की है। भरत ने कौशल्या के समक्ष शपथ खायी थी कि "ऐसा शात्रानुगामी बुद्धि का धनी मै कभी न बनूँ यदि मेरा राम के वन गमन मे कोई हाथ रहा हो"

कृत शास्त्रानुगा बुद्धिर्मा भूत् तस्य कदाचन।
सत्य सघ सता श्रेष्ठो यस्यार्योऽनुमते गत ।।[१४]

देवताओ की प्रार्थना करना लोगो के जीवन का अभिन्न अग था अपनी इष्ट–सिद्धि के लिए लोग देवताओ का स्मरण एव स्तवन करते थे। वे मानो देवो के सतत सम्पर्क मे रहते थे। ये देवता ऐसे नही थे जो मानव सवेदन की परिधि से परे हो, वस्तुत मर्त्य मानवो का समग्र- जीवन अपने देवताओ के अनुग्रहो से परिसिचित रहता था। वे मानव के सुख–दु ख के साथी थे। सकट ग्रस्त होने पर उन्ही के कृपा–कटाक्ष की आकाक्षा की जाती थी।[१५]

अनेक देवी–देवताओ के अस्तित्व मे विश्वास होने पर भी लोगो को उनमे एकत्व का बोध था। वाल्मीकि ने देवो और मनुष्यो को जीवन के धार्मिक और व्यवहारिक दोनो क्षेत्रो मे एक दूसरे का रक्षक एवॅ सहयोगी बताया है। मानवता के सरक्षक के रूप मे देवताओ का चित्रण स्थल–स्थल पर हुआ है। कैकेयी का दशरथ के शपथ ग्रहण का साक्षी बनाने के लिए देवताओ को आमन्त्रित करना, अपने प्रिय पुत्र की

---

[१३] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड सर्ग १०८ श्लोक १४
[१४] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग ७५ श्लोक २१
[१५] रामायण कालीन सस्कृति – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पृष्ठ २४४

कल्याण कामना के लिए कौशल्या का समस्त देवो की स्तुति करना। इन्द्र को शबर असुर युद्ध मे दशरथ से सहायता मिली थी।[१६]

लोगो का नैतिक स्तर बहुत ऊँचा था। अयोध्या के नागरिक प्रसन्न धर्मात्मा, निर्लोभ, सत्यवादी और अपने धन से सतुष्ट रहने वाले थे। वहॉ कोई कामी–कृपण, क्रूर मूर्ख अथवा नास्तिक पुरुष देखने को नही मिलता है। वहॉ के स्त्री पुरुष सभी सयमी तथा शील और सदाचार की दृष्टि से महर्षियो की भॉति विशुद्ध थे''[१७]

रामायण मे धर्मशब्द सर्वव्यापक है, उसके अन्तर्गत कवि ने समस्त ईश्वराभिमुख गुण, विचार, शब्द और कर्म का परिगणन किया है। सदाचारी जीवन के प्रेरक सभी सद्गुण धर्म के अन्तर्गत है और उसके विपरीत जाने वाले समस्त कार्य–कलाप अधर्म है धर्म को सीता ने जीवन के समग्र उत्कर्ष का मूल स्रोत माना है–

धर्मादर्थ, प्रभवति धर्मात्प्रभवते सुखम्।
धर्मेण लभते सर्वं धर्मसारमिद जगत।।[१८]

तत्कालीन धर्म का आदर्श रामायण के कतिपय पात्रो मे ज्वलत रूप से अकित हुआ है। विषय एव किकर्तव्यविमूढ करने वाली परिस्थितियो मे भी वाल्मीकि के चरित्र नायक सर्वोच्च नैतिक आदर्शो से स्खलित नही होते और शास्त्रीय परम्पराओ का प्राण–प्रण से निर्वाह करते है। वाल्मीकि के राम एक मानव अधिक है, भगवान विष्णु के अलौकिक रूप मे कम। अपनी भावनाओ मे, जीवन के प्रति दृष्टिकोण मे, सधर्ष और सफलता मे, स्नेह और अनुराग मे वह एक सर्वथा मानवीय पुरुष थे, पर उनकी विशेषता यह थी कि मानव होते हुए भी वह मानवीय दुर्बलताओ से ऊपर उठे और इस प्रकार उन्होने मानव के अन्दर छिपी हुई ईश्वरीयता और अलौकिकता का उद्घाटन किया। रामायण मे ऐसे अवसर आते है जब महर्षि और देवता ॲजलि बॉधे राम को

---

[१६] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग ६ श्लोक १३
[१७] रामायण कालीन सस्कृति – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पृष्ठ २५८
[१८] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग ६ श्लोक ३०

स्मरण दिलाते है कि आप साक्षात् परब्रह्म परमात्मा है किन्तु वह अपने को एक निरा मनुष्य दशरथ पुत्र राम मात्र समझते है– आत्मान मानुष मन्ये राम दशरथात्मजम्।[१९]

कर्म और पुनर्जन्म का सिद्धान्त जो भारतीय दर्शन की आधारशिला है वाल्मीकि कालीन समाज मे सर्वरूप से मान्य थी। आश्रम के रूप मे चारो आश्रम– ब्रहमचर्य आश्रम, गृहास्थ आश्रम, वानप्रस्थ आश्रम एव सन्यास का उल्लेख रामायण मे है। कर्म को प्रधानता दी गयी है और कहा गया है कि कर्म ही समस्त कारणो का सुख-दुख के साधनो का मूल प्रयोजन है। राम की सम्मति मे 'यह ससार शुभा-शुभ कार्य करने और उनका फलाफल भोगने का एक कर्मभूमि है, अग्नि, वायु, सोम भी अपने–अपने कर्मो के परिणाम से बच नही सकते।[२०]

इस प्रकार रामायण कालीन धार्मिक परिस्थिति उच्चकोटि की थी जिसमे मानव का जीवन नैतिक, सदाचार युक्त एवॅ आदर्श से परिपूर्ण था।

आर्थिक परिस्थिति

वैदिक युग के भ्रमणशील आर्य रामायण काल से बहुत पहले ही एक नियमित समाज व्यवस्था के अन्तर्गत सगठित होकर अपनी जीवन-चर्या को स्थायी रूप दे चुके थे। ऐसी स्थिति मे यह स्वाभाविक था कि उनका आर्थिक जीवन अधिक स्थिर उन्नत एव व्यापक बन जाय। रामायण कालीन आर्य उन पूर्वकालिक सैनिक कृषको की भाति नही थे। जिन्होने कृष्णवर्ण दस्युओ को परास्त करके सिधु का मैदान हस्तगत किया था। अब तो सभ्यता प्रगति कर चुकी थी, समाज अधिक सभ्य एव सुसस्कृत बन चुका था विद्या और कला का प्रसार हो गया था। "एक सुशासित राज्य ही आर्थिक व्यवस्था का मूलाधार हो सकता है। जहॉ कोई राजा नही होता उस देश मे खेतो मे बीज नही बोये जा सकते। राजा हीन देश मे धन अपना नही हो सकता, मनुष्यो की कोई पचायत

---

[१९] रामायण कालीन सस्कति पृष्ठ २८०
[२०] रामायण कालीन सृस्कृति पृष्ठ २६३

नही रहती, राष्ट्र को उन्नतिशील बनाने वाले उत्सव और सघ भी बढने नही पाते। कृषि और गो रक्षा से जीविका चलाने वाले धनवान लोग सुरक्षित नही रह सकते। अराजकता फैल जाने पर अप्राप्त वस्तु की प्राप्ति और प्राप्त की रक्षा नही हो सकती। अराजक देश मे कोई भी मनुष्य किसी वस्तु को अपनी नही कह सकता"[२१]

देश मे सुशासन जन्य आर्थिक सुव्यवस्था एवॅ ऋद्धि–सिद्धि का बोल–बाला था। कृषि उद्यान–चर्या गो–सवर्धन, व्यापार उद्योग, यातायात आदि की समुन्नत स्थिति थी और फलत प्रजा के लिए जीवन की सुख–सुविधाऍ प्रभूत मात्रा मे उपलब्ध थी। नगर ग्राम आश्रमो के बीच निकट सम्पर्क समाज के सामूहिक कल्याण मे सहायक था। दुर्भेद्य दुर्गों के रूप मे निर्मित तत्कालीन नगर रचना–नैपुण्य के श्रेष्ठ नमूने थे। नगर–निवासियो मे एक उदात्त नागरिक भावना का सचार था। ग्रामीण लोग समृद्ध थे तथा कुटीर उद्योगो का अनुसरण करते थे। आश्रम राष्ट्रीय सस्कृति के सरक्षक एवॅ पोषक थे, उनकी रीति–नीति समस्त राष्ट्र को प्रभावित करती थी।

"वित्त शास्त्र को प्राचीन भारत मे 'वार्ता' की सज्ञा दी जाती थी वार्ता शब्द का प्रयोग वैश्यो के तीन प्रमुख धधो– कृषि, गोचारण और व्यापार के लिए किया जाता था। रामायण काल मे वार्ताशास्त्र का इतना महत्व बढ गया प्रतीत होता है कि उसे त्रिस विद्या के अन्तर्गत त्रयी (तीनोवेद) और दण्डनीति के समकक्ष गिना जाने लगा।[२२]

इससे यह अनुमान होता है कि वार्ता का शास्त्रीय अध्ययन आरम्भ होने से पहले कृषि आदि उद्योगो का अनियमित ढग से विकास होता रहा होगा। वार्ता विद्या के शास्त्रीय स्तर पर पहुॅचने के बाद कृषि गो–पालन और व्यापार के विकास पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा– उनकी प्रगति की एक सुनिश्चित दिशा निर्धारित हो गयी चित्रकूट मे राम ने भरत से निम्नलिखित प्रश्न पूॅछकर इसी ओर इगित किया है।

---

[२१] रामायण कालीन समाज – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पृष्ठ २१३

[२२] रामायण कालीन समाज – पृष्ठ २१४

कच्चिन्ते दयिता सर्वे कृषि गो रक्ष्यजीविन ।
वाताया साम्प्रत तात लोकोऽय सुख मेधते ।।[२३]

'तात! कृषि और गो रक्षा से आजीविका चलाने वाले सभी वैश्य तुम्हारे प्रीति पात्र है न? क्योकि कृषि और व्यापार आदि मे सलग्न रहने पर ही यह लोक सुखी एव उन्नतिशील होता है।''

''उन वैश्यो को इष्ट प्राप्त कराकर और उनके अनिष्ट का निवारण करके तुम उन सब लोगो का भरण–पोषण तो करते हो न? क्योकि राजा को अपने राज्य मे निवास करने वाले सब लोगो का धर्मानुसार पालन करना चाहिए।[२४]

राष्ट्र या व्यक्ति के जीवन मे अर्थ का महत्व भली भॉति प्रकट था। जैसा कि लक्ष्मण के भाषण से स्पष्ट है– 'अर्थ ही धर्म का मूल है। जैसे पर्वत से नदियॉ निकलती है, वैसे ही अर्थ से सब क्रियाएँ। अर्थ हीन मनुष्य मन्दवुद्धि गिना जाता है, उसके सब काम बिगड जाते है उसकी दशा ग्रीष्मऋतु के तालाब सी हो जाती है जिसके पास सम्पत्ति होती है उसी के मित्र और उसी के बधु होते है, वही पडित, पराक्रमी, बुद्धिमान और गुणी कहलाता है।[२५]

राज्य की आमदनी का प्रमुख स्त्रोत 'बलि षडभाग' प्रजा की आय का छठॉ भाग था। भारत का शाश्वत एव चिर अभ्यस्त उद्योग कृषि रामायण युग मे भी आजीविका का सर्व मान्य साधन था। दशरथ की मृत्यु के बाद अयोध्या मे एकत्र होने वाले वैश्यो को कृषिगोरक्ष्यजीविन कहा गया है। अर्थात वे अपनी जीविका कृषि और गोपालन द्वारा चलाते थे। ''वाल्मीकि ने कोशल राज्य की सम्पत्ति खेतो, लता–गुल्मो और गॉवो के

[२३] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १०० श्लोक ४७
[२४] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग १०० श्लोक ४८
[२५] रामायण कालीन समाज – डा० शातिकुमार नानूव्यास पृष्ठ २१४

रूप मे तथा अयोध्या के नागरिको की समृद्धि उद्यानो, खेतो, भवनो और धन-धान्य के रूप मे गिनायी है।"[२६]

रामायण कालीन समाज मे जिन कारीगरो का काम कुछ विशेषता या कौशल लिए होता था इन्हे शिल्पी कहा जाता था। वाल्मीकि के अनुसार अयोध्या मे सब तरह के शिल्पी निवास करते थे। उषिता सर्वशिल्पभि।[२७] राज्य उन्हे विशेष सुख सुविधाएँ प्रदान करता था ऊँचे दर्जे के कारीगरो का विशेषत यज्ञ– याज्ञिक मे अपना शिल्प कौशल दिखाने मे पटु शिल्पियो का समाज मे सम्मान पूर्ण स्थान था।

इस प्रकार इस समय की आर्थिक परिस्थिति उच्च कोटि की थी। इस समय के लोग खेती गोपालन उद्योग (कुटीर) मे लगे हुए थे। उत्कृष्ट शिल्पी अपनी कला–कौशल के लिए विख्यात थे।

सामाजिक परिस्थिति

रामायण कालीन सस्कृति एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था पर आधारित थी जिसमे जन–सामान्य वर्णो और आश्रमो मे विभक्त होते हुए भी सहयोग और सौहार्द्र के तन्तुओ से परस्पर अनुरक्त था। इस समाज मे व्यक्ति अपने जीवन का प्रथम चरण अनुशासन पूर्वक शास्त्रीय एवॅ व्यवहारिक शिक्षा प्राप्त करने मे, तत्पश्चात विवाह सूत्र मे ग्रथित होकर एक भद्र नागरिक का जीवन व्यतीत करते हुए अपने परिवार के भरण–पोषण मे लगाता तथा वृद्धावस्था में सासारिक प्रवृत्तियो से विरत होकर एक मात्र कर्म–काण्ड और अध्यात्म के अनुशीलन मे निरत हो जाता था। यह एक ऐसा समाज था जिसमे ब्राह्मणो को उनकी बौद्धिक एव आध्यात्मिक योग्यता के कारण असाधारण सम्मान एवॅ विशेषाधिकार प्राप्त थे, क्षत्रिय उनका वर्चस्व स्वीकार करते थे और नीति एवॅ परम्परा के अनुसार राष्ट्र का शासन–सचालन करते थे, वैश्य वाणिज्य–व्यापार द्वारा राष्ट्रीय समृद्धि

---

[२६] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग ३३ श्लोक १७

[२७] वाल्मीकि रामायण बालककाण्ड ५/१०

मे योगदान करते थे तथा शूद्र अन्य वर्णों की सेवा मे सलग्न रहते थे। "विभिन्न वर्णों के लिए विशेषाधिकार या निर्योग्यताएँ निर्धारित करने का उद्देश्य उनके विकास के लिए ऐसे अनुकूल वातावरण की सृष्टि करना था जिसमे वे सभी अपने विहित कर्मो का यथा योग्य निर्वाह कर सके। निम्न वर्ण से उच्च वर्ण मे प्रवेश पाना दुष्कर होते हुए भी असभव नही था[२८]। विश्वामित्र क्षत्रिय से बह्मर्षि तपस्या करके बने थे।

"परिवार समस्त मानवीय सगठनो की मूल इकाई है और सामाजिक विकास की पहली सीढी। सामाजिक कर्तव्यो का पालन कराने के लिए परिवार मानवीय व्यक्तित्व के विकास मे कितना योग देता है इसका ज्वलत उदाहरण दशरथ के पारिवारिक जीवन मे उपलब्ध होता है। वास्तव मे रामायण कौटुम्बिक महाकाव्य है– राग द्वैष, हर्ष–शोक, ममता–मोह, लोभ–त्याग आदि की सामान्य कौटुम्बिक घटनाओ का चित्रण उसे सर्वसामान्य के लिए एक हृदय ग्राही रचना बना देता है। वाल्मीकि ने पारिवारिक जीवन के प्राचीन आदर्शो को भावी पीढियो के लिए अपनी रामायण मे सुरक्षित कर दिया है।"[२९]

परिवार का प्राचीन रूप निसदेह पैतृक था। पिता का आदेश सर्वोपरि था पत्नी गृहस्वामिनी थी किन्तु गृहस्वामी पर आश्रित और उसकी आज्ञाकारिणी थी। पिता की सर्वोच्च सत्ता, माता के प्रति आदर और स्नेह तथा बडे भाई का अधिकार पूर्ण स्थान था।

रामायण कालीन परिवार सयुक्त परिवार था समाज की एक इकाई के रूप मे परिवार उसकी परम्पराओ भावनाओ एवँ आचार–विचारो को वर्षो से आत्मसात् करता आता है। इस नाते वह अपने सदस्यो मे उनका सचार करने का अच्छा माध्यम सिद्व होता है। वाल्मीकि ने वारम्बार यह शिक्षा दी है कि मनुष्य को उन सब सस्कारो एव रुढियो का मनोयोग पूर्वक सरक्षण और पालन करना चाहिए जो परिवार मे अतिकाल

---

[२८] रामायण कालीन सस्कृति पृष्ठ २८३
[२९] रामायण कालीन समाज – डा० शान्ति कुमार नानूव्यास पृष्ठ ५६

मे योगदान करते थे तथा शूद्र अन्य वर्णों की सेवा मे सलग्न रहते थे। "विभिन्न वर्णों के लिए विशेषाधिकार या निर्योग्यताएँ निर्धारित करने का उद्देश्य उनके विकास के लिए ऐसे अनुकूल वातावरण की सृष्टि करना था जिसमे वे सभी अपने विहित कर्मो का यथा योग्य निर्वाह कर सके। निम्न वर्ण से उच्च वर्ण मे प्रवेश पाना दुष्कर होते हुए भी असभव नही था[२८]। विश्वामित्र क्षत्रिय से बह्मर्षि तपस्या करके बने थे।

"परिवार समस्त मानवीय सगठनो की मूल इकाई है और सामाजिक विकास की पहली सीढी। सामाजिक कर्तव्यो का पालन कराने के लिए परिवार मानवीय व्यक्तित्व के विकास मे कितना योग देता है इसका ज्वलत उदाहरण दशरथ के पारिवारिक जीवन मे उपलब्ध होता है। वास्तव मे रामायण कौटुम्बिक महाकाव्य है– राग द्वेष, हर्ष–शोक, ममता–मोह, लोभ–त्याग आदि की सामान्य कौटुम्बिक घटनाओ का चित्रण उसे सर्वसामान्य के लिए एक हृदय ग्राही रचना बना देता है। वाल्मीकि ने पारिवारिक जीवन के प्राचीन आदर्शों को भावी पीढियो के लिए अपनी रामायण मे सुरक्षित कर दिया है।"[२९]

परिवार का प्राचीन रूप निसदेह पैतृक था। पिता का आदेश सर्वोपरि था पत्नी गृहस्वामिनी थी किन्तु गृहस्वामी पर आश्रित और उसकी आज्ञाकारिणी थी। पिता की सर्वोच्च सत्ता, माता के प्रति आदर और स्नेह तथा बडे भाई का अधिकार पूर्ण स्थान था।

रामायण कालीन परिवार सयुक्त परिवार था समाज की एक इकाई के रूप मे परिवार उसकी परम्पराओ भावनाओ एवॅ आचार–विचारो को वर्षो से आत्मसात् करता आता है। इस नाते वह अपने सदस्यो मे उनका सचार करने का अच्छा माध्यम सिद्व होता है। वाल्मीकि ने वारम्बार यह शिक्षा दी है कि मनुष्य को उन सब सस्कारो एव रुढियो का मनोयोग पूर्वक सरक्षण और पालन करना चाहिए जो परिवार मे अतिकाल

---

[२८] रामायण कालीन सस्कृति पृष्ठ २८३

[२९] रामायण कालीन समाज – डा० शान्ति कुमार नानूव्यास पृष्ठ ५६

से प्रतिष्ठित हो गयी है तथा अपने व्यक्तिगत स्वार्थो को कुटुम्ब के सामूहिक हितो के समक्ष गौण रखना चाहिए। रामायण मे ऐसे अभिजात पुरूषो के अनेक दृष्टान्त आये है, जिन्होने परिवार की सास्कृतिक थाती का निष्ठा पूर्वक पालन करने का सदैव आग्रह रखा। महाराज दशरथ ने अपनी राज्य सभा के समक्ष गर्व पूर्वक यह घोषणा की थी कि प्रजा की रक्षा मे जागरूक रहकर मैने अपने पूर्वजो के मार्ग का ही अनुसरण किया है—

मयाप्या चरित पूर्वै पन्थानमनुगच्छता।
प्रजा नित्यमनिद्रेण यथाशक्त्याभि रक्षिता।[३०]

माता कौशल्या से वन जाने की अनुमति मॉगते हुए राम ने यही तर्क दिया था कि पिता की आज्ञा मानकर मै पूर्वकाल के धर्मात्मा पुरूषो द्वारा सेवित मार्ग पर ही चल रहा हूँ''।[३१]

वैवाहिक व्यवस्था मे आदर्श-वादिता एवॅ व्यवहारिकता दोनो का समन्वय मिलता है। आर्य आदर्श के अनुसार स्त्री—पुरूष विवाह द्वारा अपने शारीरिक सुख के लिए ही परस्पर सयुक्त नही होते, अत जीवन साथी के चुनाव मे व्यैक्तिक भावना, निजीरूचि—अरूचि अथवा पूर्व परिचय के लिए विशेष अवकाश नही था। पुत्र—पुत्रियॉ विवाह के विषय मे अपने माता—पिता के अधीन रहते थे। राम ने धनुष तोडने के बाद सीता से विवाह बिना पिता की इच्छा जाने करने से इन्कार कर दिया था—

दीयमाना तु तदा प्रति जग्राह राघव।
अविज्ञाय पितुश्छन्दमयोध्याधिपते प्रभो।।[३२]

उस समय की वैवाहिक विधि मे पति पत्नी के पारस्परिक मनोवैज्ञानिक सबध का सुन्दर आभास मिल जाता है। विवाह सबध इहलोक और परलोक दोनो मे अटूट था। बहु—विवाह प्रथा अवश्य ही एक दोष पूर्ण प्रणाली थी और यदा—कदा पारस्परिक

---

[३०] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड सर्ग २ श्लोक ६
[३१] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड सर्ग २१ श्लोक ३६
[३२] रामायण कालीन समाज पेज – ५६

सघर्ष का भी कारण बन जाती थी पर साथ ही हमे एक पत्नीव्रत के उस महान आदर्श को भी ऑखो से ओझल नही करना चाहिए जिसका पालन वॉछनीय एवॅ अनुकरणीय माना जाता था। राम ने एक पत्नी व्रत का पालन किया। प्रेम का आदर्श उत्कृष्ट होते हुए भी व्यवहारिक था। नर–नारी का प्रणय लौकिक जीवन का सर्वोपरि वरदान था किन्तु शारीरिक सुख ही वैवाहिक जीवन का अथ और इति नही था। एक सयत एवॅ शिष्ट दाम्पत्य जीवन ही– जिसमे वशवृद्धि की इच्छा ज्वलत रखी जाती है तथा धर्म, समाज और स्वजनो के प्रति अपने कर्तव्यो को भुला नही दिया जाता, त्रिवर्ग प्राप्ति का सर्वोत्तम साधन है।

समाज मे नारी का व्यक्तित्व नितान्त आकर्षक एवॅ प्रभावोत्पादक था। कन्या, वधू-माता आदि रूप मे वह हमारे सम्मुख आती है। कन्याओ के विवाह की चिन्ता, उनके भावी जीवन को सुखमय बनाने की उत्कट लालसा माता–पिता मे दिखायी देती है। आर्य–गृहो मे वे प्रेम–पूर्वक पाली–पोसी जाती थी, उन्हे उपयुक्त शिक्षा–दीक्षा दी जाती थी तथा आमोद–प्रमोद की पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान की जाती थी।[33]

अविवाहित कन्याओ का दर्शन उनकी उपस्थिति मागलिक मानी जाती थी। पत्नी के रूप मे उससे पति के प्रति अलौकिक निष्ठा की अपेक्षा की जाती थी – उसके लिए पति ही देवता और पति ही प्रभु था एव एकनिष्ठ पातिव्रत्य ही रामायण के अनुसार आदर्श पत्नी का मापदण्ड है। पत्नी को पति से भरण–पोषण एव वैवाहिक एक निष्ठ प्रेम पाने का अधिकार था"।[34]

रामायण के प्रमुख स्त्री पात्रो की समीक्षा से स्पष्ट है कि विवाह से पूर्व उन्हे अपने घरो मे समुचित शिक्षा दी जाती थी क्योकि ये स्त्रियॉ समस्त धार्मिक कृत्यो मे अपने पति के साथ भाग लेती थी तथा वैदिक मन्त्रोच्चार करते हुए हवन आदि करती थी। सीता को सान्ध्योपासना मे तत्पर बताया गया है। जबकि तारा को मन्त्रो की

---

[33] रामायण कालीन सस्कृति – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास – पृष्ठ २८४

[34] रामायण कालीन सस्कृति पृष्ठ २८४

जानकार बताया गया है। राम के राज्याभिषेक के दिन कौशल्या अग्नि मे मन्त्रो सहित आहुति दे रही थी।

रामायण मे नारी के सभी रूपो को साकार किया गया है राजा दशराथ के कथनानुसार कौशल्या सी आदर्श नारी मे दासी, सखी, पत्नी, बहन और माता सबके एकत्र दर्शन किये जा सकते है – यदा-यदा च कौशल्या दासीव च सखीवच। भार्यावद्भगिनीवच्च मातृवच्चोप्रतिष्ठति।[३५] वशिष्ठ ने पत्नी को पति की आत्मा बताया था आत्मा हि दारा सवेषा दारा सग्रहवर्तिताम्।।[३६]

यो तो रामायण दाम्पत्य जीवन मे पति से भी स्नेह, सहानुभूति एवॅ निष्ठा की अपेक्षा रखती है, पर पत्नी मे इन गुणो की कही अधिक आशा रखी गयी है फिर भी सह धर्मचारिणी के रूप मे – सामाजिक एवॅ धार्मिक कृत्यो मे पति की सहयोगिनी के रूप मे पत्नी की प्रतिष्ठा यह सूचित करती है कि जीवन मे स्त्री और पुरूष का समानता का दर्जा था। पति के साथ उसे तपस्या करने का अधिकार था सीता जैसी आदर्श नारी ने नारी सस्कृति की गौरव वृद्धि मे बहुमूल्य योगदान दिया है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि वाल्मीकि कालीन सामाजिक परिस्थिति एक उच्च कोटि की थी तथा समाज उन्नतशील एवॅ आदर्श ग्राही था। नारी का समाज मे गौरव पूर्ण स्थान था।

---

[३५] रामायण कालीन समाज पृष्ठ १६६

[३६] रामयण कालीन समाज पृष्ठ १६६

तुलसीकालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवँ सामाजिक परिस्थिति

राजनीतिक परिस्थिति

तुलसी ने जिस युग मे पदार्पण किया उसमे घोर चिन्ता एव अशान्ति व्याप्त थी। तुलसी के समय भारत मे मुगलो का शासन था। यद्यपि मुगल साम्राज्य वैभव की दृष्टि से मध्य युग का सबसे वैभवशाली साम्राज्य माना जाता है तथापि उस समय समाज मे दो स्पष्ट वर्ग थे– एक साधन सम्पन्न वैभवशाली शासक वर्ग जिसमे मुसलमान और हिन्दू– दोनो ही जातियो के सत्ताधारी लोग शामिल थे। दूसरा वर्ग सामान्य जनता का था जो गरीब और असगठित होने के कारण सत्ताधारी वर्ग के अत्याचारो का शिकार होता रहता था। मुगल साम्राज्य की स्थापना बाबर ने सन् १५२६ ई० मे किया था। उसके पाश्चात् हुमायूॅ – अकबर – जहॉगीर, शाहजहॉ और औरगजेब ने क्रमश शासन किया। तुलसी का समय शुक्ल जी के अनुसार सवत् १५५४ से– १६८० तक माना जाता है। अकबर को तुलसी का समकालीन माना जाता है। मुगलसम्राटो की साम्राज्य–विस्तार–लिप्सा निरन्तर युद्धो को प्रोत्साहन दिया करती थी। जिसके कारण जनता की भलाई करने का अवसर उनके पास कम ही रहता था। अकबर ने यद्यपि शक्तिशाली विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी किन्तु साधारण जनता का जीवन स्तर निम्न ही था। राजधानी मे विलासिता के साधन एकत्रित थे और शाही खानदान ऐशो-आराम मे मस्त रहता था। यद्यपि अकबर ने जनहितकारी कार्य करने का प्रयास किया किन्तु मातहतो के कारण जनता का जीवन स्तर निम्न ही बना रहा। राजा प्रजा को कठोर दण्ड देता था। तुलसी ने अपने युग का चित्र राम चरित मानस के उत्तरकाण्ड मे कलियुग वर्णन मे किया है।

नृप पाप परायन धर्म नही
करि दण्ड विडम्ब प्रजा नित ही।[३७]

---

[३७] रामचरित मानस उत्तराखण्ड दोहा १०१ छन्द ३

ब्राह्मण और वेदो की निरन्तर उपेक्षा की जाती थी और अनुशासन का नितान्त अभाव था। तुलसी ने इस प्रकार की राजनैतिक व्यवस्था की कडे शब्दो मे निन्दा की है उन्होने ऐसे अत्याचारी राजाओ को चेतावनी दी है–

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवस नरक अधिकारी।।[३८]

तुलसी ने तत्कालीन जनता मे जीवन–आशा का सचार करते हुए ऐसे अत्याचारी–अनाचारी शासन तन्त्र का अन्त निश्चित बताया। तुलसी ने लिखा है कि–

जब–जब होहि धरम की हानी। बाढहि असुर महा अभिमानी।।
तब तब धरि प्रभु मनुज सरीरा। हरहि कृपा निधि सज्जनपीरा।।[३९]

तुलसी ने जनता के समक्ष रामराज्य का आदर्श रखा जहॉ राम प्रजा के सामने कहते है– यदि मै कोई अनीति की बात करूँ तो आप लोग निर्भय होकर मुझे टोके– मेरी आलोचना करे।

जौ अनीति कछु भाषौ भाई। तौ मोहि बरजहु भय विसराई।।[४०]

इस प्रकार हम देखते है कि रामचरित मानस मे तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का विस्तार पूर्वक वर्णन मिलता है। जनता का निम्न जीवन स्तर एव निराशा की भावना स्पष्ट रूप से चित्रित हुई है।

धार्मिक परिस्थिति

तुलसी मूलत एक मानवतावादी कवि थे। धर्म मानव जीवन की एक अमूल्य वस्तु है। एक लोकनायक होने के नाते तुलसी का अपने समय के धार्मिक जीवन पर दृष्टिपात करना स्वाभाविक ही था। तत्कालीन मुस्लिम शासक अपने धर्म का

---

[३८] रामचरित मानस और साकेत तुलनात्मक अध्ययन पृष्ठ १२ लेखक श्री परम लाल गुप्त
[३९] विनय पत्रिका मूल पाठ आलोचना एव व्याख्या – राजनाथ शर्मा पृष्ठ ३
[४०] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड ३/४३

प्रचार–प्रसार करने मे लगे थे वे तरह-तरह के प्रलोभन देकर हिन्दू जनता को पथ–भ्रष्ट कर मुसलमान बनाने लगे थे। हिन्दू समाज बाह्य एवॅ आन्तरिक (राजनैतिक–धार्मिक) दोनो ओर से सकटो के बीच घिरा हुआ था। जनता का जीवन स्तर गिरता जा रहा था। धार्मिक शक्ति विभिन्न धार्मिक मतो, सम्प्रदायो के कारण एक से अनेक भागो मे विभक्त था। ये सभी पथ एक दूसरे की बुराई करके अपनी महत्ता प्रतिपादित करने के लिए दभोक्तियो का सहारा लेते थे। गोरख पथी, सूफी, कबीर पथी, अघोरी आदि योगी–यतियो की काफी धूम थी। ये लोग अनेक कौतूहल जनक कार्यो द्वारा जनता पर प्रभाव डालने का प्रयत्न करते थे। लोग वैदिक भक्ति भूल कर मिथ्याचारो मे जकड गये थे–

श्रुति समत हरि भगत पथ, सयुत विरति विवेक।
ते चालहि नर मोहबस, कल्पहि पथ अनेक।।''[४१]

तुलसी ने मिथ्याडम्बरो भूत-प्रेत-पूजाओ आदि का बहिष्कार करके हृदय की निर्मलता पर जोर दिया। रामचरित मानस मे शुद्ध–हृदय से की गयी राम भक्ति का ही प्रतिपादन किया गया है–

राम उपासक जे जग माही। एहि सम प्रिय तिन्ह के कछु नाही।।[४२]

तुलसी ने अपने युग मे प्रचलित शैव और वैष्णव सम्प्रदायो मे ऐक्य स्थापित करने का प्रयत्न किया है। यद्यपि उन्होने राम भक्ति को ही श्रेष्ठ माना है किन्तु इसके लिए शिव की आराधना का महत्व भी माना है–

शकर प्रिय मम द्रोही, शिव द्रोही मम दास।
सो नर करइ कलप भर घोर नरक मे बास।।[४३]

---

[४१] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा १०० ख
[४२] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड १३०/२
[४३] रामचरित मानस लका काण्ड दोहा २

राम चरित मानस मे तुलसी ने धर्म के सदर्भ मे अत्यन्त सहज एव समन्वयात्मक दृष्टि अपनायी है। उन्होने सभी मत–मतान्तरो के बीच परस्पर सहयोग और सहिष्णुता के सभावित सभी सूत्रो को दृढ कर रामचरित मानस मे प्रस्तुत किया। एक मात्र राम भक्ति का प्रतिपादन करके उन्होने धार्मिक भेदो को मिटाने का प्रयत्न किया है–

राम चन्द्र के भजन बिनु जो पद चह निर्बान।
ध्यानवत अपि सो नर पशु बिनु पूँछ समान।।[४४]

तुलसी भेद परक बुद्धि के समर्थक न होकर अभेद परक भक्तिभाव के समर्थक थे। इसके साथ ही उन्होने परिष्कृत सामान्य धर्म का भी प्रतिपादन किया है जिसे प्रत्येक व्यक्ति मान सकता है–

धरम न दूसर सत्य समाना। आगम निगम पुरान बषाना।।
मै सोइ धरमु सुलभ करि पावा। तजे तिहूँपुर अपजस छावा।।[४५]

तुलसी ने समन्वय की दृष्टि से मानस मे वैदिक देवो, पृथ्वी, ब्रह्म, इन्द्र, यम, अग्नि आदि का उल्लेख करके उन्हे मान्यता दी है किन्तु इनकी आराधना को प्रतिष्ठित नही किया है। इस प्रकार तुलसी ने अत्यन्त विषम धार्मिक परिस्थितियो मे निराश हिन्दू जन–मानस के सम्मुख उच्च आदर्श प्रस्तुत करके जिस सहजता एव कुशलता से सभी को एकता के सूत्र मे बॉधा है वह उनके व्यक्तित्व का परिचायक है। प्रतिभा एवॅ इस समन्वयवादी दृष्टि के कारण डा० जार्ज ग्रियर्सन ने तुलसी को महात्मा बुद्ध के बाद उत्तर भारत का श्रेष्ठतम् लोक नायक कहा है।

आर्थिक परिस्थिति

इस समय जनता की आर्थिक दशा ठीक नही थी। शासक वर्ग द्वारा कृषको को प्रोत्साहन नही मिल रहा था फलत चारो तरफ बेकारी फैल रही थी। अधिकॉश भागो मे

---

[४४] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा ७८क

[४५] अयोध्याकाण्ड सटीक – डा० सतीश कुमार पृष्ठ ७६

बीमारी और अकाल के कारण जनता त्राहि–त्राहि कर रही थी, अन्न के बिना लोग भूखो मर रहे थे–

कलिबारहि बार दुकाल परै। बिनु अन्न दुखी सब लोग मरै।।[४६]

इतिहास ग्रथो से ज्ञात होता है कि सन् १५५५–५६ ई० मे दिल्ली, आगरा और हिन्दीभाषी पश्चिमी क्षेत्रो मे भीषण अकाल पडा था। ऐसा ही भयकर अकाल सन् १५६५–१५६८ ई० के बीच भी पडा था। बार–बार की इन दैवी आपदाओ से जनता की आर्थिक दशा बहुत शोचनीय हो गयी थी। शासको का लक्ष्य जनता की स्थिति सुधारने से अधिक राजकोष को भरने एव साम्राज्य के विस्तार करने की थी। तुलसी ने वर्णन किया है कि स्त्रियो के पास आभूषण नही थे। वे सर्वदा भूख से पीडित थी–

अबला कच भूषण भूरि छुधा। धनहीन दुखी ममता बहुधा।।[४७]

ऐसी विकट स्थिति मे शिक्षा और साहित्य भी अपने लक्ष्य से भटक गया और शिक्षा जीविकोपार्जन का साधन बन गयी–

मातु–पिता बालकन्ह बोलावहि। उदर भरई सोइ पाठ पढावहि।।[४८]

विपन्नता ने मनुष्य की नैतिकता को बुरी तरह से प्रभावित कर दिया था। तत्कालीन समाज मे इतनी निर्धनता और तगी थी कि जाति–कुजाति सभी लोग भीख मागने वाले हो गये। इस प्रकार इस समय की आर्थिक स्थिति विपन्नता की थी समाज का विकास अवरुद्ध हो गया था।

सामाजिक परिस्थिति

तुलसी सच्चे लोक नायक थे उन्होने अपने समकालीन समाज का रामचरित मानस मे वर्णन किया है। समाज विश्रृखलित एव जर्जरित हो जा रहा था। 'जाति-पॉति

---

[४६] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड १०१/५
[४७] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड १०२/१
[४८] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड ६६/४

का भेदभाव चरम सीमा पर पहुँच चुका था। उच्च जाति के लोग निम्न जाति के साथ अमानवीय व्यवहार करते थे उन्होने समाज की इस विषमता को दूर करने के लिए भगवान् राम को निषाद का सखा बनाकर गले मिलवाया। शबरी के जूठे बेर खिलाए। क्षत्रिय जाति के राम, भरत और ब्राह्मणो मे श्रेष्ठ वशिष्ठ को शूद्र जाति के निषाद को समान रूप से गले लगवाया–

भेटत भरत ताहि अति प्रीती। लोग सराहहि प्रेम कै रीती।।
तेहिभरि अक राम लघुभ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता।।[४९]

तुलसी ने तत्कालीन समाज की पतनशील स्थिति का वर्णन किया है। समाज मे भोग लिप्सा इतनी प्रबल हो गयी थी पुरुष स्त्रियो के सकेत पर नाचते थे– नारि विवस नर सकल गोसाई। नाचहि नर मरकट की नाई।।[५०] लोगो को काम–वृत्ति ने इतना अधा कर दिया था कि वे बहन और पुत्री का पवित्र रिश्ता भी भूल गये थे–

कलिकाल विहाल किए मनुजा। नहि मानत कोउ अनुजा-तनुजा।।[५१]

इस सामाजिक बुराई को भला गोस्वामी जी कैसे सहन कर सकते थे उन्होने नारी के कामिनी रूप की घोर निन्दा की और पुरुषो को चेतावनी दी–

दीपसिखा सम जुवति तन मन जन होसि पतग।
भजहु राम तजि काम मद करहु सदा सतसग।।[५२]

तुलसी के युग मे वर्ण व्यवस्था भी विश्रृखलित हो गयी थी। लोगो मे आचार विचार का लोप हो गया था। सभी वर्ण अपने अभीष्ट से गिर गये थे। ब्राह्मणो ने धर्म का उपयोग अपने व्यवसाय हेतु करना आरम्भ कर दिया था।

द्विज श्रुति वचक भूप प्रजासन। कोउ नहि मान निगम–अनुशासन।।[५३]

---

[४९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १९४/१,२
[५०] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड ९९/१
[५१] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड १०२/३
[५२] रामचरित मानस अरण्य काण्ड ४६ख
[५३] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड ९८/१

सामाजिक अनुशासन के लिए यह आवश्यक था कि सभी वर्ण अपने कर्तव्यो का उचित रूप से पालन करे। इसी कारण तुलसी ने वर्ण-व्यवस्था का समर्थन किया।

तुलसी ने उन्नतशील समाज का आदर्श अपने राम चरित मानस मे प्रस्तुत किया। व्यक्ति और परिवार आदर्श समाज के आधार है तुलसी के राम आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श प्रजा–पालक और मर्यादा पुरुषोत्तम है। सीता आदर्श पत्नी है। लक्ष्मण, भरत आदर्श भाई है तो हनुमान आदर्श सेवक और कौशल्या आदर्श माता है। तुलसी का वर्णन सामाजिक मर्यादा की नीति पर निर्मित है।

तुलसी ने राम के चरित्र मे मर्यादाओ के साथ शक्ति-शील और सौन्दर्य तीनो का ही समन्वय किया है। मानवता के सभी गुण– दया, क्षमा, सकोच, विनय, सरलता आदि राम मे उपस्थित है। उन्हे सब चाहते है–

रामहि देखि एक अनुरागे। चितवत चले जाहि सग लागे।।
एक नयन मग छवि उर आनी। होहि शिथिल तन मन वर वानी।।[५४]

तत्कालीन समाज मे नारी की स्थिति दयनीय थी। वह पर्दा-प्रथा के कारण घर की चारदीवारियो मे घिरी हुई थी। उसका शिक्षा स्तर गिर गया था, वह पूरी तरह से पुरूषो के अधीन थी। उसे स्वतन्त्रता प्राप्त नही थी। कलिकाल बिहाल किये मनुजा। नहि मानत कोउ अनुजा तनुजा कह कर तुलसी पतनशील समाज मे नारी की स्थिति को सक्षेप मे बता दिया है। किन्तु ऐसे समाज के समक्ष सीता, कौशल्या, मन्दोदरी, अहल्या जैसी पुनीत नारियो के आदर्श चरित्र को रखकर नारी को पुन. गौरव पूर्ण स्थान दिलाने का प्रयास तुलसी ने किया है। तुलसी की नारी भावना अत्यन्त उत्कृष्ट है–

सीय राम मय सब जगजानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।[५५]

---

[५४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ११४/४
[५५] रामचरित मानस बालकाण्ड ८/१

मैथिलीशरणगुप्तकालीन राजनीतिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सामाजिक परिस्थिति

राजनीतिक परिस्थिति

भारत पर अग्रेजो का शासन था। इस समय मानवीय विकास की सुविधाओ का अभाव था। अग्रेज भारतीय हितो की तरफ ध्यान नही देते थे उनका उद्देश्य भारत के राजकोष को लूटना ही था। जनता अग्रेजो के अत्याचार से त्रस्त थी उसका जीवन–स्तर निरन्तर गिरता जा रहा था। सन् १८८५ मे स्थापित काग्रेस सस्था ने भारतीयो मे एक नयी चेतना का सचार किया और जनता को अपने हको के लिए लडने को तैयार किया। मैथिलीशरण गुप्त ने भी जनता मे चेतना का सचार किया और राष्ट्रीय भावना को लोगो मे जगाया। धीरे-धीरे राष्ट्रीय भावना बलवती होने लगी। भारतेन्दु ने राष्ट्रीय चेतना को आवाज देते हुए लिखा–

अग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलिजात यहै अति ख्वारी।।[५६]

राष्ट्रीयता की भावना भारत–भारती मे गुप्त जी ने जगायी है–

''भू लोक का गौरव, प्रकृति की पुण्य लीला स्थल कहॉ?
फैला मनोहर गिरिहिमालय और गगा जल जहॉ।
सम्पूर्ण देशो मे अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषि भूमि है वह कौन? भारत वर्ष है।।[५७]

साकेत मे मैथिलीशरण गुप्त ने शत्रुघ्न के मुख से कहलाया है–

है अपनो को छोड मुक्ति भी अपनी कारा,
पर अपनो के लिए नरक भी स्वर्ग हमारा।

---

[५६] भारत दुर्दशा – भारतेन्दु हरिश्चन्द्र सम्पादक डा० कृष्णदेव शर्मा पृष्ठ ५५
[५७] हिन्दी साहित्य का इतिहास – डा० नगेन्द्र पृष्ठ ४८६

पैर धरे इस पुण्य भूमि पर पामर पापी,

कुल लक्ष्मी का हरण करे वे सहज सुरापी।

भरलो उनका रूधिर करो अपनो का तर्पण,[५८]

सन् १९१७ मे पूज्य महात्मागॉधी ने भारतीय राजनीति मे पदार्पण किया। उन्होने धर्म और राजनीति को एक ही लक्ष्य प्राप्ति के साधनो के रूप मे समन्वित करने का प्रयास किया। गॉधी जी के सपनो का राज्य धर्म राज्य ही था। साकेतकार ने गॉधीवाद की इस कल्पना को शब्दो मे साकार कर दिया है शासक को अधिकार की अपेक्षा त्याग और सेवा के गुणो से विभूषित किया है–

राज्य मे दायित्व का ही भार,

सब प्रजा का वह व्यवस्थागार

x x x

राज्य सुख है बलि पुरूष का भोग,

मूल्य जिसका प्राण विनियोग।।[५९]

आधुनिक युग प्रजातन्त्र का युग है। यद्यपि साकेतकार ने राजतन्त्र का समर्थन किया है तथापि वह युग की प्रजातन्त्र भावना की उपेक्षा नही कर सका–

राजा हमने राम तुम्ही को है चुना

करो न तुम यो हाय! लोकमत अनसुना।[६०]

धार्मिक परिस्थिति

भारत वर्ष धर्म प्राण देश माना जाता रहा है किन्तु अग्रेजी शासन मे धीरे–धीरे धर्म मे भी बुराइयॉ आ गयी। मूढतावस बाह्याडम्बरो को ही धर्म माना जाने लगा और धार्मिक उपदेशो का महत्व घटने लगा लोगो ने उन्हें आचरण मे उतारना बन्द कर

---

[५८] साकेत– मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २७१

[५९] साकेत– मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ७ पृष्ठ १०५ तथा पृष्ठ १०३

[६०] साकेत– मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ५ पृष्ठ ६३

दिया। मदिरो और तीर्थो के महन्त और पण्डितो ने धर्म को व्यवसाय के रूप विकसित कर लिया। इसके अतिरिक्त हिन्दू जनता को प्रलोभन देकर ईसाई बनने के लिए मजबूर किया जा रहा था। शासको की नीति भारत मे धार्मिक भेद–भाव उत्पन्न करके अपना स्वार्थ सिद्ध करना था ऐसी स्थिति मे भारतीय धर्म को बचाना आवश्यक था। साकेत मे भारत के पवित्र आर्य धर्म की प्रतिष्ठापना करने की चेष्टा की गई है। साकेत के राम धर्म सस्थापनार्थ ही जन्म लेते है–

मै आर्यो का आदर्श बताने आया।
जन–सम्मुख धन को तुच्छ जताने आया।
सदेश नही मै यहॉ स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।[६१]

साकेत मे धर्म को विकृत रूप जैसे पशुबलि, हिसा आदि की निदा की गयी है। आधुनिक युग मे धर्म के प्रति आग्रह कम हो गया। सामान्य विश्व धर्म की भावना बलवती हुई। गुप्त जी ने विश्व धर्म का समर्थन किया है– सहिष्णुता और उदारता के वे समर्थक है– शत्रुघ्न के शब्दो मे–

भरत खण्ड का द्वार विश्व के लिए खुला है,
भुक्ति–मुक्ति का योग जहॉ पर मिला–जुला है,।।[६२]

मैथिलीशरण गुप्त मानव धर्म के समर्थक है वे मानवता वाद की स्थापना करते है वे राम को आदर्श मानव के रूप मे चित्रित करते है–

राम, तुम मानव हो? ईश्वर नहीं हो क्या?
तब मै भी निरीश्वर हूॅ ईश्वर क्षमा करे,[६३]

---

[६१] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १२४
[६२] साकेत मैथिलीशरण पुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २७०
[६३] साकेत विचार और विश्लेषण पृष्ठ ३६

गुप्त जी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता के मार्ग मे बाधक नही है, विश्व शान्ति द्वारा ही प्रत्येक राज्य का कल्याण सभव है। इसलिए विश्व कल्याण के लिए राष्ट्र के सकुचित स्वार्थो का त्याग ही सच्ची राष्ट्रीयता है। साकेत मे विभीषण के शब्दो मे इसी राष्ट्रवाद और मानवतावाद की स्थापना दिखायी देती है।

पर वह मेरा देश नहीं, जो करे दूसरो पर अन्याय।
किसी एक सीमा मे बँधकर रह सकते है क्या ये प्राण,
एक देश क्या? अखिल विश्व का तात चाहता हूँ मैं त्राण।।[६४]

इस प्रकार साकेत मे धर्म की नये सिरे से व्याख्या की गयी है और धर्म को एक आदर्शरूप दिया गया है। मानवतावाद एव विश्व कल्याण की भावना ही उनके धर्म के मूल मे सर्वत्र विराजमान है।

आर्थिक परिस्थिति

विदेशी शासन के अधीन भारतीयो की आर्थिक स्थिति अच्छी नही थी। विदेशी शासक अपने अधिकारो का उपयोग अपने आर्थिक लाभ के लिए करते थे। भारत का धन विदेश जा रहा था और भारतीय जनता गरीबी से त्रस्त थी। कृषि के विकास पर अग्रेजो का ध्यान न था। मैथिलीशरण गुप्त ने विदेशी शासन के अन्तर्गत आर्थिक सत्यानाश की प्रतिक्रिया के रूप मे भारतीय बौद्धिक समृद्धि का चित्र खीचा है। आत्मनिर्भरता उन्नति के लिए आवश्यक है। साकेत के राम प्रजा की सेवा भावना और त्याग भावना से प्रेरित हैं–

मै आया उनके हेतु कि जो तपित है,
जो विवश, विकल, बलहीन, दीन शापित है।।[६५]

---

[६४] रामचरित मानस और साकेत एक तुलनात्मक अध्ययन– पृष्ठ २६
[६५] साकेत– मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १२४

आज की आर्थिक व्यवस्था, प्राचीन आर्थिक व्यवस्था से सर्वथा भिन्न है। औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप गहरी विषमताएँ उत्पन्न हो गयी। वितरण की उचित व्यवस्था मे अर्थ शक्ति चन्द व्यक्तियो मे केन्द्रित हो गयी इस शक्ति का उपयोग अपने स्वार्थ के लिये करने के कारण सर्वहारा वर्ग जीवन की सुविधाओ से वचित रह जाता है। यह निश्चय ही अनिष्ट की जड है। गुप्त जी के शब्दो मे—

हॉ तब अनर्थ के बीज अर्थ बोता है,
जब एक वर्ग मे मुष्टिवद्ध होता है।।[६६]

किसी वस्तु का सग्रह करके उसका त्याग न करना ही शोषण है साकेत के गुप्त कहते है कि—

जो सग्रह करके त्याग नही करता है,
वह दस्यु लोकधन लूट—लूट धरता है।।[६७]

सामाजिक परिस्थिति

साकेत मे भारतीय सस्कृति के प्राचीन आदर्शों और वर्तमान युग की नवीन विचारधाराओ के बीच सुन्दर सामन्जस्य दिखायी देता है। साकेतकार भारत के अतीत गौरव और प्राचीन सस्कृति के परम उपासक है और साकेत की कथा वस्तु का सबध भी प्राचीन सस्कृति से है किन्तु उसमे आधुनिक समाज पूरी तरह से झलकता है। अग्रेजो की दमन नीति के कारण समाज मे विघटन दिखायी देता है। अग्रेजो ने तुष्टीकरण की नीति अपनाकर समाज को तोडने का काम किया था वे जनता की लगातार उपेक्षा कर रहे थे उन्होने समाज को पूरी तरह से अस्थिर बना दिया था। हिन्दू और मुस्लमान भारत की दो ऑखो के समान थे उन्हे आपस मे लडा दिया था। इस प्रकार भारतीय समाज के सौहार्द्र को पूरी तरह से नष्ट करने का प्रयास किया

[६६] साकेत— मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १२३
[६७] साकेत— मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १२३

था। गुप्त जी ने विघटित समाज को एक सूत्र मे पिरोने के लिए राम कथा की नये सदर्भो मे व्याख्या की और सर्वथा नये रूप मे इसका सृजन किया। आर्य सस्कृति के उदार एव विशाल पक्ष को जनता के सामने रखकर समाज को स्थिर बनाने की चेष्टा की। गुप्त जी ने साम्राज्यवाद की निदा की है गुप्त जी शोषण एव लूट से प्राप्त धन को निदनीय एवॅ समाज के लिए अहितकर मानते है। उर्मिला कहती है–

सावधान वह अधम धान्य साधन मत छूना,
तुम्हे तुम्हारी मातृ भूमि ही देगी दूना।।[६८]

साकेत मे व्यक्ति के त्याग और सेवा को महत्व दिया गया है। बडे से बडे हित के लिए व्यक्तिगत हितो का त्याग ही सच्चा आदर्श है–

निज हेतु बंरसता नही व्योम से पानी,
हम हो समाष्टि के लिए व्यष्टि बलिदानी।।[६९]

आधुनिक युग नारी जाति के उत्थान का युग है। साकेत के स्त्री पात्रो के चरित्र मे स्थान–स्थान पर आधुनिक नारी का अपने अधिकारो के प्रति जागरूक हृदय बोलता है। कैकयी के पॉवो मे 'पडकर' राम की भिक्षा मॉगने के लिए उत्सुक कौशल्या के प्रति सुमित्रा की इन उक्तियो मे आधुनिक नारी जाति का स्वर गूॅज उठता है–

स्वत्वो की भिक्षा कैसी? दूर रहे इच्छा ऐसी,
उर मे अपना रक्त बहे, आर्य भाव उदीप्त रहे।[७०]

युग–युग की उपेक्षिता उर्मिला और कलकिता कैकेयी के चरित्र को गौरवान्वित करके कवि ने वर्तमान युग की नारी भावनाओ के अनुकूल नारी जाति के उत्थान मे सहयोग दिया है। कैकेयी की वीर मूर्ति को गुप्त जी ने साकार किया है–

मै निज पति के सग गई थी असुर समर मे,

---

[६८] साकेत– मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २७२
[६९] साकेत– मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १२३
[७०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४८

जाऊँगी – अब पुत्र सग भी अरि समर मे''[७१]

इस प्रकार गुप्त जी ने अपने युग की सामाजिक विषमता की झलक तो दी है किन्तु एक आदर्श समाज का जो आदर्श जनता के समक्ष राम के चरित्र के माध्यम से रखा वह उनका दिव्य योगदान है। राम कथा की सर्वथा मौलिक एवॅ नवीन व्याख्या आधुनिक युग के अनुरूप उन्होने किया। टूटते समाज मे एक आशा का सचार किया जिससे निराश भारतीय जन मानस पुन सगठित होकर नये दृढ समाज के निर्माण मे सक्रिय हो सका।

[७१] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २६४

द्वितीय अध्याय

वाल्मीकि तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त के नारी पात्र

- पात्र-संकल्पना
- नारी पात्र

1. कौशल्या
2. कैकेयी
3. सुमित्रा
4. ताटका (ताड़का)
5. अहल्या
6. सीता
7. उर्मिला
8. माण्डवी
9. श्रुतिकीर्ति
10. मन्थरा
11. शूर्पणखा
12. शबरी
13. तारा
14. त्रिजटा (सरमा)
15. मन्दोदरी

- वाल्मीकि के नारी पात्र
- तुलसी के नारी पात्र
- मैथिलीशरण गुप्त के नारी पात्र

पात्र संकल्पना

पात्र किसी भी महाकाव्य के प्राणतत्व होते है। वे कथा या आख्यान के प्रमुख घटक होते है। पात्रो के अभाव मे न तो घटनाओ की सृष्टि हो सकती है और न उनके अभाव मे किसी प्रयोजन की सिद्धि ही सभव है। कथा के सजीव तत्व पात्र ही होते है और ये पात्र ही घटनाओ को आकार-प्रकार प्रदान करते है। इन्ही के आधार पर जीवन की सजीव व्याख्या सभव है। किसी रचना की सृष्टि करते समय उसमे पात्रो की परिकल्पना की जाती है। पात्रो के अभाव मे रचना निर्जीव होगी। पात्र की सृष्टि मे पात्र का व्यक्तित्व स्पष्ट रूप से मुखर होता है। अत पात्र परिकल्पना पात्र के चरित्र के आधार पर की जाती है। 'चरित्र' पात्र के अन्त करण की मूल प्रवृत्ति को कहा जा सकता है, क्योकि यही वह प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर पात्र के ज्ञान, कार्य, साधन, उद्देश्य, तत्परता, व्यवहार आदि का ज्ञान होता है। पात्र के व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति उसके चरित्र के द्वारा व्यक्त होती है। डा० रोबेक ने लिखा है "चरित्र व्यक्ति के व्यक्तित्व का वह भाग है जो व्यक्ति की शारीरिक क्षमता, समझने की क्षमता, प्रभाव डालने की क्षमता के बाद भी शेष रह जाता है। चरित्र मे उन सभी गुणो का समावेश होता है जो पात्र के व्यवहार मे निहित रहता है और फिर भी चरित्र बहुत हद तक बुद्धि पर निर्भर है और वह स्वभाव के आधार पर जाना जाता है या कम से कम उसका सबध स्वभाव से माना जाता है[1]।

कवि की पात्र सकल्पना का ज्ञान उसके द्वारा रचित चरित्रो के आधार पर होता है। पात्रो की रचना करते समय रचनाकार उसका चरित्र विधान करता जाता है और उसी मे उसका प्रयोजन और उद्देश्य व्यक्त होता रहता है। तीनो महाकाव्य की पात्र सकल्पना पर तत्कालीन परिस्थिति, सस्कृति, कवियो की अपनी दृष्टि, धर्म-दर्शन आदि का प्रभाव स्पष्टत परिलक्षित होता है। आलोच्य ग्रथो के कथानक का मूलाधार रामकथा

---

[1] द साइकालोजी ऑफ करेक्टर – डा० रोबेक १६७२ पृष्ठ १६०

है तथापि पात्र कल्पना मे भिन्नता है। उनकी पात्र कल्पना मे वही स्वाभाविक भिन्नता है जो एक मूर्ति को दो मूर्तिकारो द्वारा पृथक काल मे बनाने पर पायी जाती है।

वाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस और साकेत तीनो एक ही कथानक के आधार पर निर्मित है। कथानक और घटनाओ मे अद्भुत साम्य होते हुए भी कवि की जीवन दृष्टि, रचना कौशल एव युग-परिवेश इनके पात्रो को भिन्न-भिन्न रूप प्रदान करते है । इसी प्रभाव वश वाल्मीकि ने सीता का चित्रण मानवीय एव यथार्थ की भूमि पर किया है। तुलसी ने सीता का चित्रण विष्णु की प्रिया एव ब्रह्म की शक्ति के रूप मे अलौकिक धरातल पर किया है, तो मैथिली शरण गुप्त ने सीता का चित्रण एक आदर्श एव मानवीय सवेदना से युक्त नारी के रूप मे किया है जिसमे आधुनिक भारतीय नारी के आदर्श विचार एव सेवाभाव भरे पडे है। वाल्मीकि की कौशल्या एक सामान्य रानी के रूप मे चित्रित है जिसमे वैदिक काल की नारी की भावना प्रबल है। वह पुत्र की मगल कामना के लिए अनेक प्रकार के वैदिक कर्मकाण्ड, हवन, पूजन आदि करती है। उनमे मॉ की कोमलता भी है, पुत्र के वियोग मे विकल होकर वह अपने पतिधर्म को भुलाकर पुत्र के साथ जाने की जिद करने लगती है, उसमे मानवीय दुर्बलता है। वह कैकेयी को दोष देती है उसके प्रति ईर्ष्या की भावना भी व्यक्त करती है किन्तु तुलसी की कौशल्या ब्रह्म राम की मॉ है अत वे विकट परिस्थितियो मे भी धर्मानुकूल कार्य करती है और प्रसन्नता से राम को वन जाने की आज्ञा दे देती है। उनका चरित्र अलौकिक एव आदर्श रूप है। मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या आदर्श भारतीय नारी के रूप मे चित्रित है उसमे मानवीय सवेदना है उसमे एक तरफ मॉ की कोमलता है, सहजता है किन्तु आधुनिक नारी का आदर्श विचार एव त्याग भी है। इसी प्रकार का अन्तर अन्य नारी पात्रो की सकल्पना मे है। इस सकल्पना मे अन्तर युग-परिवेश एव कवि दृष्टि के ही कारण है।

नारी पात्र

वाल्मीकि रामायण, रामचरित मानस और साकेत के कथा प्रवाह मे नारी पात्रो की एक लम्बी श्रृखला है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के चरित्र-चित्रण की परिधि मे कथा-प्रवाह के अतिशय महनीय एव महत्वपूर्ण पात्रो को ही अध्ययन का विषय बनाया गया है। नारी पात्रो का वर्गीकरण सात्विक, राजस, तामस अथवा उत्तम, मध्यम तथा सामान्य कोटि के नारी पात्र के रूप मे अथवा सामान्य या गौण नारी पात्र के रूप मे अथवा राम के अभिमुख या राम के विमुख नारी पात्र आदि विविध श्रेणियो मे किया जा सकता है किन्तु यहॉ पर कुछ विशेष उद्देश्यवश ऐसा वर्गीकरण नही किया जा रहा है क्योकि किसी श्रेणी विशेष मे पात्रो का वर्गीकरण प्रस्तुत करते समय पात्रो के आवरण, कर्म आदि की साम्यता को दृष्टि मे रखकर उनको एक-एक निश्चित वर्ग मे रखा जाता। इस प्रकार नारी पात्रो का चरित्र-चित्रण किसी वर्ग विशेष मे विभाजित करने पर निश्चित रूपेण उनका अवमूल्यन होगा क्योकि वर्गीकरण करने पर प्रत्येक नारी पात्र के साथ किसी न किसी बिन्दु पर अन्याय हो जायेगा। इस रूप मे उनका असीम व्यक्तित्व एक निश्चित श्रेणी मे निबद्ध होगा। सत्य तो यह प्रतीत होता है कि आलोच्य ग्रथो के प्रत्येक नारी पात्र की अपनी एक अलग श्रेणी है उसका अपना एक अलग वर्ग है जिसकी किसी भी पात्र से तुलना नही की जा सकती। प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट चरित्र एव व्यक्तित्व है। अतएव नारी पात्रो को किसी वर्ग विशेष मे न रखकर उनका चरित्र-चित्रण कथा-प्रवाह मे पात्रो के प्रवेश-क्रमानुसार किया जा रहा है–

1 कौशल्या

2 कैकेयी

3 सुमित्रा

4 ताटका (ताडका)

5 अहल्या

6 सीता

7 उर्मिला

8 माण्डवी

9 श्रुतिकीर्ति

10 मन्थरा

11 शूर्पणखा

12 शबरी

13 तारा

14 त्रिजटा (सरमा – साकेत)

15 मन्दोदरी

वाल्मीकि के नारी पात्र

कौशल्या

वाल्मीकि रामायण मे कौशल्या अयोध्यापति दशरथ की प्रधान महिषी, राम की माता, समदर्शी प्रति-प्रिया, पुत्र वत्सला, धर्मशीला, परमक्षमाशीला, त्यागशीला तथा सौम्य रूप मे चित्रित की गयी है। कौशल्या का पारम्परिक रूप प्राय उनके मातृत्व की प्रतिष्ठा करता है। वाल्मीकि रामायण की कौशल्या मे माता की स्वाभाविक दुर्बलताएँ भी प्रकट हुई है तथा उनमे सपत्नी भाव भी प्रबल है। वे कैकेयी के प्रति उग्र द्वेष और विक्षोभ व्यक्त करती है।

वाल्मीकि रामायण मे कौशल्या का उल्लेख नारद द्वारा कही गयी सक्षिप्त कथा मे सर्वप्रथम होता है 'स च सर्वगुणोपेत कौसल्यानन्दवर्धन[२]' इसके बाद दशरथ पत्नी कौशल्या का विधिवत परिचय अश्वमेध यज्ञ के समय पति के साथ विहित कर्म-काण्डो को करते हुए मिलता है। पुत्रेष्टि यज्ञ के यज्ञकुण्ड से प्रकट प्रजापत्य पुरुष द्वारा प्राप्त खीर का आधा भाग दशरथ ने कौशल्या को दिया। बारह मास गर्भ धारण के पश्चात् कौशल्या अमित तेजस्वी पुत्र राम को प्राप्त कर उसी प्रकार शोभा-युक्त हुई जिस प्रकार सुरश्रेष्ठ बज्रपाणि इन्द्र से देवमाता अदिति सुशोभित हुई थी—

कौशल्या शुशुभे तेन पुत्रेणाभिततेजसा
यथा वरेण देवनामदितिर्वज्रपाणिना।।[३]

कौशल्या के चरित्र का पूर्ण विकास राम के राज्याभिषेक एव वनगमन प्रसग मे होता है। राम के राज्याभिषेक का समाचार लाने वालो को कौशल्या आनन्दातिशयता मे सुवर्ण और गायो आदि का दान करती है।[४] वह अपने पुत्र के लिए राज्य लक्ष्मी की

---

[२] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड श्लोक १/१७
[३] वाल्मीकि रमयण बालकाण्ड श्लोक १८/१२
[४] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ३/४७

प्राप्ति के लिए पूजा-पाठ-हवन आदि करती है। राम जब अपने राज्याभिषेक का समाचार सुनाने जाते है उस समय माता कौशल्या पुत्र-मगल कामना हेत साधन रत रहती है–

तत्र ता प्रवणामेव मातर क्षौमवासिनीम्।
वाग्यता देवतागारे ददर्शायाचती श्रियम्।।[५]

राम के प्रणाम करने के पश्चात् उनके मुख से यह सुनकर कि "पिता ने मुझे प्रजा पालन के कर्म मे नियुक्त किया है, कल मेरा राज्याभिषेक होगा" माता कौशल्या आनन्द के अश्रु बहाते हुए गद्‌गद् कण्ठ से श्रीराम की मगलकामना करती हुई कहती है कि आज मेरी तपस्या सफल हुई।

किन्तु मथरा की कूटनीतिक चाल एव कैकेयी के वरदान याचना के फलस्वरूप जब राम को वनवास मिल जाता है और राम कौशल्या के पास वन जाने की आज्ञा लेने हेतु उनके पास जाते है उस समय भी माता कौशल्या पुत्र की मगल कामना हेतु हवन-पूजन कर रही थी।

कौशल्या ने प्रणत राम को दोनो भुजाओ मे कसकर छाती से लगा लिया तथा बडे प्यार से उनके माथे को सूँघा–

स मातरमुपक्रान्तामुपसगृह्य राघव ।
परिषक्तश्च वाहुभ्याम्वघ्रातश्च मूर्धनि।।[६]

माता कौशल्या ने राम को मगल आशीष देते हुए धर्मशील, दीर्घआयुष्मान्, कीर्तिमान, कुल गौरव बनने का उपदेश दिया तथा बैठने के लिए आसन देकर भोजन करने का आग्रह किया। किन्तु राम द्वारा वनवास की बात सुनकर माता कौशल्या वन मे फरसे से काटी हुई शाल वृक्ष की शाखा के समान पृथ्वी पर गिर पडी–

[५] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४/३०
[६] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २०/२१

सा निकृत्तेव सालस्य यष्टि परशुना वने।[७]

राम ने माता कौशल्या को सभाला किन्तु होश मे आते ही वह शोक करने लगी। वह कहने लगी – अच्छा होता, मेरी कोख से राम पैदा ही नहीं होता, मै वन्ध्या ही रहती जिससे मुझे केवल वन्ध्या होने का दु ख होता–

एक एवहि वन्ध्या शोको भवति मानस ।।
अप्रजास्मीति सतापो न ह्यन्य पुत्र विद्यते।।[८]

राम वनवास के मूल मे कैकेयी के षडयन्त्र की आशका होते ही कौशल्या मे सपत्नी भाव का रोष जागृत हो उठता है। अब तक की दबी वेदना उभर आती है और सयम का बॉध टूट जाता है– वह विलखते हुए राम से कहती है कि – बेटा राम! पति के प्रभुत्व काल मे एक ज्येष्ठ पत्नी को जो कल्याण या सुख प्राप्त होना चाहिए, वह मुझे पहले कभी नही देखने को मिला। सोचती थी, पुत्र राज्य मे सब सुख देख लूॅगी और इसी आशा मे मै अब तक जीती रही–

न दृष्ट पूर्वं कल्याण सुख वा पति पौरुषे।
अपि पुत्रे विपश्येयमिति रामास्थित मया।।[९]

बडी रानी होकर भी मै सौतो के कठोर वचनो को सुनती रही। मै कैकेयी की दासियो के बराबर अथवा उससे भी गयी-गुजरी समझी जाती रही हूॅ पति की तरफ से कभी प्रेम और सम्मान नही मिला। हम स्त्रियो के लिए इससे बढकर महान दुख और क्या होगा? इसलिए ऐसा लगता है, मेरे शोक और विलाप का कभी अन्त नही होगा। राम तुम्हारे रहते मेरी यह दशा है अत तुम्हारे न रहने पर मेरी क्या दशा होगी। मै निश्चित रूप से मर जाऊॅगी। इसलिए मै अन्त मे अपना निश्चय कह देती हूॅ–

[७] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २०/३२
[८] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २०/३७
[९] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २०/३८

अनुव्रजियष्यामि वन त्वयैव गौ सुदुर्बला वत्सभिवाभिकाछया।।[10]

तुम्हारे बिना यहाँ व्यर्थ कुत्सित जीवन क्यो बिताऊँ। बेटा जैसे गाय दुर्बल होने पर भी अपने बछडे के लोभ से उसके पीछे-पीछे चली जाती है, उसी प्रकार मै भी तुम्हारे पीछे-पीछे ही वन चली-चलूँगी। इस रूप मे वाल्मीकि की कौशल्या का चित्रण अत्यन्त मनोवैज्ञानिक सजीव एव यथार्थ बन सका है। विकल कौशल्या को श्रीराम पतिधर्म का महान उपदेश देकर समझाते है और कहते है कि पति को छोडकर वन चलना आपके लिये किसी भी प्रकार से उचित नही है क्योकि पति की सेवा ही स्त्री के लिए सनातन धर्म है–

शुश्रूषा क्रियता तावत् स हि धर्म सनातन ।[11]

राम के समझाने पर कौशल्या अयोध्या मे रहने के लिए सहमत हो जाती है और राम से कहती है अब तुम जाओ तुम्हारा सदा कल्याण हो–

गच्छ पुत्र त्वमेकाग्रो भद्र तेऽस्तु सदा विभो।।[12]

पुत्र राम को वन भेजते समय कौशल्या ने परम स्नेह युक्त हृदय से उनको शुभ आशीर्वाद दिया तथा यात्राकालिक मगल कृत्यो का अनुष्ठान किया। विदा के अवसर पर राजा दशरथ से कौशल्या पर विशेष ध्यान देने के लिए राम निवेदन करते है। सीता को कौशल्या पातिव्रतधर्म पालन करने का उपदेश देती है– जो स्त्रियाँ अपने प्रियतम पति के द्वारा सदा सम्मानित होकर भी सकट पडने पर उसका आदर नही करती है, वे इस सम्पूर्ण जगत मे 'असती' के नाम से पुकारी जाती है–

असत्य. सर्वलोकेऽस्मिन् सतत सत्कृता प्रियै ।
भर्तार नानुमन्यन्ते विनिपातगत स्त्रिय ।।[13]

---

[10] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २०/५४
[11] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २४/१३
[12] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २४/३३
[13] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ३९/२०

कौशल्या के धैर्य को देखकर अन्त मे अयोध्यावासी भी कह उठते है कि कौशल्या का हृदय जरूर लोहे का बना है अन्यथा वह अब तक विदीर्ण हो जाता–

आयस हृदय नून राममातुरसशयम्।
यद् देव गर्भप्रतिमे वन याति न भिद्यते।।[१४]

परन्तु माता का हृदय कब तक धीरज रखता, जब राम का रथ वन के लिए चल पडा तब कौशल्या पागल स्त्री की भॉति विलाप करती है उसके पीछे- दौड पडी – हा राम! हा राम! हा सीते! हा! लक्ष्मण! की रट लगाती और रोती हुई।

तथा रुदन्ती कौसल्या रथ तमनुधावतीम्।
क्रोशन्ती राम रामेति हा सीते लक्ष्मणेति च ।।[१५]

राम के वन चले जाने के बाद तथा सुमन्त के वापस आने के बाद कौशल्या का धैर्य टूट जाता है वे दशरथ पर आक्षेप कर उनकी भर्त्सना करती है कि आप के कारण मेरा बेटा राम वन गया किन्तु उन्हे जैसे ही यह अनुभव होता है कि पति का अपमान उनके द्वारा हुआ है – कौशल्या महाराज से क्षमा याचना करती है–

प्रसीद शिरसा याचे भूमौ निपतितास्मि ते।
याचितास्मि हता देव क्षन्तव्याह नहित्वया।।[१६]

वह अपने पति के अन्तिम क्षणो मे पति के पास ही रहती है उसके हाथो का स्पर्श पाकर दशरथ सुखद-अनुभूति करते है और उन्ही की गोद मे प्राण त्याग देते है।

भरत के आने पर कौशल्या के विदीर्ण हृदय का घाव ताजा हो जाता है। वह भरत से कहती है "भरत! तेरी राज्याकॉक्षापूर्ण करने के लिए बडी क्रूरता से यह राज्य तुम्हारी माता ने प्राप्त किया है। अत इस अकटक राज्य को स्वीकार करो। अब तेरी माता एक मेहरबानी कर दे तो अच्छा हो कि मुझे भी वन मे भेज दे, न हो तो तू ही

---

[१४] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४०/२३
[१५] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४०/४४
[१६] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ६२/१२

भेज दे। निष्पाप भरत आक्षेपो से हतप्रभ हो उठते है। स्वय को निर्दोष बताते हुए माता कौशल्या से क्षमा याचना तथा दण्ड याचना करते है तब कौशल्या पुन पूर्व स्थित मे लौट आती है भरत को गोद मे बिठा लेती है तथा उन्हे गले लगाती है–

दिष्टया न चलितो धर्मदात्मा ते सहलक्षण ।
वत्स सत्यप्रतिज्ञो हि सता लोकान्वाप्स्यसि।।
इत्युक्त्वा चाड्कमानीय भरत भातृवत्सलम्।
परिष्वज्य महाबाहु रूरोद भृशदु खिता।।[१७]

भरत के साथ माता कौशल्या चित्रकूट जाती है वहॉ पर भी वह भरत की चिता कुछ ज्यादा ही करती दिखायी देती है। राम से प्रत्यक्ष भेट होने पर भी अत्यधिक विह्वल होने के कारण मुख से कुछ बोल नही सकी है।

लका विजय कर राम के लौटने पर कौशल्या स्वय रथ पर सवार होकर स्वागत के लिए जाती है–

ततो यानान्युपारूढा सर्वा दशरथ स्त्रिय ।
कौसल्या प्रमुखे कृत्वा सुमित्रा चापि निर्युयु ।[१८]

माता कौशल्या के पास पहुॅचकर श्रीराम ने प्रणत हो उनके दोनों पैर पकड लिए और माता के मन को अत्यन्त हर्ष प्रदान किया–

जग्राह प्रणत पादौ मनो मातु प्रहर्षयन्।[१९]

इस प्रकार वाल्मीकि की कौशल्या सरला, सामान्या और भावाकुल है– भावावेश उसे तुरन्त झकझोर देता है और हृदय जैसा अनुभव करता है, वाणी निसकोच उसे प्रकट कर देती है। विवेक का अकुश उस पर नही रह जाता है। कौशल्या का चरित्र

---

[१७] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ७५/६२–६३
[१८] वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड १२७/१५
[१९] वाल्मीकि रामायण युद्ध काण्ड १२७/५०

सवेदनशील नारी मनोविज्ञान के आधार पर गढा गया है। और उसके चरित्र को मानवीय सवेदना के यथार्थ धरातल पर प्रतिष्ठित किया गया है।

कैकेयी

कैकेयी दशरथ की कनिष्ठ पत्नी, भरत की माता एव कैकेय नरेश की पुत्री के रूप मे बाल्मीकि रामायण मे वर्णित है। कैकेयी का परिचय अश्वमेध यज्ञ के समय खीर–वितरण प्रसग मे होता है किन्तु उनके चरित्र का वास्तविक विकास राम के वनवास गमन प्रसग मे होता है। कैकेयी का चरित्र प्रशसा और निन्दा का पात्र एक साथ ही हुआ है। वाल्मीकि की कैकेयी मूलत अत्यन्त स्वाभाविक रूप मे चित्रित हुई है, अत उसके दोषो के बावजूद वह आकर्षक एव सहानुभूति के योग्य बन गयी है।

कैकेयी के शील स्वभाव एव शक्ति सामर्थ्य का परिचय राम वनवास के सदर्भ मे होता है। दशरथ ने राम के राज्याभिषेक का निर्णय मन्त्रिपरिषद एव जन ससद की सहमति से किया और उनका यह निर्णय तुरन्त क्रियान्वित हो रहा है। अयोध्या पुरी मे सर्वत्र खुशी की लहर दौड रही है। भरत और शत्रुघ्न की अनुपस्थिति की चिन्ता कैकेयी को ही नही है, तो औरो को कैसे हो? राम के राज्याभिषेक का समाचार पाकर कैकेयी अत्यन्त हर्षित होती है – खिन्नमना मन्थरा जब कैकेयी को सावधान करते हुए कहती है कि "देवि! तुम्हारे सौभाग्य के महान विनाश का कार्य प्रारम्भ हो गया है, जिसका कोई उपाय नही है। कल महाराज दशरथ श्रीराम को युवराज के पद पर अभिषिक्त कर देगे।

अक्षय सुमहद् देवि प्रवृत्त त्वद्विनाशनम्।
राम दशरथो राजा यौवराज्येऽभिषेक्ष्यति।।[२०]

मन्थरा उसे राम के राज्याभिषेक के खिलाफ कार्य करने के लिए प्रेरित करती है किन्तु राज्याभिषेक का समाचार सुनकर कैकेयी अत्यन्त हर्षित होती है और

[२०] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ७/२०

विस्मयविमुग्ध हो मुस्कुराते हुए उसने कुब्जा को पुरस्कार रूप मे एक बहुत सुन्दर दिव्य आभूषण प्रदान किया –

अतीव सा तु सतुष्टा कैकेयी विस्मयान्विता।
दिव्यमाभरण तस्यै कुब्जायै प्रददौ शुभम्।।[२१]

कैकेयी कहती है– मन्थरे तूने मुझे बडा प्रिय समाचार सुनाया है। तूने मेरे लिए जो यह प्रिय सवाद सुनाया इसके लिए मै तेरा और कौन सा उपकार करूँ। मै राम और भरत मे कोई भेद नही समझती अत यह जानकर कि राजा श्रीराम का अभिषेक करने वाले है, मुझे बड़ी खुशी हुई है।

रामे व भरते वाह विशेष नोपलक्षये।
तस्मात् तुष्टास्मि यद् राजा राम राज्येऽभिषेक्ष्यति।।[२२]

मन्थरा कैकेयी को हर प्रकार से राम के राज्याभिषेक से होने वाली क्षति के प्रति सजग करती है। वह कहती है कि तुम कौशल्या की दासी बनोगी और भरत को राम की गुलामी करनी पडेगी। फिर भी कैकेयी कहती है कि मेरे लिए जैसे भरत आदर के पात्र है वैसे ही बल्कि उनसे भी बढकर श्रीराम है, क्योकि वे कौशल्या से भी बढकर मेरी बहुत सेवा किया करते है–

यथा वै भरतो मान्यस्तथा भूयोऽपि राधव ।
कौशल्यातोऽतिरिक्त च मम शुश्रुसते बहु।।[२३]

मन्थरा कैकेयी से कहती है कि तुम मूर्खता वश अनर्थ को अर्थ समझ रही हो। अरे जब राम राजा होगे तो उसके बाद उनके पुत्र को राज्य मिलेगा और भरत तो राज्य परम्परा से ही अलग हो जायेगे। वह कहती है कि यदि श्रीराम को राज्य मिल

---

[२१] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ७/३२
[२२] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ७/३५
[२३] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ८/१८

गया तो वे निष्कटक राज्य करने के लिए भरत को देश निकाला कर सकते है अथवा उन्हे परलोक भी पहुँचा सकते है।

ध्रुव तु भरत राम प्राप्य राज्यमकण्टकम्।
देशान्तर नाययिता लोकान्तरमथापि वा।।[२४]

तुमने पति प्रेम प्राप्त होने के कारण घमड मे आकर जिनका अनादर किया था वे ही तुम्हारी सौत राम-माता कौशल्या पुत्र की राज्य प्राप्ति से परम सौभाग्यशालिनी हो जायेगी और तुमसे बदला क्यो नही लेगी। एक तरफ राम का राज्याभिषेक होगा वे अनेक समुद्रो और पर्वतो से युक्त समस्त भूमण्ड का राज्य प्राप्त करेगे इसकी तरफ तुम अपने पुत्र भरत के साथ दीन–हीन होकर अशुभ पराभव का पात्र बन जाओगी।

तदा गमिष्यस्य शुभ पराभव सहैव दीना भरतेन भामिनि।।[२५]

अपने साथ अपने पुत्र का अमगल कैकेयी कैसे देख सकती है आखिर एक मॉ अपने पुत्र का अमगल कैसे सहन कर सकती है। मन्थरा ने उसके ह्रदय को झकझोर दिया कैकेयी अत्यधिक क्रोध मे आकर पुत्र मोह मे पडकर एक भयकर सकल्प कर लेती है– कुब्जे मै श्रीराम को शीघ्र ही यहॉ से वन भेजूँगी और तुरत ही युवराज के पद पर भरत का अभिषेक कराऊँगी–

अद्य राममित प्रिय वन प्रस्थापयाम्यहम्।
यौवराज्येन भरत क्षिप्रमद्याभिषेचये।।[२६]

कैकेयी के सकल्प को देखकर मन्थरा प्रसन्नमन होकर उसे वरदान प्रसग की याद दिलाती है कि देवासुर सग्राम मे तुमने अपनी कुशलता से राजा का प्राण बचाया था जिससे प्रसन्न होकर महाराज ने दो वरदान तुम्हे दिया था जो अभी तक मॉगना शेष है। उसी वरदान का प्रयोग कर तुम अपना अभीष्ट साध लो एक से भरत को राज

---

[२४] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ८/२७
[२५] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ८/३८
[२६] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ६/२

गद्दी और दूसरे से निष्कटक राज्य के लिए राम को चौदह वर्ष का वनवास मॉग लो। लेकिन वरदान तभी मॉगना जब राजा सत्य की शपथ ले ले जिससे फिर वरदान पाने मे दिक्कत न हो–

व्यवस्थाप्य महाराज त्वामिम वृणुया वरम्।[२७]

कैकेयी मन्थरा की अत्यधिक प्रशसा करती है और कहती है कि मेरा मनोरथ पूर्ण होने पर तुझे बहुत सारा आभूषण दूँगी और बहुत सारी दासियॉ तेरी उसी प्रकार की सेवा करेगी जिस प्रकार से तू मेरी करती है "वह कहती है असुर राज शम्बर को जिन सहस्र मायाओ का ज्ञान था वे सब तेरे (मन्थरा) हृदय मे स्थित है, इनके अलावा भी तू हजारो प्रकार की मायाएँ जानती है"।[२८] क्रोधागार मे प्रविष्ट होने पर कैकेयी ने वह सब किया जिससे कामी, लोभासक्त राजा दशरथ से अपना कार्य सिद्ध करा सके। कैकेयी का स्वरूप कुटिल कठोर दृढ निश्चयी, चतुर रूप मे वाल्मीकि ने चित्रित किया है। काम-विवश राजा की दुर्बलता की नस ही कैकेयी ने दबायी है साथ ही सत्य प्रतिज्ञा, कुल मर्यादा आदि का स्मरण दिलाकर राजा को और अधिक निर्बल एव विवश कर दिया। उसने अपने पहले वरदान से भरत का अभिषेक तथा दूसरे से राम को चौदह वर्षो का वनवास के दृढ सकल्प को सुना दिया और अन्त मे कह दिया कि अब धर्म हो या अधर्म, झूठ हो या सच, जिस बात के लिए आपने मुझसे प्रतिज्ञा कर ली है, उसमे कोई परिवर्तन नही हो सकता– और यदि राम का अभिषेक होगा तो मेरा मरण होगा –

भवत्वधर्मो धर्मो वा सत्य वा यदि वानृतम्।
यन्त्वया सश्रुत मह्य तस्यु नास्ति व्यतिक्रम ।
x x x
पश्यतस्ते मरिष्यामि रामो यद्यभिषिच्यते।।[२९]

---

[२७] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ९/२६
[२८] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ९/४५
[२९] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड १२/४६, ४७

कैकेयी के दृढ सकल्प के आगे दशरथ का सारा तर्क एव सुझाव व्यर्थ हो जाता है। कठोर हृदय कैकेयी किसी भी तर्क को नही मानती। अन्त मे राजा दशरथ की आज्ञा से सुमन्त आते है। कैकेयी वरदान प्रसग को स्पष्ट करती है और राम वन जाने के लिए प्रसन्नता से उद्यत हो जाते है। राम वन–गमन को सुनकर वशिष्ठ, सुमन्त सभी कैकेयी को धिक्कारते है किन्तु कैकेयी अपने सकल्प से जरा सा भी विचलित नही होती है। इस प्रकार वाल्मीकि ने कैकेयी के चरित्र को अत्यन्त दृढसकल्पा नारी के रूप मे यहॉ पर चित्रित किया है। सरल–सहज हृदया कैकेयी परिस्थितियो के अधीन होकर इतनी दृढ सकल्प वाली एव कठोर हो जाती है इसका मनोवैज्ञानिक चित्रण वाल्मीकि ने किया है।

भरत के ननिहाल से आने पर वह प्रसन्नचित्त उनसे मिलती है किन्तु भरत को जैसे ही पता चलता है कि दशरथ के मरण और राम के वनवास का कारण उनकी माता कैकेयी ही है और उसके मूल मे उनके राज्याभिषेक की मॉग है भरत को कैकेयी से घृणा हो जाती है। कैकेयी को भरत धिक्कारते हुए कहते है "मै ऐसा कदापि नही होने दूँगा जैसा तूने सोचा है। तू अब जलती आग मे प्रवेश कर जा, या स्वय दण्डकारण्य मे चली जा अथवा गले मे रस्सी बॉध कर प्राण दे दे, इसके सिवा तेरे लिए दूसरी कोई गति नही है–

सा त्वमग्नि प्रविश वा स्वय वा विश दण्डकान्।
रज्जु बद्वताथवा कण्ठे नहि तेऽन्यत् परायणम्।।[३०]

अपने पुत्र भरत द्वारा उपेक्षित की गयी कैकेयी की महत्वाकाक्षा पर पानी फिर जाता है। दशरथ के मरण से तो वह गभीर हो गयी थी किन्तु भरत की उपेक्षा ने उसे आत्ममथन के लिए मजबूर कर दिया। वह भरत के साथ चित्रकूट राम को लौटाने के लिए अपनी सपत्नियो के साथ जाती है। राम सभी माताओ से प्रेमवत मिलते है। भरत से श्रीराम कहते है "हे तात् माता कैकेयी ने कामना से अथवा लोभवश तुम्हारे लिए जो

---

[३०] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ७४/३३

कुछ किया है, उसको मन मे न लाना और उसके प्रति सदा वैसा ही बर्ताव करना जैसा अपनी पूजनीय माता के प्रति करना उचित है"।

कामाद् वा तात लोभाद वा मात्रा तुभ्यमिदकृतम्।
न तन्मनासि कर्त्तव्य वर्तितव्य च मातृवत।।[31]

इसी प्रकार राम ने शत्रुघ्न से अपनी और सीता की सौगन्ध देकर कैकेयी की रक्षा करने एव उनके प्रति क्रोध न करने के लिए अश्रुपूरित नेत्रो से कहा।

राम के लका विजय करके अयोध्या आने पर सभी माताओ के साथ कैकेयी श्रीराम के स्वागत के लिए नदिग्राम जाती है और राम का सहृदय आदर भाव से स्वागत करती है। श्रीराम ने कौशल्या, सुमित्रा और कैकेयी को प्रणाम करके उन्होने सभी माताओ का अभिवादन किया।

इस प्रकार कैकेयी का चरित्र आदि काव्य मे अत्यन्त महत्वपूर्ण बन पडा है। नारी चरित्र के परस्पर विरोधी (सद–असद) के चरमोत्कर्ष का समन्वयात्मक चरित्र कैकेयी के रूप मे चित्रित हुआ है। कैकेयी के चरित्र को वाल्मीकि ने अमर बना दिया है।

सुमित्रा

लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता, राजा दशरथ की तीन रानियो मे एक धर्मेस्थिता धन्य सुमित्रा[32] के रूप मे सुमित्रा का परिचय वाल्मीकि ने दिया है। बातचीत करने मे कुशल, दोष रहिता तथा रमणीया के रूप मे इनका उल्लेख रामायण मे प्राप्त होता है।

सुमित्रा का परिचय बाल्मीकि रामायण मे अश्वमेध यज्ञ के फलस्वरूप प्राप्त खीर वितरण के सदर्भ मे मिलता है। किन्तु उनके चरित्र का वास्तविक विकास राम के राज्याभिषेक तथा वन गमन प्रसग से होता है।

---

[31] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड २५/६
[32] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४४/१

सुमित्रा का माता रूप अत्यन्त उज्जवल एव आदर्श पूर्ण रहा है। राम के साथ लक्ष्मण जब वन जाने के लिए माता सुमित्रा से आज्ञा चाहते है उस समय सुमित्रा ने उन्हे सहर्ष अनुमति देकर जो उपदेश किया है वह अत्यन्त उत्कृष्ट एव दिव्य है।

अपने पुत्र महाबाहु लक्ष्मण को प्रणाम करते देख उनका हित चाहने वाली माता सुमित्रा ने बेटे का मस्तक सूँघ कर कहा – वत्स तुम अपने सुहृद श्रीराम के परम अनुरागी हो, इसलिए मै तुम्हे वनवास के लिए विदा करती हूँ। अपने बडे भाई के वन मे इधर उधर जाते समय तुम उनकी सेवा मे कभी प्रमाद न करना। ये सकट मे हो या समृद्धि मे ये ही तुम्हारी परमगति है। निष्पाप लक्ष्मण! ससार मे सत्पुरूषो का यही धर्म है कि सर्वदा अपने बडे भाई की आज्ञा के अधीन रहे–

सृष्टस्त्व वनबासाय स्वनुरक्त सुहृज्जने।
रामे प्रमाद या कार्षी पुत्र भ्रातरि गच्छति।।
व्यसनी वा समृद्धो वा गतिरोष तवानघ।
एष लोके सता धर्मो यज्जेष्ठवशगो भवेत।।[33]

सुमित्रा लक्ष्मण से कहती है कि दान देना, यज्ञ मे दीक्षा ग्रहण करना और युद्ध मे शरीर त्यागना – यही इस कुल का उचित एव सनातन आचार है।

इद हि वृत्तमुचित कुलस्यास्य सनातनम्।
दान दीक्षा च यज्ञेषु तनु त्यागो मृधेषु हि।।[34]

बेटा लक्ष्मण! तुम श्रीराम को ही अपना पिता महाराज दशरथ समझो, जनक नदिनी सीता को ही अपनी माता सुमित्रा मानो और वन को ही अयोध्या जानो। अब सुख पूर्वक यहॉ से तुम प्रस्थान करो–

राम दशरथ विद्धि मा विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामटवी विद्धि गच्छ तात यथा सुखम्।।[35]

---

[33] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४०/५,६
[34] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४०/७
[35] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४०/९

सुमित्रा के चरित्र का आदर्श उनके आदर्श पत्नीत्व रूप मे स्पष्ट होता है। कैकेयी के प्रति आसक्ति वश राजा दशरथ द्वारा उपेक्षित किये जाने के बावजूद कभी भी किसी भी परिस्थिति मे राजा द्वारा किये गये कार्यों के लिए उन्हे नही कोसा, भले ही उनकी ऑखो का तारा बेटा लक्ष्मण वन क्यो न चला गया हो। राम के वियोग मे पति की मृत्यु हो जाने पर धर्मपरायणा, साध्वी स्त्री की भॉति अत्यन्त मलीन एव दुखी स्थिति मे सुमित्रा पति के पास दिखायी देती है। वह कौशल्या की प्रिय सखी बनकर हर परिस्थिति मे कौशल्या के साथ दिखायी देती है। राम के वन चले जाने के पश्चात् विकल कौशल्या को वह धैर्य बधाती है – बहिन जो राज्य छोडकर अपने महात्मा पिता को भली भॉति सत्यवादी बनाने के लिए वन मे चले गये है वे तुम्हारे महाबली श्रेष्ठ पुत्र श्रीराम उत्तम धर्म मे स्थित है, जिसका सत्पुरूषो ने सर्वदा और सम्यक् प्रकार से पालन किया है तथा जो परलोक मे भी सुखमय फल प्रदान करने वाला है। ऐसे धर्मात्मा के लिए कदापि शोक नही करना चाहिए।

यस्तवार्ये गत पुत्रस्त्यक्त्वा राज्य महाबल ।
साधु कुर्वन् महात्मान पितर सत्यवादिनम्।।
शिष्टैराचरिते सम्यक्शश्वत् प्रेत्य फलोदये।
रामो धर्मे स्थित श्रेष्ठो न स शोच्य कदाचत्।।[३६]

जो प्रभु ससार मे अपनी कीर्तिमयी पताका फहरा रहे है और सदा सत्यव्रत के पालन मे तत्पर रहते है उन धर्म स्वरूप तुम्हारे पुत्र श्रीराम को कौन सा श्रेय प्राप्त नही हुआ है।

कीर्ति भूता पताका यो लोके भ्रमयति प्रभु ।
धर्म सत्यव्रतपर कि न प्राप्तस्तवात्मज ।।[३७]

---

[३६] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४४/३, ४
[३७] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४४/७

सुमित्रा का यह सारगर्भित वचन सुनकर माता कौशल्या का सारा शोक तत्काल उनके मन से विलीन हो जाता है ठीक उसी तरह जैसे शरद् ऋतु का थोडे जल वाला बादल शीघ्र ही छिन्न–भिन्न हो जाता है।

निशम्य तल्लक्ष्मणमातृ वाक्य, रामस्य मातुर्नरदेवपत्न्या ।
सद्य शरीरे विन नाश शोक, शरद्गतो मेघ इवाल्पतोय ।।[३८]

आदर्श माता के रूप मे लक्ष्मण के प्रति सुमित्रा के जो भाव है उससे कही अधिक उच्च भाव विमाता के रूप मे राम के प्रति है। वाल्मीकि के अनुसार वह राम के प्रति आत्मीयता से विस्तृत श्रेष्ठत्व के भाव व्यक्त करती है।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण मे सुमित्रा का चरित्र सक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित है। उसका चरित्र स्वभाव की निश्छलता, असीम त्याग तथा धर्म निष्ठता की गरिमा सजोए हुए है। निर्विवाद रूप से सुमित्रा राम कथा की ऐसी पात्र है जो आदर्श रूप मे चित्रित की गयी है। कही भी किसी प्रकार की एक भी मानवीय दुर्बलता उसके चरित्र मे नही दिखायी देती है।

ताटका

विश्वामित्र द्वारा नियोजित यज्ञ की रक्षा के लिए उनके साथ राम और लक्ष्मण ने जाते हुए भयकर वन को देखकर मुनि से उस वन–प्रदेश के बारे मे पूँछा मुनि ने ताटका वन के बारे मे बताते हुए ताटका राक्षसी की कथा बतायी। पूर्वकाल मे सुकेतु नाम से प्रसिद्व एक यक्ष थे उन्होने सन्तान के लिए बडी तपस्या की जिसके फलस्वरूप सुकेतु को एक कन्या रत्न की प्राप्ति हुई जिसका नाम ताटका था। ब्रह्मा जी ने उस कन्या को एक हजार हाथियो के समान बल प्रदान किया था। ताटका का विवाह सुन्द नामक यक्ष से हुआ। ताटका के मारीच नामक पुत्र हुआ। वह एक दुर्जय पुरूष था। अगस्त्य मुनि के शाप से वह राक्षस हो गया –

---

[३८] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड ४४/३१

मारीच नाम दुर्धर्षय शापाद् राक्षसोऽभवत्।[३९]

अगस्त्य के ही शाप से सुन्द मर गया। उसके मर जाने पर ताटका पुत्र सहित जाकर मुनि अगस्त को मौत के घाट उतार देने की इच्छा से मुनि को खाने के लिए गर्जना करती हुई दौडी। उसे आती देखकर मुनि ने कहा– तू विकराल मुखवाली नरभक्षिणी राक्षसी हो जा। तू है तो महायक्षी परन्तु अब शीघ्र ही इस रूप को त्याग कर तेरा भयकर रूप हो जाये।

इद रूप विहायाशु दारूण रूपमस्तु ते।[४०]

इस प्रकार शाप मिलने के कारण ताटका का अमर्ष और भी बढ गया और वह उस सुन्दर देश को उजाडने लगी।

हे राम तुम्हारे सिवा इस शाप युक्त ताटका को मारने के लिए तीनो लोको मे दूसरा कोई समर्थ नही है। हे नर श्रेष्ठ। तुम स्त्री हत्या का विचार करके इसके प्रति दया न दिखाना। एक राजपुत्र को चारो वर्णो के हित के लिए स्त्री हत्या भी करनी पडे तो उससे मुँह नही मोडना चाहिए –

नहि ते स्त्रीवधकृते घृणाकार्या नरोत्तम।
चाहुवर्ण्यहितार्थ हि कर्त्तव्य राजसूवना।।[४१]

जिनके ऊपर राज्य के पालन का भार है उनका तो यह सनातन धर्म है। ताटका पापिनी है अत वह वधयोग्य है विश्वामित्र के द्वारा ऐसा सुनकर राम ने उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करके धनुष की टकार की जिसकी ध्वनि को सुनते ही वह क्रोधपूर्ण होकर उनके ऊपर दौडी। राम ने उसके हाथो को तीखे वाणो से काट दिया किन्तु माया के कारण वह राम और लक्ष्मण को मोह मे डालते हुए अदृश्य हो गयी –

अन्तर्धान गता यक्षी मोहयन्ती स्वभामया।[४२]

---

[३९] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २५/६

[४०] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २५/१३

[४१] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २५/१७

[४२] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २६/१६

उसने उन पर पत्थर बरसाना शुरू किया और आकाश मे विचरण करने लगी। विश्वामित्र ने कहा कि दया मत दिखाओ राम! यह पापिनी यज्ञो की बाधक है। सायकाल होने पर इसकी माया प्रबल हो उठेगी अत उससे पहले इसका वध कर दो। मुनि के कहने पर शब्द बेधी बाण से राम ने उसे सब ओर से अवरूद्ध कर दिया तथा एक वाण मारकर उसकी छाती चीर डाली और वह पृथ्वी पर गिर पडी और मर गयी।

शरेणोरसि विव्याध सा पपात् ममार च।[४३]

उसे मारी गयी देखकर इन्द्र तथा समस्त देवताओ ने प्रसन्नता पूर्वक श्रीराम को साधुवाद देते हुए उनकी सराहना की।

अहल्या

वाल्मीकि रामायण मे अहल्या के चरित्र को सम्पूर्णता के साथ वाल्मीकि ने चित्रित किया है। वाल्मीकि ने अहल्या के चरित्र पतन एव उद्धार की कथा का वर्णन किया है। जनकपुर (मिथिला) के उपवन मे एक पुराने आश्रम को देखकर, जो रमणीय होते हुए भी सूनसान था– उसके बारे मे श्री राम ने विश्वामित्र से पूछा "मुनिवर यह आश्रम किसका है और क्यो सूनसान है?" तब विश्वामित्र ने बताया कि यह आश्रम महाज्ञानी महात्मा गौतम का था उस समय यह आश्रम बडा ही दिव्य एव पावन था देवता भी इसकी पूजा एव प्रशसा किया करते थे।

गौतमस्य नरश्रेष्ठ पूर्व मासीन्महात्मन ।
आश्रमो दिव्य सकाश सुरैरपि सुपूजित ।।[४४]

एक दिन तपस्वी गौतम ऋषि के आश्रम पर न रहने पर शचीपति इन्द्र ने गौतम ऋषि की तपस्या भग करने के उद्देश्य से उन्ही का रूप धारण कर अहल्या से प्रणय–निवेदन किया– "सदा सावधान रहने वाली सुन्दरी! रति की इच्छा रखने वाले

---

[४३] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २६/२६
[४४] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/१५

प्रार्थी पुरुष ऋतु काल की प्रतीक्षा नही करते है– सुन्दर कटि प्रदेश वाली सुन्दरी! मै तुम्हारे साथ समागम करना चाहता हूँ"–

ऋतुकाल प्रतीक्षन्ते नार्थिन सुसमाहिते।
सगम त्वहमिच्छामि त्वया सह सुमध्यमे।।[४५]

मुनिवेश इन्द्र को पहचानकर भी उस दुर्बुद्धि नारी ने "अहो ! देवराज इन्द्र मुझे चाहते है" इस कौतुहलवश उनके साथ समागम का निश्चय कर प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। और समागम के पश्चात् सन्तुष्टचित्त होकर कहा– सुरश्रेष्ठ मै आपके समागम से कृतार्थ हो गयी। अब आप शीघ्र चले जाइये। मेरी और अपनी मुनि के कोप से रक्षा कीजिए।

आत्मान मा च देवेश सर्वथा रक्ष गौतमात्।[४६]

इन्द्र को मुनि वेश मे देखकर गौतम ऋषि ने अत्यन्त क्रोध मे आकर कहा – दुर्मते तूने मेरा रूप धारण करके माफ न करने योग्य पाप कर्म किया है इसलिए तू विफल (अण्डकोषो से रहित) हो जायेगा–

अकर्तव्यमिद यस्माद् विफलस्त्व भविष्यसि।।[४७]

अपनी पत्नी को शाप देते हुए उन्होने कहा कि – दुराचारिणी ! तू यहॉ कई हजार वर्षो तक हवा पीकर कष्ट उठाती हुई राख मे पडी रहेगी। समस्त प्राणियो से अदृश्य रहकर इस आश्रम मे निवास करेगी। जब दशरथ कुमार श्रीराम इस घोर वन मे पदार्पण करेगे, उस समय तू पवित्र होगी –

यदा त्वेतद्वन घोर रामो दशरथात्मज ।
आगमिष्यति दुर्धर्षस्तदा पूता भविष्यसि।।[४८]

---

[४५] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/१८
[४६] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/२१
[४७] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/२७
[४८] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/३१

हे श्रीराम अब तुम गौतम मुनि के वचन को सत्य प्रमाणित करते हुए अहल्या का उद्धार करो। राम ने आश्रम मे जाकर देखा – महासौभाग्यशालिनी अहल्या अपनी तपस्या से देदीप्यमान हो रही थी किन्तु इस लोक के प्राणी उसे देख नही सकते थे। उसका स्वरूप दिव्य था। विधाता ने बडे प्रयत्न से उसके अगो का निर्माण किया था वह मायावी सी प्रतीत होती थी –

प्रयत्नानिर्मिता धात्रा दिव्या मायामयीमिव।[४९]

गौतम के शापवश श्रीराम का दर्शन होने से पूर्व वह किसी भी प्राणी के लिए अदृश्य थी किन्तु श्रीराम का दर्शन मिल जाने से जब उसके शाप का अन्त हो गया तब वह सभी को दिखायी देने लगी।

शपस्यान्तमुपागम्य तेषा दर्शनभागता।।[५०]

उस समय श्रीराम और लक्ष्मण ने बडी प्रसन्नता के साथ अहल्या के दोनो चरणो का स्पर्श किया। महर्षि गौतम के वचनो का स्मरण करके अहल्या ने बडी सावधानी के साथ उन दोनो भाइयो को आदरणीय अतिथि के रूप मे अपनाया और पाद्य, अर्ध्य आदि अर्पित करके उनका सत्कार किया। श्रीराम ने शास्त्रीय विधि अनुसार अहल्या का आतिथ्य ग्रहण किया–

प्रतिजग्राह काकुत्स्यो विधि दृष्टेन कर्मणा।[५१]

गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या ने अपनी तप शक्ति से विशुद्ध स्वरूप को प्राप्त होकर मुनि का साथ पाकर सुखी हो गयी। मुनि तथा अहल्या दोनो ने श्रीराम की विधिवत् पूजा की और मुनि ने अपनी तपस्या पुन प्रारम्भ की।

[४९] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४६/१४
[५०] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४६/१६
[५१] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४६/१८

सीता

रामकथा के नारी पात्रो मे सीता का चरित्र सर्व प्रधान है। सम्पूर्ण राम-कथा का कथा प्रवाह सीता रूपी स्रोत से प्रवह्मान है। सभवत इसी कारण वाल्मीकि रामायण मे सीता के महत्व को प्रकट करते हुए कहा गया है – काव्य रामायण कृत्स्न सीतायाश्चरित महत्।[५२] आदि काव्य की सीता मे हम एक निश्चयात्मक बुद्धि वाली, निष्कपट, सरल हृदय, विनयसम्पन्न किन्तु आत्मसम्मान की भावनाओ से युक्त एक क्षत्राणी का चित्र पाते है। सीता का चरित्र भारतीय नारीत्व का महान आदर्श है।

वाल्मीकि ने सीता की उत्पत्ति पृथ्वी से बतायी है। वह जनक–पालिता विदेह कन्या के रूप मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित है। वाल्मीकि ने सीता के सौन्दर्य का वर्णन पुत्री रूप मानकर किया है। वाल्मीकि ने सीता का परिचय बालकाण्ड मे दिया है। राम के धनुष तोडने के पश्चात् राम और सीता का विधिवत् विवाह राज-समाज के साथ होता है और वे विवाहोपरान्त सुख पूर्वक अयोध्या मे रहने लगती है। वाल्मीकि के अनुसार सीता का सौन्दर्य अनुपम है।

देवताभि समारूपे सीता श्रीरिव रूपिणी।[५३]

सीता रूप मे देवागनाओ के समान थी और मूर्तिवती साक्षात् लक्ष्मी सी प्रतीत होती थी।

सीता के चरित्र का वास्तविक विकास राम के वन गमन प्रसग से होता है। राम का राज्याभिषेक होने वाला है। वे पिता के पास गये हुए है। सीता देवताओ की पूजा करके प्रसन्नचित्त श्रीराम के आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी उसी समय श्रीराम आकर कहते है – सीते मेरे पूज्य पिताजी मुझे वन मे भेज रहे है–

सीते तत्रभवास्तात प्रव्राजयति मा वनम्।[५४]

---

[५२] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४/१७

[५३] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७७/२८

[५४] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २६/१६

सीता को राम विस्तार से वरदान प्रसग और अपने वन जाने के कारण को बताते है। सीता से भरत के समक्ष पति की प्रशसा न करके उनका सम्मान करने के लिए कहते है। सीता को सास–ससुर की सेवा करने तथा व्रत-उपवास करने की सलाह भी राम देते है। किन्तु सीता अपने प्रबल तर्कों के द्वारा पत्नी धर्म की स्थापना करते हुए राम के साथ वन जाने को ही उचित ठहराती है– "हे पुरूष प्रवर! केवल पत्नी ही अपने पति के भाग्य का अनुसरण करती है अत आपके साथ ही मुझे भी वन मे रहने की आज्ञा मिल गयी है"–

भतुर्भाग्य तु नार्येका प्राप्नोति पुरूषर्षभ।
अतश्चैववाह्यादिष्टा वने वस्तव्यमित्यापि।।[५५]

मेरे हृदय का सम्पूर्ण प्रेम एक मात्र आपको ही अर्पित है आपके सिवा और कही मेरा मन नही जाता, यदि आपसे वियोग हुआ तो निश्चय ही मेरी मृत्यु हो जायेगी इसलिए आप मेरी याचना सफल करे, मुझे साथ ले चले, यही अच्छा होगा, मेरे रहने से आप पर कोई भार नही पडेगा।

अनन्यभावामनुरक्तचेतस
त्वया वियुक्तामरणाय निश्चिताम्।।[५६]

राम सीता के समक्ष वन के भयकर कष्टो का वर्णन करते है किन्तु सीता पति के साथ सभी कष्टो मे अपना मगल ही देखती है और वन चलने का औचित्य सिद्ध करती है और अन्त मे कहती है कि यदि आप मुझे वन नही ले जायेगे तो मै मृत्यु का वरण करूँगी। सीता के कठिन आग्रह और वियोग को देखकर अन्त मे श्रीराम उन्हे वन चलने की आज्ञा प्रदान करते है। श्रीराम सीता से कहते है कि– प्राण वल्लभे सीते! तुमने मेरे साथ वन चलने का जो यह सुन्दर निश्चय किया है यह तुम्हारे और मेरे कुल के सर्वथा योग्य ही है –

---

[५५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/५
[५६] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/२३

सर्वथा सदृश सीते मम स्वस्य कुलस्य च।

व्यवसायमनुक्रान्ता कान्ते त्वमति शोभनम्।।[५७]

वन जाते समय सीता को कौशल्या पति सेवा धर्म की शिक्षा देती है, उसे वह सादर ग्रहण करती है और स्वय की पति धर्म विषयक जानकारी बताती है। श्रीराम के साथ वन मे सीता अत्यधिक प्रसन्नता के साथ रहती है। वे आश्रम पर सभी ऋषियो–मुनियो का स्वागत करती है।

पचवटी प्रसग मे सीता के सुरम्य गृह जीवन का चित्र वाल्मीकि ने उपस्थित किया है। सीता फूल चुनते–चुनते ही सुवर्णमृग देखकर बहुत प्रसन्न होती है तथा राम और लक्ष्मण को पुकारती है। लक्ष्मण के मृग के मायावी बतलाने पर सीता बडे प्यार से राम के कधो को स्पर्श कर उस मृग को लाने का आग्रह करती है। जिसके परिणाम स्वरूप सीता का रावण द्वारा हरण किया जाता है।

सीता के पतिव्रत धर्म की सच्ची कसौटी राम के वियोग काल मे ही होती है। अशोक-वाटिका मे राक्षसियो से घिरी हुई सीता निर्भीक स्वर मे कहती है – तुम सब लोग भले ही मुझे खा जाओ, किन्तु मै तुम्हारी बात नही मान सकती –

काम खादत् मा सर्वा न करिष्यामि वो वच।[५८]

सीता रावण को भी निर्भीक होकर उत्तर देती है "जब राक्षसो की सेना का सहार हो जाने से जन स्थान का तेरा आश्रम नष्ट हो गया और तू युद्ध करने के लिए असमर्थ हो गया, तब तुमने छल से यह नीच कार्य किया है। परन्तु, तू अब बच नही सकता, राम और लक्ष्मण की तो गध पाकर भी तू उनके सामने ठहर नही सकता। क्या कुत्ता कभी दो–दो बाघो के सामने टिक सकता है–

शक्य सदर्शने स्थातु शुता शार्दूलयोरिव।[५९]

---

[५७] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ३०/४१

[५८] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २४/८

[५९] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २१/३१

सीता के सच्चे चरित्र का परिचय उस समय मिलता है जब हनुमान उनसे अपने साथ चलने की बात करते है तो सीता स्पष्ट उत्तर देती है कि मै नही चल सकती क्योकि स्वेच्छा से राम के सिवा दूसरे किसी का भी मुझे स्पर्श न हो यही मेरी इच्छा है। यह सच है कि रावण का स्पर्श मुझे हुआ परन्तु वह स्वेच्छा से नही, बल से था।

रावण विजय के पश्चात् राम ने प्राण–प्रिया सीता की मुक्ति तो कर दी किन्तु उनका मन शकाकुल हो उठा। राम के आक्षेपो को निर्मूल करने के लिए सीता ने अग्नि परीक्षा देने का निर्णय किया – लक्ष्मण से चिता बनवायी और अग्नि वन्दन कर सीता ने चिता मे प्रवेश किया परन्तु स्वय दीप्तात्मा अग्नि सीता का हाथ पकडे राम और लोक समाज के सम्मुख सीता के सतीत्व की दुहाई देता है– राम की धर्म पत्नी सीता तन–मन–बुद्धि सब भॉति निष्पाप है– अत आप सीता को निश्चिन्त मन से स्वीकार करे।

एषा ते राम बैदेही पापमस्या न विद्यते।।
नैव वाचा न मनसा नैव बुध्या न चक्षुषा।।[६०]

राम के अयोध्या आने पर सीता राम के साथ पटरानी के रूप मे सुशोभित होती है। यह सीता के जीवन के सुखद पक्ष के रूप मे वर्णित है। अरुन्धती और वशिष्ठ के समान राम और सीता अत्यन्त आनन्द से रहते थे। देव कन्या सम सुन्दर सीता पर राम सदा प्रेम की वर्षा करते थे–

स तया सीतया सार्धमासीनो विरराजह।
अरुन्धत्या इवासीनो वसिष्ठ इव तेजसा।।
एव रामो मुदा मुक्त सीता सुरसुतोपमाम्।
रमयामास वैदेही महन्यहनि देववत्।।[६१]

[६०] वाल्मीकि रामायण यृद्धकाण्ड ११८/५, ६
[६१] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ४२/२३–२४

सीता के करूण कहानी का अन्त अभी नही हुआ था। राज धर्म का पालन करने के लिए श्रीराम को सीता का परित्याग करना पडा किन्तु तब भी सीता क्रुद्ध नही होती, हॉ उस समय बहुत असहाय एव दु खी हो जाती है। गर्भावस्था मे परित्याग होने पर और अधिक असहाय बन जाती है। परन्तु इस परित्याग के लिए वह राम को दोषी नही मानती। वह यह भी मानती है कि राम भी अत्यन्त दु खी है। वह यह भी जानती है कि उनके शील और चरित्र पर राम को तनिक भी सदेह नही है। राम ने केवल राजधर्म के पालन हेतु यह कठोर निर्णय लिया है। राजा को इसी प्रकार कर्त्तव्य मे कठोर होना चाहिए – इसलिए वन मे छोडने आये लक्ष्मण से वह कहती है– "मेरा यह शरीर केवल दु ख भोगने के लिए ही परमात्मा ने बनाया है – इतनी दु खी स्त्री दुनिया मे क्या और कोई होगी? राजा से कह दो कि धर्मानुसार आचरण करे, जैसे भाइयो के साथ वर्ताव करते हो, वैसा ही प्रजा के साथ व्यवहार रखे। यही राजधर्म है और इसी से दुनिया मे यश प्राप्त होगा" –

मार्मिकेय तनुर्नून सृष्टा दु खाय लक्ष्मण।
धात्रा यस्यास्त्था मेऽद्य दु·ख मूर्ति प्रदृश्यते।।[६२]
वक्तत्यश्चैव नृपति धर्मेण सुसमाहित ।[६३]
यथा भ्रातृषु वर्तेथास्त्या पौरेषु नित्यदा।
परमो ह्येष धर्मस्ते तस्मात् कीर्तिरनुन्तमा।।[६४]

सीता अन्त मे मातृत्व से विभूषित होकर अपने सतीत्व का, पातिव्रत धर्म का पालन करने के लिए भू-गर्भ मे समा जाती है। इस बलिदान का मार्मिक चित्रण वाल्मीकि ने किया है। स्वय वाल्मीकि सीता के कलक प्रक्षालन का उत्तर-दायित्व लेते है। वाल्मीकि सीता की शुद्धता का समर्थन करते है। राम लव और कुश को अपना पुत्र स्वीकार करते हुए यह भी स्वीकार करते है कि सीता निष्पाप है किन्तु मैने लोकापवाद

---

[६२] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ४८/३
[६३] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ४८/१४
[६४] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ४८/१५

के भय से सीता का परित्याग किया है यह सच्चाई है। सीता ने धरती माता से प्रार्थना की, कि यदि मैने राम के सिवा दूसरे किसी भी पुरूष का चिन्तन न किया हो तो भगवती वसुन्धरा मुझे अपनी गोद मे ले लो –

यथाहॅ राघवादन्य मनसापि न चिन्तये।
तथा मे माधवी देवी विवर दातुमर्हति।[६५]

पति धर्म का निर्वाह करती हुई सीता धरती मे समा जाती है सभी देवता, जन समुदाय आश्चर्य चकित रह जाता है राम अत्यन्त दु खी हो क्रोधित हो उठते है और ब्रह्माजी उन्हे शान्त करते है।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण मे सीता का चरित्र अत्यन्त गरिमामय है। सीता के चरित्र को मानवीय आधार पर वाल्मीकि ने उतारा है। किन्तु उत्तरार्द्ध मे उसमे अलौकिकता का समावेश हो जाता है। यदि इस प्रसग को निकालकर देखा जाय तो सीता का चरित्र पूर्ण रूप से मानवीय सवेदना से युक्त मानवीय धरातल पर ही वाल्मीकि ने चित्रित किया है। सीता का चरित्र भारतीय नारियो के लिए आदर्श एव अनुकरणीय है।

उर्मिला

वाल्मीकि ने उर्मिला के चरित्र का वर्णन अत्यन्त सक्षिप्त एव साकेतिक रूप मे किया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार– ईक्ष्वाकु कुल श्रेष्ठ परम्परा मे उत्पन्न लक्ष्मण के योग्य उर्मिला को मानकर ऋषिमुनियो की उपस्थिति मे राजा जनक ने कन्या उर्मिला को लक्ष्मण की बहू रूप मे देने की प्रतिज्ञा की –

सीता रामाय भद्रते उर्मिला लक्ष्मणायवै।
द्वितीयामूर्मिला चैव त्रिर्वदामि न सशय ।।[६६]

---

[६५] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ६७/१४
[६६] वाल्मीकि रामायण बालखण्ड ७१/२१–२२

विवाह मडप मे जनक ने लक्ष्मण से कहा – "लक्ष्मण तुम्हारा कल्याण हो आओ, मै उर्मिला को तुम्हारी सेवा मे दे रहा हूँ। इसे स्वीकार करो। इसका हाथ अपने हाथ मे लो। इसमे विलम्ब नही होना चाहिए–

लक्ष्मणागच्छ भद्र ते उर्मिलामुद्यतामया।।
प्रतीच्छपाणि गृहीश्च मा भूत् कालस्य पर्यय ।।[६७]

उर्मिला विवाहोपरान्त अयोध्या डोली द्वारा लायी जाती है। सासुओ आदि द्वारा मगल गीत के साथ गृह–प्रवेश करती है और देव पूजन तथा सास–ससुर के चरणो मे प्रणाम करने के पश्चात् सुखपूर्वक पति के साथ रहने लगती है।

माण्डवी

वाल्मीकि रामायण मे माण्डवी का चरित्र महत्व नही पा सका है। माण्डवी का परिचय अति सक्षेप मे मिलता है। वशिष्ठ सहित विश्वामित्र के कहने पर कि दोनो राज परिवारो का सबध अत्यधिक उच्च एव मधुर होगा, अत हे नर श्रेष्ठ आप अपने भाई कुशध्वज नरेश की दोनो कन्याओ का वरण भूपाल के कुमार भरत और बुद्धिमान शत्रुघ्न के लिए धर्मपत्नी के रूप मे करे।

अस्य धर्मात्मनोराजन् रूपेणाप्रतिम भुवि।
सुता द्वय नर श्रेष्ठ पत्न्यर्थ वरयामहे।।[६८]

राजा जनक मुनिद्वय की बातो से अत्यधिक प्रसन्न होकर उनका आभार व्यक्त करते हुए इस प्रस्ताव को स्वीकारते हुए शिरोधार्य करते है।

इसके पश्चात् शुभ मण्डप मे वेद मन्त्रोच्चार के साथ वैवाहिक कार्य सम्पन्न करते हुए जनक ने भरत से कहा – रघुनन्दन। माण्डवी का हाथ अपने हाथ मे लो –

---

[६७] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७३/३०–३१
[६८] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७२/५

तमेवमुक्त्वा जनको भरत चाभ्यभाषत्।।
गृहाण पाणि माण्डव्या पाणिना रघुनन्दन।।[६९]

इस प्रकार माण्डवी का विवाह भरत से होता है। कौशल्या आदि रानियो द्वारा डोलियो से उतरवायी जाकर मगल गान के साथ पतिगृह मे प्रवेश करती है। देवपूजा करने के पश्चात् वे सास–ससुर आदि के चरणो मे प्रणाम करती है और अन्त मे अपने पति के साथ रहते हुए आनन्दित होती है।

श्रुतिकीर्ति

वाल्मीकि रामायण मे श्रुतिकीर्ति का परिचय केवल अति सक्षेप मे विवाह के समय मिलता है। वशिष्ठ और विश्वामित्र की सलाह पर राजा जनक दशरथ के सबसे छोटे पुत्र शत्रुघ्न के लिए अपने भाई कुशध्वज की परमसुन्दरी छोटी कन्या श्रुतिकीर्ति का वरण करते है। विवाह मडप मे राजा जनक कन्यादान के समय शत्रुघ्न से कहते है। – महाबाहो ! तुम अपने हाथ से श्रुतिकीर्ति का पाणिग्रहण करो।

श्रुतिकीर्तेर्महाबाहो पाणि गृहीश्च पाणिना।[७०]

इसके पश्चात् विवाहोपरान्त वे अयोध्या आकर रानियो द्वारा मगलगीत गाते हुए गृह प्रवेश करती है और देव पूजा तथा सास–ससुर को प्रणाम करके सुखपूर्वक पति के साथ रहने लगती है।

मन्थरा

वाल्मीकि रामायण मे मन्थरा का चरित्र चित्रण वाल्मीकि ने अत्यन्त कुशलता के साथ किया है। मन्थरा अत्यन्त वार्ताकुशल, प्रतिशोध लेने मे हाथी सदृश स्मरण शक्तिशाली, कैकेयी की दासी के रूप मे रामकथा मे वर्णित है। मन्थरा कैकेयी के मायके से आयी थी और वह सदा कैकेयी के साथ ही रहती थी। मन्थरा वाल्मीकि

---

[६९] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७३/३१–३२
[७०] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७३/३३

रामायण मे कैकेयी की धात्री के रूप मे चित्रित है अत· मन्थरा उस पर माता जैसा ही अकुश रखती थी।

एक दिन मन्थरा कैकेयी के महल के छत पर चढकर देखती है कि पूरी अयोध्या मे हर्ष का माहौल है। सब ओर बहुमूल्य पताकाएँ फहरा रही है। नगर वासी अत्यन्त उत्साहित है पूरे अयोध्या मे महोत्सव सा मनाया जा रहा है और राम की माता कौशल्या बहुत सा धन दान दे रही है। जब वह पास के कोठे पर खडी राम की दासी से इस विषय पर प्रश्न करती है तब उसे पता चलता है कि कल राम का राज्याभिषेक होने वाला है—

राजा दशरथो राममभिषेक्ता हि राघवम्।[७१]

मन्थरा अत्यन्त कुढती हुई शीघ्रता से महल की छत से उतरकर कैकेयी के पास जाकर कहती है— मूर्खे! उठ! क्या सो रही है? तुझ पर बडा भारी भय आ रहा है। अरी! तेरे ऊपर विपत्ति का पहाड टूट पडा है, फिर भी तुझे अपनी इस दुरवस्था का बोध नही होता?

उतिष्ठ मूढे कि शेषे भयं त्वायभिवर्तते।
उपलुप्तमघौघेन नात्मानयवबुध्यसे।।[७२]

मन्थरा के कहने पर कैकेयी को किसी अनिष्ट, अमगल का भय होता है किन्तु जब उसे राम के राज्याभिषेक की सूचना मन्थरा दु खी हृदय से देती है और सावधान करती है तब कैकेयी ने प्रसन्नचित्त होकर उसे उपहार स्वरूप दिव्य आभूषण प्रदान किया।

मन्थरा अत्यन्त कुशलवार्ताकार थी उसने कैकेयी पर प्रहार करना शुरू किया उसने आभूषण फेक दिया। राजा को कपटपूर्ण व्यवहार का दोषी मन्थरा बताती है। इसमे

---

[७१] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७/११
[७२] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७/१४

कौशल्या की चाल बताती है। सौत का विकराल रूप दिखाती है– वह कहती है कि वास्तव मे कौशल्या ही सौभाग्यशाली है क्योकि उसके पुत्र का राज्याभिषेक हो रहा है–

सुभगा किल कौसल्या यस्या पुत्रोऽभिषेक्ष्यते।[७३]

वह कैकेयी को भडकाती हुई कहती है कि इस प्रकार हम लोगो के साथ तुम भी कौशल्या की दासी बनोगी और तुम्हारे पुत्र भरत को भी रामचन्द्र जी की गुलामी करनी पडेगी।

एव च त्व सहास्माभिस्तस्या प्रेष्या भविष्यासि।
पुत्रश्च तव रामस्य प्रेष्यत्व हि गमिष्यति।।[७४]

कैकेयी इस पर भी विचलित नही होती और कहती है कि राम न्याय प्रिय है। श्रीराम को राज्य मिल रहा है तो उसे भरत को मिला समझ क्योकि श्रीराम अपने भाइयो को अपने समान ही मानते है। मन्थरा कहती है– रानी तुम मूर्खतावश अनर्थ को ही अर्थ समझ रही हो। जब श्रीराम राजा हो जायेगे तब फिर उनके बाद उनका पुत्र राजा होगा। भरत तो राज्य परम्परा से ही अलग हो जायेगे।

भविता राघवो राजा राघवस्य च य सुत
राज वशान्तु भरत कैकेयि परिहास्यते।।[७५]

मन्थरा रानी कैकेयी के हृदय पर शिकजा कसते हुए कहती है– याद रखो यदि, श्रीराम को निष्कटक राज्य मिल गया तो वे भरत को अवश्य ही इस देश से बाहर निकाल देगे अथवा उन्हे परलोक भी पहुॅचा सकते है।

ध्रुव तु भरत राम प्राप्य राज्यम कष्टकम्।
देशान्तर नाययिता लोकान्तरमथापि वा।।[७६]

---

[७३] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ८/६
[७४] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ८/११
[७५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ८/२२
[७६] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ८/२७

अपनी सौत द्वारा अपनी उपेक्षा, राजा के द्वारा किया गया कपट–पूर्ण व्यवहार जिसमे भरत को दूर रखकर राम का राज्याभिषेक का प्रस्ताव रखा गया, और फिर अपने प्रिय पुत्र भरत के जीवन का आसन्न सकट सामने देखकर कैकेयी के हृदय पर वज्रपात हो जाता है और वह मन्थरा की प्रबल प्रेरणा से दृढ सकल्प कर लेती है कि अब वह राम का राज्याभिषेक किसी भी कीमत पर नही होने देगी।

मन्थरा से कैकेयी उपाय पूँछती है। मन्थरा उसे देवासुर सग्राम की कथा याद दिलाती है।[७७] जिसमे उसकी वीरता से राजा के प्राणो की रक्षा हुई थी और राजा द्वारा दिये गये दो वरदान कैकेयी ने राजा के पास उधार के रूप मे सुरक्षित रखा था मन्थरा ने कहा कि एक वरदान से भरत का अभिषेक और दूसरे से भरत के निष्कटक राज्य के लिए राम को चौदह वर्ष का वनवास मॉग लेना। किन्तु हे प्रिये वरदान तभी मॉगना जब राजा सत्य की शपथ लेकर प्रतिज्ञा बद्ध हो जायॅ जिससे फिर वह वरदान देने से मुकर न सके।[७८]

मन्थरा ने अपनी कुशल वार्ता शैली से अडिग प्रेम एव सरल हृदय वाली कैकेयी को कठोर हृदय वाली बना दिया। स्नेह के स्थान पर घृणा पैदा कर दिया और राम के अभिषेक के स्थान पर उन्हे जगल का राज दे दिया। मन्थरा का चरित्र ही ऐसा है जो राम कथा को एक नया मोड देता है और कथा क्रम को बदलकर पुन उसमे प्रवाह लाता है। मन्थरा के चरित्र की ही विशेषता है कि कैकेयी जैसी प्रबुद्ध रानी उसे अपनी सबसे बडी हितैषी मानने लगती है और उसके इशारे पर चलने लगती है। अपने मुॅख से मन्थरा की ढेर सारी प्रशसा करती है तथा मनोरथ पूरा होने पर उसे विशेष सम्मान एवॅ प्रतिष्ठा देने की बात करती है। निश्चित रूप से मन्थरा के चरित्र को वाल्मीकि ने यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है। नारी स्वभाव की जीती–जागती मूर्ति के रूप मे

---

[७७] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ६/१३

[७८] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ६/२६

मन्थरा हमारे सम्मुख आती है। एक खलनायिका के समस्त गुणो को उसमे वाल्मीकि ने समाविष्ट कर दिया है, जिससे निश्चित रूप से मन्थरा एक अमर पात्र बन गयी है।

शूर्पणखा

वाल्मीकि रामायण मे शूर्पणखा रावण की बहन, अतृप्त कामवाली, इच्छानुसार रूप धारण करने वाली, अत्यधिक बलशालिनी, कुशल–राजनीतिज्ञ एव क्रूर राक्षसी के रूप मे चित्रित की गयी है। जिस प्रकार मन्थरा कथा प्रवाह को मोड देती है उसी प्रकार शूर्पणखा सधि स्थल पात्र बनकर कथा प्रवाह को युद्ध भूमि मे पहुँचा देती है और राक्षसो के सर्वनाश का कारण बनती है।

शूर्पणखा का परिचय वाल्मीकि रामायण के अरण्यकाण्ड के सत्रहवे सर्ग मे मिलता है। परम सुन्दर कान्ति से सुशोभित कामदेव के समान सौन्दर्यशाली तथा इन्द्र के समान तेजस्वी श्रीराम को देखते ही वह शूर्पणखा राक्षसी काम से मोहित हो जाती है।

बभूवेन्द्रोपम दृष्टा राक्षसी काम मोहिता।[७९]

वह राक्षसी शूर्पणखा काम भाव से प्रेरित होकर मनोहर रूप धारण कर श्रीराम के पास जाकर बोली–तपस्वी के वेश मे धनुष बाण लिए हुए इन राक्षसो के देश मे आप कैसे चले आये? यहॉ तुम्हारे आगमन का क्या प्रयोजन है? यह सब मुझे ठीक–ठीक बताइये। श्रीराम ने अपना परिचय देते हुए बताया कि मै पिता की आज्ञा पालन हेतु वन आया हूँ मै अयोध्या नरेश दशरथ पुत्र राम हूँ–

धर्मार्थं धर्म कॉक्षी च बन वस्तु मिहागत ।[८०]

श्रीराम के परिचय पूँछने पर उसने बताया कि मै रावण की बहन तथा इच्छानुसार रूप धारण करने वाली राक्षसी हूँ मेरा नाम शूर्पणखा है–

---

[७९] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड १७/६

[८०] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड १७/१७

अह शूर्पणखा नाम राक्षसी कामरूपिणी।।
रावणोनाम मे भ्राता यदि ते श्रोतमागत ।।[८१]

अपना पूरा परिचय देने के बाद वह श्रीराम से कहती है कि प्रथम दर्शन से ही मेरा मन तुममे आसक्त हो गया है अथवा तुम्हारे जैसा सुन्दर रूप वाला कोई देवता या मानव मुझे नही मिला जिसके कारण मै तुम्हारे अपूर्व रूप के प्रति आसक्त हूँ। यही कारण है कि मै तुम जैसे पुरूषोत्तम के प्रति पति भाव रखकर बडे प्रेम से पास आयी हूँ–

तानह समातिक्रान्ता राम त्वा पूर्ण दर्शनात्।
समुवेतास्मि भावेन भर्तार पुरूषोत्तमम्।।[८२]

श्रीराम ने मुसकाते हुए उत्तर दिया कि मै तो विवाहित हूँ तुम जैसी स्त्रियो के लिए सौत का रहना दु खदायी होगा। तुम परम सुन्दर मेरे भाई लक्ष्मण को पति रूप मे चुन लो राक्षसी शूपर्णखा लक्ष्मण से प्रणय निवेदन करती है। लक्ष्मण कहते है मै बडे भाई का सेवक हूँ अत तुम मेरे साथ दासी क्यो बनना चाहोगी। श्रीराम सक्षम स्वामी है। तुम्हारे योग्य है, उन्ही का तुम पति रूप मे वरण करो।

आर्यस्य तव विशालाक्षि भार्या भव यवी यसी।[८३]

राम से पुन प्रणय निवेदन करती हुई कहती है कि तुम मेरा आदर इस मानुषी के कारण नही कर रहे हो अत मै इस कुरूप मानुषी स्त्री को अभी खा जाती हूँ ऐसा कहकर वह सीता पर आक्रमण करती है। सीता डर जाती है। राम का इशारा पाकर लक्ष्मण उसका नाक–कान काटकर उसे कुरूप बना देते है।

शूर्पणखा अपने अपमानित किये जाने की कथा अपने भाई–खर को बताती है। क्रोधित खर राक्षसो द्वारा श्रीराम पर आक्रमण करवाता है अन्त मे युद्ध मे खर और

---

[८१] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड १७/२०–२१
[८२] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड १७/२४
[८३] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड १८/१०

दूषण दोनो का अन्त श्रीराम के हाथो होता है। शूर्पणखा रावण दरबार मे जाकर रावण को अपने अपमान का बदला लेने के लिए प्रेरित करती है। रावण को वह राजनीति की शिक्षा देते हुए धिक्कारती है– तुम भोगो मे लिप्त हो। तुम्हारे लिए घोर भय उत्पन्न हो गया है किन्तु तुम्हे कुछ ज्ञान नही? अरे जो राजा निम्न भोगो मे आसक्त हो स्वेच्छाचारी और लोभी हो जाता है। उसे मरघट की आग के समान हेय मानकर प्रजा उसका अधिक आदर नही करती है–

सक्त ग्राम्येषु भोगेषु कामवृन्त महीपतिम्।
लुब्ध न बहु मन्यन्ते श्मशानाग्निमिव प्रजा।।[८४]

वह कहती है कि आश्चर्य है, राक्षसो का सहार हो गया खर–दूषण मारे गये, जनस्थान नष्ट हो गया और तुम्हारे गुप्तचरो को पता नही, तुम्हे कुछ ज्ञात नही। जो राजा प्रजा की चिन्ता नही करता वह शीघ्र ही नष्ट हो जाता है। रावण शूर्पणखा के नीतिकुशल विचारो एव तर्कों से प्रभावित हो जाता है और वह शूर्पणखा से राम के बारे मे पूछता है शूर्पणखा उसे राम का परिचय बताकर सुन्दरी सीता के रूप–माधुर्य का वर्णन उसके सामने करके उसे सीता के हरण के लिए प्रेरित करती है, वह कहती है कि– यदि राक्षसराज रावण तुम्हे मेरी यह बात पसन्द हो तो नि शक होकर मेरे कथनानुसार कार्य करो–

रोचते यदि ते वाक्य ममैतद् राक्षसेश्वर।
क्रियता निर्विशङ्केन वचन मम रावण।।[८५]

इस प्रकार शूर्पणखा अपने कुशल राजनीतिज्ञ विचारो से रावण को प्रभावित कर उसे सीता–हरण के लिए प्रेरित कर देती है जिससे आगे चलकर राम रावण युद्ध का सूत्रपात होता है। इस प्रकार शूर्पणखा का चरित्र राम–कथा मे अत्यधिक महत्व रखता

---

[८४] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ३३/३
[८५] वाल्मीकि रामयण अरण्यकाण्ड ३४/२४

है। इस चरित्र के अभाव मे राम–रावण युद्ध की कल्पना नही की जा सकती। अत शूर्पणखा का चरित्र इस दृष्टि से विशेष महत्व पूर्ण है।

शबरी

राम कथा साहित्य मे शबरी रामायण के माध्यम से हमारे सम्मुख आती है। सर्वप्रथम शबरी–प्रसग हमे आदिकवि वाल्मीकि के रामायण मे मिलता है यद्यपि शबरी प्रसग रामायण मे अत्यन्त सक्षिप्त रूप मे वर्णित है तथापि अर्थकला एवॅ भावमयता की दृष्टि से इसका महत्व असाधारण है। शबरी की कथा ऐसी है जो रामायण के शीर्षस्थ पात्रो एवॅ चरित्रो के देदीप्यमान दिव्यलोक मे भी अपनी पहचान बनाये रखती है।

वाल्मीकि रामायण मे शबरी का चित्राकन एक तपोनिष्ठ के रूप मे किया गया है। वाल्मीकि की शबरी सिद्धा, धर्मपरायणा, तपस्विनी, सिद्ध-महात्माओ द्वारा सम्मानित और धर्मानुष्ठान मे निरत रहने वाली है। श्रीराम और लक्ष्मण को आश्रम पर आया देखकर अत्यधिक भावविह्वल हो वह उनके चरणो मे गिर पडती है और फिर उनका विधिवत पूजन एव सत्कार करती है। रामचन्द्र जी कहते है कि हे तपोधने! क्या तुमने सारे विघ्नो पर विजय पा ली? क्या तुम्हारी तपस्या बढ रही है? क्या तुमने क्रोध और आहार को काबू मे कर लिया है?–

कच्चिते निर्जिता विघ्ना काच्चिते वर्धते तप ।
कच्चिते नियत कोप आहारश्च तपोधने।।[८६]

तुमने नियमो का पालन कर लिया है? तुम्हे सुख शान्ति है न, तुम्हारे द्वारा गुरूओ की जो सेवा की गयी वह सफल तो है न। श्रीराम के इस प्रकार पूॅछने पर वह कहती है कि आपका दर्शन मिलने से ही मुझे अपनी तपस्या मे सिद्धि प्राप्त हुई। आज मेरा जन्म सफल हो गया और गुरुजनो की उत्तम पूजा भी सफल हो गयी। अब मुझे उत्तम धाम मिलेगा–

---

[८६] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ७४/८

अद्य मे सफल तप्त स्वर्गश्चैव भविष्यति।

त्वयि देववरे राम पूजिते पुरुर्षभ।।[८७]

वह कहती है कि पूज्य गुरू ने यह बताया था कि राम और लक्ष्मण इस आश्रम पर आयेगे जिनका तुम विधिवत सत्कार करना उनका दर्शन करके तू श्रेष्ठ एव अक्षयलोक को प्राप्त होगी–

त च दृष्टा वराल्लोकानक्षयास्त्व गमिष्यसि।।[८८]

इसके पश्चात् शबरी राम और लक्ष्मण को मतग ऋषि का तपो आश्रम दिखाती है। सात समुद्रो से बने सागर को दिखलाती है। उनके दिव्य अग्निकुण्ड एव वेदिका को दिखलाती है और फिर श्रीराम से अपने शरीर का परित्याग करके पवित्र महर्षियो के समीप जाने की अनुमति मॉगती है– प्रभु श्रीराम और लक्ष्मण उसकी भक्ति देखकर बहुत प्रसन्न होते है। श्रीराम शबरी से कहते है– भद्रे तुमने मेरा बडा सत्कार किया। अब तुम अपनी इच्छा के अनुसार आनन्दपूर्वक अभीष्ट लोक की यात्रा करो।

अर्चितोऽह त्वया भद्रे गच्छ काम यथासुखम्।[८९]

इस प्रकार श्रीराम के दर्शन कर वह अपने शरीर को अग्नि मे होमकर प्रज्ज्वलित अग्नि के समान दिव्य स्वरूप प्राप्त कर स्वर्गलोक को चली गयी जहॉ पर उसके वे गुरुजन पुण्यात्मा मतग ऋषि विहार करते थे।

इस प्रकार वाल्मीकि ने शबरी का चरित्र सक्षेप मे चित्रित करते हुए भी उसे उच्च भावभूमि पर उतारा है। शबरी की साधना एव आतिथ्य सत्कार विशिष्ट एव अनुकरणीय है।

---

[८७] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ७४/१२

[८८] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ७४/१६

[८९] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ७४/३१

तारा

वाल्मीकि ने तारा का चित्रण सुस्पष्ट सुन्दर एव सुसगत रूप से किया है। तारा सुषेण की पुत्री एव वाल्मीकि की पत्नी के रूप मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित है। तारा का चरित्र वानरी समाज की स्त्रियो के लिए एक आदर्श उपस्थित करता है।

सुग्रीव राम की सहायता पाकर बालि को युद्ध के लिए ललकारता है। बालि उसकी चुनौती को स्वीकार करते हुए क्रोधावेग से आतुर हो युद्ध के लिए निकलता है। उसकी पत्नी तारा भयभीत हो घबरा उठती है और बालि को अपनी दोनो भुजाओ मे कसकर युद्ध न करने के लिए निवेदन करती है। वह कहती है आपके द्वारा पराजित होने के बाद पुन सुग्रीव का युद्ध के लिए ललकारना मेरे मन मे शका पैदा कर रहा है।

त्वया तस्य निरस्तस्य पीडितस्य विशेषत ।
इहैत्य पुनराह्वान शङ्का जनयतीव मे।।[६०]

तारा समझाती हुई कहती है कि अगद के द्वारा मैने सुना है कि इनकी सहायता परमवीर श्रीराम और लक्ष्मण कर रहे है, अत हे स्वामी आप युद्ध के लिए इस समय मत जाइये। वह अनेक प्रकार से नीति और धर्म की बात बताते हुए बालि से निवेदन करती है कि वह सुग्रीव और श्रीराम से मिलकर सौहार्द्र एव मित्रता का सबध बना लेवे।

अह हि ते क्षम मन्ये तेन रामेण सौहृदम्।।
सुग्रीवेण च सम्प्रीत वैरमुत्सृज्य दूरत ।।[६१]

तारा की हितकारी बातो को न मानते हुए बालि युद्ध मे जाता है और श्रीराम के हाथो मारा जाता है। बालि का मारा जाना सुनकर तारा अत्यधिक विलाप करती है।

---

[६०] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड १५/११

[६१] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड १५/२४

वह कहती है कि–रण मे भयानक पराक्रम प्रकट करने वाले महान् वानर राज! आज इस समय मुझे अपने सामने पाकर भी आप बोलते क्यो नही है?

रणे दारूण विक्रान्त प्रवीर पल्वता वर।
किमि दानी पुरो भागामद्य त्व नाभिभाषसे।।[६२]

वह कहती है कि निश्चय ही मेरा ह्रदय लोहे का बना हुआ है तभी तो अपने स्वामी को मारा गया देखकर इसके सैकडो टुकडे नही हो जाते।

अश्मसारमय नुनमिद मे ह्रदय दृढम्।।
भतरि निहत दृष्टा यन्नाद्य शतधाकृतम्।[६३]

तारा कहती है कि स्वामी आपने हित की बात नही मानी। आपको रोकने मे समर्थ न हो सकी। आपके मारे जाने से मै भी अपने पुत्र सहित मारी गयी, अब लक्ष्मी आपके साथ ही मुझे और मेरे पुत्र अगद को भी छोड रही है।

तारा, श्रीराम से अपना भी वध करने को कहती है किन्तु श्रीराम तारा को समझाते हुए उसे शान्त करते है। वे कहते है कि विधाता ने सुख और दु ख से सयुक्त ससार की रचना की है अत मृत्यु विषयक विपरीत विचार का त्याग करो। तुम्हे पहले की ही भॉति अत्यन्त सुख एव आनन्द की प्राप्ति होगी तथा तुम्हारा पुत्र युवराज पद प्राप्त करेगा विधाता का ऐसा विधान है– शूरवीरो की स्त्रियॉ विलाप नही करती अत तुम शान्त हो जाओ।

प्रीति परा प्राप्यसि ता तथैव।
पुत्रश्च ते प्राप्स्यसि यौवराज्यम्।।[६४]

इस प्रकार राम के समझाने पर तारा शान्त होती है। तारा बालि को श्मसान भूमि जाकर अन्तिम विदायी देती है।

---

[६२] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड २०/४
[६३] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड २३/१०–११
[६४] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड २४/४३

वाल्मीकि ने तारा को राजनीति कुशला के रूप मे चित्रित किया है। वह परिस्थितियो से समझौता कर लेती है उसने विद्रोह की अपेक्षा विनय मे ही भविष्य की उज्ज्वलता देखी। उसका पुत्र अगद युवराज हो जाता है और वह सुग्रीव के साथ रहने लगती है।

तारा की कुशलता एव वाक्पटुता का परिचय हमे उस प्रसग मे मिलता है जब क्रुद्ध लक्ष्मण नगर को जलाने के लिए कहते है। उस समय भयभीत सुग्रीव तारा को हनुमान के साथ लक्ष्मण को मनाने के लिए भेजते है तारा पर दृष्टि पडते ही लक्ष्मण अपना मुँह नीचा करके उदासीन भाव से खडे हो जाते है। स्त्री के समीप होने से उनका क्रोध दूर हो जाता है। वह सुन्दरी तारा लक्ष्मण के पास जाकर विनीत स्वर मे कहती है– राजकुमार आपके क्रोध का क्या कारण है? कौन आपकी आज्ञा के अधीन नही है? कौन निडर होकर सूखे वृक्षो से भरे हुए वन के भीतर चारो ओर फैलते हुए दावानल मे प्रवेश कर रहा है–

कि कोपमूल मनुजेन्द्रपुत्र
कस्ते न सतिष्ठति वाड्गनिदेशे।[६५]

लक्ष्मण विनीत भाव सुनकर कहते है कि अपने स्वामी के हित मे सलग्न रहने वाली तारा तुम्हारा यह पति विषय और भोग मे लीन होकर धर्म और अर्थ के सग्रह का लोप कर रहा है। तुम इसे क्यो नही समझाती– हम लोग शोक मे डूबे है और इसे हमारी चिन्ता नही होती।

तारा लक्ष्मण से कामासक्त सुग्रीव के लिए क्षमा मॉगती है और कहती कि सुग्रीव ने सीता का पता लगाने तथा आपका कार्य सिद्ध करने के लिए पहले से ही आज्ञा दे रखी है। जिस कार्य के लिए अनेको इच्छाधारी एव पराक्रमी बन्दर यहॉ उपस्थित हुए है। वह लक्ष्मण के सदाचार की प्रशसा करते हुए उन्हे महल मे ले जाती

---

[६५] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड ३३/४१

है। जब लक्ष्मण सुग्रीव को क्रोधित हो फटकारते है तब पुन तारा युक्ति-युक्त वचनो द्वारा उन्हे शान्त कराती है। वह कहती है कि वीर कपिराज सुग्रीव कृतघ्न नही है, न सठ है, न क्रूर है, न असत्यवादी, न कुटिल ही है–

नैवाकृतज्ञ सुग्रीवो न शठो नापि दारूण।
नैवानृत कथो वीर न जिहाश्च कपीश्वर।।[६६]

श्रीराम द्वारा किये गये उपकार को कपिराज ने कभी नही भुलाया है। यह तो सहज स्वभाव है कि सुख पाकर प्राणी उद्देश्य से भटक जाता है। जैसे परमतपस्वी विश्वामित्र मेनका के प्रेम–पाश मे बॅधकर समय की सुध–बुध भूल गये थे। अत सामान्य वानरराज सुग्रीव का अपराध क्षम्य है। सुग्रीव उस अधम राक्षस का वध करके श्रीराम को सीता से उसी प्रकार मिलायेगे जिस प्रकार चन्द्रमा का रोहिणी के साथ सयोग होता है। अत मै आप से अनुरोध करती हूॅ आप क्रोध त्याग दीजिए। आप श्रेष्ठ वीर है और क्षमाशील राम के भाई है जो हम सभी का प्रिय चाहते है। इस प्रकार तारा लक्ष्मण को समझाने मे सफल होती है।

तारा मे वाह्य एव आन्तरिक तेजस्विता है वह पच कन्याओ मे एक है वह परमरूपवाली, बोलने मे निपुण और आकर्षक है, विवेकमयी और राजनीतिज्ञ भी है।

त्रिजटा

त्रिजटा का चरित्र वाल्मीकि रामायण मे महत्वपूर्ण है यद्यपि उसका चरित्र सक्षिप्त है तथापि वह वाल्मीकि रामायण की नायिका सीता के द्वारा सम्माननीय है। वह सीता की विपत्ति काल मे सहायता करती है उन्हे धैर्य और विश्वास दिलाती है। श्रीराम के प्रति उसके मन मे अपार श्रद्धा है।

---

[६६] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड ३५/३

सीता अत्यन्त दु खी अवस्था मे कहती है कि श्रीराम से मिलना कठिन है अत रावण के चगुल से मुक्ति के लिए मै अपना प्राण त्याग दूँगी।

प्राणास्त्यक्ष्यामि पापस्य रावणस्य गतावशम्।[९७]

सीता से राक्षसियॉ कहती है पाप–पूर्ण विचार रखने वाली अनार्ये सीते! आज इसी समय सभी राक्षसियॉ तेरा मॉस खायेगी। सीता को डराती हुई देख बूढी राक्षसी त्रिजटा सभी राक्षसियो को अपना भयकर सपना सुनाती है। कहती है "तुम सब अपने–आप को खा जाओ क्योकि जनक की प्यारी बेटी और दशरथ की पुत्रवधू सीता को नही खा सकोगी"–

आत्मान खादतानार्या न सीता भक्षयिष्यथ।
जनकस्य सुतामिष्टा स्नुषा दशरथस्य च।।[९८]

मैने सपने मे राक्षसो के विनाश और सीतापति के अभ्युदय को देखा है–

राक्षसानाम भावाय भर्तुरस्या भवाय च।[९९]

मैने स्वप्न मे सीता को श्वेत वस्त्र धारण किए श्वेत पर्वत के शिखर पर जो समुद्रो से घिरा है देखा, सीता श्रीराम चन्द्र जी से उसी प्रकार मिली जैसे सूर्य देव से उनकी प्रभा मिलती है।

रामेण सगता सीता भस्करेण प्रभा यथा।[१००]

उसी प्रकार मुडित रावण का पुष्पक विमान से पृथ्वी पर गिरते तथा उसे एक स्त्री द्वारा खीचते देखा। इसी प्रकार कुम्भकर्ण एव रावण के पुत्रो के साथ समस्त राक्षसो के विनाश का सपना मैने देखा। केवल एक विभीषण को श्वेत छत्र लगाये सफेद माला पहने देखा। मैने एक वानर को लका जलाते हुए देखा है अत अब राक्षसो

---

[९७] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २६/४६
[९८] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २७/५
[९९] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २७/६
[१००] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २७/१२

तथा लका का विनाश निश्चित है अत एक मात्र सीता ही तुम्हे क्षमा कर सकती है। उसकी बात को सुनकर सब भयवश सीता के चरणो मे गिर कर क्षमा माँगती है। त्रिजटा सीता के विशाल वाम नेत्र को फडकते देख उनकी मनोरथ सिद्धि को निश्चित मान लेती है और सीता को राम के विजय तथा उनसे मिलन का विश्वास दिलाती है।

युद्ध काण्ड मे जब राम और लक्ष्मण मूर्च्छित हो जाते है तब रावण के आदेश से पुष्पक विमान द्वारा सीता को राम और लक्ष्मण को मरे हुए रूप मे दिखाया जाता है उस समय सीता विलाप करने लगती है तब फिर त्रिजटा उन्हे समझाकर बताती है कि राम और लक्ष्मण जीवित है। वह प्रमाण स्वरूप बताती है कि यह दिव्य पुष्पक विमान वैधव्यावस्था मे तुम्हे धारण न करता अत ये दोनो अवश्य जीवित है।

इद विमान वैदेहि पुष्पक नाम नामत
दिव्य त्वा धारमेन्नेद यद्येतो गतजीवितौ।[१०१]

इस प्रकार त्रिजटा सीता की सहायता करती है और उन्हे धैर्य बँधाती है "वाल्मीकि रामायण के अनुसार त्रिजटा एक बूढी राक्षसी थी जो सीता के दृढ चरित्र को देखकर उसकी ओर आकर्षित हुई और सहानुभूति से प्रेरित होकर उसने सीता को दो अवसरो पर हार्दिक सान्त्वना दी।"[१०२]

मन्दोदरी

वाल्मीकि रामायण मे मन्दोदरी मय दानव की पुत्री, रावण की पत्नी एवँ मेघनाथ जैसे वीर की माता के रूप मे चित्रित की गयी है। मन्दोदरी का चरित्र अत्यन्त उच्च भाव भूमि पर वाल्मीकि ने प्रतिष्ठित किया है। वह सत्यपथ पर चलने वाली, नीति कुशला एवँ स्पष्टवादी स्त्री के रूप मे रामायण मे वार्णित है। वाल्मीकि ने उसे सीता के समान सुन्दर बताया है।

---

[१०१] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड ४८/२५
[१०२] डा० कामिल बुल्के – रामकथा पृष्ठ ५०६

सुन्दर काण्ड के दसवे सर्ग मे हनुमान जी मन्दोदरी को देखकर सीता समझ बैठते है। वाल्मीकि का यह वर्णन निश्चित रूप से मन्दोदरी को परम सौन्दर्यशालिनी सीता की सुन्दरता के समकक्ष ला खडा करता है "वह गोरे रग की थी, उसकी अगकान्ति सुवर्ण के समान दमक रही थी वह रावण की प्रियतमा और उसके अन्त पुर की स्वामिनी थी। उसका नाम मन्दोदरी था वह अपने मनोहर रूप से सुशोभित हो रही थी– हनुमान ने अनुमान किया कि यह सीता ही है और वह हर्षित हो उठे।"

गौरी कनक वर्णाभामिष्टामन्त पुरेश्वरीम्।
कपिर्मन्दोदरी तत्र शयना चारू रूपणीम्।।
स ता दृष्टा महाबाहुर्भूषिता मारूतास्मज ।।[१०३]

वह अपने पति द्वारा किये गये सीताहरण के लिए रावण की निदा करती है और सीता को वापस लौटाकर सुख–शान्ति से पति को रहने की सलाह देती है किन्तु कामासक्त रावण उसकी सलाह न मानकर युद्ध के पथ पर चलता है और अन्त मे श्रीराम के हाथो मारा जाता है।

रावण के मरने पर मन्दोदरी विलाप करती हुई कहती है–नाथ पहले आपने अपनी इन्द्रियो को जीतकर ही तीनो लोको पर विजय पायी थी किन्तु बाद मे आप इन्ही इन्द्रियो के वश मे होने के कारण ऐसी गति को प्राप्त हुए है। राक्षस राज आपने ऐश्वर्य का, शरीर का तथा स्वजनो का विनाश करने के लिए ही अकस्मात् सीता की कामना की थी मेरे मना करने पर भी प्राणनाथ! आपने रघुनाथ जी से वैर मोल लिया। उसी का आज यह फल है–

क्रियतामाविरोधश्च राघवेणेति यन्मया।।
उच्चमानो न गृहणासि तस्येय व्युष्टि रागता।[१०४]

---

[१०३] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड १०३
[१०४] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १११/१८–१६

सीता हरण करते समय ही आप जलकर राख क्यो नही हो गये– यही आश्चर्य की बात है। प्राण वल्लभ! इसमे कोई सदेह नही कि समय आने पर कर्ता को उसके पाप–कर्म का फल अवश्य मिलता है।

अवश्यमेव लभते फल पापस्य कर्मण ।
भर्त पर्यागते काले कर्ता नास्त्यत्र सशय ।।[१०५]

विभीषण अपने शुभ कर्मों के कारण ही सुख को प्राप्त हुए है और आपको दु ख भोगना पडा है। मिथिलेश कुमारी न रूप, न कुल न ही गुणो मे मुझसे बढकर है फिर भी आप मोहवश इस बात की ओर ध्यान नही देते थे–

न कुलेन न रूपेण न दाक्षिण्येन मैथिली।
मयाधिका वा तुल्या वा तत् तु मोहान्न बुद्धयसे।।[१०६]

वह कहती है कि दानवराज मय मेरे पिता, राक्षसराज रावण मेरे पति और इन्द्र पर भी विजय प्राप्त करने वाला इन्द्रजीत मेरा पुत्र है– यह सोचकर मै अत्यन्त गर्व से भरी रहती थी।[१०७]

मन्दोदरी कहती है कि यह स्वप्न है या सत्य। हाय आप श्रीराम के हाथो से कैसे मारे गये आप तो मृत्यु की भी मृत्यु थे फिर स्वय मृत्यु के अधीन कैसे हो गये।

हा स्वप्न सत्यमेवेद त्व रामेण कथ हत ।।
त्व मृत्योरपिमृत्यु स्या कथ मृत्युवश गत।[१०८]

मन्दोदरी कहती है कि पतिव्रताओ के ऑसू इस पृथ्वी पर व्यर्थ नही गिरते यह कहावत आपके ऊपर ठीक–ठीक घटी है। आपने पतिव्रता सीता को छल से हरा था उसको हर प्रकार से रुलाया था, अत आप का विनाश हुआ। आपने समस्त राक्षस कुल

[१०५] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १११/२५
[१०६] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १११/२८
[१०७] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १११/३६
[१०८] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १११/४७–४८

का नाश कर दिया। विभीषण के विनम्र निवेदन तथा सुहृदो की सलाह को आपने नही माना इसी कारण आपका बल आपके काम नही आया।

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण मे वाल्मीकि ने मन्दोदरी के मुख से राम की प्रशसा और रावण की निन्दा कराके भी उसके प्रति सम्मान और सहानुभूति बनाये रखा है। मन्दोदरी सत्यनिष्ठा वाली एव स्पष्ट बात कहने वाली है इसीलिए वह जहॉ एक तरफ अपने पति के उच्च्च गुणो की प्रशसा करती है वही पर उसके दुर्गुणो एव असामाजिक कृत कार्यों की निदा भी करती है। वह राम की प्रशसा इसीलिए करती है क्योकि उनके गुण एव विचार उच्च्च है वे सत्यवादी एव धर्म का अनुसरण करने वाले है। रावण के अनैतिक कार्यों का विरोध एव ऐसे कार्यों के लिए मन्दोदरी द्वारा की गयी निदा ही उसके चरित्र को ऊॅचा उठा देती है। मन्दोदरी राक्षसराज रावण की पत्नी होते हुए भी अपने आदर्शों एव सात्विक विचारो के कारण आदरणीय एव सभी के द्वारा सम्मान की पात्रा है। निसदेह वाल्मीकि ने मन्दोदरी के चरित्र को अपनी लेखनी के द्वारा ऊॅचाइयॉ प्रदान की है। उसका चरित्र निर्मल एव अनुकरणीय है।

तुलसी के नारी पात्र

कौशल्या

राम कथा के स्त्री पात्रो मे गोस्वामी तुलसी दास जी का सबसे अधिक मौलिक योग कौशल्या के चरित्र–निर्माण मे है। वाल्मीकीय और उनके अनतर के सभी रामायणो मे कौशल्या एक मानवी है, रामचरित मानस मे वे साक्षात् देवी है। दशरथ पत्नी कौशल्या का परम्परित रूप प्राय उनके मातृत्व की प्रतिष्ठा ही करता है उनमे तुलसी ने पत्नी, सपत्नी, माता एवॅ विमाता, ममतामयी सास, सह्रदय महारानी, श्रेष्ठ एवॅ गुरूजनो का सम्मान करने वाली आदर्श नारी के रूप को सजोया है। ''वाल्मीकि रामायण से आरम्भ राम काव्य–परम्परा मे कौशल्या पति द्वारा उचित सम्मान से वचिता, क्षीण–काया, खिन्न मना, परम क्षमाशीला, त्यागशीला तथा सौम्य रूप मे चित्रित की गयी है, किन्तु तुलसी की कौशल्या कर्तव्या–कर्तव्य निर्णय की, जिसका दूसरा नाम विवेक है, सूक्ष्म वृत्ति प्रदर्शित करती है।[१]

तुलसी ने कौशल्या के चरित्र को सर्वथा नवीन दृष्टि से देखा और साहित्य मे अमर कर दिया। कौशल्या के प्रति मानस–सम्राट तुलसी का दृष्टिकोण श्रद्धा एवॅ पूज्य भावना का द्योतक है। इसकी झलक वे कौशल्या के प्रथम परिचय मे ही देते है–

बदउॅ कौसल्या दिसि प्राची। कीरति जासु सकल जग माची।।[२]

तुलसी ने कौशल्या के पूर्व जन्म का चित्रण करके अपनी इस पूज्य भावना का आधार पुष्ट किया है जबकि 'अदिति' के रूप मे तपस्या करके उन्होने राम रूप मे ब्रह्म को प्राप्त करने का वरदान पाया था।

''कस्यप अदिति महातप कीन्हा। तिन्ह कहुँ मै पूरब बर दीन्हा।।
ते दशरथ कौसल्या रूपा। कोसलपुरी प्रगट नर भूपा''।।[३]

---

[१] डा० माताप्रसाद गुप्त तुलसीदास, पृष्ठ ३००
[२] रामचरित मानस बालकाण्ड १६/२
[३] रामचरित मानस बालकाण्ड १८७/२

कौशल्या का नामोल्लेख करते हुए तुलसी ने सबसे पहले महाराज दशरथ की पत्नी के रूप मे उनके कर्तव्यनिष्ठ दृढ चरित्र तथा आदर्श पत्नीत्व का चित्रण सहज रूप मे किया है–

"कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत।
पति अनुकूल प्रेम दृढ हरिपद कमल बिनीत।।[४]

गोस्वामी तुलसी दास ने कौशल्या को प्रधान महिषी के रूप मे प्रतिष्ठित किया है। यज्ञ–हवि के उपरान्त दिव्य पुरूष द्वारा प्राप्त खीर को सम्राट महाराज दशरथ ने सर्वप्रथम कौशल्या को ही दिया–

'तबहि रायँ प्रिय नारि बोलाई। कौसल्यादि तहाँ चलि आई।
अर्ध भाग कौसल्यहि दीन्हा। उभय भाग आधे करि कीन्हा।।[५]

सस्कृत ग्रथो मे कौशल्या के मोहपूर्ण वात्सल्य का ही वर्णन अधिक हुआ है किन्तु विवेकशीला, धैर्यमयी, पतिव्रता पत्नी तथा ममतामयी माँ एवँ स्नेहमयी सास के रूप मे चित्रित करके तुलसी ने कौशल्या को जो गौरव दिया है वह उनके उदात्त मातृत्व से सर्वथा सपुष्ट होता है–

भए प्रगट कृपाला दीन दयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप विचारी।।
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बन माला नयन बिसाला सोभाा सिधु खरारी।।[६]

दीनो पर दया करने वाले, कौशल्या जी के हितकारी कृपालु प्रभु प्रकट हुए। मुनियो के मन को हरने वाले उनके अद्भुत रूप का विचार करके माता कौशल्या हर्ष से भर गयी। तो ब्रह्म का तेज देखकर भी नारी का वात्सल्य कह उठा–

---

[४] रामचरित मानस बालकाण्ड १८८ दोहा
[५] रामचरित मानस बालकाण्ड १९०/१
[६] रामचरित मानस बालकाण्ड १९२/१ छन्द

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसु लीला अतिप्रिय सीला यह सुख परम अनूपा।।
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुर भूपा।
यह चरित जे गावहि हरिपद पावहि ते न परहि भवकूपा।।[७]

जो सर्वव्यापक, निरजन, निर्गुण विनोद रहित और अजन्मा ब्रह्म है वही प्रेम और भक्ति के वश होकर कौशल्या के गोद मे खेल रहे है–

व्यापक ब्रह्म निरजन निर्गुन विगत बिनोद।
सो अज प्रेम भगति बस कौशल्या के गोद।।[८]

तुलसी कौशल्या के साथ स्नेह विभोर होकर राम का शिशु रूप निहार रहे है। तुलसी वात्सल्य की जो सजीव झॉकी प्रस्तुत करते है वह सहज दर्शनीय है–

लै उछग कबहुॅक हलरावै। कबहु पालने घालि झुलावै।।
'प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता बाल चरित कर गान।।''[९]

एक बार भगवान राम ने माता को अपना अखण्ड अद्‌भुत रूप दिखलाया जिसके एक–एक रोम मे करोडो ब्रह्माड लगे हुए है–

देखरावा मातहि निज अद्‌भुत रूप अखड।
रोम–रोम प्रति लागे कोटि–कोटि ब्रह्माड।।[१०]

और सब प्रकार से बलवती माया को देखकर माता कौशल्या आश्चर्य मे पड गयी–

तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूदि चरननि सिरू नावा।
विसमयवत देखि महतारी। भए बहुरि सिसु रूप खरारी।।[११]

---

[७] रामचरित मानस बालकाण्ड १९२/४ छन्द
[८] रामचरित मानस बालकाण्ड १९८ दोहा
[९] रामचरित मानस बालकाण्ड २००/४ तथा दोहा २००
[१०] रामचरित मानस बालकाण्ड २०१/ दोहा
[११] रामचरित मानस बालकाण्ड २०१/३

तुलसी ने राम को 'ठुमुकु–ठुमुकु प्रभु चलहि पराई' भागते देखा है और ताहि धरै जननि हठि धावा' भी मन लगाकर देखा है–

कौशल्या जब बोलन जाई। ठुमुकु–ठुमुकु प्रभु चलहि पराई।।
निगम नेति सिव अत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा।।[१२]

भगवान राम जब विवाह करके सीता के साथ अयोध्या आते है उस समय का वर्णन तुलसी ने बिलकुल चित्रवत कर दिया है–

बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानद मगन महतारी।
पुनि पुनि सीय राम छबि देखी। मुदित सकल जग जीवन लेखी।।[१३]

कौशल्या के भोले मातृत्व की जिज्ञासा मुखर होती है –

देखि स्याम मृदु मजुल गाता। कहहि सप्रेम बचन सब माता।।
मारग जात भयावनि भारी। केहि विधि तात ताडका मारी।।[१४]

राम के राज्याभिषेक का सुखद समाचार सुनकर आनद मगन होकर कौशल्या ने बहुत से ब्राह्मणो को दान दिया तथा राम के कल्याण के लिए ग्राम देवी, देवता आदि का पूजन किया। राम जब कौशल्या के पास वन–गमन की आज्ञा लेने पहुँचते है तो कौशल्या की ममता यह भूल गई कि पुत्र युवराज हो गया है और सहसा सामने पुत्र को पाकर वे राम को चूमते हुए हृदय से लगा लेती है। उनका वात्सल्य सजीव हो उठा–

बार–बार मुख चुबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता।
गोदि राखि पुनि हृदय लगाए। स्रवत प्रेमरस पयद सुहाए।।[१५]

---

[१२] रामचरित मानस बालकाण्ड २०२/४
[१३] रामचरित मानस बालकाण्ड ३४६/२
[१४] रामचरित मानस बालकाण्ड ३५६/२
[१५] रामचरित मानस बालकाण्ड ५२/२

माता बार–बार श्रीराम चन्द्र जी का मुख चुम रही है। नैनो मे प्रेम का जल भर आया है और सब अग पुलकित हो गये है। श्रीराम को अपनी गोद मे बैठाकर फिर हृदय से लगा लिया। सुन्दर स्तन से प्रेमरस (दूध) बहने लगा।

और आगे की स्थिति का वर्णन तुलसी इस प्रकार करते है–

प्रेम प्रमोदु न कछु कहिजाई। रक धनद पदबी जनुपाई।।
सादर सुन्दर बदनु निहारी। बोली मधुर बचन महतारी।।
कहहु तात जननी बलिहारी। कबहि लगन मुद मगल कारी।।
सुकृत सील सुख सीवॅ सुहाई। जनमलाभ कइ अवधि अघाई।।[१६]

श्रीराम चन्द्र जी के मुख से यह सुनकर कि पिता ने मुझे जगल का राज दिया है जहॉ पर मेरा हर प्रकार से हित होगा। हे माता आप मुदित मन से मेरे स्नेह का त्याग करते हुए मुझे वन जाने की आज्ञा दे।

पिता दीन्ह मोहि कानन राजू। जहँ सब भॉति मोर बड काजू।।
आयसु देहि मुदित मन माता। जोहि मुद मगल कानन जाता।
जनि सनेह बस डरपति भोरे। आनदु अब अनुग्रह तोरे।।
बरस चारि दस बिपिन बसि, करि पितु बचन प्रमान।
आइ पाय पुनि देखिहउँ मनु जनि करसि मलान।।[१७]

जब राम ने बताया कि राज्य के स्थान पर वन मिल गया है तो कौशल्या 'सहमि सूखि सुनि सीतल बानी'– किकर्तव्यविमूढ सी खडी रह गयी। कवि तुलसी ने मनोवैज्ञानिक चित्रण यहॉ पर कौशल्या का किया है–

कहि न जाइ कछु हृदय विषादू। मनहुँ मृगी सुनि केहरि नादू।।
नयन सजल तन थर–थर कॉपी। माजहि खाइ मीन जनु मापी।।
धरि धीरजु सुत बदनु निहारी। गदगद बचन कहति महतारी।।

---

[१६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५२/३–४१
[१७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५३/३–४ तथा दोहा ५३/

तात पितहि तुम्ह प्रान पिआरे। देखि मुदित नित चरित तुम्हारे।।

राजु देन कहुँ सुभ दिन साधा। कहेउ जान बन केहि अपराधा।।

तात सुनावहु मोहि निदानू। को दिनकर कुल भयउ कृसानू।।[१८]

कौशल्या के ह्रदय मे भीषण सघर्ष होने लगा। भावना और कर्तव्य का भयकर सघर्ष तुलसी की लेखनी कौशल्या के अन्त सघर्ष को इन शब्दो मे वाणी प्रदान करती है–

राखि न सकइ न कहि सक जाहू। दुहूँ भॉति उर दारून दाहू।।
लिखत सुधाकर गा लिखि राहू। विधि गति वाम सदा सब काहू।।
धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति सॉप छुछुदरि केरी।।
राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू। धरमु जाइ अरू बधु विरोधू।।[१९]

किन्तु कौशल्या आदर्श पत्नी एव आदर्श मॉ के साथ ही धर्मनिष्ठ, कर्तव्यनिष्ठ, एव विवेकशील रानी भी है अत उनका विवेक जाग उठता है और वात्सल्य पर विजय पा लेता है–

कहउँ जान बन तौ बडि हानी। सकट सोच बिवस भइ रानी।।

बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी। रामु भरतु दोउ सुत सम जानी।।

सरल सुभाउ राम महतारी। बोली बचन धीर धरि भारी।।

तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका।।[२०]

आगे कौशल्या कहती है कि राज्य देने को कहकर महाराज ने वन दे दिया, उसका मुझे लेशमात्र भी दुख नही है। दुख तो इस बात का है कि तुम्हारे बिना भरत को, महाराज को और प्रजा को बडा भारी क्लेश होगा–

राज देन कहि दीन्ह बनु मोहि न सो दुख लेस।

तुम्ह बिनु भरतहि भूपतिहि प्रजहि प्रचड कलेसु।।[२१]

---

[१८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५४/२, ३+४/
[१९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५५/१, २/
[२०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५५/३,४
[२१] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा ५५

विवेक की विजय हुई और सरल स्वभाव वाली कौशल्या ने राम की बात पर अपनी मुहर लगा दी 'पितु आयसु सब धरमक टीका। बात यही समाप्त हो जाती, किन्तु तुलसी की मौलिक उद्भावना से कौशल्या को आदर्श पत्नी तथा माता के साथ–साथ उदात्त सपत्नी और विमाता का रूप भी मिलना था। कैकेयी के प्रति सर्वोच्च सम्मान प्रदर्शन से कौशल्या को शाश्वत उच्चता प्राप्त हुई–

जौ केवल पितु आयसु ताता। तौ जनि जाहु जानि बडि माता।।
जौ पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत् अवध समाना।।[२२]

धन्य है मॉ कौशल्या के विचार, कितने निर्मल? कितने शाश्वत? जिस कैकेयी ने उनके एक मात्र पुत्र को चौदह वर्षो का वनबास दिया उसके सबध मे किसी प्रकार की मलिनता उनके मन मे नही। अपने मातृत्व के अधिकारो का ध्यान करके दशरथ की आज्ञा का उल्लघन करने के लिए भले ही वह कह सकती है किन्तु कैकेयी भी माता है, उसकी आज्ञा को तो वह सहर्ष सिर पर धारण करने के लिए ही कहेगी। आगे कौशल्या कहती है–

बड भागी बनु अवध अभागी। जो रघुबसतिलक तुम्ह त्यागी।।
जौ सुत कहौ सग मोहि लेहू। तुम्हरे हृदयॅ होइ सदेहू।।[२३]

'जौ सुत कहौ सग मोहि लेहू' कहकर कौशल्या अपने वात्सल्य को प्रदर्शित करती है किन्तु 'तुम्हरे हृदय होइ सदेहू' कहकर वे अपनी भावना पर रोक लगाती है। कौशल्या के जाग्रत विवेक ने उसके भोले मातृत्व पर विजय कर लिया और कौशल्या ने वात्सल्य-भाव के उफान को रोक लिया और कह दिया कि तुम वन जाओ, मै तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगी।

अस बिचारि सोइ करहु उपाई। सबहि जिअत जेहि–भेटहु आई।।
जाहु सुखेन बनहि बालि जाऊँ। करि अनाथ जन परिजन गाऊँ।।[२४]

---

[२२] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५६/१
[२३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५६/३
[२४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५७/२

कौशल्या एक आदर्श सास के रूप मे हमारे सामने आती है, सीता के प्रति कौशल्या अपार स्नेह रखती है। सीता को वह नेत्रो की पुतली की भॉति मानती है–

मै पुनि पुत्रबधू प्रिय पाइ। रूप रासि गुन सील सुहाई।।
नयन पुतरि करि प्रीति बढाई। राखेउँ प्रान जानकिहि लाई।।
कलप बेलि जिमि बहु बिधि लाली। सीचि सनेह सलिल प्रतिपाली।।
फूलत–फलत भयउ विधि वामा। जानि न जाइ काह परिनामा।।[२५]

माता कौशल्या सीता से कोई भी काम नही करवाती है। सीता को वह जीवनदायिनी औषधि की भॉति सहेज कर रखती है। जिस सीता से उन्होने दीपक तक नही बुझाने को कहा ऐसी सीता वन जाने योग्य कहॉ है? यह प्रश्न मॉ कौशल्या को व्यथित कर रहा है–

पलॅग, पीठि तजि गोद हिडोरा। सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा।।
जिअनमूरि जिमि जोगवत रहउँ। दीप बाति नहि टारन कहउँ।।
सोइ सिय चलन चहति बन साथा। आयसु काह होइ रधुनाथा।।
चद किरन रस रसिक चकोरी। रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी।।[२६]

कौशल्या ने अपने मन की बात सहज भाव से कह दिया जिसमे स्वाभाविक प्रेम था आदेश नाम मात्र का नही–

जौ सिय भवन रहै कह अबा। मोहि कहँ होइ बहुत अवलबा।[२७]

सीता के पातिव्रत्य से प्रभावित कौशल्या ने अपने स्वार्थ के लिए बधू को रोका नही, अपितु राम के साथ वन जाने की सहर्ष अनुमति दे दी। सास के रूप मे कौशल्या का सजीव चित्रण तुलसी की प्रतिभा का परिचायक बन गया है–

सुनि सिय बचन सासु अकुलानी। दसा कवनि बिधि कहौ बखानी।।

---

[२५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५६/१, २
[२६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५६/३, ४
[२७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६०/४

बारहि बार लाइ उर लीन्ही। धरि धीरजु सिख आसिष दीन्ही।।
अचल होउ अहिवातु तुम्हारा। जब लगि गग जमुन जल धारा।।[२८]

तुलसी का प्रत्येक शब्द कौशल्या को आदर्श 'सास' के रूप मे सर्वोच्च सम्मान दे रहा है। कौशल्या का यह रूप तुलसी की मौलिक उद्‌भावना है। नि सदेह कौशल्या का यह मातृत्व–चित्रण तुलसी की उपलब्धि है। राम वन जाने को निकल पडे है मानो कौशल्या के प्राण ही निकल पडे हो। व्यग्रता तथा वेदना मिलकर सर्वत्र करूणा की निर्मल गगा प्रवाहित कर रहे है– जिस प्रकार से प्रेम विह्वल होकर माता कौशल्या राम और सीता के प्रबल वात्सल्य प्रेम के अगाध सागर मे डूबती हुई दिखायी देती है, वह उनका अनन्य वात्सल्य प्रेम है जो प्रेम को उसकी ऊँचाइयॉ प्रदान करता है–

फिरहि दसा विधि बहुरि कि मोरी। देखिहउँ नयन मनोहर जोरी।।
सुदिन सुधरी तात कब होइहि। जननी जिअत बदन बिधु जोइहि।।
बहुरि बच्छ, कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहि बोलाइ लगाइ हियॅ, हरषि निरखिहउँ गात।।[२९]

तुलसी कौशल्या के चरित्र को आदर्श पत्नी के रूप मे सवारते है। तुलसी पुन नवीन उद्‌भावना करते है। दशरथ ने प्राणघातक पीडा तो पाई कैकैयी के महल मे, किन्तु चिर शान्ति मिली उन्हे प्राण-प्रिया कौशल्या के महल मे। जब सुमन्त्र राम–सीता और लक्ष्मण को विदा कर अयोध्या लौटते है तब दासियॉ उन्हे कौशल्या के महल मे ले जाती है–

दासिन्ह दीख सचिव बिकलाई। कौसल्या गृहँ गईं लवाई।।
जाइ सुमत्र दीख कस राजा। अमिय रहित जनु चदु बिराजा।।[३०]

ऐसी विपत्ति की घडी मे भी कौशल्या का विवेक, बुद्धि तथा धर्म जाग्रत रहा है। कौशल्या के धीर मृदु–वचनो को सुनकर दशरथ ने ऑख खोलकर कौशल्या की ओर

---

[२८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६६/३, ४
[२९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६८/४ तथा दोहा ६८
[३०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४८/२

देखा और उन्हे उसी प्रकार शीतलता का अनुभव हुआ जैसे तडपती मछली को पानी मिल गया हो।

प्रिया वचन मृदु सुनत नृप चितयउ ऑखि उधारि।
तलफत मीन मलीन जनु सीचत सीतल बारि।।[31]

तभी अनायास सम्राट दशरथ को अन्धे तपस्वी के पुत्र श्रवण कुमार की कथा याद आ गई और उन्होने कौशल्या को सब कथा सुनाई। इस प्रसग मे कौशल्या दशरथ की प्राण–प्रिया तथा विश्वस्ता पत्नी रूप मे चित्रित है। अनन्त दशरथ का जीवन–दीप बुझ गया और वैधव्य के दैत्य ने कौशल्या का सुहाग छीन लिया।

मलिन बसन बिवरन विकल कृस सरीर दुख भार।
कनक कलप बर बेलि बन मानहुँ हनी तुषार।।[32]

निसदेह तुलसी ने कौशल्या के चरित्र की उदात्तता को अनेक रूपो मे अभिव्यजित किया है। राम वन चल गये, कौशल्या अवध मे तडपती रहती है। भरत के प्रति सहज मातृत्व का प्रकाशन कौशल्या के द्वारा करा कर तुलसी ने न केवल उन्हे गरिमा दी अपितु विमाता शब्द मे एक नया अर्थ सृजित कर दिया जो स्नेह से परिपूर्ण है। भरत जब ननिहाल से लौटे और राम–वन–गमन की सूचना पाकर कौशल्या के पास अत्यन्त कातर अवस्था मे आए तब विरह व्यथिता कौशल्या का हृदय निर्मल पावन गगा–जल सा था। जिसमे किसी प्रकार का रोष नही, दुराव नही अपितु स्नेह से सिञ्चित वात्सल्य प्रेम झलक रहा था–

मातु भरत के बचन मृदु सुनि पुनि उठी सँभारि।
लिए उठाइ लगाइ उर लोचन मोचति वारि।।[33]

आगे गोस्वामी जी कौशल्या के चरित्र को ऊँचाइयॉ प्रदान करते है–

---

[31] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १५४ दोहा
[32] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६३ दोहा
[33] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा १६४

सरल सुभाय मायँ हियलाए। अति हित मनहुँराम फिरि आए।।
भेटेउँ बहुरि लखन लघु भाई। सोकु-सनेहु न हृदय समाई।।
देखि सुभाउ कहत सबु कोई। राम मातु असकाहे न होई।।
माता भरतु गोद बैठारे। ऑसु पोछि मृदु बचन उचारे।।[३४]

कौशल्या के इस उदात्त रूप की प्रशसा कवि ने जन–जन से कराई है–

"देखि सुभाव कहत सब कोई। राम मातु अस काहे न होई।' कौशल्या का मातृत्व तो जैसे अगाध सागर है जिसमे उदात्त भावनाओ का निर्मल जल हिलोरे ले रहा है। भरत की समस्त ग्लानि इन लहरो मे धुल उठती है और पावन मॉ के हृदय से लगकर उनको असीम शान्ति मिलती है।

अनेक विवेक पूर्ण बचनो द्वारा माता कौशल्या भरत को सॉत्वना देती है और भरत को सभी प्रकार से निर्दोष कहते हुए, जब वे उन्हे हृदय से लगा लेती है, उनके स्तनो मे मातृत्व का दूध और नेत्रो से वात्सल्य का प्रेमाश्रु छलक पडता है–

भये ग्यान बरू मिटै न मोहूँ। तुम्ह रामहि प्रतिकूल न होहू।
मत तुम्हार यह जो जग कहही। सो सपनेहुँ सुख सुगति न लहही।।।
अस कहि मातु भरत हिय लाए। थन–पय स्रवहि नयन जल छाए।।[३५]

इतना ही नही अयोध्या की सभा मे उसी सपत्नी पुत्र से उन्होने अयोध्या का राज्य ग्रहण करने के लिए अपनी पूरी शक्ति के साथ अनुरोध भी किया है– हे तात राम वन मे है, महाराज स्वर्ग का राज करने चले गये है और तुम इस प्रकार कातर हो रहे हो। हे पुत्र! कुटुम्ब, प्रजा, मन्त्री और सब माताओ के तुम ही एक सहारे हो। विधाता को प्रतिकूल और काल को कठोर मानते हुए गुरू की आज्ञा को सिर चढाकर उसी के अनुसार कार्य करो और प्रजा का पालन करो–

---

[३४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६५/१, २
[३५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६६/२, ३

बन रघुपति सुरपति नरनाहू। तुम्ह एहि भाँति तात कदराहू।।
परिजन प्रजा सचिव सब अम्बा। तुम्हही सुत सब कहँ अवलम्बा।।
लखि बिधि बाम कालु कठिनाई। धीरजु धरहु मातु बलि जाई।।
सिर धरि गुरू आयसु अनुसरहु। प्रजा पालि परिजन दुख हरहू।।[३६]

चित्रकूट वन मे भी कौशल्या का मातृत्व विवेक की गरिमा से युक्त रहा है। कौशल्या का यह रूप पुन अवलोकनीय है–

कौसल्या कह दोसु न काहू। करम बिवस दुख सुख छति लाहू।।
कठिन करम गति जान विधाता। जो सुभ–असुभ सकल फलदाता।।[३७]

चौदह वर्ष की अविरल प्रतीक्षा के पश्चात् राम अयोध्या आने वाले है, तुलसी माता के मन की उत्सुकता को नया आयाम देते है–

कौसल्यादि मातु सब मन अनन्द अस होइ।
आयउ प्रभु श्री अनुज जुत कहन चहत सब कोइ।।[३८]

माता कौशल्या का मन बार–बार पुलकित होकर शुभ सदेश की प्रतीक्षा कर ही रहा था कि भगवान राम-सीता और लक्ष्मण के साथ आ गये। विरहदग्धा माताएँ उनकी ओर उसी प्रकार दौडती है, जैसे दिनभर की बिछुडी हुई गाय अपने बछडे से मिलने के लिए शाम को बैचेन होकर दौडती है–

जनु धेनु बालक बच्छ तजि गृह चरन बन परवस गई।।
दिन अन्त पुर रूख स्रवतथन हुँकार करि धावत भई।।
अति प्रेम प्रभु सब मातु भेटी बचन मृदु बहुविधि कहे।
गइ विषम बिपति वियोगभव तिन्ह हरष सुख अगनित लहे।।[३९]

---

[३६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १७६/२, ३
[३७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २८२/२
[३८] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा मगलाचरण
[३९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा ६/छन्द

माता कौशल्या वात्सल्य रस मे डूबती हुई बार–बार कृपा के समुद्र रणधीर राम को देख रही है। पुत्र–मिलन के हर्ष से पुलकित माताएँ नयनो के अश्रुधार को रोक-कर आरती उतारती है–

सब रघुपति मुख कमल विलोकहि। मगल जानि नयन जलरोकहि।।

कनक थार आरती उतारहि। बार–बार प्रभुगात निहारहि।।[४०]

माता कौशल्या बार–बार रघुबीर को देख रही है और सोच रही है–

हृदय बिचारति बारहि बारा। कवन भॉति लकापति मारा।।

अति सुकुमार जुगल मेरे बारे। निसिचर सुभट महाबल भारे।।[४१]

मातृत्व का यह भव्य सहज चित्रण तुलसी की अनूठी काव्य-प्रतिभा का सहज प्रकाशन ही है जिसने तुलसी को महिमा मडित किया और उनकी कौशल्या को चिरस्मरणीय बना दिया। कौशल्या के चरित्र की इन्ही विशेषताओ को देखकर यह सहज ही विश्वास हो जाता है कि भगवान राम ने उनके गर्भ से अवतार लिया होगा। मानस मे कौशल्या का चरित्र प्रेम एव त्याग की अलौकिक देवी के रूप मे चित्रित किया गया है।

कैकेयी

राम काव्य परम्परा मे कैकेयी सर्वाधिक चर्चित नारी पात्र कही जा सकती है। आदिकाव्य की कैकेयी मे एक प्रकार से हम रावण का प्रतिरूप सा पाते है।[४२] विमाता के रूप मे उसका चित्रण अधिकाश कवियो ने किया है और उसे सपत्नी कलह तथा ईर्ष्या की मूर्ति बना दिया है। किन्तु तुलसी ने कैकेयी के चरित्र को मनोवैज्ञानिक पीठिका दी है। उनकी उद्‌भावना मौलिक है।

---

[४०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७/२

[४१] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७/४

[४२] डा० माता प्रसाद गुप्त तुलसीदास पृ० ३०१

रामकथा मे दशरथ की द्वितीय रानी कैकेयी का रामचरित मानस मे सर्वप्रथम दर्शन पायस-वितरण के समय होता है। कैकेय–नरेश की पुत्री होने के कारण उनका नाम कैकेयी पडा। कैकेयी का चरित्र 'विधि प्रपच गुन अवगुन साना' का सर्वोत्तम उदाहरण है। शील-सौन्दर्य, तेजस्विता, कूटनीति, लक्ष्य के प्रति दृढ निश्चय, एक सच्ची क्षत्राणी के गुणो से पूरित विविध गुणो से भूषित कैकेयी अपने जीवन के पूर्वार्द्ध मे दशरथ से लेकर सम्पूर्ण प्रजा को अपना प्रशसक बना लेती है किन्तु जीवन के उत्तरार्द्ध मे क्रूर नियति का शिकार होकर सम्पूर्ण समाज मे नारी–जाति के लिए कलक और अविश्वसनीयता का उदाहरण बन जाती है। वह कुटिलता तथा कठोरता का प्रतीक बन जाती है। कैकेयी के चरित्र का महत्व उसकी आदर्शवादिता के कारण नही वरन् वस्तुनिष्ठता के कारण है। कैकेयी का महत्व भरत जैसे आदर्श निष्ठ पुत्र की माता होने के कारण न होकर सम्पूर्ण कथा को निश्चित लक्ष्य तक पहुँचाने हेतु अप्रत्याशित रूप से कथा को विलक्षण मोड देने के कारण है, जिसके फलस्वरूप वह सामान्य पाठक, दर्शक, श्रोता, भक्त, दशरथ, सम्पूर्ण प्रजा वर्ग यहॉ तक कि अपने पुत्र भरत की भी सहानुभूति खो देती है तथा सम्पूर्ण नारी जाति के लिए कलक का दृष्टान्त बन जाती है। यह विडम्बना नियति द्वारा निर्धारित है, जिससे यह उदात्त गुण सम्पन्ना नारी दुष्टा प्रतीत होने लगती है।

'प्रान ते अधिक राम प्रिय मोरे'[४३] कैकेयी कुल मर्यादा तथा कुल परम्परा मे आस्थावान है तथा निर्वाहक भी। इसका प्रमाण हमे **मन्थरा प्रसंग** से मिलता है। मन्थरा द्वारा राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर कैकेयी अत्यन्त प्रसन्न होती है। दशरथ-पत्नी के रूप मे कैकेयी निश्छला तथा उदार ह्रदया नारी है जिसमे स्नेह पूर्ण मातृत्व उमड पडता है। राम के प्रति कैकेयी का स्नेह उसे आदर्श विमाता का स्वरूप प्रदान करता है–

---

[४३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १५/४

वह कहती है कि राज्याभिषेक का दिन सुमगल दायक होगा। कैकेयी का राम के प्रति कितना प्रेम, स्नेह और वात्सल्य है, इसका अदाजा लगाना मुश्किल है–

सुदिन सुमगल दायकु सोई। तोर कहा फुर जेहि दिन होई।।
जेठि स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकर कुल रीति सुहाई।।
राम तिलकु जौ सॉचेहुँ काली। देउँ मागु मन भावत आली।।
कौसल्या सम सब महतारी। रामहि सहज सुभायँ पिआरी।।
मो पर करहि सनेहु विसेषी। मै करि प्रीति परीछा देखी।।
जौ बिधि जनमु देइ करि छोहू। होहु राम सिय पूत पतोहू।।
प्रान ते अधिक राम प्रिय मोरे। तिन्ह के तिलक छोभु कस तोरे।।[४४]

तुलसी के शब्द विन्यास पर ध्यान देना आवश्यक है। कैकेयी 'करि प्रीति परीछा देख चुकी है कि राम 'मो पर करहि सनेहु बिसेषी' तो फिर यह छोभ मथरा को क्यो हो रहा है? किन्तु 'सरस्वती' की पढाई हुई मथरा का कुटिलपन काम कर रहा था। वह सपत्नी द्वेष उत्पन्न करने मे सफल होती है कैकेयी का हृदय बदल जाता है उसके चरित्र उदात्तता नष्ट हो जाती है। मन्थरा का नारी चरित्र उसे राह से भटकाने मे सफल हो जाता है–

कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाडि अब होब कि रानी।।[४५]

x x x

रेख खँचाइ कहउँ बलु भाषी। भामिनि भइहु दूध कइ माखी।।
जौ सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई।।[४६]

तुलसी ने कैकेयी के समक्ष बहुत बडा प्रश्न-चिह्न उपस्थित करा दिया मन्थरा के द्वारा– "जौ सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई।" कुटिल मन्थरा ने

---

[४४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १५/१, २, ३, ४
[४५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६/३
[४६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६/४

'सुतसहित करहु सेवाकाई' कहकर कैकेयी के मातृत्व को सहमा दिया। सत्य यही है कि कैकेयी को पुत्र के अमगल की आशका ने विद्रोही बनाया–

नैहर जनमु भरब बरूजाई। जिअत न करबि सवति सेवकाई।।
अरिबस दैव जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि-जीवन चाही।।[४७]

कोप भवन मे उसने सर्वप्रथम दशरथ से यही वरदान मॉगा जिसमे सुत का कल्याण निहित था– देहु एक वर भरतहिटीका[४८] और दूसरा वर? वह प्रथम का पूरक ही था। पुत्र का राज्य निष्कटक कैसे हो? कैकेयी के विद्रोही मातृत्व ने समाधान के रूप मे दूसरा वर मॉगा–

तापस वेष विसेषि उदासी। चौदह बरिस राम बनबासी।।[४९]

कैकेयी का विद्रोही मातृत्व उसके पत्नीत्व को पराजित करके फन उठाये सॉप-सा फुॅफकार रहा था–

भरतु कि राउर पूत न होही। आनेहु मोल बेसाहि कि मोही।।[५०]

कैकेयी का सम्पूर्ण विवेक एव नारीत्व की गरिमा, पुत्र मोह एव सपत्नी द्वेष से कुठित हो गया।

राम के प्रति इतनी आस्थावान और स्नेहपूर्ण मॉ कैकेयी का मन परिवर्तित होकर पूर्णत. प्रतिकूल हो जाता है। इसमे यद्यपि देवताओ की चाल की मुख्य भूमिका है तथापि सारा दोष एव अपयश मात्र कैकेयी के ही हिस्से जाता है। उसके वर मॉगने के कारण राम का राज्याभिषेक रुक जाता है तथा अयोध्या मे भयकर तूफान आ जाता है जिसमे कैकेयी का सुहाग भी उजड जाता है।

---

[४७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २१/२
[४८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २६/१
[४९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २६/२
[५०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ३०/१

रामचरित मानस मे सौन्दर्यमयी रमणी, उदार ह्रदया, पति–पुत्र-प्रिया, साम्राज्ञी कैकेयी भावी वश राजमाता पद की अभिलाषा से अभिशप्त होकर ग्लानि युक्त क्षोभ–पूर्ण जीवन व्यतीत करती है।

भरत सब कथा सुनकर कैकेयी से घृणा करने लगते है मॉ ने अपने सौभाग्य–सिदूर को खोकर जिस पुत्र के लिए रघुकुल का राज प्राप्त किया था, भरत ने उसे ही नही, मॉ को भी ठोकर मार दी–

सुनि सुठि सहमेउ राजकुमारू। पाके छत जनु लाग ॲगारू।।
धीरज धरि भरि लेहि उसासा। पापिनि सबहि भॉति कुलनासा।।
जौ पै कुरूचि रही अति तोही। जनमत काहे न मारे मोही।।[५१]

भरत के एक–एक शब्द ने कैकेयी को जो मानसिक प्रताडना दी होगी उसकी कल्पना भी दुष्कर है, अभिव्यक्ति फिर कैसे हो? भरत का आक्रोश कैकेयी के धैर्य को चीरता जा रहा था–

भूप प्रतीति तारि किमि कीन्ही। मरन काल बिधि मति हरि लीन्ही।।
बिधिहुँ न नारि ह्रदय गति जानी। सकल कपट अध अवगुन खानी।।
सरल सुसील धरम रत राऊ। सो किमि जानै तीय सुभाऊ।।
अस को जीव जन्तु जग माही। जेहि रघुनाथ प्रान-प्रिय नाही।।
भे अति अहित राम तेउ तोही। को तू अहसि सत्य कहु मोही।।
जो हसि सो हसि मुँह मसि लाई। ऑखि ओट उठि बैठहि जाई।।[५२]

पुत्र द्वारा इतनी प्रताडना! ऑख ओट उठि बैठहि जाई' सुनकर माता कैकेयी पर क्या गुजरी होगी इसका अनुमान कठिन है। तुलसी ने कैकेयी को भरत के मुख से भला–बुरा कहलवाकर प्रकारान्तर से भातृ–स्नेह को मजबूत किया है।

---

[५१] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६१/३, ४
[५२] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६२/२, ३ ,४

भरत राम को लौटाने चित्रकूट चले तो अभागी कैकेयी भी साथ चली। भरद्वाज के आश्रम मे भरत जब ग्लानि का अनुभव कर रहे थे तो मुनि ने कैकेयी को निर्दोष कहकर गौरव दिया तथा समस्त परिस्थिति भावी वश निर्दिष्ट की। निश्चित रूप से तुलसी ने यहॉ पर कैकेयी के चरित्र को उठाने का प्रयास किया है यह उनकी नारी के प्रति सच्ची निष्ठा है–

तुम्ह ग्लानि जियॅ जनि करहु समुझि मातु करतूति।
तात कैकइहि दोसु नहि गई गिरा मति धूति।।[५३]

तुलसी ने विद्वतजन, मुनिजन तथा जनमानस सबके द्वारा कैकेयी को निर्दोष सिद्ध किया एव विधि को सारी घटनाओ के लिये उत्तरदायी माना–

कोउ कह दूषनु रानिहि नाहिन। बिधि सबु कीन्हि हमहि जो दाहिन।।[५४]

चित्रकूट प्रसग मे कैकेयी जब राम के समीप पहुॅची तो राम ने कैकेयी को सर्वोच्च सम्मान दिया–

प्रथम राम भेटी कैकेई। सरल सुभायॅ भगति मति भेई।।[५५]

राम के सर्वप्रथम कैकेयी से मिलने पर उस पर मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है कैकेयी आत्मदाह और ग्लानि से जलने लगती है।

लखि सिय सहित सरल दोउ भाई। कुटिल रानि पछितानि अघाई।।
अवनि जमहि जाचति कैकेई। महि न बीचु विधि मीचु न देइ।।[५६]

प्रायश्चित की अग्नि महानतम् कलुष को भी जला कर ह्रदय को कुन्दन बना देती है। अन्तत कैकेयी के मातृत्व को राम ने सर्वथा दोष मुक्त घोषित कर दिया–

दोसु देहि जननिहि जड तेई। जिन्ह गुरू साधु सभा नहि सेई।।[५७]

---

[५३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा २०६
[५४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २२३/३
[५५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २४४/४
[५६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २५२/३
[५७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २६३/४

तुलसी के मर्यादा पुरूषोत्तम राम ने कैकेयी को सादर विदा दी, अपने सौम्य व्यवहार से उस स्नेहमयी, पवित्र तथा उदार–हृदया मॉ का शोक–सकोच सब दूर कर दिया। किन्तु कैकेयी पश्चाताप की अग्नि मे चौदह वर्ष जलती ही रही।

राम वन से वापस आने के प्रसग मे कैकेयी का चरित्र उभरकर सामने आता है। "रामहि मिलत कैकेयी हृदय बहुत सकुचानि" की स्थिति बनी हुई थी अत राम सबसे पहले कैकेयी के महल मे मिलने जाते है–

प्रभु जानी कैकई लजानी। प्रथम तासु गृह गये भवानी।
ताहि प्रबोधि बहुत सुख दीन्हा। पुनि निज भवन गवन हरि कीन्हा।।[५८]

राम कथा मे अगर कैकेयी न होती तो 'राम' राम न होते और 'भरत' भरत न बन पाते। इन्हे यह बनने का सुअवसर कैकयी द्वारा मिलता है। वस्तुत कैकेयी का चरित्र तुलसी की सर्वथा अनूठी उद्भावना है, जिसमे विद्रोही मातृत्व को मर्यादित होते हुए दिखाकर कवि ने असद्वृत्ति पर सद्वृत्ति की महानतम् विजय दिखाई है। कैकेयी के चरित्र मे नारी प्रकृति की परस्पर विरोधी प्रवृत्तियो का अद्भुत समन्वयात्मक रूप मिलता है। इस चरित्र के माध्यम से आलोच्य कवि ने नारी के मानसिक द्वन्द्व तथा मनोभावो के परस्पर सघर्ष का अत्यन्त सुन्दर, सजीव तथा मनोवैज्ञानिक चित्रण प्रस्तुत किया है।

सुमित्रा

लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की मॉ, राजा दशरथ की तीन रानियो मे एक 'धर्मे स्थिता धर्म्यं सुमित्रा'[५९]– के रूप मे इनका परिचय वाल्मीकि ने दिया है। बात–चीत करने मे कुशला, दोषरहिता तथा रमणीया के रूप मे इनका उल्लेख रामायण मे प्राप्त होता है।

---

[५८] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड १०/१

[५९] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ४४/३

उदारमना, वात्सल्य सम्पन्न तथा अनेकश महनीय उदात्त गुणो से युक्त माता सुमित्रा का चरित्र राम कथा मे विविध दृष्टियो से महत्वपूर्ण है।

दशरथ पत्नी के रूप मे सुमित्रा का चरित्र परम्परा से अत्यन्त नगण्य रहा है। 'सुमित्रा एक अत्यन्त उपेक्षित और दीन जीवन व्यतीत करती है।[६०] वाल्मीकि रामायण मे तो सुमित्रा के साथ दशरथ के विवाह का कोई उल्लेख ही नही मिलता और न ही उसका कोई परिचय मिलता है।[६१] तुलसी ने इस उपेक्षित नारी के चरित्र मे मात्र उदारता का समावेश नही किया है प्रत्युत उसमे आध्यात्मिक चेतना का विकास भी किया है। तुलसी की सुमित्रा आदर्श गृहिणी आदर्श नारी एव आदर्श माता है। यह चरित्र तुलसी के नारी आदर्श को स्पष्ट करता है।[६२]

सुमित्रा का सर्वप्रथम दर्शन पायस वितरण के समय मिलता है। रामचरित मानस मे भी सुमित्रा का चरित्र सक्षिप्त रूप मे मिलता है किन्तु तुलसी दास ने इस चित्रण मे उन्हे सर्वत्र न केवल त्यागमयी एव विवेकशीला अकित किया है, अपितु उनके विविध सुलक्षणो एव उदात्त भावो का भी चित्रण इन्ही स्थनो पर किया है।

सुमित्रा मे तुलसी ने भारतीय गृहिणी की सास्कृतिक झॉकी देने का सर्वथा नवीन उपक्रम किया है। राम-सीता विवाह की सूचना पाकर सुमित्रा हर्ष–विभोर हो उठी है–

बिविध विधान बाजने बाजे। मगल मुदित सुमित्रा साजे।।
हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मगल मूला।।[६३]

---

[६०] डा० माताप्रसाद गुप्त तुलसीदास पृष्ठ ३०३
[६१] डा० कामिल बुल्के 'राम कथा' पृष्ठ २६५
[६२] सुधारानी शुक्ला 'गोस्वामी तुलसीदास का सामाजिक आदर्श पृष्ठ ३५
[६३] रामचरित मानस बालकाण्ड ३४६ / २

आदर्श पत्नी तथा सपत्नी का चरित्र सुमित्रा मे मुखर हो उठा है। राम के राज्याभिषेक प्रसग मे सुमित्रा का यह रूप दिखायी देता है। राम के राज्याभिषेक का समाचार सुनकर सुमित्रा भाव–विभोर हो जाती है और मागलिक कार्य मे लग जाती है।

चौके चारू सुमित्रा पूरी। मनिमम विविध भॉति अति रूरी।।[६४]

सुमित्रा के हृदय मे महारानी होने का गर्व लेश मात्र भी न था। सुमित्रा ने राम के प्रति अपने स्नेह के कारण राजरानी पद को भी ताक पर रख दिया। उन्हे राजनीतिक प्रपच से विरक्ति सी रहती है, इसका सर्वोत्तम उदाहरण अयोध्या की वह घटना है, जिससे सम्पूर्ण अयोध्या मे एक तूफान सा आ गया, जिससे अयोध्या का प्रत्येक नर–नारी अवगत हो चुका है, किन्तु माता–सुमित्रा उससे अनभिज्ञ है। जब लक्ष्मण उनसे वन गमनार्थ अनुमति प्राप्त करने जाते है तो इस समाचार को सुनकर 'मृगीदेखि दव जनु चहुँ ओरा' जैसी स्थिति उनकी होती है और वे सहम जाती है

पूॅछे मातु मलिन मन देखी। लखन कही सब कथा बिसेषी।।
गई सहमि सुनि बचन कठोरा। मृगी देखि दव जनु चहुँओरा।।[६५]

तुलसी के प्रत्येक शब्द मे विलक्षण व्यञ्जना है। पूॅछे मातु मलिन मन देखी मे लक्ष्मण का सौम्य, शालीन चित्र है, कथा बिसेषी मे अनहोनी बात की अनूठी व्यञ्जना है और 'गई सहमि सुनिबचन कठोरा, मे सुमित्रा की नारी सुलभ भावुकता तथा कोमलता साकार हो गई है, जो मृगीदेखि दव जनु चहुँ ओरा से नितान्त चित्रात्मक बन गई है।

राम वन गमन प्रसग के समय सुमित्रा के चरित्र का सर्वाधिक उदात्त पक्ष प्रकट होता है। लक्ष्मण को वन जाने की अनुमति सुमित्रा सहर्ष देती है। कुअवसर जानकर, सुमित्रा ने धैर्य धारण कर, लक्ष्मण को जो कर्तव्य–बोध कराया, उसने न केवल माता रूप मे ही, बल्कि विमाता तथा सपत्नी रूप मे भी सुमित्रा को उच्चतम प्रतिष्ठा प्रदान की है –

---

[६४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ८/२
[६५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७३/३

तात तुम्हार मातु बैदेही। पिता रामु सब भॉति सनेही।।
अवध वहॉ जहॉ राम निवासू। तहइँ दिवसु जहँ भानु प्रकासू।।[६६]

विवेकपूर्ण मातृत्व का प्रकाश सुमित्रा के इस कथन से हुआ है और उसकी दृढता 'अवध तुम्हार काजु कहु नाही' से ध्वनित हुई है। तुलसी ने सुमित्रा के कथन मे आदर्श नारीत्व की गरिमा भर दी है–

पुत्रवती जुबती जग सोई। रघुपति भगतु जासु सुत होई।।
नतरू बॉझ भलि बादि बिआनी। राम बिमुख सुत ते हित जानी।।[६७]

तुलसी ने सुमित्रा को आदर्श 'पुत्रवती' पद पर अभिषिक्त कर दिया है। तुलसी सुमित्रा की निष्काम भक्ति का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करते है। सुमित्रा ने लक्ष्मण को आशीष दिया जिसमे भारतीय समाज का आचार-विचार तथा भक्ति के स्वर समन्वित हो गये है और साथ ही सुमित्रा के विवेकपूर्ण मातृत्व को अभिव्यक्ति मिल गयी है–

उपदेसु यहु जेहि तात तुम्हरे राम सिय पावही।
पितु मातु प्रिय परिवार पुर सुख सुरति बन बिसरावही।।
तुलसी प्रभुहि सिखदेइ आयसु दीन्ह पुनि आसिष दई।
रति होउ अबिरल अमल सिय रघुबीर पद नित–नित नई।।[६८]

सुमित्रा कितनी उदारमना है विशालमना है और महामना है जो अपने पुत्र लक्ष्मण को वन–गमन से पूर्व नाना भॉति से समझाती है कि तुम्हारे पितु मातु राम और सीय है अत तुम्हे वन मे कोई कष्ट नही होगा।" राग, रोष ईर्ष्या, मद और मोह – इनके वश स्वप्न मे भी मत होना। सब प्रकार के विकारो का त्याग कर मन–बचन और कर्म से श्री सीता रामजी की सेवा करना।

राग रोषु इरिषा मदु मोहू। जनि सपनेहु इन्ह के बस होहू।।

---

[६६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७४/१, २
[६७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७५/१
[६८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा ७५ का छन्द

सकल प्रकार विकार बिहाई। मन क्रम बचन करेहु सेवकाई।।
तुम्ह कहुँ बन सब भॉति सुपासू। सग पितु मातु रामु सिय जासू।।
जेहि न रामु बन लहहि कलेसू। सुत सोइ करेहु इहइ उपदेसू।।[६६]

उक्त मत्रावली मे सुमित्रा ने तत्व ज्ञान तथा निष्काम सेवा धर्म का उपेदश देकर अपनी सेवा परायणता का ज्वलन्त दृष्टान्त प्रस्तुत किया है। एक शिष्य की तरह लक्ष्मण की भावी त्रुटियो की ओर सकेत करके वे एक आदर्श गुरू की भॉति उनका समुचित मार्ग दर्शन करती है।

भरत के साथ राम को लौटाने सब के साथ सुमित्रा भी गयी। वहॉ भी तुलसी ने उनके मातृत्व को पूर्णत साकार कर दिया है–

गहि पद लगे सुमित्रा अका। जनुभेटी सम्पति अति रका।।[७०]

मॉ की सम्पत्ति भला इससे बढकर क्या हो सकती है? वात्सल्य को अक मे भरकर रक बनी सुमित्रा को त्रैलोक्य का सुख जैसे मिल गया हो।

चौदह वर्षोपरान्त सीता और राम के साथ वन से आये लक्ष्मण अत्यन्त प्रफुल्लित होकर सुमित्रा के चरणो मे गिर पडते है परन्तु उन्हे आशीष न देकर 'भेटउ तनय सुमित्रा राम चरन रति जानि'[७१] इसमे एक विह्वल मॉ का भाव नही है अपितु राम के प्रति अनन्य भक्ति है। राम के प्रति लक्ष्मण की अटूट और गहरी आस्थावश सुमित्रा उन्हे गद्‌गद होकर हृदय से लगा लेती है। राम चरित मानस मे कवि ने सुमित्रा को सर्वथा एक महनीय मॉ के रूप मे इसी भॉति प्रस्तुत किया है। नि सदेह सुमित्रा के मातृत्व का चित्रण तुलसी की सर्वथा मौलिक उदभावना है जिसका राम काव्य मे अन्यत्र दर्शन नही हो पाता। भावुकता, विवेक तथा भक्ति की साकार त्रिवेणी सुमित्रा है। तुलसी की यह सृष्टि अविस्मरणीय बन गई है।"

---

[६६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७५/३, ४
[७०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २४५/३
[७१] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा ६ क

ताडका

सुकेत नामक प्रख्यात यक्ष की पुत्री, मारीच की माँ, इच्छानुसार रूप धारण करने वाली एक यक्षिणी, एक सहस्त्र हाथियो की शक्ति वाली ऋषि मुनियो के लिए कष्ट दायिनी, अत्यन्त भयानक – दुराचारिणी यक्षिणी और जम्भ पुत्र सुन्द की पत्नी के रूप मे ताटका के नाम से ताडका का उल्लेख वाल्मीकि रामायण मे मिलता है।[७२]

राम चरित मानस मे ताटका को तुलसी ने ताडका नाम से अभिहित किया है। आलोच्य ग्रथ मे ताडका का प्रसग अत्यन्त सक्षिप्त रूप मे इस प्रकार वर्णित है– मुनि विरोधिनी ताडका को विश्वामित्र ने राम को दिखलाया। शब्द सुनते ही वह क्रोधित होकर दौडी। राम ने एक ही बाण से उसका अन्त कर दिया तथा दीन–हीन जानकर उसे निज पद दिया–

चलेजात मुनि दीन्हि देखाई। सुनि ताडका क्रोध करि धाई।।
एकहि बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा।।[७३]

ताडका का प्रसग राम की यश वृद्धि से सम्बद्ध प्रतीत होती है। राम ताडका का वध ही नही करते वरन् उसे मुक्ति भी देते है।

अहल्या

पच कन्याओ मे ज्येष्ठा महर्षि गौतम की पत्नी तथा जनक के पुरोहित शतानन्द की माता के रूप मे अहल्या का वर्णन मिलता है। हल्य का अर्थ है कुरूपता। कुरूपता न होने के कारण अर्थात अप्रतिम रूपवती होने के कारण इनका नाम अहल्या रखा गया था। राम के आध्यात्मिक पतित पावन स्वरूप को अहल्या प्रसग चिरन्तन बनाता है। इस प्रसग मे उनके (राम) शील और अद्भुत ईश्वरीय शक्ति का प्रभाव प्रकट होता है।

---

[७२] वाल्मीकि रामायण – २४ वाँ तथा २५ वॉ सर्ग

[७३] रामचरित मानस बालकाण्ड २०६/३

अहल्या राम के पतित पावन अभियान का प्रथम सोपान है, जहॉ से उनके विविध अभियानो का शुभारम्भ होता है।

महामुनि गौतम की पत्नी अहल्या की कथा रामचरित मानस के बालकाण्ड मे मिलती है। ताडका बधोपरान्त विश्वामित्र की यज्ञ–रक्षा करके राम–लक्ष्मण मुनि के साथ मिथिला की राजधानी जनक पुर जा रहे थे। मार्ग मे एक सूना आश्रम देखकर राम मुनि से उस आश्रम के बारे मे पूछते है–

आश्रम एक दीख मग माही। खग मृग जीव जन्तु तहँ नाही।।
पूँछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा विसेषी।।[७४]

विश्वामित्र ने उन्हे बताया कि यह गौतम मुनि की पत्नी अहल्या है, जो शापवश उपल–देह धारण कर बडे धैर्य से आपके चरण रज की प्रतीक्षा मे है, आप कृपा कीजिए–

गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि–धीर।
चरन कमल रज चाहित कृपा करहु रघुबीर।।[७५]

राम के चरणो का स्पर्श होते ही शाप–मुक्त हो तप पुञ्ज बनकर अहल्या प्रकट हो जाती है। अपना पूर्वरूप प्राप्त कर तुलसीदास की अहल्या हाथ जोडकर प्रभु के सामने भाव–विह्वल रूप मे खडी होती है– प्रेमाधिक्य के कारण सहसा वह बोल नही पाती है। अत्यन्त प्रसन्न शरीर वाली अहल्या प्रभु के चरणो से लिपट जाती है–

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुज सही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइ कर जोरि रही।।
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहि आवइ बचन कही।
अतिसय बड भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलाधार बही।।[७६]

---

[७४] रामचरित मानस बालकाण्ड २०६/६
[७५] रामचरित मानस बालकाण्ड २१० दोहा
[७६] रामचरित मानस बालकाण्ड २११ छन्द १

फिर अहल्या ने मन मे धैर्य धारण कर प्रभु को पहचाना और श्रीरघुनाथ जी की कृपा से भक्ति प्राप्त की–

धीरजुमन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपा भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई।।
मै नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव विलोचन भव–भय मोचन पाहि-पाहि सरनहि आई।।[७७]

'मै नारि अपावन प्रभु जग पावन' तथा अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई' मे भक्ति की निर्मल धारा बहती दिखायी देती है जिसमे अवगाहन कर कोई भी प्राणी निर्मल मन वाला बन सकता है। तुलसी का यह प्रसग अद्भुत है।

सत्य का ज्ञान तथा प्रभु की भक्ति पा लेने के बाद मन सर्वग्य हो जाता है तभी तो अहल्या मुनि के शाप को शुभ मान रही है जिसके कारण ही उसे यह परम पद प्राप्त हो रहा है–

मुनि श्राप जो दीन्हा अतिभल कीन्हा परम अनुग्रह मै माना।
देखउँ भरि लोचन हरिभव मोचन इहइ लाभ सकर जाना।।
विनती प्रभु मोरी मै मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना।।[७८]

इस प्रकार बारम्बार भगवान राम के चरणो मे गिरकर इच्छित वर पाकर गौतम पत्नी अहल्या सानन्द पति लोक चली जाती है।

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार–बार हरिचरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनदभरी।।[७९]

---

[७७] रामचरित मानस बालकाण्ड २११ छन्द २
[७८] रामचरित मानस बालकाण्ड २१० छन्द ३
[७९] रामचरित मानस बालकाण्ड २१० छन्द ४

तुलसी दास ने अहल्या के शाप–ग्रस्त होने का कारण वर्णित नही किया है। ऐसा शायद उन्होने नारी मर्यादा और भारतीय सस्कृति के आदर्श को ध्यान मे रखकर ही किया होगा। अहल्या का उद्धार कराकर तुलसी श्रीराम के उद्धारक चरित्र मे श्री वृद्धि करते है।

सीता

राम कथा के नारी पात्रो मे सीता का चरित्र सर्वप्रधान है। सम्पूर्ण रामकथा का कथा प्रवाह सीता रूपी स्रोत से प्रवह्मान है। सभवत इसी कारण महर्षि वाल्मीकि ने अपने काव्य को 'काव्य रामायण कृत्स्न सीतायाश्चरित महत कहा है।[८०]

रामचरित मानस के कथा प्रवाह मे सीता का दर्शन गिरिजा पूजन के समय मिलता है– तेहि अवसर सीता तहँ आई, गिरजा पूजन जननि पठाई।[८१] "जनक की पोष्य पुत्री के रूप मे तुलसी ने वाल्मीकि से सीता के चरित्र को ग्रहण किया है किन्तु पुष्प वाटिका मे स्वयम्बर से पूर्व राम सीता का मनोवैज्ञानिक प्रणय चित्रण तुलसी की सर्वथा मौलिक उद्‌भावना है।[८२]

सीता गौरी पूजन हेतु पुष्प वाटिका मे आती है। एक सखी द्वारा राम के गुण कथन को सुनकर सीता के ह्रदय मे राम के प्रति प्रणय अकुर फूट पडता है। सीता को अपनी तरफ आते देखकर– 'ककन किकिनि नुपुर धुनि सुनि राम को ऐसा लगा कि मानहुँ मदन ददुभी दीन्ही। मनसा बिस्व विजय कर लीन्ही'[८३]। अनुपम सौन्दर्य राशि सीता के मुख चन्द्र को देखकर राम की स्थिति–

अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा।।
देखि सीय सोभा सुख पावा। ह्रदय सराहत बचन न आवा।।

---

[८०] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड सर्ग ४ श्लोक ७
[८१] रामचरित मानस बालकाण्ड २२८/१
[८२] स्वय भू एव तुलसी के नारी पात्र – योगेन्द्र शर्मा 'अरुण' पृष्ठ १०७
[८३] रामचरित मानस बालकाण्ड २३०/१

जनु बिरचि सब निज निपुनाई। विरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई।।
सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई। छविगृहँ दीपसिखा जनु बरई।।[८४]

सीता राम को देखकर आत्म–विभोर हो जाती है और उनके नेत्र की पुतलियाँ स्थिर हो जाती है। सीता की स्थिति का वर्णन इस प्रकार तुलसी ने किया है–

देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने।।
थके नयन रघुपति छवि देखे। पलकन्हिहूँ परिहरी निमेषे।।
अधिक सनेह देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी।।
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी।।[८५]

सीता के पूर्वानुराग का हृदय स्पर्शी चित्र तुलसी की काव्य–प्रतिभा का चमत्कार ही है। राम को अपने हृदय मे सुप्रतिष्ठित कर लिया प्रिया सीता ने और नयन द्वार बन्द कर लिये। प्रणय की सच्ची रीति यही है। सीता की लज्जा, कौमार्य मर्यादा सभी तो प्रेम मे बाधक है किन्तु प्रणय इसी लज्जा मे खिलने वाला शाश्वत मधुर पुष्प है। तुलसी ने कुशलता से सीता का मनौवैज्ञानिक चित्राकन किया है–

सकुच सीय तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिघ निहारे।।
नख–सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा।।[८६]

सीता पिता के प्रण के बारे मे सोचकर शकाओ से घिर जाती है किन्तु बाद मे वे पार्वती की विनती करती हुई कहती है हे माता– मोर मनोरथ जानहुँ नीके'। बसहुँ सदा उर पुर सबही के[८७] और पार्वती सीता पर प्रसन्न होकर आशीष देती है–

सुन सिय सत्य असीष हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी।।
नारद वचन सदा सुचि साचा। सो बरू मिलहिं जाहि मनुराचा।।[८८]

---

[८४] रामचरित मानस बालकाण्ड २३०/२, ३
[८५] रामचरित मानस बालकाण्ड २३२/ २, ३, ४
[८६] रामचरित मानस बालकाण्ड २३४/२
[८७] रामचरित मानस बालकाण्ड २३६/२
[८८] रामचरित मानस बालकाण्ड २३६/४

अन्त मे धनुष यज्ञ के अवसर पर राम धनुष–भग करते है और दशरथ समाज सहित सीता का विवाह राम से होता है और सीता वधू रूप मे अयोध्या आकर सुख पूर्वक रहने लगती है।

वन-प्रसग मे सीता के जीवन का महत्वपूर्ण पक्ष प्रस्तुत होता है जब राम के वन गमन का समाचार सुनकर, वह स्वय वन गमन का निश्चय करती है। उन्हे उनके इस दृढ निश्चय से विरत करने हेतु कौशल्या प्रयास करती है। राम भी विविध प्रकार के कष्टो की व्याख्या करके सीता को वन जाने से रोकने का प्रयास करते है। कौशल्या कहती है–

जौ सिय भवन रहै कह अबा। मोहिकहँ होइ बहुत अवलम्बा।[८९]

प्रभु श्रीराम भी सीता को सास की सेवा की सलाह देते है–

आयसु मोर सासु सेवकाई। सब बिधि भामिनी भवन भलाई।।[९०]

सीता विनम्रता के साथ सास के पैर लगकर हाथ जोडकर कहने लगी–

लागि सासु पग कह कर जोरी। छमबि देबि बड अविनय मोरी।।
दीन्ह प्रान पति मोहि सिख सोई। जेहि विधि मोर परम हित होई।।
मै पुनि समुझि दीखि मन माही। पिय वियोग सम दुखु जगनाही।।[९१]

सीता राम के समक्ष अकाट्य तर्क रखती है– कि जैसे बिना जीव के देह और बिना जल के नदी, वैसे ही हे नाथ बिना पुरुष के स्त्री है–

जिय बिनु देह नदी बिनु बारी। तैसअ नाथ पुरुष बिनु नारी।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद विमल विधु–बदन निहारे।।[९२]

---

[८९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६६/४
[९०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६१/२
[९१] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६४/३, ४
[९२] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६५/४

सीता की सेवा भावना और दृढ निश्चय देखकर कौशल्या और राम सीता को बन जाने की अनुमति देते है। यह सीता की प्रथम विजय है। उनके व्यक्तित्व की सुन्दरतम् झॉकी है। सीता की विनम्रता एव सेवा भावना का परिचय निम्न पक्तियो मे अवलोकनीय है–

तब जानकी सासु पग लागी। सुनिअ माय मै परम आभागी।।
सेवा समय दैअँ बनदीन्हा। मोर मनोरथ सफल न कीन्हा।।[६३]

वन–पथ प्रसग मे सीता का शील–सौन्दर्य मार्ग के पथिको, ग्राम–बधुओ आदि सभी को मुग्ध करके अपना प्रशसक बना लेता है। ग्राम-बधुओ द्वारा सीता से राम के बारे मे प्रश्न करने एव सीता द्वारा उसका उत्तर भारतीय सस्कृति एव मर्यादा के अनुसार देने का दृश्य अत्यन्त मनोरम बन गया है–

कोटि मनोज लजावनि हारे। सुमुखि कहहु को आहि तुम्हारे।।
x x x
सहज सुभाय सुभग तन गोरे। नामु लखनु लघु देवर मोरे।।
बहुरि बदन विधु अचल ढॉकी। पिय तन चितइ भौहकर बॉकी।।
खजनु मजु तिरीछे नयननि। निज पति कहेउ तिन्हहि सिय सयननि।।[६४]

चित्रकूट प्रसग मे सीता की विवेक शीलता दर्शनीय एव अनुकरणीय है। वे चित्रकूट आश्रम मे ही राजमहल तथा परिवार के सुख का अनुभव करती है–

परनकुटी प्रिय–प्रियतम सगा। प्रिय परिवार कुरग–विहगा।।
सास–ससुर सम मुनितिय मुनिवर। असनु अमिय सम कदमूलफर।।[६५]

अरण्य काण्ड के शूर्पणखा प्रसग मे हम देखते है कि सीता के अद्वितीय सौन्दर्य को देखकर शूर्पणखा भी आश्चर्य-चकित होकर कह उठती है–

---

[६३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६६/२
[६४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ११७/१–४
[६५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४०/३

रूप राशि बिधि नारि सॅवारी। रति सत कोटि तासु बलिहारी।।[९६]

सीता मे नारी सुलभ गुण है– वे मनोहर छवि वाले कचन मृग को प्राप्त करने के लिए राम से निवेदन करती है।[९७] जिसके कारण सीता का रावण द्वारा अपहरण किया जाता है। रामचरित मानस के अनुसार रावण माया की सीता का ही अपहरण करता है क्योकि राम, 'मै कछु करब ललित नर लीला[९८] हेतु सीता से 'तुम्ह पावक महुँ करहु निवासा। जौ लागि करौ निसाचर नासा।।"[९९] कहते है।

अशोक–वाटिका प्रसग मे सीता का चरित्र उभरकर सामने आता है। उनका राम के प्रति एक निष्ठ प्रेम है। राम के वियोग मे सीता 'कृस तनु' हो जाती है। रावण साम-दाम-भेद नीति द्वारा सीता को अनेक प्रलोभन भी देता है 'तब अनुचरी करहुँ पन मोरा। एक बार बिलोकु मम ओरा।।[१००] किन्तु सुदीप्त सतीत्व वाली सीता उसकी तरफ ऑख उठाकर भी नही देखती और तृन की ओट रखकर रावण को कडे शब्दो मे दो टूक जबाब देती है–

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ विकासा।।
अस मन समझु कहति जानकी। खल सुधि नहि रघुबीर बान की।।
सठ सूने हरि आनेहि मोही। अधम निलज्ज लाज नही तोही।।[१०१]

रावण के कठोर वचनो से खिन्न सीता अग्नि मे प्रवेश करना चाहती है। किन्तु त्रिजटा पुत्रीवत स्नेह जताकर विविध प्रकार से समझाकर सान्त्वना प्रदान करती है। इसी समय हनुमान मुद्रिका सीता के सामने गिराते है जिसे देखकर सीता चकित हृदय मुदरी को पहचानती है। हनुमान द्वारा सम्पूर्ण सदेश सीता पाती है और अपना सदेश प्रभु राम के पास भेजती है। सीता हनुमान को अमोघ आशीष भी देती है–

---

[९६] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड २२/५
[९७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २७/२, ३
[९८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २४/१
[९९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २४/१
[१००] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ६/३
[१०१] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ६/४, ५

अजर अमर गुन निधि सुत होहू। करहुँ बहुत रघुनायक छोहू।।[१०२]

इस प्रकार अशोक वाटिका की सीता मे राम के प्रति अनन्य प्रेम है। असीम त्याग है और राम के हित की उत्कट कामना है। एक निष्ठ पति प्रेम का आदर्श यहॉ पर तुलसी ने प्रस्तुत किया है। राम–रावण युद्ध मे रावण की मृत्यु के विलम्ब मे सीता की चिन्ता एव उद्विग्नता बढती जाती है किन्तु त्रिजटा की बातो से सीता को सान्त्वना प्राप्त होती है। त्रिजटा कहती कि इसके ह्रदय मे आप बसती है इसीलिए प्रभु राम इसके ह्रदय मे वाण नही मार रहे है।

प्रभु ताते उर हतइ न तेही। एहि के ह्रदय बसति वैदेही।।[१०३]

अत पहले राम इसका शीश काट कर इसे विकल कर तुम्हारी याद रूपी मूर्ति को इसके ह्रदय से हटाकर इसके ह्रदय मे वाण मारकर इसका वध करेगे।

रावण के मृत्योपरान्त सीता राम के पास लायी जाती है। राम उनके पातिव्रत्य को लेकर कुछ दुर्बाद कहते है ऐसा कहने का उद्देश्य माया सीता को अग्नि मे प्रवेश कराकर असली सीता को प्राप्त करना था। राम के आदेश पर सीता लक्ष्मण द्वारा प्रकट की गयी अग्नि मे प्रवेश करती है। और अग्नि देवता द्वारा वह राम को वैसे ही समर्पित की जाती है। जैसे क्षीर–सागर ने भगवान विष्णु को लक्ष्मी का समर्पण किया था।

धरि रूप पावक पानि गहि श्री सत्य श्रुति जग बिदित जो।
जिमि छीर सागर इदिरा रामहि समर्पी आनि सो।।[१०४]

राम–सीता और लक्ष्मण अपने सहयोगियो के साथ अयोध्या आते है जहॉ पर राम का राज्याभिषेक होता है और सीता उनकी पटरानी बनती है। उत्तर काण्ड मे तुलसी ने सीता के माता रूप का भी उल्लेख किया है–

दुइ सुत सुन्दर सीता जाए। लव कुस वेद पुरानन्ह गाए[१०५]

---

[१०२] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड १७/२
[१०३] रामचरितमानस लकाकाण्ड ६६/७
[१०४] रामचरित मानस लकाकाण्ड १०६ छन्द २
[१०५] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड २५/३

तुलसी ने सीता के परित्याग का वर्णन रामचरित मानस मे नही किया है। वाल्मीकि द्वारा सीता–परित्याग के वर्णन को उन्होने अपने मानस मे स्थान नही दिया। तुलसी जैसे आदर्शवादी के लिए शायद सीता–परित्याग का वर्णन भारतीय सस्कृति एव मर्यादा के अनुरूप न लगा हो। फिर तुलसी अपने आराध्य राम द्वारा अपनी आराध्य देवी सीता का परित्याग का वर्णन कैसे कर सकते है।

राम चरित मानस के नारी पात्रो मे सीता का चरित्र सर्वाधिक उदात्त गुण सम्पन्न है। सीता के चरित्र मे आदर्श एव उदात्त तत्वो का समावेश हुआ है "तुलसी ने सीता को आदि शक्ति के रूप मे प्रतिष्ठित करके उनके चरित्र मे दैवी तत्व का प्रकाशन यत्र–तत्र कराया है।"[१०६] तुलसी द्वारा सीता का चरित्र अतीव सुन्दरी, पतिव्रता, धर्मज्ञा, पति–परायणा, दृढसकल्पा, विवेकशीला, सत्कुल प्रसूता, त्यागमयी आदर्श नारी एव कोमल तथा दृढ चरित्र वाली आदर्श पत्नी के रूप मे प्रस्तुत किया गया है।

यथार्थ मे ही सीता का चरित्र गगा जल से भी अधिक निर्मल है जिसने अगणित स्त्रियो को शील प्रदान किया है। वह जाह्नवी की धारा के समान अविनाशी भी है। जब तक एक है दूसरे का नाश भी नही हो सकता।[१०७]

तुलसी द्वारा सीता के चरित्र का निर्माण सत्व से युक्त उच्चभाव भूमि पर किया गया है। तुलसी की निपुण काव्य–कला सीता के चरित्र निर्मण मे दिखायी पडती है। श्री हरिऔध ने लिखा है कि कविता करके तुलसी न लसै, कविता पा लसी तुलसी की कला को[१०८] निश्चित रूप से तुलसी ने कुशल शिल्पी के रूप मे सीता के चरित्र का निर्माण किया है। नारी आदर्श की समग्र विशेषताओ एव गुणो से वे युक्त है सीता का चरित्र आदर्श भारतीय नारी का प्रतीक है।

---

[१०६] स्वयभू एव तुलसी के पात्र पृष्ठ २४४

[१०७] मानस और राम और सीता – द्वारका प्रसाद मिश्र पृष्ठ ८४

[१०८] तुलसीदास और उनका सदेश – रत्नाकर पाण्डेय पृष्ठ ११८

उर्मिला

भारतीय सस्कृति की साक्षात् मूर्ति उर्मिला का व्यक्तित्व तुलसी द्वारा उपेक्षित है। चौदह वर्षो तक पति–विरह मे आकुल इस तपस्विनी का वर्णन वाल्मीकि रामायण तथा रामचरित मानस मे अत्यन्त सक्षिप्त कुछ पक्तियो मे ही प्राप्त होता है।

रामचरित मानस मे जानकी की लघु भगिनी रूप मे उर्मिला का परिचय मिलता है। वशिष्ठ की आज्ञा पाकर जनक ने विवाह का सामान सजाकर माण्डवी, श्रुतिकार्ति और उर्मिला को बुलाया।

तब जनक पाइ बशिष्ठ आयसु ब्याह साज सॅवारि कै।
माण्डवी श्रुतकीरति उरमिला कुऑरि लई हॅकारि कै।।[१०९]

जानकी की छोटी बहन उर्मिला को सुन्दरियो मे शिरोमणि जानकर उस कन्या को सब प्रकार से सम्मानित करके, लक्ष्मण जी को ब्याह दिया।

जानकी लघु भगिनी सकल सुदरि सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्हि ब्याहि लखनहि सकल विधि सनमानि कै।।[११०]

तुलसी द्वारा उर्मिला के चरित्र की उपेक्षा सभवत उनके राम के चरित्र को विकसित करने मे कम महत्वपूर्ण होना ही है। तुलसीदास ने उन्ही चरित्रो का विकास किया है जो राम के चरित्र विकास मे सहायक सिद्ध हुए है। उर्मिला के चरित्र का सम्पूर्णता के साथ विकास मैथिलीशरण गुप्त ने अपने साकेत मे किया है।

माण्डवी

वाल्मीकि रामायण मे धनुष यज्ञ प्रसग मे कथा आई है कि राम धनुष चढाकर उसे तोडते है, जिस पर दशरथ को बुलाया जाता है तथा राम के अतिरिक्त लक्ष्मण भरत तथा शत्रुध्न क्रमश उर्मिला, माण्डवी तथा श्रुतिकीर्ति से विवाह करते है[१११]

---

[१०९] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५ का छन्द १
[११०] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५ का छन्द ३
[१११] डा० कामिल बुल्के रामकथा पृष्ठ २५०

रामचरित मानस मे धनुष भग होने पर जनक ने वशिष्ठ की आज्ञा पाकर विवाह का सामान सजाकर माण्डवी, श्रुतिकीर्ति और उर्मिला— इन तीनो राजकुमारियो को बुला लिया—

तब जनक पाइ बशिष्ठ आयसु ब्याह साजि सवॉरि कै।
माण्डवी, श्रुतिकीरति उरमिला कुऑरि लाई हॅकरिक कै।।[११२]

कुशध्वज की बडी कन्या माण्डवी जो गुण, शील और शोभा की खान थी, उनका विवाह राजा जनक ने प्रेम पूर्वक सब रीतियॉ करके कुमार भरत से कर दिया।

कुस केतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभा मई।
सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दई।।[११३]

गुणशील, सौन्दर्य से मण्डित होना कन्योचित आदर्श है तथा 'रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि' सामाजिकता का कुशल चित्राकन है। तुलसी भारतीय सस्कृति एव समाज मे स्थापित कन्या के आदर्श रूप का वर्णन यहॉ पर करते है। तुलसी द्वारा माण्डवी के चरित्र का सक्षिप्त उल्लेख उनकी राम के प्रति गहरी भक्ति के कारण है। माण्डवी का चरित्र राम के चरित्र को प्रभावित नही करता इस कारण तुलसी ने माण्डवी के चरित्र को विस्तार नही दिया है। माण्डवी के चरित्र के साथ न्याय मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत महाकाव्य मे किया है।

श्रुतिकीर्ति

श्रुतिकीर्ति का चरित्र भी वाल्मीकि और तुलसी द्वारा उपेक्षित रहा है। नाम—मात्र की पक्तियो मे उनका केवल वैवाहिक परिचय दिया गया है।

---

[११२] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५/ छन्द २
[११३] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५/ छन्द २

राम चरितमानस मे वशिष्ठ की आज्ञा पाकर कुशध्वज की छोटी पुत्री जिसका नाम श्रुतिकीर्ति था और जो सुन्दर नेत्रो वाली, सुन्दर मुख वाली सब गुणो की खान और रूप तथा शील मे उजागर है उसको राजा जनक ने शत्रुघ्न को ब्याह दिया।

जेहि नामु श्रुतिकी रति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी।।[११४]

कन्योचित गुणो का आदर्श इन पात्रो मे तुलसी ने अकित किया है जो उनकी मौलिक उद्‌भावना तथा भारतीय सस्कृति के प्रति आस्था का परिचायक है।[११५]

मन्थरा

मथरा तुलसी द्वारा चित्रित विशिष्ट तथा अनुपम नारी-पात्र है, जिसमे उन्होंने असद्–वृत्ति को पूर्णत केन्द्रित दिखाया है। परम्परा से मन्थरा कैकेयी की विश्वास–पात्रा, नि शक, चतुर तथा स्वामिभक्त दासी के रूप मे चित्रित हुई है। तुलसी ने मन्थरा के चित्रण मे अपनी काव्य–कला का ऐसा उत्कर्ष दिखाया है कि मन्थरा एक अमर चरित्र बन गई है। मनोवैज्ञानिक तथा व्यजना पूर्ण तर्क प्रणाली का समावेश करके कवि ने मथरा को अविस्मरणीय बना दिया है। वस्तुत तुलसी की मन्थरा असामान्य चरित्र है। वाल्मीकि रामायण मे उसके स्वरूप के निखार मे जो कमी रह गयी थी, उसे पूरा कर दिया है।

तुलसी ने मथरा का प्रथम परिचय देते हुए उसकी मनोगत प्रवृत्ति सहज ही बता दिया है–

नामु मथरा मदमति चेरी कैकई केरि।
अजस पेटारी ताहि करि गई गिरा मत फेरि।।[११६]

---

[११४] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५/ छन्द ३
[११५] स्वयभू एव तुलसी के नारीपात्र पृष्ठ ६२
[११६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा १२

'मदमतिचेरी' से उसका स्वभाव व्यजित हो रहा है और अजस पेटारी ताहि करि, से उसकी चारित्रिक अस्थिरता स्पष्ट होती है। अकारण ईर्ष्या करना मथरा का दासी–सुलभ गुण है, अत 'पूछेसि लोगन्ह काह उद्दाहू के उत्तर मे 'राम तिलकु सुनि भा उर दाहू। मन की ईर्ष्या कुचक्र फैलाने लगी और 'होइ अकाजु कवनि विधि राती' की उधेड बुन मे लगी हुई कुटिल हृदय मथरा इस उत्सव को विफल बनाने के लिए तरह–तरह के उपाय सोचने लगी–

दीख मन्थरा नगरू बनावा। मजुल मगल बाज बधावा।।
पूछेसि लोगन्ह काह उद्दाहू। राम तिलकु सुनि या उर दाहू।।
करइ विचारू कुबद्धि कुजाती। होइ अकाजु कवनि बिधि राती।।[११७]

मन्थरा के मन मे ऐसा दुर्विचार सरस्वती द्वारा उसकी मति फेर देने के कारण आता है। अनमनी होकर वह कैकेयी के पास पहुॅचती है।

कैकेयी ने हॅसकर मन्थरा से उसके इन अनमनेपन का कारण पूॅछ लिया तो मन्थरा की कुटिलता अभिनय करने लगी–

उतरू देइ न लेइ उसासू। नारि चरित करि ढारइ ऑसू।।
हॅसि कह रानि गालु बड तोरे। दीन्ह लखन सिख अस मन मोरे।।
तबहूॅ न बोल चेरि बडि पापिनि। छाडइ स्वास कारि जनु सॉपिनि।।[११८]

मन्थरा के कुशल अभिनय का प्रभाव कैकयी पर हुआ और रानी कैकेयी ने डरकर कहा अरी कहती क्यो नही? राम, राजा दशरथ, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न कुशल से तो है? यह सुनकर मन्थरा की ईर्ष्या अनजाने ही भडक उठती है, व्यग्यवाण के रूप मे शब्द मुखर हो उठते है–

---

[११७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १३/१, २
[११८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १३/३, ४

रामहि छॉडि कुसल केहि आजू। जेहि जनेसु देइ जुबराजू।।
भयउ कौसिलहि बिधि अति दाहिन। देखत गरब रहत उर नाहिन।।
देखहु कस न जाइ सब शोभा। जो अवलोकि मोर मनु छोभा।।[११९]

मथरा के शब्द–शब्द मे व्यग्य का विष मिला हुआ है जो कैकेयी की सरलता को विषाक्त कर रहा है। तभी भयकर विष–वाण मथरा ने कैकेयी को मारा–

पूत विदेस न सोच तुम्हारे। जानति हहु बस नाहु हमारे।।
नीद बहुत प्रिय सेज तुराई। लखहु न भूप कपट चतुराई।।[१२०]

विलक्षण है मन्थरा का वाक्चातुर्य। 'पूत विदेश न सोच तुम्हारे' कहकर ममतामयी मॉ के कोमल मातृत्व को बेध डाला है मन्थरा ने, तो 'जानति हहुँ बस नाहु तुम्हारे' कहकर कैकेयी के पत्नीत्व को धिक्कार भरी ललकार दे डाली है। असभव था कि कैकेयी मथरा के इस तर्क के आगे अविचल रह जाती।

कैकेयी का राज–दर्प कुछ उभरा और मथरा को उसने कह दिया–

पुनि अस कबहुँ कहसि घर फोरी। तब धरि जीभ कढावउँ तोरी।।[१२१]

कैकेयी मन्थरा को डॉटती है तथा उसे इस प्रकार के दुष्कृत्य के लिए 'घरफोरी' कहती है। कैकेयी कहती है कि उसने पुन ऐसी बात कही तो वह उसकी जीभ कटवा लेगी। किन्तु कैकेयी सुरमाया बस कपट पूर्ण मथरा से पुन कहती है कि हर्ष के समय विषाद का अपना कारण बता? तुझे भरत की सौगध है, सच सच बोल। मथरा को उचित अवसर मिल गया और उसने अपनी बात कैकेयी के समक्ष इस रूप मे रखा–

कोउ नृप होउ हमहि का हानी। चेरि छाडि अब होब कि रानी।।
जारै जोगु सुभाउ हमारा। अनभल देखि न जाइ तुम्हारा।।
ताते कछुक बात अनुसारी। छमिअ देबि बडि चूक हमारी।।[१२२]

---

[११९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४/१, २
[१२०] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४/३
[१२१] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४/४
[१२२] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६/३, ४

'कोउ नृप होउ हमहि का हानी' का व्यग्य वाण छोडकर मन्थरा ने अपनी नि स्वार्थ निष्ठा भक्ति की आड मे कैकेयी को सोचने के लिए मजबूर कर दिया।

कैकेयी अभिभूत हो गयी। मन्थरा का यह अभिनय असर कर गया। सुरमाया के कारण कैकेयी ने मन्थरा को अपनी सुहृद जानकर उसका विश्वास कर लिया। मन्थरा ने सपत्नी द्वेष उत्पन्न करा दिया तथा कैकेयी को अपने मातृत्व के लिए विद्रोही बना दिया–

जौ सुत सहित करहु सेवकाई। तौ घर रहहु न आन उपाई।।[१२३]

मन्थरा का यह व्यग्य वाण कैकेयी के मर्म को बेध गया और उसने मथरा को अपनी परम हितैषिणी जानकर अपने मन की सारी बाते बता दी तथा मन्थरा पर अटूट विश्वास कर लिया। नियतिवश कैकेयी मन्थरा के इशारे पर चलने लगती है। मन्थरा कैकेयी को दो वरदानो की याद दिलाती है पहले वरदान से भरत को राजगद्दी तथा दूसरे वरदान से राम को चौदह वर्षो का वनवास मॉगने के लिए प्रेरित करती है। वह इसके लिए कैकेयी को कोप भवन जाने की सलाह देती है तथा कहती है कि सहज मे राजा पर विश्वास मत करना। राम की शपथ दिलाने के बाद ही राजा से वरदान का बचन लेना जिससे फिर राजा मुकर न सके–

भूपति राम सपथ जब करई। तब मागेहु जेहि बचनु न ताई।।
होइ अकाजु आजु निसि बीते। वचनु मोर प्रिय मानेहु जी ते।।[१२४]

यह मन्थरा का वाक्चातुर्य है कि जीभ कढवाने वाली कैकेयी की न केवल वह विश्वासपात्र बनती है वल्कि कैकेयी को अपना प्रशसक भी बना लेती है और कहती है यदि विधाता ने कल मेरा मनोरथ पूरा किया तो हे सखी! मै तुझे अपनी ऑखो की पुतली बना लूॅगी–

---

[१२३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६/४
[१२४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २२/४

जौ बिधि पुरब मनोरथ काली। करौ तोहि चख पूतरि आली।।[१२५]

"मन्थरा की अकारण ईर्ष्या ने रघुकुल की सरल रानी कैकेयी को युग–युग तक कलकिनी बना दिया था अत तुलसी का न्याय उसे दण्ड क्यो कर न देता? शत्रुघ्न ने 'हुमगि लात तकि कूबर मारा' और मन्थरा की कुटिलता को न्याय की तुला पर रखकर तुलसी ने उसका अपराध प्रमाणित कर दिया।"[१२६]

तुलसी की मन्थरा अविस्मरणीय है, अनूठी है तुलसी ने मन्थरा के चरित्र को मनोविज्ञान के सॉचे मे ढाला है।

शूर्पणखा

राम चरित मानस मे शूर्पणखा का सर्वप्रथम उल्लेख अरण्य काण्ड मे प्राप्त होता है। रावण की बहन, जिसका प्रथम परिचय ही नागिन सदृश भयानक तथा दुष्ट हृदय के रूप मे तुलसी दास ने दिया है। अत्यन्त सुन्दर रूप धारण करके राम के समीप पहॅुच कर अपने विवाह का प्रस्ताव रखती है–

सूपनखा रावन कै बहिनी। दुष्ट हृदय दारून जस अहिनी।।
पचवटी सो गइ एक बारा। देखि बिकल भइ जुगल कुमारा।।[१२७]

x x x

रुचिर रूप धरि प्रभु पहि जाई। बोली बचन बहुत मुसुकाई।।
तुम्ह सम पुरुष ने मो समनारी। यह सयोग विधि रचा बिचारी।।[१२८]

मेरे योग्य वर तीनो लोको मे न होने के कारण मै अब तक अविवाहित रही। तुम्हारे सौन्दर्य से आकृष्ट होकर अब विवाह करने की इच्छा मेरे अन्दर जागृत हुई है।

---

[१२५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २३/२
[१२६] स्वयभू एव तुलसी के पात्र पृष्ठ २२८
[१२७] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७/२
[१२८] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७/४

राम शूर्पणखा के प्रस्ताव पर सीता की ओर देखकर कहते है कि 'अहइ कुआर मोर लघुभ्राता''[१२९] यह सुनकर शूर्पणखा लक्ष्मण के पास जाती है लक्ष्मण कहते है कि– सुन्दरी मै उनका दास हूँ अत मै विवाह करने मे असमर्थ हूँ–

सुदरि सुनु मै उन्ह कर दासा। पराधीन नहि तोर सुपासा।।
प्रभु समर्थ कोसलपुर राजा। जो कछु करहि उनहि सब छाजा।।[१३०]

इस प्रकार लक्ष्मण उसे राम के पास भेजते है। राम शूर्पणखा को पुन लक्ष्मण के पास भेजते है जो उसे पुन राम के पास भेजते है।

पुनि फिरि राम निकट सो आई। प्रभु लछिमन पहि बहुरि पठाई।।[१३१]

इस प्रकार फुटबाल की तरह एक पक्ष से दूसरे पक्ष की ओर फेकी जाने वाली शूर्पणखा ने क्रोधित होकर राम के समीप पहुँचकर उनके समक्ष अपना भयकर रूप प्रकट किया। समीपवर्ती सीता को भयाक्रान्त देखकर राम ने लक्ष्मण को इशारा किया। राम के सकेतानुसार लक्ष्मण ने उसे नाक–कान विहीन कर दिया।

लछिमन अति लाघवँ सो नाक कान बिनु कीन्हि।
ताके कर रावन कहँ मनौ चुनौती दीन्हि।।[१३२]

इस प्रकार लक्ष्मण ने शूर्पणखा को नाक–कान विहीन करके रावण को मानो उसके हाथो चुनौती भेज दी हो।

शूर्पणखा अपने भाई खर–दूषण के पास जाकर यह वृतान्त सुनाती है। बहन का दुख सुनकर प्रतिशोध एव उन्हे इसके लिए दण्ड देने हेतु, वे राम के साथ युद्ध करते है जिसमे राम के हाथो वे युद्ध मे मारे जाते है। इसके पश्चात् शूर्पणखा अपने

---

[१२९] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७/६
[१३०] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७/७
[१३१] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७/६
[१३२] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७ दोहा

भाई रावण के पास जाकर विविध प्रकार से उसकी प्रशसा करके अपने इस अपमान का बदला लेने के लिए उसको तैयार करती है।

सभा माझ परि ब्याकुल बहु प्रकार कह रोइ।
ताहि जिअत दसकधर मोरि कि असि गति होइ।।[१३३]

शूर्पणखा ने ही रावण को उकसाकर सीता–हरण कराया जिसके फलस्वरूप रावण से राम का घोर सग्राम हुआ।

राम चरित मानस की शूर्पणखा कुछ अधिक नीतिज्ञा है जो रावण के सम्मुख अपनी करूण कथा को इतनी कुशलता पूर्वक प्रस्तुत करती है कि वह तत्काल राम से इस अपमान का बदला लेने के लिए उद्यत हो जाता है। तुलसी ने शूर्पणखा के चरित्र मे असद्–वृत्तियो का समावेश कर उसके चरित्र को अमर बना दिया है।

शबरी

तुलसी के नारी पात्रो मे शबरी सर्वथा विशिष्ट पात्र बन गई है, जो कवि के भक्त–हृदय का प्रतिनिधित्व करती है। शबरी को तुलसी ने अनन्य रामानुरागी भक्तिन का स्वरूप दिया है और उसमे दैन्य का भाव प्रदर्शित करके भक्ति का परिपाक कराया है। ज्यो ही शबरी ने देखा कि राम उसके आश्रम मे पधार रहे है वह आत्म विभोर हो जाती है–

स्याम गौर सुदर दोउ भाई। सबरी परी चरन लपटाई।।
प्रेम मगन मुख बचन न आवा। पुनि पनि पद सरोज सिरनावा।।
सादर जल लै चरन पखारे। पुनि सुदर आसन बैठारे।[१३४]

'सबरी परी चरन लपटाई,' 'प्रेम मगन मुखबचन न आवा' तथा 'सादर जल लै चरन पखारे' से तुलसी ने शबरी के हृदय मे बैठी हुई भावुक राम भाक्तिन को जैसे

[१३३] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड दोहा २१ ख
[१३४] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३४/४, ५

साकार कर दिया है। तभी तो प्रभु राम उसके दिए कन्दमूल फल को प्रेम सहित बारम्बार बखान करते हुए खाते है। भाव–विह्वल शबरी के मन मे दैन्य–भाव का अगाध सिधु उमड रहा था। तुलसी ने सजीव झॉकी प्रस्तुत की है–

पानि जोरि आगे' भइ ठाढी। प्रभुहि बिलोकि प्रीति अतिबाढी।।
केहि विधि अस्तुति करौ तुम्हारी। अधम जाति मै जडमति भारी।।
अधय ते अधम अधम अतिनारी। तिन्ह महँ मै मतिमद अघारी।।[१३५]

"यदि हृदयहीन दुराग्रही आलोचक शबरी के इस दैन्य भाव को तुलसी की नारी निदा मान ले तो दोष तुलसी का नही अपितु आलोचक की अज्ञता का ही है। आराध्य और आराधक मे तो सिन्धु-विन्दु का सहज भाव स्वत आ जाता है। तुलसी का भक्त हृदय राम सो बडौ है कौन, मो सो कौन छोटो' की दीनता स्वीकार करके ही परमपद प्राप्त करना सहज मानता है।"

भगवान् राम सरल हृदया शबरी को नवधाभक्ति का उपदेश देते हुए कहते है कि नवी भक्ति है सरलता और सब के साथ कपट रहित बर्ताव करना, हृदय मे मेरा भरोसा रखना और किसी भी अवस्था मे हर्ष और दैन्य (विवाद) का न होना।" नवो मे जिनके पास इनमे से एक भी होती है वह स्त्री पुरुष, जड चेतन कोई भी हो– हे भामिनि वह मुझे अत्यन्त प्रिय है फिर तुझमे तो सभी प्रकार की भक्ति दृढ है अतएव जो गति योगियो को दुलर्भ है वही आज तेरे लिए सुलभ हो गयी है–

नवम सरल सब सन छलहीना। मम भरोस हियँ हरष न दीना।।
नव महुँ एकउ जिन्ह के होई। नारि पुरुष सचराचर कोई।।
सोइ अतिसय प्रिय भामिनि मोरे। सकल प्रकार दृढ तोरे।।
जोगि वृद दुरलभ गति जोई। तो कहुँ आजु सुलभ भइ सोई।।[१३६]

---

[१३५] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३५/१, २
[१३६] स्वयभू एव तुलसी के नारी पात्र पृष्ठ २३६

भगवान राम शबरी से सीता के बारे मे पूॅछते है। शबरी उस सर्वग्य प्रभु को बताती है कि आप पपा नामक सरोवर को जाइये जहॉ पर आपकी सुग्रीव से मित्रता होगी वही सब समाचार आपको मिलेगा। हे धीर बुद्धि आप सब कुछ जानकर भी मुझसे पूॅछते है? इस प्रकार भगवान राम को उत्तर देने से शबरी की योग्यता की परख सहज ही हो जाती है। उसका आत्म ज्ञान प्रबल था तभी तो वह इस प्रकार की भविष्यवाणी करती है।

पपा सरहि जाहु रघुराई। तहॅ होइहि सुग्रीव मिताई।
सो सब कहहि देव रघुबीरा। जानत हूॅ पूछहु मति धीरा।।[१३७]

सब कथा कहकर प्रभु के मुख का दर्शन कर, उनके चरणकमलो को हृदय मे धारण करके और योगाग्नि से शरीर को त्यागकर वह उस दुर्लभ हरिपद मे लीन हो गयी जहॉ से पुन इस भवसागर मे नही आना होता है अर्थात प्रभु से मुक्तिपद को प्राप्त कर लिया।

कहि कथा सकल बिलोकि हरिमुॅख हृदयॅ पद पकज धरे।
तजि जोग पावक देह हरि पद लीन भइ जहॅ नहि फिरे।।[१३८]

इस प्रकार शबरी प्रभु द्वारा 'परम–पद को प्राप्त करती है। तुलसी ने शबरी के चरित्र को सत्व की भूमि पर उतारा है और अपने शिल्प के माध्यम से उसे वह ऊॅचाइयॉ प्रदान की है जो भक्ति के क्षेत्र मे बडे–बडे योगी–मुनि को भी दुर्लभ है। नि सदेह शबरी का चरित्र मानस मे अमर हो गया है।

तारा

बालि की पत्नी तारा का चरित्र राम कथा मे विविध दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। तारा को समग्र वानर जाति की स्त्रियो का प्रतिनिधि माना जा सकता है। तारा के

---

[१३७] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३६/६

[१३८] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३६/ छन्द

चरित्र मे वानर जाति की स्त्रियो की सामाजिक स्थिति तथा परिवार मे उनके महत्व की झॉकी मिलती है। रामचरित मानस मे तारा का चरित्र सक्षिप्त है। इसमे तारा के सौन्दर्य पक्ष तथा उसके व्यक्तित्व का वर्णन नही मिलता है। तारा बालि का पैर पकडकर सुग्रीव से युद्ध न करने के लिए समझाती हुई मानस मे उपस्थित होती है—

सुनत बालि क्रोधातुर धावा। गहिकर चरन नारि समुझावा।।
सुनु पति जिन्हहि मिलेउ सुग्रीव। ते द्वौ बधु तेज बल सीवा।।[१३९]

तारा के परामर्श की उपेक्षा करने के कारण राम बालि को मूढ तथा अभिमानी कहते है—

मूढ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावन करसि न काना।।[१४०]

व्याकुल तारा को देखकर राम उसे ज्ञान का उपदेश देते है तथा उसकी माया दूर करते है— ज्ञान उत्पन्न होते ही तारा प्रभु से परम भक्ति का वर मॉग लेती है—

तारा बिकल देखि रघुराया। दीन्ह ग्यान हरि लीन्ही माया।।
क्षिति जल पावक गगन समीरा। पच रचित अति अधम सरीरा।।
प्रगट सो तनु तब आगे सोवा। जीव नित्य केहि लगि तुम्ह रोवा।।
उपजा ज्ञान चरन तब लागी। लीन्हेसि परम भगति बर मॉगी।।[१४१]

चूॅकि तुलसी एक भक्त कवि है। भक्ति उनका साधन है अत पात्रो के माध्यम से भी भक्ति का ही वरदान मागते है।

तुलसी दास ने बालि की मृत्यु के पश्चात् तारा को सुग्रीव की पत्नी के रूप मे प्रस्तुत किया है। लक्ष्मण जब क्रोधित होकर सुग्रीव के नगर को जलाने के लिए कहते है तब सुग्रीव हनुमान से तारा को साथ ले जाकर विनती करके लक्ष्मण को शान्त करने को कहते है—

---

[१३९] रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड ७/१४
[१४०] रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड ६/५
[१४१] रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड ११/२, ३

सुनु हनुमत सग लै तारा। करि बिनती समुझाउ कुमारा।।
तारा सहित जाइ हनुमाना। चरन बदि प्रभु सुजसु बखाना।।[१४२]

तारा पच कन्याओ मे से एक है पच कन्याएँ पति की मृत्यु के पश्चात् पुन कन्या मान ली जाती है। सभवत सुग्रीव और तारा को पति–पत्नी के रूप मे तुलसी ने इसी कारण प्रस्तुत किया है। इस आधार पर इन चरित्रो की नैतिकता मे कमी नही आती है। तारा का चरित्र सक्षिप्त होते हुए भी सारगर्भित एव वानर समाज की स्त्रियो के लिए एक आदर्श है।

त्रिजटा

तुलसी ने त्रिजटा के रूप मे ममतामयी नारी का चित्रण किया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार त्रिजटा एक बूढी राक्षसी थी, जो सीता का दृढ चरित्र देखकर उसकी ओर आकर्षित हुई थी और सहानुभूति से प्रेरित होकर इसने सीता को दो अवसरो पर हार्दिक सान्त्वना दी थी।[१४३]

तुलसी ने त्रिजटा मे ममत्व, विवेक तथा रामभक्ति का समावेश करके उसे राम कथा की महत्वपूर्ण नारीपात्र बना दिया है। वे त्रिजटा का परिचय विवेकशीला राम मे अनुरक्त नारी के रूप मे देते है–

त्रिजटा नाम राच्छसी एका। राम चरन रति निपुन विवेका।।
सबन्हौ बोलि सुनाएसि सपना। सीतहि सेइ करहु हित अपना।।[१४४]

सीता को भयभीत करके कष्ट पहुँचाने वाली राक्षसियो को बुलाकर उन्हे अपना स्वप्न सुनाते हुए कहती है कि रावण सहित सम्पूर्ण राक्षस जाति का विनाश अवश्यम्भावी है तथा सीता का कष्ट शीघ्र दूर होने वाला है। वह कहती है कि–

---

[१४२] रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड २०/२
[१४३] डा० कामिल बुल्के – रामकथा पृष्ठ ५०६
[१४४] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ११/१

यह सपना मै कहउँ पुकारी। होइहि सत्य गएँ दिन चारी।।
तासु वचन सुनि ते सब डरी। जनकसुता के चरनन्हि परी।।[१४५]

तुलसी ने सीता के द्वारा त्रिजटा के प्रति सहज पूज्य भाव की अभिव्यक्ति करा कर उसके निर्मल चरित्र को मुखरित किया है। सीता ने कहा–

त्रिजटा सन बोली कर जोरी। मातु विपति सगिनि तै मोरी।।
तजौ देह करू बेगि उपाई। दुसह बिरहु अब नहि सहि जाई।।
आनि काठ रचु चिता बनाई। मानु अनल पुनि देहि लगाई।
सत्य करहि मम प्रीति सयानी। सुनै को श्रवन सूल सम बानी।।[१४६]

सीता ने कहा 'मातु विपति सगिनि तै मोरी' और याचना की 'तजौ देह करू वेगि उपाई' क्योकि 'दुसह बिरहु अब नहि साहि जाई'। सरल–हृदया त्रिजटा की ममता श्रद्धा से मिल कर कह उठी–

सुनत बचन पद गहि समुझाएसि। प्रभु प्रताप बल सुजसु सुनाएसि।
निसि न अनल मिल सुनु सुकमारी। अस कहि सो निज भवन सिधारी।।[१४७]

वह सीता को सप्रेम समझाती हुई कहती है कि हे सुकुमारी रात्रि मे आग नही मिलेगी इस प्रकार कहते हुए वह अपने घर को जाती है।

युद्ध का समाचार सुनकर सीता के मन मे सदेह उत्पन्न होता है कि इस युद्ध मे रावण मारा भी जा सकेगा अथवा नही?

होइहि कहा कहसि किन माता। केहि विधि मरिहि विस्व दुखदाता।।[१४८]

राम का स्मरण कर सीता अनेक प्रकार से विलाप करती है। त्रिजटा उनसे कहती है कि हे राज कुमारी सुनो रावण के हृदय मे वाण लगते ही यह मारा जायेगा

---

[१४५] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ११/४
[१४६] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड १२/१, २
[१४७] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड १२/३
[१४८] रामचरित मानस लकाकाण्ड ९९/२

किन्तु रघुनाथ इसके हृदय मे जानकी का निवास होने के कारण हृदय मे वाण नही मार रहे है। किन्तु प्रभु राम पहले इसके सिरो को काटकर इसे व्याकुल कर देगे जिससे व्याकुल होकर उसके हृदय से तुम्हारा ध्यान हट जायेगा तब प्रभु राम उसके हृदय मे वाण मारकर इसका अन्त कर देगे।

काटत सिर होइहि विकल छुटि जाइहि तव ध्यान।
तब रावनाहि हृदय महुँ मरिहहि रामु सुजान।।[१४६]

त्रिजटा रावण वध के प्रति आश्वस्त है। सीता को विविध प्रकार से समझाकर सान्त्वना देकर वह अपने घर चली जाती है।

रामचरित मानस मे त्रिजटा का चरित्र रामभक्त, सीता की सहायिका तथा उदार मना राक्षसी के रूप मे चित्रित हुआ है। वह समय पर व्यथित सीता को नीति–निपुण विचारो से सान्त्वना प्रदान करती है। त्रिजटा अत्यन्त न्याय प्रिय है, वह न्याय का समर्थन निष्पक्ष भाव से करती है। बन्धु–बान्धवो का भावी हित–अहित भी उसे न्याय पथ से विचलित नही कर पाता। अपनी इन्ही चारित्रिक विशेषताओ के कारण सीता द्वारा त्रिजटा भी कौशल्या और सुनयना के सदृश मातुपद प्राप्त करती है।

मन्दोदरी

रामचरित मानस मे मन्दोदरी का चित्रण रामभक्त के रूप मे हुआ है। मन्दोदरी पति परायण और अत्यन्त नीतिज्ञ है जो धर्म सम्मत कार्यों का सर्वदा समर्थन करती है। वह रावण द्वारा सीता–हरण को धर्म–नीति विरूद्ध मानती है। रावण से वह सीता को राम के पास लौटाने हेतु बारम्बार आग्रह करती है। मन्दोदरी को सम्पूर्ण राक्षस जाति का कल्याण सीता को ससम्मान लौटाने मे दिखलाई देता है–

रहसि जोरि कर पति पग लागी। बोली बचन नीति रस पागी।।
कत करष हरिसन परिहरहू। मोर कहा अति हित हियँ धरहू।।

समुझत जासु दूत कइ करनी। स्रवहि गर्भ रजनीचर धरनी।

तासु नारि निज सचिव बोलाई। पठवहु कत जो चहहु भलाई।।[150]

मन्दोदरी बहुत दूरदर्शी एव विवेकशीला है। उसकी दृष्टि मे रावण के कुल कमल विनाशार्थ "सीता सीत निसा सम है"। राम के पराक्रम एव ईश्वरत्व से पूर्णत अवगत मन्दोदरी रावण से कहती है कि सीता को लौटाए बिना तुम्हारी रक्षा– ब्रह्मा और शिव के द्वारा भी नही हो सकती है।

तव कुल कमल बिपिन दुखदाई। सीता सीत निसा समआई।।

सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे। हित न तुम्हार सभु अज कीन्हे।।[151]

धर्म परायणा पत्नी होने के कारण वह अपने पति को विविध प्रकार से समझाती है तथा उसका हित–साधन चाहती है। रावण द्वारा उसकी बार–बार उपेक्षा होने पर मन्दोदरी अपने सान्त्वनार्थ यह मान लेती है कि 'भयहु कत पर विधि विपरीता'[152] रावण द्वारा लक्ष्मण रेखा को पार न कर पाना, हनुमान द्वारा समुद्र को लॉघना, अशोक वाटिका उजाडना, लंका–जलाना, अक्षयकुमार की मृत्यु, शूर्पणखा की दुर्दशा, खर–दूषण की मृत्यु, समुद्र पर पुल बॉधने की घटनाओ आदि से वह राम की महानता एव रावण की लघुता सिद्ध करती है।

राम बान अहि गन सरिस निकर निसाचर भेक।

जब लगि ग्रसत न तब लगि जतनु करहु तजि टेक।।[153]

वह तरह–तरह से रावण को समझाकर उसे अपना दुर्निणय बदलने के लिए प्रेरित करती है।[154]

---

[150] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ३६/३, ४
[151] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ३६/५
[152] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ३७/३
[153] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड दोहा ३६
[154] रामचरित मानस लकाकाण्ड ३६/२ से ५ तक

रावण के हठ और दुराग्रह पर मन्दोदरी को उसका अन्त अवश्यम्भावी लगता है। वह अपने परामर्शों एव निवेदन का रावण पर कोई प्रभाव न देखकर उससे कहती है– "निकट काल जेहि आवत साई। तेहि भ्रम होइ तुम्हारिहि नाई।।"[१५५] मन्दोदरी का यह कथन सिद्ध होता है और रावण अपने परिजन सहित युद्ध मे मारा जाता है। पति के मृत शरीर को देखकर मन्दोदरी विलाप करती हुई कहती है– हे नाथ! विधाता की सम्पूर्ण सृष्टि तुम्हारे वश मे थी किन्तु 'राम बिमुख अस हाल तुम्हारा। रहा न कोउ कुल रोवनिहारा।।'[१५६] तथा उसकी दृष्टि मे 'राम बिमुख यह अनुचित नाही'[१५७] इस पति परायणा की विलाप की वाणी क्या किसी धर्मज्ञ एवॅ तत्वाभिमानी के उपदेश अथवा सन्त वाणी से कम है? यह पतिव्रता अपने विलाप मे ही हमारी मुक्ति का सूत्र छोड जाती है। मानव जीवन और तुलसी दास के मानस–प्रणयन का लक्ष्य इस विलाप मे स्पष्ट परिलक्षित होता है।

मन्दोदरी कहती है कि ब्रह्मा, शिव आदि जिसको प्रणाम करते है, उसकी तुमने मनुष्य मानकर अवहेलना की, तब भी उसने तुम्हे योगी समाज दुर्लभ निज-धाम दिया, वह कितना उदारमना है। रामचरित मानस की मन्दोदरी उस उदारमना को प्रणाम करती है।

अहह नाथ रघुनाथ सम कृपा सिधु नहि आन।
जोगि बृन्द दुर्लभ गति तोहि दीन्हि भगवान।।[१५८]

''मन्दोदरी के इस करूण विलाप को सुनकर देवता, मुनि, सिद्ध, तपस्वी, शकर, ब्रह्मा, नारद, सनकादि और जो भी परमार्थवादी श्रेष्ठ मुनि थे, सभी ने सुखमाना[१५९]

---

[१५५] रामचरित मानस लकाकाण्ड ३७/४
[१५६] रामचरित मानस लकाकाण्ड १०४/५
[१५७] रामचरित मानस लकाकाण्ड १०४/६
[१५८] रामचरित मानस लकाकाण्ड १०४
[१५९] रामचरित मानस लकाकाण्ड १४१/१

राम की आज्ञा से विभीषण रावण की अन्त्येष्टि क्रियाविधि पूर्वक करते है अन्त मे मन्दोदरी रावण को तिलॉजलि देकर मन मे राम के गुणो का चिन्तन करती हुई अपने भवन को चली जाती है।

इस प्रकार मन्दोदरी एक श्रेष्ठ पतिव्रता, नीति–निपुणा, तत्व–वेत्ता धर्मज्ञा, देश कालनुसार व्यवहारविदा के रूप मे रामचरित मानस मे चित्रित है।

पार्वती

रामचरित मानस के मूल मे तुलसी ने पार्वती को रखा है। सम्पूर्ण कथा शिव–पार्वती के सवाद के रूप मे हैं।[१६०] शकर प्रिया पार्वती का पौराणिक चरित्र लेकर तुलसी ने नारी मे सद्–असद् वृत्तियो का द्वन्द दिखाकर, सद् की विजय तथा नारी चरित्र की दृढता का सजीव एव मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। पार्वती के दो जन्मो की कथा तुलसी ने की है– प्रथम दक्षसुता सशयात्मा सती के रूप मे, जो राम के ब्रह्मत्व की परीक्षा लेती है सीता बनकर तथा दूसरे पर्वतराज की कन्या 'गौरी या पार्वती' के रूप मे जब वह शिव की प्राप्ति हेतु असीम दृढता से तप करती है। दक्षसुता सती मे शका हठ तथा अविवेक है, किन्तु पर्वत पुत्री पार्वती मे दृढता त्यागनिष्ठा तथा विवेक है। पार्वती का चरित्र चित्रण तुलसी की काव्य प्रतिभा एव मौलिकता का सम्यक् परिचय देता है।

दक्षसुता उमा शकर की परिणीता है। 'एक बार त्रेता जुग माही'– अगस्त मुनि को रामकथा सुनाकर त्रिपुरारी शंकर 'चले भवन सग दक्ष कुमारी और कैलास–पर्वत पर रहने लगे। उसी समय पृथ्वी का कष्ट दूर करने के लिए 'हरि रघुवस लीन्ह अवतारा' और पिता की आज्ञा से 'दण्डक बन विचरत अविनासी'। शकर अपने आराध्य के दर्शन की कामना करके भाव–विह्वल हो जाते है।[१६१]

---

[१६०] रामानन्द शर्मा, मानस की महिलाऍ पृष्ठ १७

[१६१] रामचरितमानस बालकाण्ड ४८/१ से ४ तक

शिव ने राम को वन मे सीता की खोज मे विचरते देखकर शकर 'जय सच्चिदानन्द जग पावन'[१६२] कहकर राम की स्तुति करते है। अपने पति शकर की यह दशा देखकर सती के मन मे सदेह पैदा होता है कि शकर सभी के द्वारा वन्दनीय है किन्तु वे एक सामान्य से राजकुमार को 'सच्चिदानद जग पावन' कहकर प्रणाम करते है।

सकरू जगत बद्य जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा।।
तिन्ह नृपसुतहि कीन्ह परनामा। कहि सच्चिदानद परधामा।।[१६३]

तुलसी का मनो विश्लेषण दर्शनीय है। उमा का तर्क सहज नारी-मन का तर्क है सकरू जगत बद्य जगदीसा' क्या इनसे भी कोई बडा है? शका घनी भूत हो गई–

ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।
सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत बेद।।[१६४]

अव्यक्त निर्गुण ब्रह्म मनुष्य के रूप मे कैसे विचरण कर सकता है। मन मे शका का तूफान तेज होता जा रहा था। शका से अविश्वास जन्म लेता है और अविश्वास सती की निष्ठा से टकराता है–

सभुगिरा पुनि मृषा न होई। सिव सर्वग्य जान सबु कोई।।
अस ससय मन भयउ अपारा। होइ न हृदयँ प्रबोध प्रचारा।।[१६५]

मन के इस भीषण शका सघर्ष को सती छिपाना चाहती है किन्तु 'हर अन्तर जामी सब जान जाते है। तभी शकर उमा को पहली चेतावनी देते है–

सुनहि सती तवनारि सुभाऊ। सयम अस न धरिअ उरकाऊ।।
जासु कथा कुभज रिषि गाई। भगतिजासु मै मुनिहि सुनाई।।
सोइ सम इष्टदेव रघुवीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा।।[१६६]

---

[१६२] रामचरितमानस बालकाण्ड ५०/२
[१६३] रामचरितमानस बालकाण्ड ५०/३
[१६४] रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५०
[१६५] रामचरितमानस बालकाण्ड ५१/२
[१६६] रामचरितमानस बालकाण्ड ५१/३, ४

उमा का शकालु मन किसी भी प्रकार मानने को तत्पर नही था और शका ने जन्म दे दिया हठ तथा अविवेक को। शकर ने जान लिया कि सती पर उपदेश का कोई असर नही पडा। उन्होने सती से कह दिया कि यदि तुम्हारे मन मे सदेह है तो तुम परीक्षा लेकर देख लो। सती परीक्षा लेने के लिए चल पडी किन्तु उनका मन स्थिर न था। सदेह शका एव हठ ने विवेक मार्ग को अवरूद्ध कर दिया था।

चली सती शिव आयसु पाई। करहि विचारू करौ का भाई।।[१६७]

जब सती हठ की डोर से बॅधी चल दी तो शकर ने मन मे सोच लिया कि सती का कल्याण नही है क्योकि मेरे कहने पर भी उनका सशय नही गया तो फिर 'विधि विपरीत भलाई नाही'।

मनोविज्ञान का सहज प्रयोग यहॉ तुलसी के इस नारी चरित्र को इतनी सजीवता प्रदान कर रहा है कि पाठक श्रोता मत्रमुग्ध हुए बिना रह नही सकता। नारी मन विलक्षण होता है। सती विचार करके सीता रूप धारण कर मार्ग मे राम के आगे–आगे चल पडी।

पुनि–पुनि ह्रदय विचारू करि धरि सीता कर रूप।
आगे होइ चलि पथ तेहि जेहि आवत नर भूप।।[१६८]

सबदरसी सब अन्तर जामी' राम ने सती के मन का कपट सहज ही जान लिया और उन्हे हाथ जोडकर प्रणाम किया और फिर कहा–

कहेउ बहोरि कहॉ वृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू।[१६९]

राम की इस व्यग्योक्ति ने उमा के मन को बेध डाला और पराजित, कुठित उमा का मन सकोच से भर गया–

---

[१६७] रामचरितमानस बालकाण्ड ५२/४
[१६८] रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५२
[१६९] रामचरितमानस बालकाण्ड ५३/४

राम बचन मृदु गूढ सुनि उपजा अति सकोचु।
सती सभीत महेस पहि चली हृदयँ बड सोच।।[१७०]

उमा अब मन की आग मे जलने लगी, अविवेक और हठ ने जो भीषण कुकृत्य करा दिया उनसे, उसका परिणाम अब क्या होगा? सभीत सती स्वय ही अपने मन को प्रताडना दे रही थी–

मै सकर कर कहा न माना। निज अग्यानु राम पर आना।।
जाइ उतरू अब देहउँ काहा। उर उपजा अति दारून दाहा।।[१७१]

राम की शक्ति का प्रभाव देखकर सती ने बार–बार राम पद मे सीस नवाकर कैलाशपति की ओर गमन किया। शकर ने सती को देखते ही कुशल जानना चाहा और कहा कि सत्य बात बताओ तुमने किस प्रकार उनकी परीक्षा ली। दुर्भाग्य नारी का। सती के मन के सकोच ने भय के साथ मिलकर असत्य की सृष्टि कर दी–

सती समुझि रघुबीर प्रभाऊ। भयबस सिव सन कीन्ह दुराऊ।।
कछु न परीक्षा लीन्ह गोसाईं। कीन्ह प्रताप तुम्हारिहि नाईं।।[१७२]

सती ने शकर से छुपाना चाहा किन्तु सर्वग्य शकर ने सब कुछ जान लिया किन्तु उन्होने इसमे सती का दोष न मानकर हरि इच्छा भावी बलवान माना। किन्तु शकर के मन मे एक ही द्वन्द्व था, एक ही धर्म सकट था–

सती कीन्ह सीता कर बेषा। सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा।।
जौ अब करउँ सती सन प्रीती। मिटइ भगति पथु होइ अनीती।।[१७३]

शकर भक्ति नीति एव निश्चयात्मक बुद्धि के स्वामी है। उन्होने मन मे दृढतम निश्चय कर लिया–

---

[१७०] रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५३
[१७१] रामचरितमानस बालकाण्ड ५४/१
[१७२] रामचरितमानस बालकाण्ड ५६/१
[१७३] रामचरितमानस बालकाण्ड ५६/४

एहि तन सतिहि भेट मोहि नाही। सिव सकल्पु कीन्ह मन माही।।[१७४]

सती पश्चाताप की आग मे जलने लगी। विवेक ने बता दिया सती को जीवन का वास्तविक अर्थ और सती को सत्य का ज्ञान हो गया–

सती हृदयँ अनुमान किय सबु जानेउ सर्वग्य।
कीन्ह कपटु मै सभु सन नारि सहज जड अज्ञ।।[१७५]

तुलसी का प्रत्येक शब्द सटीक है। सती का प्रायश्चित की आग मे जलता मन स्वय के कपट के लिए खुद को दोषी स्वीकार करता है। तुलसी का मनोविज्ञान मुखर हो उठा है। सती के मनोभावो– चिन्ता, ग्लानि, भय, व्याकुलता, दाह आदि का सजीव प्रतिविम्ब तुलसी ने खीचा है।

शिव ने सती का त्याग कर दिया और सती अधिक दुखी मन से कैलाश पर रहने लगी। सती प्रायश्चित की साकार प्रतिमा बन गयी और दु खी मन होकर आराध्य राम से निवेदन किया।

तौ सब दरसी सुनिअ प्रभु करउ सो बेगि उपाइ।
होइ मरनु जेहि बिनहि श्रम दुसह विपति बिहाई।।[१७६]

एक दिन दक्षसुता उमा अपने पिता द्वारा आयोजित यज्ञ उत्सव को सुनकर शकर के समक्ष यज्ञ मे जाने की अनुमति 'भय–सकोच प्रेम रस सानी' मॉगा। शकर ने सती को अनेक प्रकार से समझाया किन्तु उमा के मन उत्पन्न हठ ने जाने का निश्चय कर ही लिया था। शकर ने जान लिया कि उमा मानने वाली नही है तो उन्होने पति–कर्तव्य के नाते अपने प्रमुख गणो के साथ उन्हे जाने की अनुमति दे विदा किया।

पति द्वारा त्यक्ता उमा जब बिन बुलाये पिता के यहॉ पहुँची तो दक्ष के डर से किसी ने सम्मान नही दिया। केवल माता प्रेम से मिली और बहने मुसकरा कर (व्यग

[१७४] रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५७/१
[१७५] रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५७ क
[१७६] रामचरितमानस बालकाण्ड दोहा ५६

रूप मे) मिली जो वही पर सादर आमन्त्रित थी। दक्ष ने उमा से कुशलक्षेम तक नही पूँछा बल्कि उन्हे देख कर क्रोध से जल उठे। उमा ने देखा कि यज्ञ मे शिव का भाग नही बल्कि उनका अपमान किया गया था। पति अपमान उमा न सह सकी। पति अपमान से दग्ध उमा ने रोष पूर्वक कहा–

सुनहु सभासद सकल मुनिदा। कही सुनी जिन्ह सकर निदा।।
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ। भली भॉति पछिताब पिताहूँ।।[१७७]

सती उमा ने सतीत्व का सर्वोच्च आदर्श वहॉ प्रस्तुत कर दिया। पत्नीत्व अत्यन्त मुखर हो उठा। उमा के इस आदर्श को तुलसी ने इस प्रकार लिखा है–

जगदातमा महेसु पुरारी। जगत जनक सब के हितकारी।।
पिता मदमति निदत तेही। दच्छ सुक्र सभव यह देही।।
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चद्रमौलि वृष केतू।।
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। भयउ सकल मख हाहाकारा।।[१७८]

शकर ने सती को त्यागा था किन्तु उमा शिव की प्राण प्रिया तब भी थी अत सती के मरण का समाचार सुनकर शकर ने क्रोध करके वीरभद्र को भेजा और यज्ञ–विध्वश कर दिया। उमा ने मरते समय जो वरदान मॉगा वह भारतीय नारी का श्रृगार है –

सती मरत हरि सन वरु मॉगा। जनम जनम सिव पद अनुरागा।।
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाइ। जनमीं पारवती तनु पाई।[१७९]

सती ने अपना दूसरा जन्म हिमाचल के यहॉ लिया। उनके जन्म लेते ही वहॉ पर सभी प्रकार की सिद्धियॉ एव सम्पत्तियॉ छा गयी। उनका नाम पार्वती रखा गया। उनके जन्म का समाचार पाकर अनेक ऋषि मुनि वहॉ पर आये। नारद ने आकर पार्वती

---

[१७७] रामचरितमानस बालकाण्ड ६४/१
[१७८] रामचरितमानस बालकाण्ड ६४/३, ४
[१७९] रामचरितमानस बालकाण्ड ६५/३

का दर्शन किया तथा उनके पिता के पूँछने पर पार्वती के सारे लक्षणो का बखान किया। नारद ने बताया कि पार्वती का विवाह शिव से हो सकता है। किन्तु इसके लिए तुम्हारी कन्या को तपस्या करना होगा।

नारद की वाणी को सत्य मानकर पार्वती ने तपस्या प्रारम्भ किया। पार्वती की कठिन तपस्या को देखकर शकर ने प्रसन्न होकर सप्तऋषियो को उनकी परीक्षा के लिए भेजा। सप्तऋषियो ने उन्हे शिव मे दोष दिखाकर अन्य किसी देव (विष्णु) को चुनने की सलाह दी किन्तु पार्वती का एकनिष्ठ पति प्रेम देखकर ऋषियो ने उनसे क्षमा मॉगते हुए ऐसा ही होगा कहा। पार्वती का एकनिष्ठ प्रेम–

जन्म कोटि लगि रगर हमारी। बरऊ सभु न त रहउँ कुऑरी।।
मै पा परउँ कहइ जगदम्बा। तुम्ह गृह गवनहु भयउ विलबा।।
देखि प्रेमु बोले मुनि ज्ञानी। जय–जय जगदबिके भवानी।।[९०]

शकर अत्यधिक प्रसन्न होते है पार्वती का पतिप्रेम अत्यधिक उत्कृष्ट था। अन्त मे शकर के साथ उनका विवाह होता है और शकर पार्वती सुख पूर्वक रहने लगते है।

तुलसी ने अत्यन्त मौलिक उद्भावना द्वारा पार्वती–चरित्र को उदात्तता की चरम सीमा प्रदान की है। वे उस 'राम' का रहस्य जानना चाहती है, जिसने उनमे शका पैदा कर पति– परित्यक्ता बना दिया था–

जौ मो पर प्रसन्न सुख रासी। जानिअ सत्य मोहि निज दासी।।
तौ प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा विधि ताता।।[९१]

यह कहकर पार्वती ने राम के 'ब्रह्मत्व' तथा 'नरत्व' के बीच भ्रमित बुद्धि की शका दूर करने की विनय शकर से की। शकर ने पार्वती की प्रशासा की–

---

[९०] रामचरितमानस बालकाण्ड ८१/३, ४
[९१] रामचरितमानस बालकाण्ड १०८/१

धन्य–धन्य गिरिराज कुमारी। तुम्ह समान नहि कोउ उपकारी।।
पूछेहु रघुपति कथा प्रसगा। सकल लोक जग पावनि गगा।।[१८२]

शकर ने जब राम का ब्रह्मत्व बताया तो पार्वती का सभी सदेह एव कुतर्क मिट गया और पार्वती के मन मे राम के पद कमल के प्रति प्रेम जाग उठा।

नाथ कृपॉ अब गयउ विषादा। सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा।।
अब मोहि आपनि किकरि जानी। जदपि सहज जड नारि अयानी[१८३]

वस्तुत यह विनीत भाव का द्योतक है। पार्वती का मन निष्कलक होकर शकर के प्रति विनय से भर गया। पार्वती का यह चरित्र नारी के असद् पर सद् की शाश्वत विजय का प्रतीक है, साथ ही तुलसी की नारी के प्रति उदात्त दृष्टि का परिचायक भी है।

नोट— यद्यपि रामकथा के नारी पात्रो की श्रृखला मे पार्वती के नाम का उल्लेख नही किया गया है क्योकि वाल्मीकि एव साकेत मे पार्वती का चरित्र–चित्रण नही मिलता है। तथापि तुलसी के रामचरित मानस मे पार्वती का चरित्र प्रमुख स्थान रखता है। तुलसी का रामचरित मानस पौराणिक शैली मे लिखा गया है। शकर और पार्वती के सवाद के रूप मे उन्होने मानस की कथा कही है। पार्वती की शका एव उसका समाधान द्वारा ही वे राम मे ब्रह्मत्व की स्थापना करते है। अत तुलसी के विशेष नारी पात्र के रूप मे पार्वती का चरित्र–चित्रण यहॉ पर प्रस्तुत किया गया है।

---

[१८२] रामचरितमानस बालकाण्ड ११२/३, ४
[१८३] रामचरितमानस बालकाण्ड १२०/२

मैथिलीशरण गुप्त के नारी पात्र

कौशल्या

वाल्मीकि और तुलसी की भॉति मैथिलीशरण गुप्त ने भी कौशल्या का चित्रण एक महनीय माता एव पतिपरायणा पत्नी के रूप मे किया है। वाल्मीकि की कौशल्या मानवीय सवेदनाओ से युक्त स्त्री रूप मे यथार्थ है। तुलसी की कौशल्या आदर्श के साथ अलौकिकत्व लिए हुए है, जबकि मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या आदर्श एव मानवीयता से युक्त है। उसके चरित्र मे मानवीय दुर्बलता का भी समावेश गुप्त जी ने किया है।

साकेत मे कौशल्या का विशेष परिचय चतुर्थ सर्ग मे सीता के साथ अर्चन–वन्दन करते हुए मिलता है। कौशल्या अपने पुत्र राम की मगल कामना हेतु अर्चन–वन्दन करती है। पूजा मे सहायता उनकी वधू सीता कर रही है।

> सुख से सद्य स्नान किये, पीताम्बर परिधान किये,
> पतिव्रता मे पगी हुई, देवार्चन मे लगी हुई,
> मूर्तिया ममता–माया, कौसल्या कोमलकाया,
> थी अतिशय आनन्दयुता, पास खडी थी जनकसुता।[1]

पूजा करते समय राम मॉ के पास जब वन जाने के लिए अनुमति लेने जाते है तब राम को देखकर हर्षित कौशल्या कहती है–

> "बहू! तनिक अक्षत–रोली, तिलक लगा दूँ" मॉ बोली–
> "जियो जियो बेटा! आओ, पूजा का प्रसाद पाओ।"[2]

---

[1] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४३
[2] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४४

कितनी ममता मयी मूर्ति कौशल्या की गुप्त जी ने खीची है राम के मुख से वनवास सुनकर उन्हे विश्वास ही नही होता, वे सरल हृदय भावुक माँ के समान कह उठती है –

बोली वे हॅसकर – 'रह तू, यह न हॅसी मे भी कह तू।
तेरा स्वत्व भरत लेगा? बन मे तुझे भेज देगा?
वही भरत जो भ्राता है, क्या तू मुझे डराता है?[३]

किन्तु लक्ष्मण को रोते देखकर उनका हृदय शका और आतक से डर जाता है। वे दैव को दोष देने लगती है–

उनका हृदय सशक हुआ, उदित अशुभ आतक हुआ।
"सच है तब क्या वे बाते? दैव! दैव! ऐसी घाते!"
कॉप उठी वे मृदु देही, धरती घूमी या वे ही।"[४]

राम के यह कहने पर कि – हे माता किसी प्रकार का भय न करके एक अवधि तक धैर्य धारण करो– मै वन मे सभी प्रकार का सुख भोग कर वापस घर पुन आ जाऊँगा।[५] माता कौशल्या कहती है कि –

क्या तुझसे कुछ दोष हुआ? जो तुझ पर यह रोष हुआ।
अभी प्रार्थिनी मै हूँगी, प्रभु से क्षमा मॉग लूँगी।"[६]

मैथिलीशरण गुप्त कौशल्या के चरित्र मे मानवीय दुर्बलता का समावेश बडे ही मनोवैज्ञानिक ढग से करते है। कौशल्या का हृदय राम पर उमड पडता है। उसका राम तो सब का जीवनधन है, उसके प्रति यह किसका निर्दयपन है। कही बेटे से कोई दोष तो नही हुआ, जिसके कारण किसी का रोष मेरे राम पर हुआ है। वह उससे भी क्षमा

---

[३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४५
[४] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४६
[५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४६
[६] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४६

मॉग लेगी। लक्ष्मण के मुख से कैकेयी के कारण राम वन को जा रहे है, सुनकर वह कहती है—

समझ गई, मै समझ गई, कैकेयी की नीति नई।
मुझे राज्य का खेद नही, राम—भरत मे भेद नही।[७]

कौशल्या कैकेयी की नीति का समर्थन करती हुई अन्त मे राम और भरत मे भेद न मानते हुए कहती है कि मेरी और कोई महत्वाकाक्षा नही— भरत के राज्य की नीव सुदृढ रहे किन्तु राम को वन न भेजा जाय, उसकी भीख मुझे मिले —

मुझे राज्य की चाह नही, उस पर कुछ भी डाह नही।
मेरा राम न वन जावे, यही कही रहने पावे।
उनके पैर पडूॅगी मै, कहकर यही अडूॅगी मै
भरत राज्य की जड न हिले, मुझे राम की भीख मिले।"[८]

इस प्रसग के पश्चात् खिन्न परन्तु माता की अवस्था देखकर क्रुद्ध लक्ष्मण की योजना वाल्मीकि की तरह गुप्त जी ने भी की है परन्तु तब तक कौशल्या पूर्णत निर्णयात्मक भूमिका पर पहुॅच जाती है और हृदय पर पत्थर रखकर कर्तव्य पालन के लिए राम को आदेश देती है क्योकि वह धर्म की सरक्षिका तथा ममत्व की देवी है—

"जाओ, तब बेटा। बन ही, पाओ नित्य धर्म-धन ही।
x x x
पूज्य—पिता—प्रण रक्षित हो, मॉ का लक्ष्य सुरक्षित हो।
त्याग मात्र इसका धन है, पर मेरा मॉ का मन है।[९]

कौशल्या एक आदर्श सास है सीता को बल्कल वस्त्र पहने देखकर वह चीखकर मना करती है। वह सीता को वन जाने से रोकना चाहती है— सीता के प्रति अपार स्नेह एव वात्सल्य भाव कौशल्या के हृदय मे उमड पडता है—

---

[७] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४७
[८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४७
[९] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५१—५२

"बहू–बहू!" मॉ चिल्लाई, ऑखे दूनी भर आई–
"हाथ हटा, वे वल्कल है, मृदुतम तेरे करतल है।
यदि ये छू भी जायेगे– तो छाले पड आवेगे।

x x x

वन की कॉटो भरी गली, तू है मानस-कुसुम-कली।
दैव! हुआ तू वाम किसे? रोको, रोको राम! इसे।"[१०]

राम के वन चले जाने के बाद विकल हृदय अपने व्याकुल पति से अधीर न होने के लिए कौशल्या कहती है। यहॉ पर कौशल्या वाल्मीकि और राम चरित मानस मे वर्णित कौशल्या से अधिक भावात्मक ऊॅचाई पर प्रतिष्ठित है –

हे नाथ अधीर न हो अब यो,
तुमने निज सत्य धर्म पाला।
सुत ने स्वापत्य–धर्म पाला।[११]

कौशल्या के भाव-विह्वल धैर्य पूर्ण वचन को सुनकर दशरथ द्वारा कहा गया वचन कौशल्या के चरित्र को ऊॅचाईयॉ प्रदान कर उच्च पद पर प्रतिष्ठित कर देता है–

भूपति ने ऑखे खोल कहा,–
"यह कौन है कि जो बोल रहा?
कौशल्ये धन्य राम–मात।"[१२]

दशरथ के आग्रह पूर्वक कौशल्या से कुछ मॉगने के लिए कहने पर कौशल्या राजा दशरथ से जो आशीष-वचन मॉगती है, वह कौशल्या के चरित्र को न केवल धन्य बना देती है अपितु मैथिलीशरण गुप्त की काव्य कला को अमर बना देती है–

---

[१०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५५
[११] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ ८५
[१२] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ ८६

मॉगूँगी क्यो न नाथ तुमसे, दो यही मुझे कल्पदुम-से।
कैकेयी हो चाहे जैसी, सुत-वचिता न हो मुझ जैसी।
क्या यही मॉगकर लेती हो, या मरण शान्ति तुम देती हो?"[१३]

निश्चित रूप से यह कथन राजा दशरथ को शाति प्रदान करने वाला था। कौशल्या को गुप्त जी ने जिन ऊँचाइयो पर प्रतिष्ठित किया है वह निश्चित रूप से उन्ही जैसे शिल्पी के द्वारा सभव था।

भरत जब कैकेयी द्वारा किये गये कार्यों से ग्लानियुक्त होकर माता कौशल्या के पास जाते है तब कौशल्या उन्हे गोद लेते हुए कहती है कि तू निष्पाप है तुझमे और राम मे किचित अन्तर नही है।

वत्स रे आ जा, जुडा यह अक, भानु कुल के निष्कलक मयक।
मिल गया मेरा मुझे तू राम, तू वही है, भिन्न केवल नाम।[१४]

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या चित्रकूट प्रसग मे कहती है –

"राघव, तेरे ही योग्य कथन है तेरा, दृढ बाल हठी तू वही राम है मेरा।
देखे हम तेरा अवधि मार्ग सब सहकर, कौशल्या चुप हो गई आप यह कहकर।[१५]

साकेत की कौशल्या अपनी सपत्नियो के साथ अपूर्व आनन्द और उत्साह मे मग्न होकर राम के वनवास से वापस आने पर आरती आदि उतारकर स्वागत करती है –

"लिये आरती वे उतारती थी तीनो पर,
क्या था, जिसे न आज वारती थी तीनो पर।"[१६]

---

[१३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ ८६
[१४] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ७ पृष्ठ १०७
[१५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३६
[१६] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८३

इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्त ने कौशल्या को एक आदर्श माता, पतिपरायणा पत्नी, सहनशीला सपत्नी एव आदर्श सास के रूप मे साकेत मे चित्रित किया है। कौशल्या के चरित्र मे मानवीय दुर्बलताओ का समावेश करके उनके चरित्र को मानवीय सवेदना के धरातल पर पूर्णत प्रतिष्ठित किया है। कौशल्या का आदर्श चरित्र गुप्त जी की नव–कल्पना के प्रकाश पुॅज से निर्मित होकर प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करता है।

कैकेयी

युग–युग की शोषित कैकेयी पहली बार साकेत मे ममतामयी माता के रूप मे प्रतिष्ठित हुई है। वह गुप्त जी की कल्पना की सफल अभिव्यक्ति है वाल्मीकि की कैकेयी ब्याधक्रूर वाण है, मानस की कैकेयी सरस्वती का शाप-मय वाहन है, लेकिन साकेत की कैकेयी ममतामयी माता है जिसमे मानवीय मूल्यो के प्रति गहरा राग है। अन्य आधार ग्रथो की कैकेयी कुटिलता, क्रूरता एव दुष्टता की साक्षात् प्रतिमा है। साकेत की कैकेयी ममत्व की जलती हुई दीप-शिखा है। युग–युग की तिरस्कृत नवोन्मेष की तर्क पूर्ण भूमि पर पहली बार अवस्थित हुई, जिसका कपट पूर्ण आचरण मानवीय सवेदना के घात–प्रतिघात का परिणाम है। ममता का लेप देकर उसके चरित्र की उष्णता को मिटाने का प्रयास साकेत मे किया गया है। यहॉ कैकेयी के मानवीय व्यवहार की अपनी दुनियॉ है, वह आध्यात्मिक तथा नैतिक आग्रहो से मुक्त होकर सासारिक आचरणो के प्रति अधिक सजग और निष्ठावान है।

"प्रो० केसरी जी का मत है कि कैकेयी गुप्त जी की भावुक कल्पना की सबसे ऊॅची चोटी है। कैकेयी साकेत धाम का आकाश-द्वीप है। दूर भविष्य मे जब 'साकेत' के अनेक अश दूर से दिखायी न देगे, तब भी यह ज्योति नवागन्तुको को साकेत दर्शन की प्रेरणा देती रहेगी।"[१७]

---

[१७] साकेत एक नव्यपरिबोध – डा० रामविनोद सिह पृष्ठ ७०

कैकेयी के चरित्र चित्रण मे गुप्त जी को सबसे अधिक सफलता मिली है। उसके चरित्र मे विविध भावो का उत्थान और पतन सुन्दर मनोवैज्ञानिक ढग से दिखाया गया है। साकेत की कैकेयी बुद्वि की नयी दहलीज पर खडी है। उसमे कौटुम्बिक भावना की प्रधानता है। वह किसी अतिशयता से पीडित नही है, फिर भी नारी सुलभ दुर्बलता से प्रभावित है और यही इस मानवीय चरित्र की महानता भी है। साकेत के द्वितीय सर्ग मे कैकेयी के चरित्र का उदात्त रूप हमारे सामने आता है। राम के राज्याभिषेक के समय उसको उतनी ही प्रसन्नता है जितनी राम की माता कौशल्या को। कैकेयी राम और भरत मे कोई भेद नही देखती। मन्थरा कैकेयी के सरल हृदय मे सौतिया डाह उकसाना चाहती है किन्तु आरम्भ मे मन्थरा की एक भी बात वह नही सुनती और उसे फटकारती है–

न समझी कैकेयी वह बात,
कहा उसने– यह क्या उत्पात?
वचन क्यो कहती है तू वाम?
नही क्या मेरा बेटा राम?[१८]

कैकेयी राम और भरत मे भेद नही करती। उसका राम के प्रति अटूट स्नेह है तभी वह मन्थरा को डॉटते हुए कहती है –

कहा रानी ने पाकर खेद–
"भला दोनो मे है क्या भेद?"

x x x

कहा – "देती है किसको दोष?
राम की मॉ क्या कल या आज,
कहेगा मुझे न लोक समाज?"[१९]

---

[१८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १६

[१९] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १६

परन्तु अन्त मे कैकेयी के ममतापूर्ण मातृ-हृदय मे ममता के ये शब्द विष–दिग्ध बाण की तरह तीव्र आघात पहुँचाते है –

भरत से सुत पर भी सन्देह,
बुलाया तक न उन्हे जो गेह।"[२०]

कैकेयी सवेदनशील नारी एव मानवी माता है, स्वर्ग की देवी नही। व्यक्ति मे ईर्ष्या, द्वेष, सद्–असद् आदि भावनाएँ पायी जाती है। कैकेयी भी मानवीय भावनाओ से निर्मित है, वह अन्य आधार ग्रथो की तरह नैतिकता एव शील की चाशनी से नही गढी गई है बल्कि स्वाभाविक मानवीय क्रिया–कलापो के भीतर से ही उसके चरित्र-विकास की सम्भावनाओ को विस्तार दिया गया है। राज्याभिषेक के सुखद अवसर पर भरत की अनुपस्थिति उसे व्यथित एव चिन्तित करती है। वह राम और भरत के सबधो की निकटता से भी परिचित है फिर भी धीरे–धीरे उसका सदेह निर्णय का रूप लेना चाहता है "भरत से सुत पर भी सदेह, बुलाया तक न उसे जो गेह।" की प्रतिध्वनि उसे सर्वत्र सुनायी देती है। पुत्र के भविष्य की सकल्पना कर वह व्याकुल हो जाती है। वह दशरथ के कार्यों पर अविश्वास कर बैटती है। अपने पुत्र के भविष्य की टेढी-मेढी रेखा देखकर उसका भय चकित मन सकल्प कर लेता है। कैकेयी की आशका अपने परिवेश मे उचित ही है। उसके हृदय मे प्रतिशोध की भावना जाग्रत हो उठती है –

किन्तु चाहे जो कुछ हो जाय,
सहूँगी कभी न यह अन्याय।
करूँगी मै उसका प्रतिकार,
पलट जावे चाहे ससार।[२१]

"पाठक यह समझ नही पाता कि राम के राज्याभिषेक जैसे पुनीत अवसर पर भरत को सूचना भी क्यो नही दी गई? विभिन्न तीर्थों से जल मँगवाने का समय तो

---

[२०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १८
[२१] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ २०

मिला था लेकिन भरत को आमन्त्रित करने का समय ही नही मिल सका। ऐसी आशका निराधार नही है। कैकेयी का आशका ग्रस्त मन विद्रोह कर उठता है। भरत की अनुपस्थिति कैकेयी की मानसिकता को घेरती चली जाती है और वह अन्तर्द्वन्दो से पीडित हो जाती है। वह दशरथ की योजना का विरोध करने का सकल्प ले बैठती है।"[२२]

कैकेयी का स्नेह भरा मातृ ह्रदय कठिन यातनाओ को सहकर भी भरत को सुखी देखने के लिए तडपने लगता है। उसके ह्रदय की स्वाभाविक कोमलता – कठोरता मे बदल जाती है परन्तु यह कठोरता स्थायी रूप नही ग्रहण कर पाती है। दशरथ की मृत्यु और प्रिय पुत्र भरत की विरक्ति पूर्ण कठोर वाणी की चोट से कैकेयी का यह कठोर रूप पुन कोमल हो जाता है।

ऊँची आशाएँ लेकर वह जिस भरत को राज्य सिहासन पर बैठा देखना चाहती थी, उसी की भर्त्सना पाकर और राज्य के प्रति उसका उपेक्षाभाव देखकर उसके ह्रदय को गहरी चोट पहुँचती है। उसके ह्रदय मे एकदम निराशा, ग्लानि और पश्चाताप का उदय हो जाता है। चित्रकूट मे वह राम के सामने अपना अपराध स्वीकार करती है।

चित्रकूट प्रसग मे कैकेयी पश्चाताप की आग मे अपने ह्रदय को परिष्कृत कर लेती है तथा राम के सामने अपना अपराध स्वीकार करती है जिससे उसका चरित्र निर्मल एव वात्सल्य से पूर्ण दिखायी देता है–

भरत के अधीर वचनो को सुनकर राम ने कहा –

"उसके आशय की थाह मिलेगी किसको?
जनकर जननी ही जान न पायी जिसको।"
यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को"
चौके सब सुनकर अटल कैकेयी – स्वर को"[२३]

---

[२२] साकेत – एक नव्यपरिबोध – डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ६१

[२३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३१

कैकेयी के अटल स्वर को सुनकर सब लोग चौककर उसकी तरफ देखने लगते है –

"वह सिही थी अब हहा। गोमुखी गगा–
हॉ जनकर भी मैने न भरत को जाना,
सब सुन ले, तुमने स्वय अभी यह माना।
यह सच है तो फिर लौट चलो घर भैया,
अपराधिन मै हूँ तात, तुम्हारी मैया।"[२४]

अपराधिन मै हूँ तात तुम्हारी मैया" मे कैकेयी के स्वर मे जो दैन्य भाव है, वात्सल्य की सच्ची पुकार है और अपराध भाव की स्वीकृति है, अपने आप मे अनूठा एव बेजोड है। ये वाक्य अकेले ही कैकेयी को दोषमुक्त करने के लिए काफी दिखायी देते है। इसमे कैकेयी का आत्मचितन एव आत्म पुकार परिलक्षित होता है जो राम के प्रति एक स्नेही माता के रूप मे कैकेयी को स्थापित करता है।

कैकेयी सारा दोष अपने ऊपर ले लेती है वह अपने इस दुष्कार्य के लिए किसी अन्य पर दोष नही मढती, बल्कि स्वय को ही उत्तरदायी ठहराती है –

यदि मै उकसाई गई भरत से होऊँ,
तो पति समान ही स्वय पुत्र भी खोऊँ।
करके पहाड सा पाप मौन रह जाऊँ
राई भर भी अनुताप न करने पाऊँ?"[२५]

इसी प्रकार वह मन्थरा को भी उत्तरदायी नही ठहराती –

'क्या कर सकती थी, मरी मन्थरा दासी,
मेरा ही मन रह सका न निज विश्वासी।

x x x

---

[२४] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३२
[२५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३२

थूके मुझ पर त्रैलोक्य भले ही थूके,

जो कोई जो कह सके, कहे क्यो चूके?

हे राम दुहाई करूँ और क्या तुझसे?"[२६]

कैकेयी स्वय को धिक्कारते हुए कहती है कि –

युग–युग तक चलती रहे कठोर कहानी,

'रघुकुल मे थी एक अभागिन रानी।"

निज जन्म–जन्म मे सुने जीव यह मेरा,

'धिक्कार! उसे था महा स्वार्थ ने घेरा।'[२७]

कैकेयी के हृदय का स्वार्थ, औदार्य मे, ममता दूसरो के प्रति सहानुभूति मे, अभिमान नम्रता मे और प्रतिहिसा आत्मग्लानि मे बदल जाती है। साकेत मे कैकेयी का चरित्र वाल्मीकि रामायण तथा रामचरित मानस की अपेक्षा अधिकतर मनोवैज्ञानिकता लिए हुए है। गुप्त जी ने युग–युग की कलकिता कैकेयी को एक भव्य माता के रूप मे अकित किया है। चित्रकूट की सारी सभा भी मुक्त कठ से कैकेयी की प्रशसा इन शब्दो मे करती है–

पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई

सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।।[२८]

चित्रकूट प्रसग मे उसकी मुखरता और आत्म स्वीकृति उसके चरित्र को निर्मल बना देती है।

कैकेयी को साकेत के बारहवे सर्ग मे एक वीर क्षत्राणी के रूप मे गुप्त जी ने प्रस्तुत किया है। लक्ष्मण को घायल सुनकर वह युद्व भूमि मे जाने के लिए प्रस्तुत हो जाती है और कहती है –

---

[२६] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३२
[२७] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३३
[२८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३३

मै निज पति के सग गई थी असुर समर मे,

जाऊँगी अब पुत्र सग भी अरि–समर मे"[२९]

इस प्रकार कैकेयी का चरित्र साकेत मे मानवीय घात–प्रतिघात के बीच निर्मित हुआ है। कैकेयी का प्रतिशोध भाव परिस्थिति के बदलाव के साथ समाप्त हो जाता है। चेतना की नयी परिस्थिति मे वह आत्मबोध से भीगी हुई है, उसका यह आत्मबोध उसके अनुभव का परिणाम है। कैकेयी की आत्म स्वीकृति एव आत्म चिन्तन गहरी व्याख्या की अपेक्षा रखता है। साकेतकार ने कैकेयी के चरित्र के श्वेत् एव श्याम तत्वो को उभारने की चेष्टा की है। गुप्त जी ने युग–युग की कलकिनी कैकेयी को एक भव्य माता के रूप मे अकित किया है। जो उनकी मौलिक उद्भावना का परिचायक है। गुप्त जी ने कैकेयी के चरित्र को निर्मल एव अमर बना दिया।

सुमित्रा

साकेत मे सुमित्रा का चरित्र वीर क्षत्राणी एव त्यागमयी माता के रूप मे चित्रित किया गया है। वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस मे कौशल्या से विशेष स्नेह रखने वाली रानी के रूप मे सुमित्रा का चित्रण हुआ है, उसी के अनुरूप मैथिलीशरण गुप्त ने भी कौशल्या से विशेष स्नेह रखने वाली रानी के रूप मे सुमित्रा का चित्रण किया है। सुमित्रा को मानस की भॉति ही त्यागमयी, ममतामयी, न्यायप्रिय रानी तथा वात्सल्यमयी मॉ एव पतिपरायणा पत्नी के रूप मे चित्रित किया गया है।

सुमित्रा का विशेष परिचय हमे साकेत के चतुर्थ सर्ग मे मिलता है। जब माता कौशल्या अपने पुत्र राम की भीख मॉगना चाहती है–

उसके पैर पडूँगी मै, कहकर यही अडूँगी मै

भरत राज्य की जड न हिले, मुझे राम की भीख मिले।[३०]

---

[२९] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २६४

[३०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४७

सुमित्रा कौशल्या के प्रस्ताव का विरोध करती हुए कहती है –

"नही – नही यह कभी नही, दैन्य विषय बस रहे यही"

रुके, राम जननी जब तक, गूँजी नई गिरा तब तक–

चकित दृष्टियॉ व्याप हुईं वहॉ सुमित्रा प्राप्त हुईं।[31]

सुमित्रा को वहॉ देखकर राम ने अनुज लक्ष्मण सहित शीश झुकाकर प्रणाम किया –

बोली वे कि – जियो दोनो

यश का अमृत पियो दोनो।"

सिही-सदृश क्षत्रियाणी, गरजी वह फिर यह वाणी–

स्वत्वो की भिक्षा कैसी? दूर रहे इच्छा ऐसी।"[32]

सुमित्रा का वीर क्षत्राणी रूप गुप्त जी की मौलिक उद्भावना है। कौशल्या से उसका स्वभाव भिन्न है। वनवास की आज्ञा पर वह चुप नही रहती, सिहनी के सदृश गरजती हुई कहती है कि "अपनो से कैसी भिक्षा, ऐसी इच्छा को दूर ही रखना चाहिए।

आर्य परम्परा किसी अन्याय को सिर झुकाकर मानने का विरोध करती है, जो अपना है ही उसका मॉगना क्या–

प्राप्त याचना वर्जित है, आप भुजो से अर्जित है।

हम पर भाग नही लेगी, अपना त्याग नही देगी।"[33]

वीर न अपना देते है न वे और का लेते है।

वीर क्षत्राणी सुमित्रा अन्याय के खिलाफ लडने के लिए राम और लक्ष्मण को साकेत मे प्रेरित करती है जबकि मानस मे ऐसा वर्णन नही मिलता है–

[31] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४७

[32] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४८

[33] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४८

राघव शान्त रहोगे तुम? क्या अन्याय सहोगे तुम।
मै न सहूँगी लक्ष्मण! तू? नीरव क्यो है इस क्षण तू?"[३४]

सुमित्रा के वचनो को सुनकर राम कहते है कि –

यदि न आज वन जाऊँ मै, किस पर हाथ उठाऊँ मै?
पूज्य पिता या माता पर? या कि भरत से भ्राता पर?[३५]

राम के आदर्श वचनो को सुनकर सुमित्रा शान्त हो जाती है। कौशल्या के अधीर होने पर उन्हे धैर्य बँधाती हुई कहती है–

जीजी! विकल न हो अब यो! आशा हमे जिलावेगी,
अवधि हमे अवश्य मिलावेगी।"[३६]

सुमित्रा राम से कहती है कि तुमने धरती पर मानव का जन्म लेकर इस धरती को पवित्र कर दिया –

मै भी कहती हूँ– जाओ, लक्ष्मण को भी अपनाओ।
धैर्य सहित सब कुछ सहना, दोनो सिह सदृश रहना।
लक्ष्मण! तू बड भागी है, जो अग्रज अनुरागी है।"[३७]

उर्मिला के मूर्च्छित होने पर राम लक्ष्मण को वन जाने से मना करते है। किन्तु सुमित्रा कहती है–

कहा सुमित्रा ने तब यो – निश्चय पर वितर्क अब क्यो?
जैसे रहे, रहेगी हम, रोकर सही, सहेंगी हम।"[३८]

---

[३४] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४८
[३५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४६
[३६] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५२
[३७] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५२
[३८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५६

सुमित्रा मे वीर माता के गुण कूट–कूट कर गुप्त जी ने भरा है तभी तो वह लक्ष्मण के घायल होने का समाचार सुनकर भी घबराती नही। शत्रुघ्न को युद्वभूमि मे जाने से जब कौशल्या रोकती है तो सुमित्रा कहती है–

'जीजी–जीजी उसे छोड दो, जाने दो तुम।
सोदर की गति अमर–समर मे पाने दो तुम।
सुख मे सागर पार करे यह नागर मानी,
बहुत हमारे लिए यही सरयू मे पानी।[३९]

अन्त मे चौदह वर्ष बाद लौटने पर सुमित्रा गर्व सहित राम–लक्ष्मण और सीता की आरती उतारती है। धन्य है सुमित्रा का चरित्र।

'हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार "सुमित्रा मे आधुनिक चेतनावादी नारी भावना का आवेग है। वह इतिहास की पुनरावृत्ति नही, बल्कि अपने अधिकारो और कर्त्तव्यो के प्रति सचेष्ट है इसीलिए वह कौशल्या की तरह परिस्थितियो से सधि नही करती बल्कि आधुनिक समाज मे पनपने वाली नारी चेतना के अनुकूल उचित और अनुचित के बीच विभाजक रेखा खीचती है। इसीलिए साकेत मे उसकी पात्रता का अपना माहौल है। उसमे कौशल्या की ऐतिहासिक स्थित प्रज्ञता तथा कैकेयी की कटुता नही है। राम वन गमन का समाचार सुनकर वह उत्तेजित होकर राम–लक्ष्मण को कर्त्तव्य की सीख देती है। सुमित्रा मे अहभाव बडा तीव्र है, जो सदैव विवेक पूर्ण कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, वह सिहनी सदृश क्षत्राणी, मानिनी एव स्वाभिमानी है, स्वत्व के लिए सघर्ष, वशोचित मर्यादा का निर्वाह, कृत्रिम त्याग का विरोध एव अन्याय का प्रतिकार उसका सैद्वान्तिक निष्कर्ष है।"[४०]

---

[३९] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २१ पृष्ठ २६३
[४०] साकेत– एक नव्य परिबोध – डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ८१

ताड़का

सुकेत कन्या ताटका का वर्णन वाल्मीकि रामायण मे विस्तार से मिलता है। रामचरित मानस मे मात्र दो पक्तियो मे तुलसी दास ने ताटका का उल्लेख किया है। तुलसी ने ताटका को ताडका कहा है। मुनि विरोधिनी ताडका को मुनि ने राम को दिखाया और शब्द सुनते ही वह क्रोधित होकर दौडी और राम ने एक ही वाण से उसका अन्त कर दिया और दीन जानकर उसे परम-पद प्रदान किया।[४१] मैथिली शरण गुप्त ने ताडका के बारे मे कोई परिचय न देकर ताडका का उल्लेख मात्र किया है –

हँसी माण्डवी – "प्रथम ताडका,
फिर यह शूर्पणखा नारी,
किसी बिडालाक्षी की भी अब आने वाली है बारी।"[४२]

अहल्या

पचकन्याओ मे ज्येष्ठा महर्षि गौतम की पत्नी तथा जनक के पुरोहित शतानन्द की माता के रूप मे अहल्या का वर्णन वाल्मीकि रामायण तथा रामचरित मानस मे हुआ है जिसका उद्धार राम ने किया। मैथिलीशरण गुप्त अहल्या उद्धार का उल्लेख दो पक्तियो मे करते है –

ऋषि के मख–विघ्न टाल के, निज वीर–व्रत पूर्ण पाल के,
मुनि की गृहिणी उबार के, वर आये नर–रूप धार के।[४३]

सीता

जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय जगत के लिए रामकथा के सर्वश्रेष्ठ पुरुष है उसी प्रकार राम की पत्नी सीता आदर्श स्त्री है। तुलसी की सीता का आदर्श

---

[४१] रामचरितमानस बालकाण्ड २०६/३
[४२] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २३२
[४३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १० पृष्ठ २०३

तथा पतिव्रत्य धर्म भारतीय इतिहास के मध्य युग के प्रतिबन्धो द्वारा अनुबन्धित है, जबकि वाल्मीकि की पतिव्रता सीता मे वैदिक समाज की नारी का स्वाभिमान है जो अपना पृथक आकर्षण रखता है उसी प्रकार मैथिलीशरण गुप्त की सीता गॉधीयुगीन समता, अहिसा, स्वावलम्बन, नवागत का स्वागत आदि युगीन चेतना का आदर्श प्रतीक है। गुप्त जी ने पहली बार सीता के चरित्र की सर्जनात्मक सम्भावनाओ को व्यवहारिक जीवन के सदर्भ मे प्रस्तुत किया है। साकेत मे वह अधिक मुखर है। उसकी मुखरता भावना की देन नही है, बल्कि जीवन के कटु अनुभवो से निर्मित है। उसका व्यवहार जगत अधिक फैला हुआ है। मानस की सीता वन–गमन प्रसग मे थोडा मुखर होकर वन जाने की अपनी अभिलाषा को व्यक्त करती है। उसके बाद सीता की वाणी प्राय मौन हो जाती है। साकेत की सीता प्रारम्भ से लेकर अशोक वाटिका तक मुखर एव निर्भीक है।

साकेत मे सीता का परिचय चतुर्थ सर्ग मे सर्वप्रथम होता है। सीता अपनी सास कौशल्या की पूजन–अर्चन मे सहायता करती हुई दिखायी देती है जो कौशल्या राम के राज्याभिषेक के निमित्त कर रही है –

पवित्रता मे पगी हुई,
देवार्चन मे लगी हुई,
मूर्तियॉ ममता–माया,
कौशल्या कोमल काया,
थी अतिशय आनन्द युता,
पास खडी भी जनक सुता।"[४४]

सीता के सौन्दर्य की अनुपम झॉकी गुप्त जी ने खीची है। उनका मन सीता के सौन्दर्य मे रमा हुआ है–

---

[४४] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४३

गोट जडाऊँ घूँघट की

बिजली जलदोपन पट की–

x x x

परिधि बनी थी विधु–मुख की,

सीमा थी सुषमा-सुख की।

x x x

साँप खिलाती थी अलके,

मधुप पालती थी पलके,

x x x

गोल–गोल गोरी बाहे।[४५]

साकेत की सीता आदर्श वधू है और अपनी सास कौशल्या की आज्ञा का पूरी तरह पालन करती है। कौशल्या की पूजा के समय वह उनके पास खडी होकर उनकी आज्ञानुसार कार्य करती दिखायी देती है।

थी कमला सी कल्याणी,

वाणी मे वीणा पाणी।

माँ! क्या लाऊँ? कहकर–

पूँछ रही थी रह–रहकर।

सास चाहती थी जब जो,–

देती थी उनको सब सो।[४६]

मैथिलीशरण गुप्त पतिव्रत्य धर्म पालने वाली सीता के सर्वाधिक सुखद क्षणो के वर्णन मे अधिक रमे है। सर्वांग सुन्दरी सीता युवराज्ञी सी सज-धजकर सास कौशल्या के साथ राज्याभिषेक समारोह की तैयारियो मे मग्न है। राम ने माता से वन गमन का समाचार सुनाया, तब सीता हतप्रभ या विचलित नही होती वल्कि उल्टे सोचती है–

---

[४५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४३

[४६] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४४

स्वर्ग बनेगा अब वन मे,

धर्मचारिणी हूँगी मै,

वन विहारिणी हूँगी मै।[४७]

वन–विहारिणी बनकर अपने धर्म का पालन करते हुए वन को भी स्वर्ग बनाने का निश्चय करने वाली सीता पर कौशल्या और राम के भय सकट दिखाने का कुछ परिणाम नही होता उल्टे वह राम से अर्धांगिनी के नाते पातिव्रत्य धर्म निभाने के लिए अनुरोध करती है–

नाथ। न कुछ होगा इससे, क्या कहते हो तुम किससे?

समझो मुझको भिन्न न हा। करो ऐक्य उच्छिन्न न हा।

तुमको दुख तो मुझको भी, तुमको सुख तो मुझको भी,

x x x

जो गौरव लेकर स्वामी। होते हो कानन गामी,

उसमे अर्द्ध भाग मेरा, करो न आज त्याग मेरा,[४८]

सीता साकेत मे सौन्दर्य शालिनी, उत्कृष्ट गुण युक्त और आदर्श पत्नी के रूप मे चित्रित हुई है। वनवासी का जीवन वह जिस सरलता से स्वीकार करती है, उसी सरलता से पत्नी धर्म की व्यख्या भी करती है।

सीता ने अपनी ओर से पत्नी धर्म पूर्णत निबाहा है और जगल मे मगल मनाया है। सीता वन मे बडे उत्साह से फल–फूल, पेड–पौधे, पशु–पक्षी, सर–सरिता के सबध मे जिज्ञासा प्रकट करती है। राम उनकी जिज्ञासा उसी उत्साह से शान्त करते है। मैथिलीशरण गुप्त की सीता का शील स्वभाव वाल्मीकि और तुलसी के समान ही है परन्तु कुछ नवीन चारित्रिक विशेषताएँ उसके जीवन के साथ मैथिलीशरण गुप्त ने जोड दी है। पातिव्रत्य का निर्वाह करती हुई सीता स्वावलम्बन, वन–चारियो की सेवा तथा

---

[४७] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५०

[४८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५६–५७

उन्हे सभ्य बनाने का आदर्श प्रस्तुत करती है। पर्ण कुटी के वृक्षो को सीचती हुई सीता अपने आवास कुटिया को राजभवन के समान मानती है—

मेरी कुटिया मे राज भवन मन भाया।[४९]

उसका जीवन परिपूर्ण है किसी भाव या अभाव से उसे क्लेश या सन्ताप नही है। वह गाती है—

कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुछ करने मे अब हाथ लगा है मेरा,
वन मे ही तो गार्हस्थ जगा है मेरा।[५०]

स्वावलम्बन उसके जीवन का आनन्द है तभी तो सीता कहती है—

औरो के हाथो यहॉ नही पलती हूॅ,
अपने पैरो पर खडी आप चलती हूॅ।[५१]

सीता उर्मिला के त्याग भरे सकल्प की सराहना करती है वह भीतर ही भीतर उर्मिला के त्याग की पूजा करती है। सीता पति—पत्नी सबध को त्याग एव बलिदान से मण्डित कर अपने दाम्पत्य जीवन को व्यापक बना देती है।

मैथिलीशरण गुप्त के साकेत मे सीता का अपहरण और पति वियोग के प्रसग महत्वपूर्ण नही है। बस हनुमान द्वारा सक्षेप मे एकादश सर्ग मे उल्लेख करवाया गया है।

सीता हरण के पश्चात् अशोक-वाटिका मे रावण द्वारा यह कहने पर कि—

कहा मान अब भी है मानिनि, बन इस लका की रानी,
कहॉ तुच्छ वह राम? कहॉ मै विश्वजयी रावण मानी?[५२]

---

[४९] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ ११७
[५०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ ११८
[५१] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ ११६
[५२] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४६

सीता क्रोध से उबल पडती है। और निर्भीकता से उत्तर देती है–

जीत न सका एक अबला का मन तू विश्वजयी कैसा?
जिन्हे तुच्छ कहता है, उनसे भागा क्यो तस्कर ऐसा?
मै वह सीता हूँ सुन रावण, जिसका खुला स्वयवर था,
वर लाया क्यो मुझे न पामर, यदि यथार्थ ही तू नर था?
वर न सका का-पुरूष, जिसे तू उसे व्यर्थ ही हर लाया,
अरे अभागे, इस ज्वाला को क्यो तू अपने घर लाया?[५३]

साकेत की सीता राम से मिलने के लिए कातर नही। उसमे दृढता और विश्वास है। उन्हे अपनी अपेक्षा राम के कष्ट का ही अधिक ध्यान है। उनको राम के सुख मे ही सुख दिखायी देता है। वह यह नही चाहती कि उनके लिए राम कष्ट मे पडे। उनका राम के साथ तो जन्म–जन्मान्तर का सबध है। उसे एक रावण क्या करोडो रावण भी नही मिटा सकते।[५४] साकेत की सीता का यही विश्वास उसे अत्यन्त ऊँचा उठा देता है–

मेरे धन वे घनश्याम ही, जानेगा यह अरि भी अध,
इसी जन्म के लिए नही है, राम जानकी का सबध।[५५]

मैथिलीशरण गुप्त की सीता का अग्नि परीक्षण साकेत मे गौण है केवल प्रसगोचित उल्लेख मात्र कवि ने किया है। राम ने किसी प्रकार का सदेह न प्रिया के प्रति व्यक्त किया है और न ही सीता को प्रतिवाद तथा अग्नि परीक्षा देने की आवश्यकता पडी है। केवल विभीषण की पत्नी का कथन कवि ने कराया है– राम विजय का समाचार देने वाली सरमा से सीता कहती है कि लका की रानी तुम्हे मै क्या दूँ तब वह कहती है –

तुम सोने की सती मूर्ति, शम–दम की दीक्षा
दी है अपनी यहॉ जिन्होने अग्नि परीक्षा।"[५६]

---

[५३] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४६
[५४] रामचरित मानस और साकेत तुलनात्मक अध्ययन – श्री परमलाल गुप्त पृष्ठ १२१
[५५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४७
[५६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८१

इस प्रकार रावण विजय करके राम, सीता को साथ लेकर अयोध्या आते है।

इस प्रकार सीता का चरित्र अत्यधिक वैविध्यपूर्ण ज्ञात होता है। साकेतकार ने उनके स्वरूप मे सहृदय कौटुम्बिक भावना का परिचय दिया है। उसका चरित्र राम के चरित्र का पूरक है। चित्रकूट मे सीता का उल्लासपूर्ण जीवन दिखायी देती है जो कवि की नवोद्भावना का परिचायक है। "कुल मिलाकर साकेत की सीता न तो पकिल भावुकता से स्पन्दित है और न ही बौद्विक अतिरेक से बोझिल। दोनो के समन्वय से उनका चरित्र अधिक प्रभावशाली एव प्रभा मडित है। इसीलिए उसके चरित्र मे मानवीय दुर्बलता भी है और दैवी उदात्तता भी है। वह केवल अपनी अनुभूति की सकीर्णता मे आवद्ध नही है, बल्कि सामाजिक सवेदना को प्रभावित और सघटित करने मे क्रियारत है यही इस चरित्र का आधुनिक रूप है।"[५७]

उर्मिला

भारतीय सस्कृति की साक्षात् मूर्ति उर्मिला का व्यक्तित्व वाल्मीकि रामायण एव रामचरित मानस मे उपेक्षित है। उर्मिला के सदर्भ मे कही गयी कुछ पक्तियॉ ही परिचय रूप मे उसके चरित्र पर नाम–मात्र का प्रकाश डालती है। चौदह वर्षो तक पति–विरह मे आकुल इस तपस्विनी का वर्णन दोनो महाकाव्यो मे अति सक्षिप्त है। साकेत मे मैथिलीशरण गुप्त ने उर्मिला के चरित्र की मौलिक उद्भावना करते हुए उसके साथ पूर्णत न्याय किया है और उर्मिला को उस ऊँचाई पर प्रतिष्ठित किया है जिसकी वह सच्ची अधिकारिणी थी।

राम कथा की अधिकाश घटनाओ प्रसगो से आद्योपान्त जुडे राम के सर्वाधिक समीपस्थ तथा सर्वाधिक मुखरित पात्र लक्ष्मण की पत्नी उर्मिला का चरित्र पूर्णतया उपेक्षित है। राम कथा साहित्य की इस उपेक्षिता का उद्धार सर्वप्रथम रवीन्द्रनाथ टैगोर द्वारा किया गया। विश्व कवि ने अपनी करुण रस ग्राहिणी दृष्टि से अद्वितीय त्यागमयी

[५७] साकेत एक नव्यपरिबोध डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ७७

होती हुई भी उपेक्षिता उर्मिला के श्वेत–श्याम चित्र को अपनी भावनाओ के दिव्य तथा बेजोड रगो से सर्वथा नये रूप मे उकेरा। विश्व कवि ने अपने निबन्ध मे अत्यन्त भावुकता पूर्ण हृदय–स्पर्शी शैली मे उपेक्षिता उर्मिला का स्मरण किया तथा आदि कवि वाल्मीकि और अन्य परवर्ती कवियो की उर्मिला विषयक उदासीनता की आलोचना की। इस लेख से प्रेरणा प्राप्त करके महावीर प्रसाद द्विवेदी ने "सरस्वती" मे "कवियो की उर्मिला विषयक उदासीनता" शीर्षक लिखकर कवि जगत को आन्दोलित कर दिया। परिणाम स्वरूप मैथिलीशरण गुप्त के साकेत मे इस उपेक्षिता का उद्धार बीसवी शताब्दी मे हुआ।

साकेत की सवेदना के केन्द्र मे युग–युग की उपेक्षिता उर्मिला बैठी है जिसके जीवन का सम्यक् विश्लेषण ही साकेत का मुख्य सकल्प है, वाल्मीकि के कथा केन्द्र मे मानव राम है, मानस की चितन धारा मे ब्रह्म राम सतरण करते है, भवभूति की करूणा की आत्मा सीता है तथा साकेत की भावभूमि मे उर्मिला अवस्थित है।[५८]

साकेत के प्रथम सर्ग मे उर्मिला का दर्शन सर्वप्रथम होता है। गुप्त जी ने बडे ही आकर्षक रूप मे उर्मिला का प्रवेश कराया है।

अरूण-पट पहने हुए आह्लाद मे, कौन यह बाला खडी प्रासाद मे?

x x x x

कनक लतिका भी कमल सी कोमला,

धन्य है उस कल्प–शिल्पी की कला!

x x x

स्वर्ग का यह सुमन धरती पर खिला,

नाम है इसका उचित ही 'उर्मिला'।[५९]

---

[५८] साकेत एक नव्य-परिबोध – डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ६३

[५९] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग प्रथम पृष्ठ ७

इस प्रकार उर्मिला का अनूठा रूप सौन्दर्य साकेत के प्रथम सर्ग मे सर्वत्र बिखरा हुआ है। साकेत की उर्मिला लक्ष्मण के साथ प्रेम पूर्ण वाग्विलास करती है वह केवल आदर्श पति परायणा पत्नी ही नही बल्कि एक वाक पटु एव स्वाभिमानी नारी के रूप मे भी साकेत मे हमारे सम्मुख आती है। लक्ष्मण के आत्ममुग्ध होकर यह कहने पर कि मै तो तुम्हारा दास हूँ वह स्पष्ट उत्तर देती है–

"दास बनने का बहाना, किसलिए?" क्या मुझे दासी कहाना इसलिए?
देव होकर तुम सदा मेरे रहो, और देवी ही मुझे रक्खो, अहो।"[६०]

उर्मिला को साकेत मे ललित कला मे पारगत चित्रित किया गया है। राम के राज्याभिषेक से सदर्भित चित्र को वह लक्ष्मण को जब दिखाती है लक्ष्मण उसके द्वारा चित्रित राज्याभिषेक के दृश्य को देखकर दग रह जाते है–

चित्र भी था चित्र और विचित्र भी
रह गये चित्रस्थ से सौमित्र भी।

x x x

तूलिका सर्वत्र मानो थी तुली,
वर्ण–निधि सी व्योम–पट पर भी खुली।[६१]

कैकेयी के वरदान-याचना के फलस्वरूप राम के साथ लक्ष्मण के वन जाने के प्रसग मे उर्मिला का त्यागमय आदर्श नारी चित्र साकेत मे उपस्थित हुआ है। वह प्रियतम के मार्ग मे बाधा नही बनना चाहती है, वह तो प्रियतम के सुख मे ही सुख की अनुभूति करती है–

कह उर्मिला ने–"हे मन! तू प्रिय पथ का विघ्न न बन।
आज स्वार्थ है, त्याग भरा! हो अनुराग विराग-भरा।
तू विकार से पूर्ण न हो, शोक-भार से पूर्ण न हो।
भातृ–स्नेह–सुधा वरसे, भू पर स्वर्ग–भाव सरसे।"[६२]

---

[६०] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग प्रथम पृष्ठ ८
[६१] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग प्रथम पृष्ठ ११
[६२] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५३

वन गमन के अवसर पर उर्मिला वेदना को अपने अन्दर समेट लेती है और वह विल्कुल मूक सी दिखायी देती है उसका सारा विषाद इन्ही दो पक्तियो मे निहित सा दिखायी देता है–

इधर उर्मिला मुग्ध निरी,
कहकर "हाय" धडाम गिरी।[६३]

षष्टम सर्ग मे उर्मिला के त्याग पर प्रकाश डाला गया है। साकेत के प्रणेता गुप्त जी उर्मिला के त्याग को महानता के आलोक मे चित्रित करते हुए यहॉ पर उर्मिला के चरित्र को सीता से श्रेष्ठ सिद्ध करते है–

सीता ने अपना भाग लिया,
पर इसने वह भी त्याग दिया।"[६४]

उर्मिला अपने मूर्च्छित होने को नारी सुलभ दुर्बलता मानती है न कि प्रियतम के वियोग की वेदना या स्वार्थ भावना –

सुनकर जीजी की मर्मकथा, गिर पडी मै, न रह सकी व्यथा।
वह नारि–सुलभ दुर्बलता थी, आकस्मिक–वेग–विकलता थी।[६५]

"उर्मिला की व्यथा और वेदना का अपना इतिहास है जो भारतीय नारी के इतिहास से सर्वथा भिन्न और अकेला है। ऑसू उसके व्यक्तित्व की दुर्बलता की देन नही बल्कि असामयिक आघात दश की देन है। सहवास काल के शारीरिक आनन्द ने वियोग काल की स्मृतियो को अधिक सवेदन शील बनाया है ऐसी स्थिति मे उसका अश्रुमय हो जाना स्वाभाविक है"।[६६]

---

[६३] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५८
[६४] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ ८१
[६५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ ८३
[६६] साकेत एक नव्य परिबोध – डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ६७

अष्टम सर्ग मे उर्मिला का क्षणिक मिलन लक्ष्मण के साथ सीता द्वारा कराया गया जिसमे उर्मिला को क्षीण और मलिन अवस्था मे देखकर लक्ष्मण घबरा जाते है किन्तु उर्मिला का त्यागमय आदर्श बोल उठता है–

"मेरे उपवन के हरिण आज वनचारी,
मै बॉध न लूँगी तुम्हे, तजो भय भारी।"

x x x

हॉ स्वामी! कहना था क्या, क्या कह न सकी कर्मों का दोष!
पर जिसमे सन्तोष तुम्हे हो मुझे उसी मे है सन्तोष।"[६७]

सामान्यत विरह व्यथित मन आधार की खोज मे अन्तर्मुख हो जाता है लेकिन उर्मिला अन्तर्मुखता से पीडित नही है बल्कि उसमे दृष्टि विस्तार है। वह दुख को अपने अन्दर सीमित रखकर दूसरो को सुख देना चाहती है। इसी रूप मे साकेत मे उसके चरित्र का निरूपण हुआ है।

नवम् सर्ग उर्मिला के विरहोद्‌गारो से पूर्ण है। उर्मिला का विरह सकुचित भावनाओ को लेकर नही चला। वह पति मार्ग मे कभी बाधा नही बनना चाहती। उर्मिला का विरह उत्तम कोटि का है उसका विरह स्वय उसी तक सीमित है। वह ऑसू बहाती है तो केवल अपने लिए, विरह बेदी पर तपती है तो केवल अपने लिए और विरह सागर मे अवगाहन करती है तो केवल अपने लिए। उसके इस रुदन द्वारा भातृ-प्रेम को कोई बाधा नही पहुँचती है। इस आदर्श को अक्षुण्ण रखने के लिए ही अपना जीवन तपस्या मे लगाकर उपवन को भी वन बना लेती है। कभी जब उसकी कामना और आदर्श मे सघर्ष होता है तो निश्चित रूप से सदैव विजय आदर्श की ही होती है। वह स्वप्न मे भी इसके लिए सचेत रहती है–

भूल अवधि–सुध प्रिय से कहती जगती हुई कभी आओ।
किन्तु कभी सोती तो उठती वह चौक बोलकर–"जाओ!"[६८]

---

[६७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १४२
[६८] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ९ पृष्ठ १४३

उर्मिला के ऑसू उसकी मलीनता को धोकर उसे और पवित्र बना देते है उसका प्रेम ऐन्द्रियता से उठकर पवित्र धरातल पर पहुॅचता है। उर्मिला के प्रेम मे ऐन्द्रियता होते हुए भी आदर्श का खण्डन नही है। चौदह वर्ष तक जो पति से दूर रहे और उसके मुॅह से उफ भी न निकले वह देवी भले ही हो, किन्तु उसे मानवी नही कहा जा सकता। गुप्त जी ने मनुष्योचित भावनाऍ सग्रहीत कर उर्मिला–विरह को अत्यन्त स्वाभाविक एव उच्च कोटि का बनाया है।

उर्मिला अपने आदर्श पर खरी उतरती है, उर्मिला भातृ स्नेह का आदर्श रखने के लिए, यह पवित्र त्याग व्रत करती है। नारी की पवित्रता एव त्याग की एक मिशाल उर्मिला कायम करती है–

अपने अतुलित कुल मे प्रकट हुआ था जो कलक काला,
वह उस कुल–बाला ने अश्रु सलिल से समस्त धो डाला।[६६]

उर्मिला का चरित्र एक प्रकार से आत्मपीडक चरित्र है। स्वदेश प्रेम, सैन्य सघटन, सैन्य सचालन की अभिलाषा जैसे सात्विक भाव उसकी दृष्टि व्यापकता का ही परिणाम है। सीता हरण और लक्ष्मण मूर्च्छना जैसे सवाद सुनकर वह शत्रु दल के सहार के लिए हुॅकार भरती है। वह रावण से युद्व करने के लिए अयोध्या की प्रजा को ललकारती है और स्वय नेतृत्व करने को तत्पर होती है। ऐसे अवसर पर ऑसू से अपनी विकल जिन्दगी का इतिहास लिखने वाली उर्मिला दुर्गा की तरह दाये हाथ मे त्रिशूल लिए साकेत के बारहवे सर्ग मे अवतरित होती है और वह चिल्लाकर कहती है कि पापी का सोना नही चाहिए। हमारी मातृभूमि किस धन से रिक्त है–

दाये कर मे स्थूल किरण-सा शूल विकट था।
गरज उठी वह– “नही, –नही, पापी का सोना
यहॉ न लाना, भले सिन्धु मे वही डुबोना।
किस धन से है रिक्त कहो, सुनिकेत हमारे?
उपवन फल-सम्पन्न, अन्नमय खेत हमारे।”[७०]

---

[६६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ १४३
[७०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ – पृष्ठ २७२

उर्मिला नारी सुलभ सेवा से ओत-प्रोत होकर आहत वीरो की सेवा करने के लिए साकेत मे तत्पर दिखायी देती है। उर्मिला के इस दर्प मे नवजागरण की नारी का स्वाभिमान बोलता नजर आता है। उर्मिला का दर्प भरा रूप कही भी असगत नही प्रतीत होता है।

उर्मिला का रोदन भी कभी किसी मर्यादा को भग नही करता। प्रियतम के प्रति अनुराग को रोका कैसे जा सकता है किन्तु इससे उसके त्याग पर ही प्रकाश पडता है क्योकि वह कभी किसी के सामने रो-कर मार्ग बाधक नही बनती। उर्मिला इसी कारण दयाभाव की अधिकारिणी न बनकर हमारी श्रद्धा का पात्र बन जाती है। गुप्त जी ने उर्मिला को मिलन मे भी रुलाया है–

"बिरह रुदन मे गया, मिलन मे भी मै रोऊ,
मुझे और कुछ नही चाहिए पद रज धोऊ।"[७१]

चौदह वर्ष की विरहाग्नि मे ऐन्द्रियता को भस्म कर उसका प्रेम शुद्ध नि स्वार्थ भावना मे समाहित हो जाता है। वह इसी भावना से ओत-प्रोत हो कहती है–

"अब तो केवल रहूँ सदा चरणो की दासी।
मै शासन की नही, आज सेवा की प्यासी।।"[७२]

मर्यादा पुरुषोत्तम राम उसकी महत्ता को स्वय स्वीकार करते है–

"तूने तो सहधर्मचारिणी के भी ऊपर,
धर्म स्थापन किया भाग्यशालिनी इस भू-पर।"[७३]

साकेत का प्रत्येक पात्र उर्मिला के धर्म-सस्थापन की बात स्वीकार करता है, हर कोई उसके आदर्श और त्याग के आगे नतमस्तक है। कुछ आलोचको का यह कहना कि उर्मिला अधिक ऑसू बहाती है। जिससे उसके आदर्श प्रभावित होते है, यह बात

---

[७१] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ – पृष्ठ २८६
[७२] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ – पृष्ठ २८६
[७३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८४

पूरी तरह से निराधार है क्योकि उर्मिला के ऑसू कभी भी किसी के पथ की बाधा नही बने। ऑसू तो प्रेम के सहज उद्‌गार है अत इनका निकलना स्वाभाविक है फिर उर्मिला के ऑसू की तो बात क्या? उसमे दूसरो को भी पवित्र करने की शक्ति है। उसमे मानवोचित कामना अवश्य है किन्तु आदर्श के साथ किसी प्रकार का समझौता नही। उर्मिला का आदर्श महान है, उसका त्याग महान है। गुप्त जी ने युग-युग की उपेक्षित उर्मिला के चरित्र को नवीन दृष्टि से सृजित करके उर्मिला के चरित्र के साथ पूर्णत न्याय किया है, तथा इस चरित्र के द्वारा 'स्वय' तथा अपनी 'उर्मिला' दोनो को महिमा मण्डित किया है। निश्चित रूप से साकेत के केन्द्र मे उर्मिला का चरित्र उसी प्रकार से चित्रित है जिस प्रकार से मानस के केन्द्र मे प्रभु राम एव वाल्मीकि रामायण के केन्द्र मे महापुरुष राम का चरित्र निरूपित किया गया है।

माण्डवी

रामकथा मे वाल्मीकि एव तुलसी के महाकाव्यो मे माण्डवी का चरित्र विशेष महत्व नही पा सका। साकेत मे गुप्त जी ने माण्डवी के चरित्र के साथ पूरी तरह से न्याय किया है। "माण्डवी का चरित्र साकेतकार की नयी सृष्टि है। वह इतिहास शापित मूक चरित्र नही है बल्कि बदलती हुई सामाजिक चेतना की प्रतिकृति है। दुख मे पारिवारिक सेवा का दायित्व ग्रहणकर अपनी वेदना से मुक्ति पाने का वह प्रयास करती है। यद्यपि वह अपने नैसर्गिक भोग के प्रति सजग है लेकिन वह सेवा की विराट भूमिका में शारीरिक इच्छाओ का बलिदान कर देती है। वह अन्तपुर की व्यवस्था मे सदैव सक्रिय है।"[७४]

मैथिलीशरण गुप्त रचित साकेत के एकादश सर्ग मे माण्डवी हमारे सम्मुख आती है वह एक पतिव्रता एव आदर्श कुलवधू है–

सहसा शब्द हुआ कुछ बाहर, किन्तु न टूटा उनका ध्यान,

---

[७४] साकेत एक नव्य परिबोध– डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ८१

कब आ पहुँची वहाँ माण्डवी, हुआ न उनको इसका ज्ञान।।"

चार चूडियाँ थी हाथो मे, माथे पर सिन्दूरी बिन्दु,

पीताम्बर पहने थी सुमुखी, कहाँ असित नभ का वह इन्दु?[७५]

भरत राम के ध्यान मे मग्न थे उसी समय फलाहार लेकर माण्डवी आती है कवि ने सुन्दर शब्दो मे माण्डवी का चित्र खीचा है–

यही नित्य का क्रम था उसका, राजभवन से आती थी,

स्वश्रू-शुश्रुषिणी अन्त मे पति दर्शन कर जाती थी।

उठ धीरे, प्रिय निकट पहुँचकर उसने उन्हे प्रणाम किया,

चौक उन्होने, सँभल 'स्वाति' कह, उसे उचित सम्मान दिया।[७६]

माण्डवी भरत को अधीर देखकर कहती है कि मेरे स्वामी आप जहाँ भी होते आपकी यह दासी वही पर सुखी होती किन्तु आपकी विश्व-बन्धुत्व की भावना यहाँ पर निराश्रित होकर आपके बिना होती–

मेरे नाथ, जहाँ तुम होते, दासी वही सुखी होती,

किन्तु विश्व की भातृ-भावना यहाँ निराश्रित ही रोती।[७७]

माण्डवी एक दार्शनिक सी कहती है– जिसमे उसका त्याग पूर्ण चरित्र स्वत. अभिव्यजित हो उठता है–

जीवन मे सुख-दु ख निरन्तर आते जाते रहते है,

सुख तो सभी भोग लेते है, दु ख धीर ही सहते है।

मनुष्य दुग्ध से, दनुज रुधिर से, अमर सुधा से जीते हे

किन्तु हलाहल भव-सागर का, शिव-शकर ही पीते है।।"[७८]

---

[७५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २१६

[७६] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २१८

[७७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २२२

[७८] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २२२

माण्डवी नारी जाति को कलह के लिए दोषी मानती हुई कहती है–

किन्तु नाथ, मुझको लगता है कलह मूर्ति ही अपनी जाति
आत्मीयो को भी आपस मे, हमी बनाती यहॉ अराति।"[७६]

माण्डवी के चरित्र की गरिमा हनुमान-मिलन प्रसग से प्रकट होती है। भरत द्वारा बाण लगने से मूर्छित हनुमान चेतना आते ही सामने माण्डवी को देखकर कहते है–

अहा! कहॉ मै, क्या सचमुच ही
तुम मेरी सीता माता?"[८०]

यहॉ पर गुप्त जी ने माण्डवी मे सीता का दर्शन हनुमान को कराकर माण्डवी के चरित्र को ऊँचाइयॉ प्रदान की है।

"हनुमान द्वारा सीता-हरण, लक्ष्मण-मूर्च्छा आदि का समाचार सुनकर वह अपनी नारी सुलभ सुकुमारता से कातर हो उठती है किन्तु भरत को आश्वस्त करती है। वह शत्रुघ्न और भरत दोनो को कर्तव्य की प्रेरणा देती है और स्वय तदर्थ सन्नद्ध रहती है। माण्डवी का यह रूप आदर्श नारीत्व का प्रतीक है। भरत की भातृ-भावना एव पुनीत साधन मे उसका श्रेय है, बल्कि यह कहा जा सकता है कि वह भरत-भाव की पूरक है।"[८१]

श्रुतिकीर्ति

श्रुतिकीर्ति के चरित्र का विकास वाल्मीकि और तुलसी द्वारा उपेक्षित रहा। नाम मात्र की पक्तियो मे वैवाहिक परिचय दिया गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने भी अतिसंक्षेप मे श्रुतिकीर्ति के चरित्र पर प्रकाश डाला है। श्रुतिकीर्ति का सक्षिप्त विशेष परिचय बारहवे सर्ग मे मिलता है–

---

[७६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २२८
[८०] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २३६
[८१] साकेत एक नव्य परिबोध – डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ८१

स्तम्भित सा था वीर, चढे माथे पर रोली,

पैरो पड श्रुत कीर्ति अन्त मे स्थिर हो बोली

जाओ स्वामी, यही मॉगती मेरी मति है–

जो जीजी की, उचित वही मेरी भी गति है।"[८२]

श्रुतिकीर्ति का चरित्र त्याग से पूरित है। एक त्यागमयी आदर्श पत्नी एव सच्चे अर्थों मे परिवार की हितैषिणी के रूप मे चित्रित है जिसके जीवन का आदर्श है– सच्चा त्याग एव कर्तव्य पथ का अनुसरण। तभी तो वह कहती है–

मान मनाया और जिन्होने लाड लडाया,

छोटे होकर बडा भाग जिनसे है पाया,

जिनसे दुगुना हुआ यहॉ वह भाग हमारा,

हम दोनो को मिले उन्ही मे जीवन धारा।"[८३]

वह युद्धभूमि मे जाते हुए शत्रुघ्न को वीरता के साथ भेजती है, वह सच्चे अर्थो मे पारिवारिक आपदाओ मे परिवार के साथ खडी होती है और अपना सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार रहती है। उसके इस आदर्श त्याग को देखकर शत्रुघ्न कहते है–

अर्द्धांगी से प्रिये, यही आशा भी मुझको,

शुभे और क्या कहूँ, मिले मुँह मॉगा तुझको।"[८४]

इस प्रकार यद्यपि गुप्त जी ने भी श्रुतिकीर्ति का चरित्र-चित्रण सक्षेप मे किया है तथापि उनके चरित्र का उज्जवल पक्ष साकेत मे उभरा है। जो भारतीय नारियो के लिए अनुकरणीय है।

---

[८२] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २६४
[८३] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २६५
[८४] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २६५

मन्थरा

वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस मे वर्णित मन्थरा एक विशिष्ट एव अनुपम नारी पात्र है जिसमे असद् वृत्ति को पूर्णत समाविष्ट दिखाया गया है। मानस की मन्थरा सरस्वती द्वारा प्रेरित होकर राम के राज्याभिषेक मे व्यवधान डालती है किन्तु साकेत की मन्थरा विशुद्ध रूप से मानवीय धरातल पर अवतरित है उसमे मानव सुलभ ईर्ष्या और द्वेष की भावना जागृत है। वह अपनी स्वामिनी कैकेयी के पुत्र भरत को राजगद्दी दिलाने के लिए राम के राज्याभिषेक मे व्यवधान डालने का कुचक्र करती है। अपने वाक-चातुर्य से वह सरल हृदय कैकेयी को अपने मोह-फास मे बाध लेती है। कैकेयी के दृढ विश्वास को वह चूर-चूर कर देती है उसमे सौतियाडाह की भावना पैदा कर देती है। मन्थरा का चरित्र साकेत मे नयी उद्‌भावना के साथ प्रस्तुत किया गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने मन्थरा को ईर्ष्या और द्वेष की साक्षात् प्रतिमा बनाकर प्रस्तुत किया है। राम के राज्याभिषेक की तैयारियॅा देखकर मन्थरा ईर्ष्या और द्वेष से जलने लगती है और राज्याभिषेक मे व्यवधान डालने का कुचक्र रचती है। साकेत के द्वितीय सर्ग मे मन्थरा का प्रवेश इस प्रकार हुआ है–

किन्तु हा! फला न सुमन-क्षेत्र,

कीट वन गये मन्थरा के नेत्र।

देख कर कैकेयी यह हाल, आप बोली उससे तत्काल–

अरी, तू क्यो उदास है आज, वत्स जब कल होगा युवराज?"[८५]

कैकेयी उसे दु:खी देखकर कहती है कि भला तू उदास क्यो है, कल ही तो मेरा राम युवराज बनेगा? जिसे सुनकर मन्थरा भडक उठती है और कहती है–

आप को तो भी है कुछ सोच?"[८६]

---

[८५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १५

[८६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १५

मन्थरा कैकेयी को अपने मायाजाल मे फॅसाने के लिए तर्क देती है मनोविज्ञान का सहारा लेती है और अत्यन्त चुभने वाला वाक्य बोलती है। कैकेयी के यह कहने पर कि भला राम और भरत मे क्या भेद है कोई भी राजा बने, है तो मेरा बेटा ही। मन्थरा कहती है–

"भेद?" दासी ने कहा सतर्क–
सवेरे दिखला देगा अर्क।
राजमाता होगी जब एक,
दूसरी देखेगी अभिषेक।[८७]

मन्थरा कैकेयी को तर्क द्वारा धीरे-धीरे अपनी तरफ खीचती है और कहती है कि राम के राज्याभिषेक मे कौशल्या का षडयन्त्र है जिसने मीठी बोली बोलकर अपने पुत्र को राजा बनवा लिया और तू सरल ह्रदय कुछ समझ नही पा रही है। कैकेयी पर मन्थरा की बात का असर होता है और कैकेयी कहती है कि मुझे भरमा नही साफ खोलकर बता कि क्या बात है–

मन्थरा ने फिर ठोका भाल–
शेष है अब भी क्या कुछ हाल?
x x x
भरत को करके घर से त्याज्य,
राम को देते है नृप राज्य।
भरत से सुत पर भी सन्देह,
बुलाया तक न उसे जो गेह।"[८८]

[८७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १६
[८८] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १७

मन्थरा की यह बात सुनकर कैकेयी उसे फटकारते हुए कहती है मेरे सामने से निर्बुद्धि हट जा? अधिक मत बोल, तेरी जिह्वा मे विष घुला हुआ है तू घर मे कीचड फेकती है 'नीच ही होते है बस नीच।[८९]

मन्थरा सहम जाती है किन्तु निर्भीक होकर खडी रहती है और कहती है कि देवि मेरा अपराध क्षमा करे, मैने अपने हित के लिए कुछ नही कहा, आप स्वामिनी है, जो भी दण्ड उचित समझे, दे सकती है मेरी समझ मे जो आया, मेरा जो धर्म था, मैने आप से कहा—

समझ मे आया जो कुछ मर्म,
उसे कहना था मेरा धर्म।[९०]

मन्थरा अत्यन्त कुशला के रूप मे चित्रित की गयी है उसकी वाक्पटुता एव तर्क शक्ति विलक्षण है उसके आव—भाव, उसकी कहने की भगिमा, शैली सब विचित्र है। अपनी बात कहने के पश्चात् कैकेयी जमीन पर अपना माथा टेक करके उसे प्रणाम करती है जिसमे अविवेक की प्रधानता है और दूसरो पर असर डालने मे उसकी यह भाव-भगिमा पूरी तरह से सफल है—

मही पर अपना माथा टेक,
भरा था जिसमे अति अविवेक।
किया दासी ने उसे प्रणाम,
और वह चली गयी अविराम।[९१]

उसके चले जाने पर कैकेयी के ऊपर उसका जादू चढकर बोलने लगता है—

गई दासी, पर उसकी बात,
दे गई मानो कुछ आघात—

---

[८९] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १७
[९०] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १७
[९१] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १८

भरत से सुत पर भी सदेह,

बुलाया तक न उन्हे जो गेह।"[६२]

मन्थरा के चरित्र को अधिक विस्तार साकेत मे नही दिया गया है साकेत की मन्थरा अपने अल्प चरित्र मे ही कैकेयी के ऊपर भयकर असर डालने मे सफल रहती है। उसका कथन– "भरत से सुत पर भी सन्देह, बुलाया तक न उन्हे जो गेह' कैकेयी के मन-मस्तिष्क को चीर कर रख देता है और वह प्रतिशोध की आग मे जलने लगती है और सकल्प लेती है– करूँगी मै इसका प्रतिकार, पलट जावे चाहे ससार[६३] रामचरित मानस की मन्थरा की भॉति साकेत की मन्थरा उसे वरदान मॉगने की बात नही बताती, बल्कि उसे ऐसी गति दे देती है कि कैकेयी सब कुछ स्वत ही करती जाती है। साकेत की कैकेयी मन्थरा द्वारा प्रेरित होकर स्वत ही करती जाती है। और अन्त मे वरदान मॉगकर राम के वनवास और अयोध्या के सर्वनाश का कारण बनती है। इस प्रकार साकेत की मन्थरा ईर्ष्या और द्वेष की प्रतिमूर्ति के रूप मे चित्रित है वह वाकपटु एव तर्कशील है उसके तर्क अकाट्य है और वे कैकेयी के दृढ ह्दय को भेदने में पूरी तरह सक्षम है। मन्थरा का चरित्र अपने उद्देश्य मे पूरी तरह से सफल है। मन्थरा गुप्त जी की नव-उद्भावना से निर्मित चरित्र है जिसमे असद्वृत्तियो का समावेश है।

शूर्पणखा

शूर्पणखा का परिचय रावण की बहन के रूप मे वाल्मीकि एव तुलसी ने किया है और लक्ष्मण द्वारा उसके नाक-कान काटकर अपमानित कर रावण को चुनौती देने का उल्लेख किया गया है। मैथिलीशरण गुप्त ने भी इसी प्रकार का वर्णन अति सक्षेप मे साकेत के एकादश सर्ग मे किया है। शत्रुघ्न वर्णन करते है कि शूर्पणखा आर्य को देखकर मोहित हो गयी–

[६२] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १८
[६३] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १८

राक्षसता उनको विलोक कर, थी लज्जा से लोहित सी,

शूर्पणखा रावण की भगिनी पहुॅची वहॉ विमोहित-सी[६४]

माण्डवी के पूॅछने पर वह आगे की घटना बताते हुए कहते है कि–

हॉ देवर, फिर? भाभी आगे हुआ सभी रस-भाव विवर्ण,

आर्या को खाने आई वह गई कटाकर नासा-कर्ण[६५]

इसके बाद उनके आश्रम पर राक्षसो के साथ घोर युद्ध हुआ जिसमे खर-दूषण आदि राक्षस मारे गये। इसके आगे की कथा हनुमान जी सुनाते हुए कहते है कि–

शूर्पणखा लका मे पहुॅची रावण से बोली रोकर–

देखो, दो तापस मनुजो ने, कैसी गति की है मेरी,

उनके साथ एक रमणी है, रति भी हो जिसकी चेरी।[६६]

इस प्रकार शूर्पणखा अपनी वाक्पटुता से रावण को सीता हरण के लिए प्रेरित करती है और रावण सीता हरण का निश्चय करता है

शूर्पणखा की बाते सुनकर क्षुब्ध हुआ रावण मानी,

वैर-शुद्धि के मिष उस खल ने सीता हरने की ठानी[६७]

इस प्रकार साकेत मे उसी प्रकार की शूर्पणखा का उल्लेख हुआ है जैसे पूर्व महाकाव्यो मे मिलता है किन्तु यहॉ पर अति सक्षेप मे गुप्त जी ने शूर्पणखा का चित्रण किया है। इसका कारण उर्मिला के चरित्र विकास मे शूर्पणखा के चरित्र का योगदान कम होना है।

---

[६४] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २३२

[६५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २३२

[६६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २३७

[६७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २३७

शबरी

वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस मे वर्णित शबरी का साकेत मे मैथिलीशरण गुप्त ने नाम-मात्र का उल्लेख किया है कि सदा भाव के भूखे श्री राम ने शबरी के आतिथ्य को स्वीकार किया–

'सदा भाव के भूखे प्रभु ने, शबरी का आतिथ्य लिया'[६८]

तारा

वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस मे वर्णित तारा का उल्लेख गुप्त जी ने साकेत मे किया है किन्तु अति सक्षेप मे यहॉ वर्णन मिलता है लक्ष्मण जब क्रोधित होकर सुग्रीव के नगर मे पहुॅचे तब तारा को आगे करके वानर पति सुग्रीव नतमस्तक उनकी शरण मे गया और तारा को देख लक्ष्मण का क्रोध शान्त हो गया और सभी वानर सीता की खोज मे चारो दिशाओ मे गये–

तारा को आगे करके तब नत वानरपति शरण गया,
देख दीन अबला को सम्मुख आवेगी किसको न दया?"[६९]

सरमा

अशोक-वाटिका मे सीता की सहायिका के रूप मे साकेत मे विभीषण पत्नी सरमा का सक्षिप्त उल्लेख हुआ है। इसके पूर्व रामचरित मानस तथा अन्य रामायणो मे त्रिजटा का उल्लेख सीता की सहायिका के रूप मे अशोक वाटिका मे दिखाया गया है। किन्तु साकेत मे गुप्त जी ने त्रिजटा के स्थान पर विभीषण पत्नी सरमा का उल्लेख किया है जो सीता को सान्त्वना देती हुई राम के विजय का सदेश देती है–

---

[६८] साकेल मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४३
[६९] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४४

'उन दोनो के बीच घिरी थी देवी सीता,

राजस-तामस-मध्य सात्विकी वृत्ति पुनीता।

एक विभीषण बधू उन्हे धीरज देती थी,

या प्रतिमा सी पूज आप वह वर लेती थी।"[१००]

सरमा सीता को धैर्य बँधाते हुए कहती है कि हे देवी अब आप अपने को प्रभु श्री राम के निकट ही जानिए–

अब प्रभु के ही निकट देवि, अपने को जानो।

मेधनाद क्या मरा, मरा रावण ही जानो।

सारी लका आज रो रही है सिर धुनकर,

रावण मूर्च्छित हुआ शुभे, रथ मे ही सुनकर।"[१०१]

प्रभु राम ने रावण से कहा कि रावण उठ! जाग मेरा बाण प्रस्तुत है, मै तुझे और दुखी नही देख सकता। मेरे स्वामी धन्य है जो उनके पद-सेवक बने। हे देवी यदि आज रावण सचेत होता तो श्री राम के वाणो द्वारा आज ही वह मारा जाता। यह समाचार सुनकर सीता कह उठती है–

"सरमे, क्या दूँ तुम्हे? जियो लका की रानी।"

'वसुधा का राजत्व निछावर तुम पर साध्वी,

रक्खे मुझको मत्त इन्ही चरणो की माध्वी।"[१०२]

इस प्रकार सरमा सीता के कहने पर कि तुम्हे क्या दूँ वह कहती है मुझे अपने चरणो की सेवा करने का अवसर दे मै इसी मे खुश हूँ। सरमा का चरित्र त्रिजटा के भक्त रूप से पूर्णत मेल खाता है। निश्चित रूप से दोनो मे चरित्रगत भेद न होकर केवल नामगत भेद ही है। साकेत मे सरमा का चरित्र निर्माण पूरी तरह से मानवीय-

---

[१००] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८१
[१०१] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८१
[१०२] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८१

सवेदना से युक्त है और एक आदर्श भक्त के रूप मे चित्रित है जो राम और सीता के प्रति अत्याधिक अनुराग रखती है।

मन्दोदरी

साकेत मे मन्दोदरी का चरित्र चित्रण नही मिलता, इसका मूल कारण उर्मिला के चरित्र पर मन्दोदरी का चरित्र कोई विशेष प्रभाव नही डालता है।

तृतीय अध्याय

वाल्मीकि तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त के नारी पात्रों का तुलनात्मक अध्ययन

कौशल्या

कौशल्या दशरथ की प्रधान महिषी, राम की माता, धर्मशीला, क्षमाशीला एव आदर्श पुत्र–वत्सला के रूप मे राम कथा मे वर्णित है। वाल्मीकि तुलसी तथा मैथिलीशरण गुप्त ने इन्ही रूपो मे कौशल्या के चरित्र का वर्णन किया है। वाल्मीकि की कौशल्या मानवीय सवेदनाओ से युक्त स्त्री के यथार्थ रूप मे चित्रित है। तुलसी की कौशल्या ब्रह्म राम की मॉ है अत उनका चित्रण अलौकिक एव दिव्य रूप मे हुआ है। मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या आदर्श तथा मानवीयता के साथ चित्रित है।

राम कथा मे कौशल्या का विशेष परिचय राम के राज्य त्याग तथा वन–गमन प्रसग के अवसर पर ही होता है। यद्यपि वाल्मीकि और तुलसी ने कौशल्या का परिचय अश्वमेध यज्ञ एव पायस वितरण प्रसग मे दिया है। तुलसी और वाल्मीकि श्रीराम के जन्म पर कौशल्या की प्रसन्नता का वर्णन करते है, किन्तु मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या का परिचय राम वनगमन के समय ही होता है। राम के राज्याभिषेक से प्रसन्न कौशल्या को तीनो कवियो ने दिखाया है तीनो ने कौशल्या को पुत्र की मगल कामना तथा उसके लिए राजलक्ष्मी की कामना पूजन एव देवताओ की स्तुति करने का वर्णन किया है। किन्तु वाल्मीकि रामायण मे कौशल्या वैदिक मन्त्रो के आवाहन द्वारा यज्ञ वेदी पर यज्ञ–हवन–पूजन–पाठ बडे ही विधि–विधान से करती है जब श्रीराम मॉ के पास राज्याभिषेक का समाचार सुनाने जाते है तब कौशल्या–पूजा मे तल्लीन रहती है–

तत्र ता प्रवणा मेव मातर क्षोमवासिनीम्।
वाग्यता देवतागारे ददर्शयाचती श्रियम्।।[1]

तुलसी की कौशल्या भी पुत्र के राज्याभिषेक की मगलकामना करती है ब्राह्मणो को दान देती है और सभी का स्वागत करती है। मैथिलीशरण गुप्त ने भी कौशल्या को

---

[1] वाल्मीकि रामायण – अयोध्याकाण्ड ४/३०

पूजा–पाठ करते दिखाया है। सीता भी अपनी सास के साथ पूजा मे सहायता कर रही है।

सास चाहती थी जब जो देती थी उनको सब सो।
कभी आरती, धूप कभी सजाती थी उपकरण सभी।
आज अतुल उत्साह भरे थे दोनो के हृदय हरे।[2]

राम को जब कैकेयी तथा मन्थरा के षडयन्त्र से वनवास मिल जाता है और राम वन–गमन का समाचार सुनाने मॉ के पास जाते है तो वाल्मीकि की कौशल्या जो पूजा मे लगी हुई थी उन्हे सम्मान से बैठाती है और भोजन करने को कहती है। राम जब कहते है कि पिता ने मुझे वन का राज दिया है, अत मै वन को जा रहा हूँ– यह बात सुनकर माता कौशल्या वन मे फरसे से काटी हुई शाल वृक्ष की शाखा के समान पृथ्वी पर गिर पडी–

सा निकृत्तेव साल्स्य यष्टि परशुना बने।[3]

और होश मे आने पर वह शोक करने लगती है वह कहती है कि अच्छा होता कि मेरी कोख से राम पैदा ही न होता। मुझे केवल बन्ध्या होने का ही कष्ट रहता। अब मै अपनी सौतो का कष्ट अकेले कैसे सहन करूँगी।

एक एवहि वन्ध्या शोको भवति मानस
अप्रजा स्मीति सतापो न ह्मन्य पुत्र विद्यते।[4]

रामचरित मानस की कौशल्या राम को देखते ही प्रसन्न हो उठती है श्रीराम माता के चरणो मे हाथ जोडकर सिर नवाते है। माता कौशल्या आशीर्वाद देकर हृदय से लगा लेती है और बार बार श्रीराम के मुख को चूमते हुए उन्हे अपनी गोद मे बिठा लेती है और उनके सुन्दर स्तनो से प्रेम–रस (दूध) बहने लगता है।

---

[2] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४४
[3] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २०/२१
[4] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २०/३२

बार–बार मुख चुबति माता। नयन नेह जलु पुलकित गाता।।
गोद राखि पुनि हृदय लगाए। स्रवत प्रेम रस पयद सुहाए।।[५]

वे श्रीराम से कहती है कि तुम्हारे राज्याभिषेक की शुभ लगन कब है जब मेरे पुण्यो का फल मिलेगा। श्रीराम कहते है हे माता! पिता ने मुझे जगल का राज दिया है। जिसमे मेरा सब प्रकार से कल्याण होगा। कौशल्या के हृदय मे श्रीराम के विनीत वचन बाण के समान लगे और कसकने लगे। कौशल्या वैसे ही सहमकर सूख गयी जैसे बरसात का पानी पडने से जवासा सूख जाता है।

किन्तु तुलसी की कौशल्या अधीरता मे भी धैर्य को बनाये रखती है। वे श्रीराम से पूँछती है कि किस अपराध के कारण तुम्हे वनवास मिला और सूर्यवश रूपी वन को जलाने के लिए अग्नि कौन हो गया। सभी बात मत्री के पुत्र से जानकर कौशल्या धर्म के मार्ग को श्रेष्ठ मानकर, राम और भरत को एक समान मानकर सरल सुभाय महतारी कौशल्या ने कहा–

तात जाउँ बलि कीन्हेहुनीका । पितु आयसु सब धरमक टीका।[६]

यदि केवल पिता की आज्ञा होती तो मै कहती कि माता को बडी मानकर रूक जाओ किन्तु यदि माता और पिता दोनो ने वन जाने को कहा है तो फिर वन तुम्हारे लिए सैकडो अयोध्या के समान है–

जौ पितु मातु कहेउ बन जाना। तौ कानन सत अवध समाना।।[७]

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या राम के वन गमन का समाचार देने पर पहले उसे विनोद जन्य हॅसी समझती है। इस घडी पर वे राम के कथन पर विश्वास नही करती–

बोली वे हॅसकर– रह तू यह न हॅसी मे भी कह तू।

---

[५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५२/२
[६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५५/४
[७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५६/१

तेरा स्वत्व भरत लेगा? वन मे तुझे भेज देगा?

वही भरत जो भ्राता है, क्या तू मुझे डराता है?

लक्ष्मण। यह दादा तेरा—धैर्य- देखता है मेरा।[८]

किन्तु लक्ष्मण को रोता देख उनका मन सशकित हो उठता है तुलसी की कौशल्या के समान मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या—

कॉप उठी वे मृदु देही, धरती घूमी या वे ही।
बैठी फिर गिरकर मानो, जकड गई घिरकर मानो।[९]

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या का हृदय दूसरे ही रूप मे उमड पडता है। उसका राम तो सबका जीवन धन है। उसके प्रति यह किसका निर्दयपन है। कही बेटे से कोई दोष तो नही हुआ जिससे किसी ने रोष वश उसे सजा दी हो यदि ऐसा है तो वह क्षमा मॉग लेगी। लक्ष्मण से पूरा वृतान्त सुनकर वह इसे कैकेयी की नयी नीति मानती है। इस अर्थ मे वाल्मीकि और मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी मे समानता है क्योकि दोनो काव्यो मे सपत्नी—भाव का वर्णन है, किन्तु मैथिलीशरण गुप्त मे वह प्रचण्ड रूप नही है जैसा कि वाल्मीकि रामायण मे वर्णित है। तुलसी की कौशल्या तो ब्रह्म राम की माता है अत उसके आदर्श चरित्र मे क्षुद्र विचारो के लिए स्थान नहीं है।

कैकेयी की नीति का समर्थन करते हुए वह अन्त मे कहती है मेरी और कोई महत्वाकॉक्षा नही भरत के राज्य की नीव मजबूत हो परन्तु मेरे राम को वन न भेजा जाय, उसकी भीख मुझे मिले—

कैकेयी की नीति नई, मुझे राज्य का खेद नही।
मॅझली बहन राज्य लेवे, उसे भरत को दे देवे।।

x x x

उनके पैर पडूॅगी मैं कहकर यही अडूगी मै—
भरत राज्य की जड न हिले, मुझे राम की भीख मिले।।[१०]

---

[८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४५
[९] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४६
[१०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४७

वाल्मीकि की तरह माता कौशल्या को खिन्न देखकर लक्ष्मण के क्रोधित होने की योजना मैथिलीशरण गुप्त ने भी की है किन्तु माता कौशल्या शीघ्र ही पूर्णत निर्णयात्मक भूमिका मे पहुँच जाती है। वाल्मीकि की कौशल्या राम के साथ जाने के लिए हठपूर्वक आग्रह करती है। किन्तु राम के पतिव्रता धर्म–विषयक विचारो को सुनकर जिसका मूल है– पति ही पत्नी का सब कुछ है। यही सनातन धर्म का मूल है वे शान्त हो जाती है और अन्त मे राम को वन जाने की अनुमति दे देती है।

गच्छ पुत्र त्वमेकाग्रो भद्र तेऽस्तु सदा विभौ।।[११]

दु खी मन माता कौशल्या–राम को वन भेजते समय पुत्र की मगल कामना हेतु स्वस्त्यन सस्कार करती है। जिसका विस्तार से वर्णन वाल्मीकि ने किया है। तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या भी राम को वन भेजते समय अनेक प्रकार से देवी–देवताओ से पुत्र की मगल कामना करती है। वाल्मीकि, तुलसी और गुप्त जी तीनो ने सीता के प्रति कौशल्या के स्नेह को व्यक्त किया है। वाल्मीकि की कौशल्या सीता को पति धर्म की शिक्षा देती है और राम–सीता को वन जाने की अनुमति देती है किन्तु जैसे ही राम वन के लिए रथ से चलते है। कौशल्या का मन अधीर हो उठता है और एक लाचार मॉ उनके पीछे दौडने लगती है। वाल्मीकि का यह वर्णन मातृत्व सुलभ प्रेम का स्वाभाविक वर्णन है।

तुलसी की कौशल्या सीता को अपने पास रोकना चाहती है किन्तु सीता के एक निष्ठ पति प्रेम एव दृढ इच्छा के आगे वे हारकर सीता को राम के साथ जाने की अनुमति दे देती है। सीता उनके पॉव लगकर क्षमा मॉगते हुए कहती है कि सेवा समय दैव के कारण आपकी सेवा करने की हमारी इच्छा पूरी नही हो सकी अत हे माता मुझे क्षमा करना। कौशल्या राम को वन जाने की अनुमति देती है और फिर उनकी स्थिति–

---

[११] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २४/३३

बहुरिबच्छ कहि लालु कहि रघुपति रघुबर तात।
कबहि बोलाइ लगाइ हियँ हरषि निरखिहउँ गात।।[१२]

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या धैर्य तथा धर्म-धन की सरक्षिका है तथा ममत्व से पूरित है वह कहती है–

जाओ तब बेटा। वन ही, पाओ नित्य धर्म धन ही।
पूज्य पिता प्रणरक्षित हो, मॉका लक्ष्य सुरक्षित हो।
त्याग मात्र इसका धन है, पर मेरा मॉ का मन है।[१३]

तुलसी के समान ही मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या सीता के सबध मे बहुत कातर होती है तथा उसे वन गमन से रूकने का अनुरोध करती है किन्तु सीता के निवेदन एव राम के प्रति दृढ विश्वास को देखकर वे सीता को वन जाने से नही रोकती और राम के साथ सीता को भी वन को लिए विदा करती है। राम के वन चले जाने के बाद दशरथ से वाल्मीकि की कौशल्या उपालम्भ भरे वचन कहती है किन्तु उन्हे जैसे ही पति अपमान का बोध होता है वे राजा से क्षमा मॉगती है और मृत्यु तक राजा दशरथ के समीप रहती है और उन्हे हर प्रकार से सान्त्वना देती है। तुलसी की कौशल्या अधीर दशरथ को धैर्य बॅधाती है और कहती है कि–

धीरजु धरिअत त पाइअ पारू। नहि त बुडिहि सबु परिवारू।।
जौ जिय धरिअ विनय प्रिय मोरी। रामु लखन प्रिय मिलहि बहोरी।।[१४]

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या वाल्मीकि और तुलसी की कौशल्या से अधिक उदात्त है। विकल हृदय अपने व्याकुल पति को धैर्य बॅधाती है–

हे नाथ अधीर न हो अब यो।
तुमने निज सत्य धर्म पाला।।
सुत ने स्वापत्य धर्म पाला।[१५]

---

[१२] रामचरित मानस अयोध्या काण्ड दोहा ६८
[१३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५/५२
[१४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १५३/४
[१५] साकेत सर्ग ६ पृष्ठ ८५

दशरथ के कहने पर कि कौशल्या मै तुम्हारे साथ न्याय नहीं कर सका। मुझसे यदि तुम प्रसन्न हो तो तुम भी वरदान मॉग लो– तब कौशल्या जो वरदान मॉगती है वह कौशल्या के चरित्र को अत्यधिक गरिमा प्रदान करता है–

कैकेयी हो चाहे जैसी,
सुत वचिता न हो मुझ जैसी।।[१६]

राम के वनगमन एव दशरथ की मृत्यु के पश्चात् भरत का आगमन होता है। वाल्मीकि की कौशल्या भरत के प्रति पहले अमर्ष करती है किन्तु भरत के सरल हृदय को देखकर उसे गोद मे बैठा लेती है तथा उसे गले लगाती है और भरत को सान्त्वना प्रदान करती है।

तुलसी की कौशल्या भरत को देखते ही दौडकर उसे गले लगाती है उसे लगता है कि उसका राम ही लौटकर वापस आ गया है–

सरल सुभाय माय हिय लाए। अति हित मनहुँ राम फिर आए।[१७]

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या भरत को निष्पाप मानती है। तुझमे और राम मे किचित भी अतर नही है–

वत्स रे आ जा, जुडा यह अक भानुकुल के निष्कलक मयक?
मिल गया मेरा मुझे तू राम तू वही है भिन्न केवल नाम।।[१८]

तीनो महाकवियो ने माताओ के साथ भरत को वन मे राम को मनाने जाने का वर्णन किया है। भरत को पैदल देखकर माता कौशल्या अधीर हो उठती हैं। तुलसी ने चित्रकूट मे कौशल्या का दार्शनिक रूप प्रस्तुत किया है। वह कहती है कि अनहोनी बात का मुझे दुख नही है। दुख है तो भरत की दीन–अवस्था का। वाल्मीकि की

---

[१६] साकेत सर्ग ६ पृष्ठ ८६
[१७] राम चरित मानस अयोध्याकाण्ड १६५/१
[१८] साकेत सर्ग ७ पृष्ठ १०७

कौशल्या अत्यधिक विह्वल हो जाती है। मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या कैकेयी–राम के संवाद के बाद इतना ही कहती है–

राघव तेरे योग्य कथन है तेरा। दृढ बालहठी तू वही राम है मेरा।।
देखे हम तेरा अवधि मार्ग सब सहकर।[१९]

राम के विजयोपरान्त लौटने पर तीनो महाकवियो ने मातओ द्वारा श्रीराम आदि का स्वागत–आरती करवाया है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार कौशल्यादि माताएँ रथ पर चढकर स्वागत के लिए नदिगॉव जाती है। तुलसी ने कौशल्यादि मातु सब धाई। निरखि बच्छ जनु धेनु लवाई[२०] जैसा वर्णन किया है।

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या अपनी सपत्नियो के साथ अपूर्व आनन्द और उत्साह मे मग्न है तथा आरती आदि उतार कर राम–लक्ष्मण–सीता आदि का स्वागत करती है। वाणी नि सकोच उसे प्रकट कर देती है विवेक का अकुश उन पर नहीं रह जाता है। इसलिए उनका चरित्र स्वाभाविक जान पडता है।

तुलसी की कौशल्या मे यह स्वाभाविकता दिखायी नही देती वह ब्रह्म राम की माता है– इसलिए वह घोर कष्ट और आपत्ति मे भी अपना मानसिक सतुलन नही खोती है। उनका चरित्र आदर्श एव त्याग मय है इसी रूप मे तुलसी ने उनके अलौकिक चरित्र का निरूपण किया है।

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या मानवीय सवेदना से युक्त होकर आदर्श की भाव भूमि पर चित्रित की गयी है। एक तरफ उनमे मातृत्व की स्वाभाविक दुर्बलता है किन्तु दूसरी तरफ आदर्श त्याग भी है यही कारण है कि वह कैकेयी के प्रति भी पूर्ण प्रेम प्रदर्शित करती हुई कहती है– कैकेयी हो चाहे जैसी, सुत वचिता न हो मुझ जैसी[२१]

---

[१९] रामकथा के पात्र पृष्ठ ३७१

[२०] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड ६/५

[२१] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त साकेत सर्ग ६ पृष्ठ ८६

इस प्रकार तीनो महाकवियो द्वारा वर्णित कौशल्या का चरित्र भिन्नताओ के बावजूद समानता रखता है। कौशल्या एक आदर्श पत्नी आदर्श माता, आदर्श विमाता एव आदर्श सपत्नी के रूप मे राम कथा मे वर्णित है। नि सदेह कौशल्या का चरित्र तीनो महाकवियो द्वारा उच्च भाव भूमि पर रचा गया है और निश्चित रूप से यह चरित्र अनुकरणीय है।

कैकेयी

कैकेयी दशरथ की कनिष्ठ पत्नी, भरत की माता एव केकय नरेश की पुत्री के रूप मे राम कथा मे वर्णित है। राम वनवास का कारण बनी कैकेयी का चरित्र रामकथा मे अत्यधिक चर्चित है। कैकेयी के चरित्र मे एक साथ सद् और असद् भावो का उद्रेक दिखायी देता है। कैकेयी एक साथ हमारी घृणा एव सहानुभूति की पात्र है। कैकेयी के चरित्र का विशेष परिचय वनवास प्रसग मे मिलता है। तीनो महाकवियो ने राम के वनवास का कारण कैकेयी को ही माना है। तीनो महाकवियो ने कैकेयी के चरित्र के दोनो पक्षो का वर्णन किया है। कैकेयी का निर्मल पक्ष जहॉ राम के प्रति अगाध स्नेह से भरा हुआ है वही पर उसका कठोर एव दूषित पक्ष राम के वन गमन का कारण बनता है और अन्त मे तीनो महाकवियो ने भरत के द्वारा कैकेयी का परित्याग कराकर उसको आत्ममथन के लिए विवश कर दिया है और अन्त मे वह निर्मल ह्रदय वाली बनकर राम को मनाने जाती है और राम के विजयोपरान्त वापस आने पर तीनो कवियो ने कैकेयी द्वारा प्रसन्नता पूर्वक राम का स्वागत करवाया है।

वाल्मीकि की कैकेयी मूलत अत्यन्त स्वाभाविक रूप मे चित्रित हुई है अत उसके दोषो के बावजूद वह आकर्षक एव सहानुभूति के योग्य बन गई है। वाल्मीकि के पात्रो की योजना ही इस प्रकार हुई है कि मानव सुलभ सद्–असद् वृत्तियो का आरोहावरोह तथा चरम बिन्दु उनके माध्यम से मनोवैज्ञानिक ढग से चित्रित हुआ है। जिस कारण वाल्मीकि के प्रत्येक पात्र समाज के पात्रो के यथार्थ प्रतिनिधित्व करते दिखायी पडते है। तुलसी की कैकेयी भक्ति तथा मर्यादा की उदात्त पार्श्वभूमि पर

अनाकर्षक एव घृणा के योग्य बन गयी है यद्यपि तुलसी ने सुरमाया एव नियति को सामने लाकर कैकेयी के चरित्र को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयास किया है। मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी मानवीय सवेदना से पूर्ण है वह वाल्मीकि की कैकेयी के समान प्रखर है और वह सहानुभूति बटोरने मे भी सफल होती है। मैथिलीशरण गुप्त ने युग–युग की उपेक्षिता कैकेयी के चरित्र को पश्चाताप की आग मे जलाकर खरा–सोना बना दिया है। मैथिलीशरण गुप्त ने कैकेयी को मुखर बनाकर उससे जो पश्चाताप करवाया है वह उसके चरित्र को पूर्णत निष्कलक बना देता है।

खिन्नमना मथरा के द्वारा राम के राज्याभिषेक को सुनकर कैकेयी अत्यधिक प्रसन्न होती है। वाल्मीकि की कैकेयी मन्थरा को सुन्दर आभूषण उपहार स्वरूप देती है–

अतीव स तु सतुष्टा कैकेयी विस्मयान्विता।
दिव्यमाभरणं तस्मै कुब्जायै प्रददौ शुभम्।।[२२]

वह कहती है कि मन्थरे तूने बडा ही प्रिय समाचार सुनाया है तूने मेरे लिए जो यह प्रिय सवाद सुनाया, उसके लिए मै तेरा और कौन सा उपकार करूँ मै राम और भरत मे कोई भेद नही मानती। अत राम का अभिषेक राजा करने वाले हैं यह जानकर मुझे बडी खुशी हुई है–

रामे व भरते वाह विशेष नोपलक्षये।
तस्मात् तुष्टामि यद् राजा राम राज्येऽभिषेक्ष्यति।[२३]

तुलसी के अनुसार राम के राज्याभिषेक का समाचार पाकर कैकेयी अत्यन्त प्रसन्न होती है। सभी रानियॉ हर्षित है–

---

[२२] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७/३२

[२३] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७/३५

प्रथम जाइ जिन्ह बचन सुनाए। भूषन–वसन भूरि तिन्ह पाए।
प्रेम पुलकि तन मन अनुरागी। मगल कलस सजन सब लागी।।[२४]

तुलसी की कैकेयी के पास जब दु खीमन मन्थरा जाती है तो उसकी स्थिति को देखकर अमगल की शका होती है अत कैकेयी पूँछती है कि राजा दशरथ राम, भरत आदि सब कुशल से तो है? मन्थरा कहती है कि कुशल तो केवल कौशल्या का है जिसका बेटा राम युवराज बनने वाला है। तुम्हारा पुत्र विदेश मे है किन्तु तुम्हे कोई चिन्ता नही है।

कैकेयी मन्थरा को डॉटती है कि यदि फिर घर फोडेगी तो मै तेरी जीभ कटवा लूॅगी और फिर कहती है वह दिन सुन्दर शुभदायक होगा जिस दिन तेरा कहना सत्य होगा। बडा भाई स्वामी और छोटा सेवक होता, यही इस सूर्यवश की परम्परा है यदि राम का तिलक सचमुच कल ही है तो हे सखी जो वस्तु तेरे मन को अच्छी लगे वही मॉग ले।

जेठ स्वामि सेवक लघु भाई। यह दिनकरकुल रीति सुहाई।।
राम तिलक जौ सॉचेहु काली। देउॅ मागु मनभावत आली।।[२५]

वह कहती है कि राम तो स्वभाव से ही सभी माताओ को समान रूप से प्यार करते है मुझ पर तो उनका विशेष प्रेम है मैने उनकी परीक्षा करके देख ली है अरे मै तो यही मॉगना चाहॅूगी–

जौ विधि जनमुदेइ करि छोहू। होहॅू रामसिय पुत पतोहू।।
प्रान ते अधिक रामु प्रिय मोरे। तिन्ह कि तिलक छोभुकस तोरे।।[२६]

मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी राज्याभिषेक प्रसग पर अत्यधिक प्रसन्न है। वाल्मीकि की कैकेयी राज्याभिषेक का समाचार मन्थरा से पाती है। तुलसी ने समाचार

---

[२४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ८/१
[२५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४/२
[२६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १४/४

पहले ही राजा द्वारा सभी रानियो को दिलवा दिया इस प्रकार पति–पत्नी के बीच दुराव नही आने दिया है। उससे भी आगे बढकर मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी अभिषेक का निर्णय लेने मे राजा की सहयोगिनी रही है। कथातत्व को गुप्त जी ने जटिल नही होने दिया है तथा कैकेयी के चरित्र का उत्कर्ष किया है। गुप्त जी की कैकेयी अपनी दोनो सपत्नियो के साथ अत्यन्त प्रसन्न है–

त्रिवेणी तुल्य रानियॉ तीन,
बहाती सुख प्रवाह नवीन ।।[२७]

मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी उदास मन्थरा को देखकर कहती है–

अरे तू क्यो उदास है आज, वत्स जब कल होगा युवराज।[२८]

मन्थरा कैकेयी को समझाती है कि आपको कुछ सोच नही है। आप के भोलेपन का भी कोई अन्त नही है, तो कैकेयी उसे फटकारती हुई कहती है–

वचन क्यो कहती है तू वाम? नही क्या मेरा बेटा राम?
x x x
राम की मॉ क्या कल या आज, कहेगा मुझे न लोक–समाज?[२९]

मन्थरा कैकेयी से कहती है कि स्वामी का हित चाहने के कारण ही सच बात मुँह से निकल जाती है। आप सीधी है वैसे ही सभी को समझती है– इसी कारण कौशल्या षडयन्त्र करके अपने बेटे को युवराज बनवा रही है। कैकेयी कहती है मै परेशान हो जा रही हूँ सच सच खुलकर कह क्या बात है तब दासी ताल ठोक कहती है– भरत को घर से हटाकर राजा दशरथ राम को राज्य दे रहे है– "भरत से सुत पर भी सदेह, बुलाया तक न उन्हे जो गेह।"[३०]

---

[२७] साकेत सर्ग २ पृष्ठ १५

[२८] साकेत सर्ग २ पृष्ठ १५

[२९] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १६

[३०] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १७

कैकेयी तीनो महाकाव्यो मे राम के गुणो की प्रशसा करती है। वाल्मीकि एव मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी राम को भरत के समान ही मानती है। तुलसी की कैकेयी तो समान ही नही बल्कि राम को प्राणो से भी अधिक प्रिय मानती है। मन्थरा सपत्नी के राजमाता बनने की भयावह स्थिति कैकेयी के सम्मुख रखती है जिसके कारण भरत राज्याधिकार से सदा के लिए वचित हो जायेगे और कैकेयी तथा भरत को दासी दास की तरह रहना पडेगा। वास्तव मे कैकेयी इन बातो मे शीघ्रता से नही आती है। परन्तु मन्थरा की कपट बुद्धि जाल मे कैकेयी का सरल हृदय फॅस जाता है। मन्थरा को इस विजय की प्रतिक्रिया वाल्मीकि एव तुलसी की कैकेयी द्वारा तुरन्त ही मन्थरा के सम्मुख ही व्यक्त होती है क्योकि मन्थरा ने दशरथ द्वारा प्राप्त दोनो वरो का स्मरण दिलाया है। मन्थरा की मन्त्रणा के कारण कैकेयी की प्रकृति एव प्रवृत्ति सम्पूर्णत बदल जाती है। कैकेयी निश्चय कर लेती है वह भरत के अभिषेक तथा राम के वनवास की बात राजा से किसी भी कीमत पर मनवा लेगी।

मैथिलीशरण गुप्त ने सरल हृदय कैकेयी के हृदय परिवर्तन का कारण राम के राज्याभिषेक के अवसर पर भरत की अनुपस्थिति को बनाया है। भरत की अनुपस्थिति कैकेयी के लिए सन्देह का विषय बन गई है। मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी अधिक उद्विग्न इसलिए है कि उसके मन मे कभी किसी प्रकार का कपट, छल न होते हुए, स्वार्थ का विचार न होते हुए अपना–पराया का भाव न होते हुए, राजा की अत्यन्त प्रिय एव विश्वास पात्र होते हुए उसके साथ इस प्रकार का षडयन्त्र करने की आवश्यकता ही क्यो हुई? अवश्य ही कोई गभीर रहस्य है। इस सदेह के मनोवैज्ञानिक सूत्र को लेकर कैकेयी के सरल चरित्र विकास दिखाया गया है। वह भी दृढ संकल्प ले लेती है कुछ भी हो वह इसे सफल नही होने देगी।

वाल्मीकि की कैकेयी कहती है कि– मुझे न तो सुवर्ण से, न रत्नो से और न भॉति भॉति के भोजनो से कोई प्रयोजन है। मुझे तो भरत के राज्याभिषेक तथा राम के वनवास से ही प्रयोजन है।

वन तू राघवे प्राप्ते भरत। प्राप्स्यते क्षितिम।।

सुवर्णेन न मे ह्यर्थो न रत्नैर्न च भोजनै।

एष मे जीवतिस्यान्तो रामो यद्यभिषिच्यते।।[३१]

तुलसी की कैकेयी भी कहती है किन्तु वाल्मीकि की कैकेयी जैसी दृढता इसमे नही है–

सुनि मन्थरा बात फुरि तोरी। दाहिन ऑखि नित फरकइ मोरी।।

दिन प्रति देखउँ राति कुसपने। कहउँ न तोहि मोहबस अपने।।

x x x

नैहर जनम भरब वरू जाई। जियत न करब सवति सेवकाई।।

अरि बस दैउ जिआवत जाही। मरनु नीक तेहि जीवन चाही।।[३२]

मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी अडिग स्वर मे कहती है–

किन्तु चाहे जो कुछ हो जाय, सहूँगी कभी न अन्याय।

करूँगी मै इसका प्रतिकार पलट जावे चाहे ससार।।[३३]

क्रोधागार मे प्रविष्ट कैकेयी ने वह सब किया जो कामी, लोभसक्त राजा दशरथ से अपना कार्य सिद्ध करा सके। वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त जी ने इस प्रसग मे कैकेयी का स्वरूप कुटिल कठोर दृढ निश्चयी एव चतुर रूप मे थोडे बहुत अन्तर के साथ चित्रित किया है। काम विवश राजा की दुर्बलता का लाभ कैकेयी ने उठाया, साथ ही सत्य–प्रतिज्ञा, कुल–मर्यादा आदि का स्मरण दिलाकर राजा को कैकेयी दोनो वरदानो को पूरा करने के लिए वाध्य कर देती है। पहले वरदान से भरत को अभिषेक तथा दूसरा वरदान निष्कटक राज्य के लिए राम को चौदह वर्षो का वनवास।

---

[३१] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ६/५८, ५६

[३२] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड २०/३ तथा २१/१

[३३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ २०

अपनी इस कुटिलता के कारण वह पति सपत्नी, पुत्र लक्ष्मण, वशिष्ठ, सुमन्त्र तथा पुरवासियो की भर्त्सना का पात्र बनी। वाल्मीकि और मैथिलीशरण गुप्त की भर्त्सना मे यथार्थता, स्वाभाविकता है जबकि तुलसी की इस भर्त्सना मे राम भक्ति के कारण अस्वाभाविकता का सकेत मिलता है किन्तु महत्वाकॉक्षिणी प्रतिशोध सिद्ध कैकेयी सब कुछ सह गई। भरत के आने पर वह उससे सहर्ष मिलती है और प्रसन्नता से सब कुछ बताती है और पुत्र को राज–भोग के लिए कहती है।

वाल्मीकि की कैकेयी कहती है कि अब तू राजपद स्वीकार कर। तेरे लिए ही मैने यह सब कुछ किया है 'त्वत्कृते हि मया सर्वमिदमेवविध कृतम्।।[३४]

तुलसी की कैकेयी तो जब सारा परिवार एव नगर शोक मे डूबा हुआ है पुत्र के आने का समाचार सुनते ही अत्यन्त हर्ष से आरती उतारकर उसे महल मे ले जाती है भरत के पूछने पर कि तात कहॉ है, कहॉ पर राम लखन प्रिय भाई एव सीता भाभी है? कैकेयी लापरवाही से कहती है–

तात बात मै सरल सवॉरी मै मथरा सहायबिचारी।।
कहुक राज बिधि बीच बिगारेउ। भूपति सुरपति पुर पगु धारेउ।।[३५]

वह भरत से कहती है कि धर्मवान विजयी राजा के लिए चिता न करके राज्य को ग्रहण करो। मैथिलीशरण गुप्त की कैकेयी भी पति की मृत्यु पर विशेष शोकाकुल नही दिखायी देती किन्तु भरत के सामने गंभीर होकर स्वीकार करती है कि जो हुआ उसके कारण ही हुआ–

वत्स मेरा भी इसी में सार, जो किया, कर लूॅ उसे स्वीकार।
प्रभु गये सुर धाम, वन को राम ।
मॉग मैने ही लिया कुल केतु
राजसिंहासन तुम्हारे हेतु।।[३६]

---

[३४] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७२/५२
[३५] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६०/१
[३६] साकेत – सर्ग ७ पृष्ठ १०१

तीनो महाकवियो ने महत्वाकॉक्षिणी कैकेयी की भरत द्वारा भर्त्सना करवायी है—इस भर्त्सना के बाद कैकेयी का वैधव्य भयकर रूप धारण कर लेता है। वह इसके पश्चात दग्ध तापसी का जीवन बिताने लगती है। वह भरत के साथ राम को लौटाने के लिए चित्रकूट जाती है। वाल्मीकि रामायण मे कैकेयी को चित्रकूट सभा मे कोई स्थान विशेष नही मिलता। तुलसी के राम सबसे पहले कैकेयी से मिलते है। तुलसी की कैकेयी अन्दर ही अन्दर पश्चाताप का अनुभव करती है और अपने किये पर शर्मिन्दा होती है। तुलसी के राम अयोध्या विजय कर लौटने पर भी सबसे पहले कैकेयी से ही मिलते है और विशेष सम्मान देते है।

गरई ग्लानि कुटिल कैकेई। काहि कहै केहि दूषनु देई[३७] कहकर तुलसी ने कैकेयी के चरित्र को उठाने तथा उसे निष्कलकित बनाने का प्रयास किया है।

मैथिलीशरण गुप्त ने मौलिक उद्‌भावना करते हुए कैकेयी को वाणी प्रदान करते हुए मुखर बनाया है। पश्चाताप दग्धा कैकेयी के ह्रदय परिवर्तन को उसके विलाप मे व्यक्त करके गुप्त जी ने गॉधीवादी सिद्धान्त का ही निर्वाह करने का प्रयत्न किया है। साकेत के अष्टम सर्ग मे मैथिलीशरण गुप्त ने कैकेयी के चरित्र पर लगे कलक के काले धब्बो को उसके पश्चाताप के ऑसुओ से धो डाला है।

राम भरत को ह्रदय से लगाते हए कहते है कि—

उसके ह्रदय की थाह मिलेगी किसको?
जनकर जननी जान न पायी जिसको।।

कैकेयी भाव विह्वल होकर कहती है—

यह सच है तो अब लौट चलो तुम घर को।
चौके सब सुनकर अटल कैकेयी के स्वर को।[३८]

---

[३७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड चित्रकूट प्रसग २७२/१
[३८] साकेत सर्ग ८ पृष्ठ १३१

कैकेयी कहती है कि–

यदि उकसायी गयी भरत से होऊँ।
तो पति समान ही स्वय पुत्र भी खोऊँ[३६]

x x x

कैकेयी अपने द्वारा किये गये कार्य का आरोप किसी पर नही मढती है बल्कि अपने दोषो की स्वीकारोक्ति वह करती है यह स्वीकारोक्ति उसके चरित्र को निर्मल बना देती है–

क्या कर सकती थी मरी मन्थरा दासी।
मेरा मन रह सका न निज विश्वासी।[४०]

रामचन्द्र जी कैकेयी को निर्दोष घोषित करते है। उनके साथ पूरा समाज कैकेयी की निर्दोषता की घोषणा करता है–

पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई–
सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।।"[४१]

इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्त कैकेयी के चरित्र को निर्मल बना देते है। कैकेयी के पश्चाताप के ऑसुओ से उसका कलंक धुल उठता है।

कैकेयी का चरित्र राम कथा मे अत्यन्त महत्वपूर्ण बन पडा है। तीनो महाकवियो की कैकेयी का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि नारी प्रकृति की परस्पर विरोधी प्रवृत्तियो के चरमोत्कर्ष का कैकेयी के रूप मे चित्रण हुआ है। रामकथा के कैकेयी चरित्र मे मानसिक द्वन्द्व तथा मनोभावो के परस्पर सघात जितना सुन्दर एव मनौवैज्ञानिक चित्रण तीनो महाकाव्यो मे हुआ है उतना शायद ही अन्यत्र हुआ हो।"

---

[३९] साकेत सर्ग ८ पृष्ठ १३२
[४०] साकेत सर्ग ८ पृष्ठ १३२
[४१] साकेत सर्ग ८ पृष्ठ १३३

सुमित्रा

राम कथा मे सुमित्रा का चरित्र अत्यन्त सक्षिप्त रूप मे चित्रित है। परन्तु अपने चरित्र के सक्षेप मे भी वह स्वभाव की निश्छलता असीम त्याग भाव तथा धर्मनिष्ठता की गरिमा सजोए हुए है। वाल्मीकि ने इस सर्वथा आदर्शमयी सुमित्रा का चरित्र वास्तविक एव मानवीय रूप मे चित्रित किया है। तुलसी ने सुमित्रा को राम की प्रभुताई से प्रभावित चित्रित किया है जबकि गुप्त जी ने एतत्कालीन परिवेश मे राष्ट्रीय विचारो से भी उसे अभिभूत चित्रित किया है।

यह निर्विवाद है कि राम कथा का केवल वह एक ही ऐसी पात्र है जो सम्पूर्ण आदर्श के रूप मे चित्रित की गयी है कही भी किसी भी प्रकार की एक भी मानवीय दुर्वलता उसके चरित्र मे झॉकती नही दिखायी देती। कुछ विद्वानो को शुद्ध कला की दृष्टि से सुमित्रा के चरित्र का यह विशुद्ध एकॉगी आदर्शवाद सगत प्रतीत नही होता।

सुमित्रा के चरित्र का आदर्श उसके आदर्श पत्नीत्व रूप मे स्पष्ट होता है। कैकेयी के प्रति आसक्ति के कारण राजा दशरथ द्वारा उपेक्षित किये जाने के बावजूद कभी–भी किसी भी परिस्थिति मे राजा के द्वारा किये गये कार्यों के लिए उन्हे नही कोसा, भले ही उनका पुत्र वन मे क्यो न चला गया। पुत्र वियोग से पति की मृत्यु होने पर धर्म-परायण साध्वी स्त्री की जिस प्रकार की शोचनीय अवस्था होनी चाहिए सुमित्रा की भी हुई। परन्तु उसमे सयम एव गभीरता है।[४२] मैथिलीशरण गुप्त ने तो युगीन परिस्थितियो से प्रभावित दिखलाते हुए सुमित्रा को सती हो जाने के लिए उद्यत होते दिखाया है तथा अगस्त्य द्वारा ऐसा करने से उसे परावृत्त भी कराया है।[४३]

सुमित्रा का चरित्र सपत्नी रूप मे भी आदर्श है कैकेयी का तो सपत्नियो के प्रति द्वेष भाव प्रख्यात है। ज्येष्ठा रानी कौशल्या, कैकेयी के प्रति सदा असंतुष्ट सयत एवं

---

[४२] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ६५/२१–२२, रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १५२/२, साकेत सर्ग ६

[४३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ७

मौन रही परन्तु पुत्र वन गमन के समय कौशल्या के सयम का बॉध टूट जाता है। सहन करे तो कब तक? परन्तु सुमित्रा का हृदय ही सर्वदा समरूप रहा है। तुलसी की सुमित्रा असयमित होते होते तुरन्त सभल जाती है। उद्वेग मे वह कैकेयी को 'पापिनि दीन्ह कुदाउ कह तो देती है परन्तु धीरज धरेउ कुअवसर जानी सुमित्रा सभल जाती है।[४४]

पुत्र वियोग से शोक विह्वल कौशल्या को पुत्र विमुक्ता सुमित्रा ही सान्त्वना देती है। कौशल्या की वह सदा अनुगामिनी रही है।

सुमित्रा का मातारूप तो अत्यन्त उज्ज्वला एव आदर्श रहा है। लक्ष्मण जब वन जाने के लिए निकलते है उस समय सुमित्रा ने सहर्ष अनुमति देकर जो उपदेश दिया है वह अत्यन्त दिव्य है–

राम दशरथ विद्धि मा विद्धि जनकात्मजाम्।
अयोध्यामतवी विद्धि गच्छ तात् यथा सुखम्।।[४५]

बेटा तू सदा राम को अपना पिता मानकर सीता को मुझसी अपनी माता समझकर तथा वन को अयोध्या ही मानकर सुख से वन मे जाओ–

तुलसी की सुमित्रा भी कहती है कि–

तात तुम्हारि मातु वैदेही। पिता रामु सब भॉति सनेही।।
अवध वही जहॅ राम निवासू। तहइॅ दिवसु जहॅ भानु प्रकासू।।
जौ पै सीय रामु बन जाही। अवधु तुम्हार काजु कहु नही।।[४६]

मैथिलीशरण गुप्त की सुमित्रा के उपदेश मे ओजस्विता का भी समावेश है–

धैर्य सहित सब कुछ सहना, दोनो सिह सदृश रहना।

---

[४४] मानस अयोध्याकाण्ड ४४
[४५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ४०/६
[४६] रामचरितमानस अयोध्याकाण्ड ७३/१, २

लक्ष्मण। तू बड भागी है। जो अग्रज अनुरागी है।।

मन ये हो, तन तू वन मे, धन ये हो जन तूँ बन मे।।[४७]

आदर्श माता के रूप मे लक्ष्मण के प्रति सुमित्रा के जो भाव है उनसे कही अधिक उच्चभाव विमाता के रूप मे राम के प्रति है। वाल्मीकि रामायण मे वह राम के प्रति आत्मीयता से विस्तृत श्रेष्ठत्व के भाव व्यक्त करती है। तुलसी की सुमित्रा का भक्त रूप स्वाभाविक है। तुलसी की सुमित्रा तो लक्ष्मण को वन से लौटने पर केवल इसी कारण लक्ष्मण से भेट करती है कि उसने राम–चरणो की भक्ति प्राप्त कर ली है।

भेटउ तनय सुमित्रा राम चरन रति जानि।।[४८]

इस प्रकार सुमित्रा के आदर्श चरित्र को तीनो कवियो ने अपनी रामकथा मे चित्रित किया है–

ताटका

विश्वामित्र द्वारा नियोजित यज्ञादि की रक्षा करते हुए राम लक्ष्मण की शक्ति परीक्षा बहुत बार हुई है। विशेषकर ताटका, मारीच एव सुबाहु के साथ सघर्ष राम-लक्ष्मण की असीम शक्ति का परिचायक है।

ताटका सुकेतु नामक यज्ञ प्रमुख की कन्या एव सुमन्द की पत्नी है[४९]। अगस्त्य के शाप के कारण यह और इसका पुत्र मारीच राक्षस एव राक्षसी बने।[५०] इस शाप से ताटका मे अमर्ष की वृद्धि हुई तथा वह प्रतिशोध की भावना से भयकर रूप धारण करके ऋषि मुनियो को आतकित करने लगी।[५१] तब विश्वामित्र ने राम से इसका बध करने के लिए कहा।[५२]

---

[४७] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग – ४

[४८] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा ६क

[४९] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २४/२५–२६

[५०] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २५/५–१२

[५१] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २५/१४

[५२] वाल्मीकि रामायण बाकाण्ड २४/२६–३०

वाल्मीकि के समान ही तुलसी की ताडका स्वभावत अत्यन्त क्रोधी एव ऋषियो का विरोध करने वाली प्रचण्ड नारी है। परन्तु वाल्मीकि मे ताटका की उत्पत्ति, विवाह, शाप एव बध का सागोपाग वर्णन मिलता है। तुलसी का ताडका वध वृतान्त अत्यन्त सक्षिप्त है।[५३] वाल्मीकि के अनुसार वह परमपद को प्राप्त करती है।[५४]

मैथिलीशरण गुप्त ने ताडका के बध के प्रसग मे स्त्री बध के औचित्य की चर्चा करते हुए आततायिनी, होने के कारण उसे वध योग्य बतलाया है तथा राम से उसका वध करवाकर महान राष्ट्रीय कर्तव्य करवाया है।[५५]

अहल्या

रामकथा मे राम के पतित पावन रूप को अहल्या के प्रसग ने चिरन्तन बना दिया है। वाल्मीकि ने गौतम पत्नी अहल्या के छद्मवेषी इन्द्र के साथ रतिगमन करने पर पति द्वारा अभिशप्त अहल्या को दुर्निरीक्ष्या चित्रित किया है।[५६] मर्यादावादी तुलसी ने इस घटना का विवरण नही दिया है। विश्वामित्र को अहल्या की स्थिति की कल्पना थी। अत राम को इस उपेक्षिता, प्रवाह पतिता, दुर्वृत्ता, दुष्टाचारिणी को पूर्ववत स्थान दिलाने का आदेश विश्वामित्र ने दिया।[५७] तद्नुसार राम ने वह कार्य किया तथा अहल्या एव गौतम को पुन मिलाया। तुलसी के अनुसार अहल्या शाप से पत्थर का रूप धारण करके राम-चरणो की धूलि चाहती है।[५८] वह राम चरणो का स्पर्श पाते ही तपोमूर्ति के रूप मे प्रकट होती है।[५९] वह राम की परमभक्ता है। राम की कृपा से वर पाती है वह पतिलोक मे जाकर सुखपूर्वक रहने लगती है।

---

[५३] रामचरित मानस बालकाण्ड २०६/३
[५४] रामचरित मानस बालकाण्ड २०६/३
[५५] साकेत सर्ग १० पृष्ठ २०१
[५६] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/१७–१६, २६–३२
[५७] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/३२, ३३
[५८] रामचरित मानस बालकाण्ड २१० दोहा
[५९] रामचरित मानस बालकाण्ड २१० छन्द १

वाल्मीकि ने अहल्या के पतन एव उद्धार की चर्चा की है। तुलसी ने केवल उद्धार की ही चर्चा की है और मैथिली शरण गुप्त ने न पतन न उद्धार की चर्चा की अपितु केवल प्रसग एव नाम का उल्लेख मात्र किया है।[६०]

सीता

जिस प्रकार मर्यादा पुरुषोत्तम राम भारतीय जगत के लिए रामकथा के सर्वश्रेष्ठ पुरुष है, उसी प्रकार राम की पत्नी सीता आदर्श स्त्री है। राम की पत्नी सीता के गुणो का, शील तथा सुन्दरता का निरूपण राम चरित्र मे बहुत कुछ अपने आप हो जाता है। उसी प्रकार सीता चरित्र मे राम के गुणो का पुनरुच्चार हो जाना स्वाभाविक है। दोनो पति पत्नी का चरित्र इतना पोषक है कि एक के बिना दूसरे का चरित्र अपूर्ण ही रहेगा।

इस प्रकार का आदर्श चरित्र तीनो महाकवियो ने बडी तन्मयता से वर्णित किया है। तीनो कवियो की सीता मे अधिक अन्तर नही दिखलाई पडता है। तीनो महाकवियो मे सीता के सामाजिक आदर्श युग प्रवृत्तियो की भिन्नता के अनुसार चित्रित हुए है अत तीनो महाकाव्यो की सीता के माध्यम से समकालीन युग चेतना से प्रभावित तीनो महाकवियो की आदर्श–भिन्नता का अवलोकन अधिक स्पष्ट रूप से तथा सरलता से किया जा सकता है। तुलसी की सीता का आदर्श तथा पातिव्रत धर्म भारतीय इतिहास के मध्ययुग के प्रतिबन्धो द्वारा अनुबधित है, जबकि वाल्मीकि की पतिव्रता सीता मे वैदिक समाज की नारी का स्वाभिमान है, जो अपना पृथक आकर्षण रखता है। इसी प्रकार मैथिलीशरण गुप्त की सीता गॉधी युगीन समता, अहिसा, स्वावलम्बन, नवागत का स्वागत आदि युगीन चेतना का आदर्श प्रतीक है। वाल्मीकि और मैथिलीशरण गुप्त ने सीता के चरित्र को मानवीय धरातल पर उतारा है यद्यपि कही–कही अलौकिकता का

---

[६०] साकेत सर्ग १० पृष्ठ २०३

पुट भी दिखायी पड जाता है। तुलसी सीता का चित्रण विष्णु की माया एव शक्ति की देवी के रूप मे अलौकिकता के सदर्भ मे करते है।

वाल्मीकि और तुलसी ने सीता की उत्पत्ति पृथ्वी से बतलायी है। मैथिलीशरण गुप्त सीता की जन्म कथा मे गये ही नही। सीता जनक–पालिता, विदेह, कन्या, राम की पत्नी और आदर्श माता के रूप मे हमारे सामने आती है तीनो रूपो मे सीता के सौन्दर्य तथा शील शक्ति का चित्रण अद्भुत है।

सीता के सौन्दर्य कथन मे तीनो कवियो मे अन्तर आना इसलिए स्वाभाविक है क्योकि वाल्मीकि के लिए सीता पुत्रीवत है तथा तुलसी और गुप्त जी के लिए मातृवत। पिता को अपनी पुत्री के गुण–दोष दोनो की सम्यक् आलोचना करने का अधिकार है। परन्तु सेवक भक्त अपनी स्वामिनी एव आराध्या के प्रति श्रद्धानत होता है। वाल्मीकि ने सीता के सौन्दर्य का जहॉ यथार्थ चित्रण किया है वही तुलसी ने उसे परिष्कृत कर आदर्श एव मर्यादित ही चित्रित किया है। मैथिलीशरण गुप्त सौन्दर्य वर्णन मे कुछ ज्यादा ही मुखर हो गये है और सीता के नख–सिख वर्णन मे रम से गये है।

वाल्मीकि के अनुसार सीता का सौन्दर्य अनुपम है– सीता रूप मे देवॉगनाओ के समान थी और मूर्तिमती साक्षात् लक्ष्मी सी प्रतीत होती थी–

देवताभि समा रुपे सीता श्रीरिव रूपिणी।[६१]

तुलसी सीता के सौन्दर्य का वर्णन करते हुए कहते है कि सीता के सौन्दर्य की तुलना त्रैलोक्य की किसी भी स्त्री से नही की जा सकती। सीता के रूप मे मानो ब्रह्मा ने अपनी सारी निपुणता को मूर्तिमान किया है उसकी सुन्दरता को भी सुन्दर बनाने वाली है–

---

[६१] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७७/२८

जनु बिरचि सब निज निपुनाई। विरचि विस्व कहँ प्रगटि देखाई।।
सुन्दरता कहुँ सुदर करई। छवि गृह दीपसिखा जनु बरई।।[६२]

x x x

जौ पट तरिअ तीय सम सीया। जग अस जुबति कहाँ कमनीया।।[६३]

मैथिलीशरण गुप्त की सीता का सौन्दर्य भी विलक्षण है कवि ने जनक सुता के अलकार वस्त्र, अग–प्रत्यग का बडा ही सजीव चित्र खीचा है–

गोट जडाऊ घूँघट की विजली जलदोपम पट की।
परिधि बनी थी विधु-मुख की, सीमा थी सुषमा सुख की।
भाव सुरभि का सदन अहा! अमल कमल सा वदन अहा।।
अधर छबीले छदन अहा! कुन्द कली से रदन अहा!
सॉप खिलाती थी अलके, मधुप पालती थी पलके,
गोल–गोल गोरी बाहे, दो ऑखे की दो राहे।
थी कमला सी कल्याणी, वाणी मे वीणा पाणी।।[६४]

सीता की सुकुमारता का वर्णन तीनो कवियो ने किया है वाल्मीकि रामायण मे दशरथ कहते है कि सीता सुकुमारी कलिका है और सदा सुखो मे पली है अत वह वन जाने के योग्य नही है। मेरे गुरू सत्य ही कहते है–

सुकुमारी च बाला च सतत च सुखोचिता।
नेय वनस्य योग्येति सत्यमाह गुरूर्मम्।।[६५]

तुलसी ने सीता की सुकुमारता का अनेको प्रसगो मे वर्णन किया है परन्तु अपनी मौलिक उद्भावना से उद्भूत प्रसग मे वन गमन के समय कौशल्या से अपनी पुत्रवधू की सुकुमारता का जो वर्णन करवाया है वह अत्यन्त प्रभावशाली है–

---

[६२] रामचरित मानस बालकाण्ड २३०/३, ४
[६३] रामचरित मानस बालकाण्ड २४७/२
[६४] साकेत महाकाव्य – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४३–४४
[६५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ३८/४

तात सुनहु सिय अति सुकुमारी। सास ससुर परिजनहि पियारी।।[६६]

नयन पुतरि करि प्रीति बढाई। राखेउँ प्रान जानकिहि लाई।।

पलग पीठ तजि गोद हिडोरा। सिय न दीन्ह पगु अवनि कठोरा।।

जिअन मूरि जिमि जोगवत रहऊँ। दीप-बाति नहि तारन कहऊँ।।

सोइ सिय चलन चहत बन साथा। आयसु काह होई रघुनाथा।।[६७]

चद किरन रस रसिक चकोरी। रबि रुख नयन सकइ किमि जोरी।।

मैथिलीशरण गुप्त की कौशल्या सीता के सुकुमार शरीर पर वल्कल वस्त्र नही देख सकती–

हाथ हटा ये वल्कल है,

मृदुतम तेरे करतल है।

यदि ये छू भी जायेगे।

तो छाले पड जायेगे,

x x x

वन की कॉटों भरी गली,

तू है मानस कुसुम कली।[६८]

सीता के उज्ज्वल चरित्र का मूलाधार उसका अटल पतिव्रत धर्म है सीता का प्रखर पातिव्रत धर्म अनेक कसौटियो पर खरा उतरा है। वाल्मीकि ने वन गमन, वनवास, अपहरण अशोक–वन निवास, अग्निपरीक्षा पुन वनवास आदि सभी प्रसगो मे सीता के पातिव्रत धर्म को कसौटी पर खरा सिद्ध किया है। सीता के जीवन का एक मात्र आदर्श उसका पति धर्म रहा है–

इह प्रेत्य च नारीणा पति रेको गति सदा[६९]

---

[६६] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५८/४

[६७] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५६/१, ३, ४

[६८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५५

[६९] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/६

सीता एक आदर्श पत्नी की भॉति सदैव राम के साथ उनके दु ख सुख मे रही है। जब राम को कैकेयी के कारण वनवास जाना पडता है तब सीता भी वन जाने के लिए श्रीराम से हठपूर्वक निवेदन करती है और पत्नी धर्म को बताकर श्रीराम से वन जाने की अनुमति प्राप्त करती है। वे सहर्ष वन जाने के लिए तैयार हो जाती है। उनका तर्क बडा ही प्रभावी है– स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी होने से अपने पति के भाग्य का भोग करती है अत उसे वन जाने का आदेश उस अधिकार से स्वत प्राप्त हो जाता है।

भर्तु भाग्य तु नार्येका का प्रापोति पुरुषर्षभ।
अतश्चैवाह्यादिष्टा बने वस्तव्यमित्यपि।[७०]

तुलसी की सीता भी इस पतिव्रत धर्म पालन मे आनन्द का अनुभव करती है। भक्त तुलसी की धार्मिक दृष्टि के अनुसार सीता के लिए राम का सहवास ही, चाहे वह वनवास क्यो न हो सब कुछ है। राम वन गमन का समाचार सुनते ही सीता दृढ निश्चय कर लेती है कि राम का अनुसरण करेगी अथवा प्राण दे देंगी–

चलन चहत बन जीवन नाथू। केहि सुकृती सन होइहि साथू।।
की तनु प्रान कि केवल प्राना। विधि करतबु कहु जाइ न जाता।।[७१]

माता कौशल्या तथा राम वन के तमाम कष्टो का वर्णन करते है। उन्हे हर प्रकार से समझाते है किन्तु सीता अपने निर्णय पर अटल है। वह बडी विनम्रता से सास और पति से कहती है कि पति वियोग के समान दुनिया मे कोई दु ख नही है–

मै पुनि समुझि दीखि मन माही। पिय वियोग सम दु ख जग नाही।।[७२]

एक सती साध्वी पतिव्रता स्त्री के लिए माता, पिता, भाई–बहन, प्रिय–परिवार, सुहृद–समुदाय तथा सुशील पुत्र के रूप मे जितने नेह-नाते है सबके सब पति के बिना

---

[७०] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/५
[७१] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५८/२
[७२] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६४/४

ग्रीष्म कालीन प्रचण्ड सूर्य से भी अधिक दाहक बन जाते है। पति ही पत्नी के लिए सर्वस्व है–

प्रान नाथ तुम्ह बिनु जग माही। मो कहु सुखद कतहुँ कछु नाही।।
जिय बिनुदेह नदी बिनु बारी। तैसिअ नाथ पुरूष बिनुनारी।।
नाथ सकल सुख साथ तुम्हारे। सरद विमल बिधु बदनु निहारे।।[७३]

मैथिलीशरण गुप्त पतिव्रत धर्म–पालने वाली सीता के इन सर्वाधिक सुखद क्षणो के वर्णन मे अधिक रमे है जो सीता राज्याभिषेक के समाचार से अत्यधिक प्रसन्न होकर तैयारियो मे मग्न है। वह सीता वन–गमन का समाचार सुनकर हतप्रभ या विचलित नही होती, बल्कि प्रफुल्लित मन से सोचती है–

स्वर्ग बनेगा अब बन मे, धर्मधारिणी हूँगी मै,
बन विहारिणी हूँ मै।[७४]

सीता समझाने पर भी वन जाने के निर्णय पर दृढ है वह राम से कहती है कि–

नाथ न कुछ होगा इससे, क्या कहते हो तुम किससे?
समझो मुझको भिन्न न हा! करो ऐक्य उच्छिन्न न हा!
x x x
जो गौरव लेकर स्वामी! होते हो कानन गामी,
उसमे अर्द्धभाग मेरा, करो न आज त्याग मेरा।।[७५]

मैथिलीशरण गुप्त ने साकेत के चतुर्थ सर्ग मे सीता को सेवा और सवेदना के भाव से उत्प्रेरित दिखाया है। वह राम के साथ वन गमन के लिए सहधर्मिणी होने के कारण ही समुद्यत हुई, राजकुमारी की कोमलता उनके इस निश्चय मे बाधक न हो सकी। वह सौन्दर्यशालिनी, उत्कृष्ट गुणयुक्त और आदर्श पत्नी के रूप मे चित्रित हुई

---

[७३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ६५/३, ४
[७४] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५०
[७५] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५६–५७

है। सीता ने अपनी ओर से पत्नी का धर्म पूर्णत निवाहा है और जगल को मगल बनाया है।

मैथिलीशरण गुप्त की अपहरण से पूर्व की सीता का शील स्वभाव वाल्मीकि और तुलसी के समान ही है। तीनो महाकवियो ने गगा का पूजन सीता द्वारा करवाया है। तीनो कवियो की सीता जगल मे पति राम एव लक्ष्मण के साथ आनन्द का अनुभव करती है। मैथिलीशरण गुप्त की सीता पातिव्रत का निर्वाह करती हुई स्वावलम्बन, वनचारियो की सेवा तथा उन्हे सभ्य बनाने का आदर्श प्रस्तुत करती है। पर्णकुटी के वृक्षो को सीचती हुई सीता अपने आवास को राजभवन के समान मानती है। यह गुप्त जी की मौलिक उद्भावना है–

मेरी कुटिया मे राज भवन मन भाया।
औरो के हाथ यहॉ नही पलती हूॅ
अपने पैरो पर खडी आप चलती हूॅ।[७६]
x x x
कहता है कौन कि भाग्य ठगा है मेरा?
वह सुना हुआ भय दूर भगा है मेरा।
कुछ करने मे अब हाथ लगा है मेरा।
वन मे ही तो गार्हस्थ्य जगा है मेरा।।[७७]

सीता अपहरण का प्रसग तीनो महाकवियो ने भिन्न–भिन्न रूप से चित्रित किया है। सीता–अपहरण स्त्री स्वभाव-सुलभ कमजोरी का परिणाम है। सीता के प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण ही सीता की मॉग पूरी करने के लिए राम–माया मृग के पीछे चले गये। मायावी मृग के षडयन्त्र के कारण सीता के कठोर वचन कहने पर लक्ष्मण भी राम की सहायता के लिये चले जाते है और सूने आश्रम से सीता का रावण द्वारा अपहरण किया जाता है। तुलसी की सीता वास्तविक न होकर माया की सीता होती है जिसका अपहरण रावण करता है। ऐसा तुलसी की भक्ति भावना के कारण ही हुआ है।

---

[७६] साकेत – मैथिलीशरण सर्ग ८ पृष्ठ ११७
[७७] साकेत – मैथिलीशरण सर्ग ८ पृष्ठ ११८

वाल्मीकि की सीता लक्ष्मण को कठोर वचन कहती है किन्तु मानस की सीता भी मर्मवचन बोलती है। किन्तु राम के शील से अनुरजित इस सीता मे वैसा असयम अथवा उग्रता प्रकट नही होती जैसा वाल्मीकि रामायण की सीता मे। मैथिलीशरण गुप्त की सीता भी लक्ष्मण से कहती है–

किन्तु तुम्हारे ऐसे निर्मम प्राणकहॉ से मै लाऊॅ?
और कहॉ तुम सा जड-निर्दय यह पाषाण ह्रदय पाऊॅ?[७८]

सीता के पातिव्रत की सच्ची कसौटी राम के वियोग काल मे ही होती है। अशोक वाटिका मे सीता का मलीन एव कारूणिक चित्र तीनो महाकवियो ने खीचा है। पति के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास के भरोसे सीता ने भयानक क्षणो मे सघर्ष किया है। तीनो महाकवियो ने राम के प्रति सीता के एकनिष्ठ प्रेम को दर्शाया है।

वाल्मीकि की सीता अपने धैर्य और विश्वास के साथ रावण को उसके अपहरण जैसे नीच कर्म के लिए फटकारती है– गीदड जिस प्रकार सिहनी के अपहरण की इच्छा करे उसी प्रकार की तू इच्छा कर रहा है। परन्तु सूर्यप्रभा को जैसे कोई स्पर्श नही कर सकता, वैसे तू भी मुझे स्पर्श नही कर सकता। मेरा अपहरण ही तेरा नाश करेगा।

राक्षसियो से घिरी सीता अडिग स्वर मे कहती है तुम सब लोग भले ही मुझे खा जाओ किन्तु मै तुम्हारी बात नही मान सकती –

काम खादत मा सर्वा न करिष्यामि वोवच ।।[७९]

रामचरित मानस की सीता अपहरण के पश्चात् अत्यन्त मलीन एव दुखी हो जाती है किन्तु राम के प्रति अटूट विश्वास उन्हे धैर्य प्रदान करता रहता है तभी तो वह रावण के समक्ष बिना भय के स्थिर भाव से कहती है।

---

[७८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११
[७९] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २४/८

सुनु दसमुख खद्योत प्रकासा। कबहुँ कि नलिनी करइ विकासा।।

अस मन समुझु कहित जानकी। खल सुधि नहि रघुवीर बानकी।।

सठ सूने हरि आनेहि मोही। अधम निलज्ज लाज नहि तोही।।[८०]

मैथिलीशरण गुप्त की सीता भी रावण को कडी फटकार लगाती है–

जीत न सका एक अबला का मन तू विश्वजयी कैसा?
जिन्हे तुच्छ कहता है, उनसे भागा क्यो तस्कर ऐसा?
मै वह सीता हूँ, सुन रावण जिसका खुला स्वयम्वर था,
वर लाया क्यो मुझे न पामर यदि यथार्थ ही तू नर था।
वर न सका कापुरुष, जिसे तू उसे व्यर्थ ही हर लाया।
अरे अभागे, इस ज्वाला को क्यो तू अपने घर लाया?[८१]

सीता और हनुमान का मिलन अशोक वाटिका मे तीनो कवियो ने कराया है। वाल्मीकि रामायण मे हनुमान को साथ आने से सीता मना करती है और उसका कारण स्वेच्छा से किसी पर पुरुष का स्पर्श न करना सीता बताती है। रामचरित मानस की सीता हनुमान के साथ न चलने का कारण 'प्रभु आयसु नहि राम दुहाई' है जबकि मैथिलीशरण गुप्त की सीता का हनुमान के साथ न चलने का कारण कुछ और ही है–

मैने कहा अम्ब कहिए तो अभी आपको ले जाउँ?
बोली वे क्या चोरी–चोरी मै अपने प्रभु को पाऊँ।[८२]

राम की विजय के उपरान्त भी सीता के चरित्र पर राम शका करते है। इस प्रसग मे वाल्मीकि रामायण के राम कुछ ज्यादा ही कठोर है। वे सीता से कहते है कि– जब रावण तुझे गोद मे उठाकर ले गया और तुझ पर दूषित दृष्टि डाल चुका है, ऐसी दशा मे अपनी कुल की मर्यादा का ध्यान रखता हुआ मै दुबारा तुम्हे पत्नी रूप मे कैसे अपना सकता हूँ?

---

[८०] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ६/४, ५
[८१] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४६
[८२] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ११ पृष्ठ २४७

रावणाक परिक्लिष्टा दृष्टा दुष्टेन चक्षुषा।
कथ त्वा पुनरादघा कुल व्यपदिश-महत्।।[८३]

मैने जिस उद्देश्य से तुम्हे जीता वह सिद्ध हो गया अब तुम जहॉ जाना चाहो जा सकती हो। राम के कहने के बाद सीता अग्नि परीक्षा देकर श्रीराम का साथ पुन प्राप्त करती है।

तुलसी की सीता के प्रति राम कुछ दुर्वाद कहते है ओर लक्ष्मण द्वारा बनायी गयी अग्नि मे प्रवेश कर सीता को अग्नि देवता श्रीराम को वापस करते हुए सीता की शुद्धता का साक्षी बनते है। मैथिलीशरण गुप्त की सीता पर राम कोई आक्षेप नही लगाते है फिर भी सरमा के द्वारा उसके चरित्र की पवित्रता की बात प्रसग विशेष मे कहलवा देते है।

अयोध्या वापस आकर दोनो महाकवियो की सीता राम के साथ सिहासनरूढ होकर सुखमय जीवन व्यतीत करने लगती है लेकिन वाल्मीकि की सीता का दु ख अभी समाप्त नही होता। वाल्मीकि सीता के परित्याग की कथा का भी वर्णन करते है। तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त इस कथा के प्रति उदासीन है। शायद तुलसी जैसे मर्यादावादी कवि की दृष्टि मे यह प्रसग उचित नही था और गुप्त जी ने सभवत इसे आधुनिक युग के ढाचे के उपयुक्त नही समझा।

वाल्मीकि की सीता का राम द्वारा त्याग सीता के चरित्र को अत्यधिक उदात्तता प्रदान करता है। गर्भावस्था मे सीता को छोडने लक्ष्मण जाते है। उस समय सीता लक्ष्मण से कहती है कि श्रीराम का इसमे दोष नही। वे मुझे निर्दोष मानते है किन्तु उन्होने यह निर्णय राजधर्म के नाते किया है। अत राजाराम से कहना वे प्रजा को उसी प्रकार सम्मान देते रहे जैसे वे भाईयो को देते है। मै श्रीराम के यश और कीर्ति मे लगे अपयश को धोने का प्रयास करुँगी जिससे उनकी निर्मल कीर्ति मे बढोत्तरी हो।

---

[८३] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड ११५/२०

यथा भ्रातृषु वर्तथास्तथा पौरेषु नित्यदा।।
परमो ह्येष धर्मस्ते तस्मात् कीर्तिरनुन्तमा।।[८४]

सीता की शुद्धता का साक्ष्य स्वय वाल्मीकि देते है और श्रीराम लव और कुश को अपना पुत्र स्वीकार करते है। सीता को श्रीराम निष्पाप मानते है इसकी वे घोषणा करते है किन्तु सीता अपने पति श्रीराम के प्रति अगाध प्रेम रखते हुए पृथ्वी माता से याचना करती है कि राम के सिवा दूसरे किसी भी पुरुष का मैने चिन्तन मात्र भी यदि न किया हो तो भगवती वसुन्धरा मुझे अपनी गोद मे स्थान दो–

यथाह राघवादन्य मनस्यापि न चिन्तये।
तथा मे माधवी देवी विवर दातुमर्हति।।[८५]

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण मे सीता धरती माँ की गोद मे समा जाती है। अपने सतीत्व का प्रमाण पूरे राज दरवार के सामने देती है। सभी लोग उनकी जय–जयकार करने लगते है। वाल्मीकि द्वारा वर्णित यह प्रसग सीता के त्याग एव पतिव्रत धर्म पालन की अनूठी मिसाल है जो सीता के चरित्र को आदरणीय बना देता है।

इस प्रकार तीनो कवियो ने सीता के चरित्र को आदर्श रूप प्रदान किया है। सीता के चरित्र मे कुछ–भिन्नताओ के होते हुए भी तीनो कवियो मे सीता के चरित्र को लेकर समानता अधिक है। तीनो ने सीता के चरित्र को महान एव आदरणीय के साथ अनुकरणीय बनाया है। सीता का चरित्र भारतीयो के लिए आदर्श है। वाल्मीकि की सीता मानवीय होते हुए भी अलौकिकता उनके उत्तरार्द्ध चरित्र मे उभर कर आ जाता है। तुलसी सीता को ब्रह्म की शक्ति के रूप मे मानस मे प्रतिष्ठापित करते है। मैथिलीशरण सीता को आदर्श भारतीय नारी के रूप मे चित्रित करते है।

---

[८४] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ४८/१५
[८५] वाल्मीकि रामायण उत्तरकाण्ड ६७/१४

उर्मिला

वाल्मीकि ने उर्मिला के शील स्वभाव का वर्णन सक्षिप्त एव साकेतिक किया है। तुलसी ने भी इसका सक्षेप मे ही उल्लेख किया है। सकल सुन्दरी शिरोमनि उर्मिला शील स्वभाव मे सब सुन्दरियो मे श्रेष्ठ है। इस प्रकार की कल्पना तुलसी की आध्यात्मिक दृष्टिकोण के आधार पर की जा सकती है। यहॉ तुलसी का कायिक सुन्दरता से शील-स्वभाव की सुन्दरता की ओर सकेत स्पष्ट है। इसी आधार पर मैथिलीशरण गुप्त ने विस्तृत चरित्र की कल्पना की है।

ईक्ष्वाकु-कुल श्रेष्ठ परम्परा मे उत्पन्न लक्ष्मण के योग्य उर्मिला को मानकर ऋषि-मुनियो की उपस्थिति मे राजा जनक ने कन्या उर्मिला को लक्ष्मण की पत्नी रूप मे देने की प्रतिज्ञा की–

सीता रामाय भद्र ते ऊर्मिला लक्ष्मणाय वै।
द्वितीयामूर्मिला चैव त्रिवेदामि न सशय ।।[८६]

तद्नुसार शुभ मुहूर्त पर दोनो का विवाह सम्पन्न हुआ और विवाहोपरान्त अयोध्या लौटने पर सासो द्वारा डोली से उतारी गईं तथा घर ले जायी गईं। विधिवत देवताओ का पूजन-अर्चन कर उसने सास-ससुर का वन्दन किया और अपने पति लक्ष्मण के साथ एकान्त मे रहकर आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगी।

वाल्मीकि के समान तुलसी ने उर्मिला का और अधिक सक्षिप्त उल्लेख किया है–

जानकी लघु भगिनी सकल सुन्दरी सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्ही व्याहि लखनहि सकल विधि सनमानि कै।[८७]

---

[८६] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७१/२१, २२
[८७] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५/छन्द ३

वाल्मीकि और तुलसी द्वारा उपेक्षित उर्मिला के चरित्र को मैथिलीशरण गुप्त ने पूरी तन्मयता के साथ उकेरा है। उसके चरित्र को अनेक रगो से भरकर उसे सजाया है।

गुप्त जी उर्मिला के दिव्य रूप के वर्णन के साथ-साथ दिव्य शील-स्वभाव का वर्णन करते हुए लिखते है–

स्वर्ग का यह सुमन धरती पर खिला,
नाम है इसका उचित ही उर्मिला,
शील-सौरभ की तरगे आ रही,
दिव्य भाव भवाब्धि मे है ला रही।[८८]

उर्मिला के प्रारम्भिक चरित्र मे उसके समर्पित पति परायणा, प्रेम प्रगल्भा, श्लिष्ट हास-परिहास मग्ना, कला-निपुणा रूप मे सयोग श्रृगार का विस्तार से चित्रण हुआ है।

जब राम के साथ लक्ष्मण वन मे जाने को उद्यत होते है तब उर्मिला किकिर्त्तविमूढ हो जाती है, कुछ कह नही पाती। लक्ष्मण उसे सब कुछ समझाते है, तब वह अपने मन को समझाती है तथा स्वार्थ त्याग का महान आदर्श प्रस्तुत करती है।

कहा उर्मिला ने हे मन, तू प्रिय पथ का विघ्न न बन।
आज स्वार्थ है त्याग भरा, है अनुराग विराग भरा।।[८९]

लक्ष्मण के वन गमन के पश्चात् वियोग व्यथिता उर्मिला का विलाप विस्तार से चित्रित हुआ है। इस वियोगावस्था मे वह ऐसा कोई कार्य नही करना चाहती जिसे प्रिय के कर्तव्य पथ मे बाधा खडी हो।

उर्मिला आदर्श कुलवधू और राजकन्या के रूप मे उपस्थित हुई है तथा उसका प्रेम और सतीत्व अपनी धर्म निष्ठता मे वियोग साधन बना। उर्मिला प्रेम विदग्धा कर्तव्य

---

[८८] साकेत सर्ग १ पृष्ठ ७
[८९] साकेत सर्ग ४ पृष्ठ ५३

परायणा के रूप मे साकेत मे चित्रित है। अश्रु बहाने की दीनावस्था को छोडकर अदम्य विश्वास के साथ वीर पत्नीत्व एव राष्ट्र सेवा का कर्तव्य भी उर्मिला ने सफलता से निभाया है–

देवर, तुम निश्चिन्त रहो, मै कब रोती हूँ?
किन्तु जानती नही, जागती या सोती हूँ?
जो हो, ऑसू छोड, आज प्रत्यय पीती हूँ–
जीते है, वे वहॉ, यहॉ जब मै जीती हूँ।।[६०]

इस प्रकार उर्मिला के चरित्र की विशेषताओ की ओर वाल्मीकि और तुलसी ने केवल सकेत दे दिया है। उन्ही सकेतो के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त ने उसकी चारित्रिक विशेषताओ का विस्तार से चित्रण किया है। इस चित्रण मे उर्मिला की सयोग तथा वियोगावस्थाओ का विवरण देकर स्त्री के भावात्मक रूप को अपनी कल्पना से मैथिलीशरण गुप्त ने उभारा है। कवि हृदय की भावुकता ने इस चरित्र को रामकथा की दृष्टि से कही-कही बहुत अधिक महत्वहीन बना दिया है तथापि रघुकुल की यह रमणी सीता से किसी भी रूप मे कम नही है, यह दिखाने का प्रयत्न किया गया है। राम स्वय कहते है–

तूने तो सह धर्मचारिणी के भी ऊपर
धर्म स्थापन किया भाग्यशालिनी, इस भू पर[६१]

माण्डवी

रामकथा मे वाल्मीकि एव तुलसी के अनुसार माण्डवी का चरित्र महत्व नही पा सका है। गुप्त जी ने अवश्य माण्डवी के चरित्र का कुछ उत्कर्ष किया है। गुप्त जी की नीति के अनुसार उपेक्षिताओ का करुण नाद चित्रित करना हो तो माण्डवी की स्थिति लक्ष्मण की उर्मिला से भी दारुण है। माण्डवी की स्थिति तो ऐसी ही है जैसे जल मे

---

[६०] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २६४
[६१] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २८४

मीन प्यासी। मुझे तो उर्मिला की विरह वेदना से माण्डवी की वियोग वेदना उत्कट लगती है।

वाल्मीकि के अनुसार माण्डवी कुशध्वज की पुत्री, जनक द्वारा भरत से ब्याही नारी है।[६२] कौशल्यादि द्वारा डोलियो से उतरवायी जाकर मगलगान के साथ पति गृह मे प्रवेश करती है।[६३] देवताओ का पूजन कर, सास श्वसुर आदि के चरणो मे प्रणाम करके वह अपने पति के साथ एकान्त मे अत्यन्त आनन्द से रामय व्यतीत करने लग गयी है।[६४]

तुलसी के अनुसार कुशकेतु की कन्या एव भरत की पत्नी माण्डवी गुणशीला, शीलवन्ती, सुन्दरी तथा सुखदा है।[६५]

मैथिलीशरण गुप्त की माण्डवी साकेत के एकादश सर्ग मे हमारे सम्मुख आती है। वह पतिव्रता नही, कुल वधू भी है और जब परिवार की सारी चिन्ता से ग्रस्त है। वह अपने पारिवारिक कर्तव्य का मनोयोग पूर्वक निर्वाह करती है। माण्डवी के मन मे एकान्त प्रेम की अभिलाषा थी, जो लोक साधना एव पारिवारिक सेवा की भावनाओ मे उत्कर्षित हुई है। उसका पति प्रेम अनन्यता का व्रत एव सतोष का सुख लिए हुए है–

मेरे नाथ, जहॉ तुम होते, दासी वही सुखी होती।[६६]

इस प्रकार वाल्मीकि एव तुलसी की अपेक्षा मैथिलीशरण गुप्त ने माण्डवी के चरित्र मे प्रासगिक भाव रग भर दिया है, जो कवि की अपनी मौलिक उद्भावना है।

---

[६२] वाल्मीकि रामायण ६३/२६
[६३] वाल्मीकि रामायण ६६/११–१२
[६४] वाल्मीकि रामायण ६६/१३–१४
[६५] मानस बालकाण्ड ३२५/छन्द २
[६६] साकेत सर्ग ११ पृष्ठ २२२

श्रुतिकीर्ति

वाल्मीकि और तुलसी के महाकाव्य मे श्रुतिकीर्ति का चरित्र विवाह के प्रसग मे सक्षेप मे चित्रित हुआ है। मैथिलीशरण गुप्त की श्रुतिकीर्ति भी लक्ष्मण-पथगामी भरत के अनुगामी रूप मे पति की विदा करते समय प्रकट होती है।

वाल्मीकि के अनुसार, कुशध्वज की कन्या का शत्रुघ्न की पत्नी के रूप मे दशरथ पत्नियो द्वारा स्वागत होने के पश्चात् देवतार्चन कर तथा गुरूजनो का आशीर्वाद प्राप्त कर श्रुतिकीर्ति पति के साथ एकान्त मे आनन्द से जीवन व्यतीत करने लगती है[९७]।

तुलसी के अनुसार विवाह के प्रसग मे श्रुतिकीर्ति शील एव सौन्दर्य से सम्पन्न रूप मे उपस्थित है–

जेहि नाम श्रुति कीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी"
सो दई रिपु सूदनहि, भूपति रूप सील उजागरी।।[९८]

मैथिलीशरण गुप्त ने श्रुतिकीर्ति को वीर पत्नी के रूप मे प्रस्तुत किया है–

जाओ स्वामी, यही मॉगती मेरी मति है–
जो जीजी की, उचित वही मेरी भी गति है?[९९]

मन्थरा

महाकाव्य के विस्तृत कथानक मे कुछ पात्र केवल कथा-सधियो पर किचित काल के लिए अभिभूति होकर सदा के लिए विलुप्त हो जाते है। मन्थरा का भी ऐसी ही सधि स्थल पर परिचय मिलता है। उसका चरित्र-चित्रण सक्षिप्त है किन्तु बड़ः ही

---

[९७] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ७७/१२–१४
[९८] रामचरित मानस बालकाण्ड ३२५/३
[९९] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २६४

प्रभाव पूर्ण। रामकथा मे काफी समय तक उसके कार्य की गूँज रहती है। राम को वन भेजने के लिए कैकेयी काफी नही मन्थरा अनिवार्य भी थी।

वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त की रामकथा मे मन्थरा एक निश्चित कार्य करती है। कैकेयी के कुकृत्य का बीज वमन मन्थरा ने ही किया है। तीनो की कैकेयी इसी बीजवपन के पश्चात् भी एक जैसी ही रही है। बीजवपन से पूर्व भी निश्छलता एव सरलता तथा बीजवमन के पश्चात् की क्रूरता एव कुटिलता के बीच की कैकेयी मन्थरा से उलझी हुई दिखायी पडती है। मन्थरा की मन्त्रणा को तीनो ने थोडे बहुत हेर-फेर से ही वर्णन किया है। मन्थरा अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए वातावरण के अनुकूल बहाने ढूढ कर उन्हे बडी कुशलता से तर्क सगत रूप से कैकेयी के मस्तिष्क मे भरती है। अपने इस कुटिल कार्य के लिए वह शत्रुघ्न द्वारा लातो घूँसो से दण्डित होती है। गुप्त जी ने केवल मन्थरा को इस प्रकार दडित नही होने दिया है।

तीनो ही कवियो ने मन्थरा की कुटिलता के पक्ष को ही उभारा है। क्योकि इसी के कारण कथा की घटनाएँ प्रभावित होती है। परन्तु डा० माता प्रसाद गुप्त का कहना है कि मन्थरा के कार्य मे निहित स्वामि भक्ति की भावना को महत्व नही दिया गया है।[100] इस रूप मे मन्थरा के अपराध की गहनता निश्चित रूप से कम हो जाती है। वैसे तो तुलसी की मन्थरा सुर माया के वशीभूत होकर राम के अवतार के उद्देश्य मे सहायक सिद्ध हुई है।[101] अत इस रूप मे तो मन्थरा एक दम निर्दोषी सिद्ध होती है।

मन्थरा का चरित्र रामकथा मे अत्यन्त महत्वपूर्ण चित्रित हुआ है। मन्थरा के चरित्र की सबसे बडी विशेषता है, उसकी मनोवैज्ञानिक और व्यञ्जना प्रचुर तर्क प्रणाली एव वाक्पटुता जिसका तीनो कवियो ने सशक्त चित्रण किया है।

[100] डा० माता प्रसाद गुप्त – तुलसी दास पृष्ठ ३०६

[101] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड दोहा १२

शूर्पणखा

जिस प्रकार तीनो महाकाव्यो के विस्तृत कथानक मे मथरा प्रसग विशेष मे ही आकर कथा प्रवाह को एकदम मोड देती है, उसी प्रकार शूर्पणखा भी सधि स्थल, पात्र बनकर कथा प्रवाह को युद्ध भूमि मे पहुँचा देती है। तीनो महाकवियो के अनुसार शूर्पणखा एक ही स्थल पर एक समान ही कार्य करती है। शूर्पणखा राम और लक्ष्मण से प्रणय-प्रस्ताव करती है[१०२]। और उपेक्षिता होने पर सीता को खाने के लिए दौडती है।[१०३] तब आत्म रक्षा और दण्ड के विचार से राम का सकेत पाकर लक्ष्मण उसके नाक-कान काट लेते है।

वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त तीनो की शूर्पणखा राम और लक्ष्मण के प्रति आसक्त है। अन्तर केवल इतना ही है कि वाल्मीकि की शूर्पणखा का चित्रण यथार्थ रूपेण विस्तार से हुआ है, तुलसी की शूर्पणखा का चित्रण सयमित एव मैथिलीशरण गुप्त की शूर्पणखा नही के बराबर चित्रित है। मैथिलीशरण गुप्त ने इस प्रसग का विस्तार से वर्णन करने के लिए अपने पचवटी काव्य को चुना है।

शूर्पणखा की कामासक्ति बडी खतरनाक है क्योकि वह राक्षसी होने के साथ-साथ कामरूपा भी है।[१०४] युवास्था मे ही विधवा होने के कारण अतृप्त है। इस रूप मे मनोवैज्ञानिक दृष्टि से वाल्मीकि की शूर्पणखा यथार्थ चित्रित है।

शूर्पणखा कुशल राजनीतिज्ञा एव नीतिज्ञा भी है। पहले खर-दूषण एव बाद मे रावण की राम द्वारा अपमान का तथा जन स्थान की दुर्दशा का वर्णन करके सीता-हरण तथा युद्ध करने के लिए उकसाती है। यही कारण है कि शूर्पणखा राक्षसी का प्रासगिक चरित्र भी कथा का नाटकीय मोड देने मे सफल हुआ है।

---

[१०२] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड १७/१२–१४, २०–२६

[१०३] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड १७/१०, साकेत सर्ग ११ पृष्ठ २३२, वाल्मीकि रामायण अरण्य काण्ड १८/१–१३

[१०४] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड सर्ग १६ श्लोक २०

शबरी

वाल्मीकि, तुलसी तथा मैथिलीशरण गुप्त ने मतगशिष्या चिरजीविनी, धर्माचारिणी, शबरी का चरित्र-चित्रण अपने-अपने दृष्टिकोणो से किया है। कबन्ध मे उद्धार के पश्चात् राम स्वय लक्ष्मण सहित शबरी के आश्रम मे पहुँचे तथा उसके भाव-भक्ति पूर्ण आतिथ्य को स्वीकार किया[१०५]। वाल्मीकि के समान[१०६], तुलसी[१०७] और गुप्त जी[१०८] के कबन्ध द्वारा सूचना न मिलने पर भी पूर्व नियोजित कार्यक्रम के अनुसार उनका भाव का भूखा राम परमभक्तिन शबरी के आश्रम मे स्वय पहुँच जाता है।[१०९]

वाल्मीकि की शबरी सिद्धा, तपस्विनी, सिद्धो द्वारा सम्मानित, धर्मानुष्ठान मे निरत, विज्ञान मे गति रखने वाली एव विधिवत तपस्या करने वाली है। दीर्घकाल तक वह महर्षि मतग एव उनके शिष्य वर्ग की सेवा करती रही है। राम से उसका वार्तालाप किसी विदुषी के अनुरूप ही है। तुलसी की शबरी मे उक्त विशेषताएँ, दृष्टि गोचर नही होती। वह केवल प्रेम को ही सर्वस्व समझने वाली गँवार नारी है, जो मतग मुनि के निर्देशानुसार राम की प्रतीक्षा कर रही है। वह राम-लक्ष्मण को कुटिया मे पधारे देख उनके चरणो मे लिपट जाती है। प्रेमातिरेक से उसकी वाणी अवरुद्ध हो जाती है।[११०] वह यथाशक्ति अल्प स्वल्प स्वागत करती है, जिसका स्वीकार राम ने बडे प्रेम से किया—

कन्द मूल फल सुरस अति दिए राम कहुँ आनि।
प्रेम सहित प्रभु खाए बारम्बार बखानि।।[१११]

वाल्मीकि की शबरी के अनुसार तुलसी की शबरी ने केवल भाव विह्वलतापूर्ण आतिथ्य करके सीता की खोज करते हुए राम को मार्ग बतलाने का कार्य करती है,

---

[१०५] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ६४/४–६
[१०६] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड ७३/२६, २७
[१०७] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३३/३
[१०८] साकेत सर्ग ११ पृष्ठ २४३
[१०९] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३३/४
[११०] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३३/५
[१११] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३४

वरन् कबन्ध के स्थान पर, राम को सुग्रीव से मिताई करने की सलाह भी देती है।[११२] तुलसी ने भक्तिन के रूप मे शबरी के चरित्र का विशेष उत्कर्ष किया है। तुलसी ने शबरी को अधिकारी भक्त बनाकर राम द्वारा नवधा भक्ति की दीक्षा दिलवाई है।[११३]

राम के पुरुष भक्तो मे जो स्थान निषाद का है, वही स्त्री भक्तो मे शबरी का। दोनो निम्न जाति के है परन्तु भक्ति के आलोक से उच्च हो उठे है। दोनो की भक्ति भाव भक्ति का उदाहरण है। राम के भक्त मानस भी शबरी को नही भूल सकते परन्तु रामायण की शबरी से उनका उतना निकट परिचय नही हो पाता। गुप्त जी केवल दो पक्तियो मे उल्लेख कर सतोष कर लेते है। सदा भाव के भूखे प्रभु ने, शबरी का आतिथ्य लिया।[११४]

तारा

सुषेण की पुत्री बालि की पत्नी तारा का चरित्र राम कथा मे अनेक दृष्टियो से महत्वपूर्ण है। वानर जाति की स्त्रियो का प्रतिनिधित्व तारा यदि कर रही होगी तो उस समाज मे स्त्रियो के स्थान का स्पष्टीकरण तारा के चरित्र से हो जाता है।

वाल्मीकि ने तारा का चरित्र-चित्रण सुस्पष्ट, सुसगत तथा सुन्दर ढग से किया है। तुलसी ने तारा के चरित्र के महत्वपूर्ण प्रसगो की ओर केवल सकेत मात्र किया है परन्तु मैथिलीशरण गुप्त ने तो केवल एक ही प्रसग का केवल उल्लेख मात्र किया है। वस्तुत तुलसी एव मैथिलीशरण गुप्त मे भी तारा का चरित्र प्रभावोत्पादक नही हुआ है।

सुग्रीव राम की सहायता से बालि को युद्ध के लिए उसके द्वार पर जाकर ललकारता है। बालि को द्वन्द्व युद्ध के लिए निकलते देखकर तारा उसे बुद्धिमत्ता की

---

[११२] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३५/६
[११३] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३५/३
[११४] साकेत सर्ग ११ पृष्ठ २४३

सीख देती है। वह जानती है कि राम की सहायता मिलने पर वहॉ बालि की हार एव मृत्यु निश्चित है[११५]। बालि मानता नही एव प्राणो को युद्ध मे गवॉ देता है।

पति की मृत्यु होने पर उसके शव से चिपट कर तारा का विलाप वाल्मीकि के कवित्व का श्रेष्ठ अश है[११६]। तुलसी ने तारा के विलाप का सकेत मात्र दिया है।[११७]

पतिहीन तारा की बुद्धिमत्ता एव दूरदर्शिता का दूसरा उदाहरण उसके द्वारा सुग्रीव की पत्नीत्व का स्वीकार करना है। समय एव वातावरण के साथ अपने-आप को ढालने वाली राजनीति कुशल तारा पुत्र अगद के विद्रोह को सहमति नही देती उलटे सुग्रीव के राज्य का उत्तराधिकारी अगद को बनाने का स्वय सुग्रीव की पत्नी बनकर मार्ग प्रशस्त करती है।

तुलसी एव गुप्त जी ने इस प्रसग की उपेक्षा की है, परन्तु वाल्मीकि के अनसुार लक्ष्मण के भयकर क्रोध से सुग्रीव भी अपने वाक् चातुर्य से रक्षा करने वाली तारा के सबध मे यह कहा जा सकता है कि उससे कई वाक्पटु विद्वान सीख ले सकते है।[११८] वाल्मीकि ने तारा के माध्यम से आदर्श वानर महिला और तत्कालीन वानरी सस्कृति, सभ्यता एव शिष्टाचार का परिचय दिया है।

तारा स्वभाव की सुन्दरता के साथ-साथ रूप की भी बडी सुन्दर थी[११९] जिसकी ओर तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त का ध्यान ही नही गया है। तुलसी ने तारा को दार्शनिक रूप देकर राम का भक्त ही बनाकर रख दिया।[१२०]

---

[११५] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड १५/६–३०
[११६] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड १३/१७–३० २४/२५–४०
[११७] रामचिरत मानस किष्किन्धाकाण्ड १०/१
[११८] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड ३३/५०–६१, ३५/१–२३, साकेत सर्ग ११ पृष्ठ २४४
[११९] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड ३३/३१–३८
[१२०] रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड १०/२

त्रिजटा

त्रिजटा का चरित्र रामकथा मे महत्वपूर्ण है। वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस मे त्रिजटा का चरित्र सक्षिप्त होते हुए भी उत्कृष्ट है। त्रिजटा सीता द्वारा अत्यधिक सम्माननीय है। सीता त्रिजटा को 'माता' सबोधन देकर उसे सुनयना एव कौशल्या के समकक्ष ला खडी करती है। वह सीता की विषम परिस्थितियो मे सहायता करती है। सीता को धीरज बॅधाती है। राम के बल-पौरुष का वर्णन करके रावण के अन्त का विश्वास दिलाती है। साकेत मे त्रिजटा का चरित्र-चित्रण न करके उसके स्थान पर मैथिलीशरण गुप्त जी ने विभीषण पत्नी सरमा का चरित्र-चित्रण किया है। वास्तव मे त्रिजटा के कार्य को सरमा साकेत मे करती है। इस प्रकार त्रिजटा और सरमा मे केवल नाम मात्र का भेद है।

वाल्मीकि रामायण के अनुसार सीता को सभी राक्षसियॉ जब डराते हुए खाने के लिए कहती है तब बूढी राक्षसी त्रिजटा उन सभी को अपना भयकर सपना सुनाती है और कहती है कि रावण तथा राक्षसो का नाश निश्चित है तुम सभी स्वय का भक्षण करो तुम सब सीता को नही खा सकोगी–

आत्मान खादतानार्या न सीता भक्षयिष्यथ।[१२१]

इसी प्रकार रामचरित मानस मे त्रिजटा सीता को डराने वाली राक्षसियो को अपना भयकर सपना सुनाकर सीता से माफी मागने के लिए कहती है–

सपने वानर लका जारी। जातुधान सेना सब मारी
खर आरुढ नगन दस सीसा। मुडित सिर खडित भुज बीसा।।

x x x

तासु वचन सुनि ते सब डरी। जनक सुता के चरन्हि परी।।[१२२]

---

[१२१] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २७/५

[१२२] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ११/२,४

मानस की त्रिजटा प्रभु राम के प्रति विशेष अनुराग एव भक्ति भाव रखती है। वह सीता को रावण के नाश का विश्वास दिलाती है। सीता उसे माता कहकर सबोधित करती है। साकेत मे त्रिजटा के स्थान पर सरमा का चरित्र चित्रण किया गया है। सरमा सीता को अशोक वाटिका मे धीरज बँधाती है। वह कहती है कि मेघनाद युद्ध मे मारा गया, अब रावण शीघ्र ही राम के हाथो मारा जायेगा यह– समाचार सुनकर सीता उससे कहती है–

सरमे क्या दूँ तुम्हे? जियो लका की रानी।"
वसुधा का राजत्व निछावर तुम पर साध्वी,[१२३]

सरमा कहती है कि मुझे अपने चरणो की दासी समझकर सेवा करने का अवसर दे यही मेरे लिए हितकर है।

इस प्रकार हम देखते है कि त्रिजटा का चरित्र उच्च कोटि का है वह सीता की विपत्ति मे सहायता करती है उन्हे धीरज बँधाती है और राम से मिलने का उन्हे दृढ विश्वास दिलाती है।

मन्दोदरी

मन्दोदरी का चरित्र चित्रण वाल्मीकि रामायण एव रामचरित मानस मे महत्वपूर्ण है किन्तु मैथिलीशरण गुप्त के साकेत मे मन्दोदरी का चरित्र-चित्रण नही किया गया है मन्दोदरी को साकेत मे स्थान न मिलने का प्रमुख कारण यही है कि मन्दोदरी का चरित्र उर्मिला के चरित्र को किसी भी स्तर पर प्रभावित नही करता है। साकेत के केन्द्र मे उर्मिला का चरित्र है। साकेत मे उन्ही पात्रो को स्थान मिला है जो उर्मिला के चरित्र को किसी न किसी स्तर पर प्रभावित करते है।

वाल्मीकि रामायण मे मन्दोदरी मय दानव की पुत्री, रावण की पत्नी एव मेघनाथ जैसी वीर की माता के रूप मे चित्रित की गयी है। मन्दोदरी का चरित्र अत्यन्त उच्च

---

[१२३] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २८१

भाव भूमि पर वाल्मीकि ने प्रतिष्ठित किया है। वह सत्यपथ पर चलने वाली, नीतिकुशला एव स्पष्टवादी स्त्री के रूप मे रामायण मे वर्णित है। वाल्मीकि ने उसे सीता के समान सुन्दर बताया है। हनुमान मन्दोदरी को देखकर 'सीता' समझ बैठते है।

वह अपने पति द्वारा किये गये सीता हरण के लिए रावण की निदा करती है और सीता को वापस लौटाकर सुख शान्ति से पति को रहने की सलाह देती है। किन्तु कामासक्त रावण उसकी सलाह न मानकर युद्ध पथ पर चलकर श्रीराम के हाथो मारा जाता है। वह रावण के मरने पर विलाप करती है, उसके विलाप मे नीति, धर्म एव ज्ञान की बातो का सुन्दर समन्वय मिलता है। वह कहती है—

अवश्यमेव लभते फल पापस्य कर्मण
भर्तपर्यागते काले कर्ता नास्त्यत्र सशय ।[१२४]

तुलसी की मन्दोदरी मे राम के प्रति विशेष अनुराग दिखायी देता है वह राम के प्रति भक्ति भाव रखती है। मन्दोदरी रावण के पैरो पडकर नीति के मार्ग पर चलने के लिए उससे निवेदन करती है। सीता को वह विपत्ति का मूल एव राक्षसो के सर्वनाश का कारण मानती है। अत वह सीता को वापस राम के पास पहुॅचाने के लिए कहती है—

तब कुल कमल विपिन दु खदायी। सीता सीत निसा सम आई।
सुनहु नाथ सीता बिनु दीन्हे, हित न तुम्हार सभु अज कीन्हे।।[१२५]

मन्दोदरी लकाकाण्ड मे भी रावण को युद्ध न करके श्रीराम के पास सीता को पहुॅचाने की बात कहती है किन्तु रावण अपने अहकार के कारण अपना नाश करवाता है।

---

[१२४] वाल्मीकि रामयण का युद्ध काण्ड १११/२५
[१२५] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ३६/५

वाल्मीकि एव तुलसी दोनो ने मन्दोदरी के चरित्र को महत्वपूर्ण एव सत्व की भूमि पर उतारा है किन्तु वाल्मीकि की मन्दोदरी मे सौन्दर्य के साथ स्वाभिमान भी है वह स्पष्टवादी है वह पति की निदा करती है किन्तु उसकी भलाई के लिए। वह अपने पति की वीरता पर गर्व भी करती है किन्तु तुलसी की मन्दोदरी राम के प्रति अत्यधिक भक्तिभाव एव अनुराग रखती है। जिसके कारण वह अपने पति रावण की अत्यधिक निदा करती है। उसकी नीतियो की आलोचना करती है। किन्तु ऐसा तुलसी के मानस मे भक्तिभाव की प्रधानता के कारण ही हुआ है।

चतुर्थ अध्याय

वाल्मीकि तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि

स्वरूप, आलोचना एवं निष्कर्ष

- वाल्मीकि की नारी दृष्टि
- तुलसी की नारी दृष्टि
- मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि

वाल्मीकि की नारी दृष्टि

नारी की स्थिति ही किसी समाज की सभ्यता का सच्चा माप दण्ड है। रामायण कालीन नारी सस्कृति का यथार्थ स्वरूप जानने के लिए वाल्मीकि ने प्रचुर सामग्री प्रस्तुत की है। वैदिक सस्कृति का उच्च आदर्श एवॅ गरिमा रामायण की नारियो मे स्पष्टत दिखायी देता है। वाल्मीकि ने नारी पात्रो को उच्च भाव भूमि पर प्रतिष्ठित कर उन्हे महिमा मडित किया है। हिन्दू कन्याओ की प्रात स्मरणीया पॉच महानारियो – अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती और मन्दोदरी मे से तीन रामायण से ही प्रसूत है। केवल द्रौपदी और कुन्ती महाभारत से सबद्ध है। रामायण मे कई प्रधान एवॅ आनुषगिक नारी पात्रो के विशद् चित्र अकित है, ऐसे नारी पात्र जिनके गुण और दुर्गुण, जिनकी महत्ता और दुर्बलता हमारे सम्मुख नारी सस्कृति का एक मिला जुला रूप उपस्थित करती है। रामायण मे नारी चित्रण इतना सजीव एव प्रमुख है कि उसे नारी प्रधान रचना बना देता है वाल्मीकि ने स्वय लिखा है–

काव्य रामायण कृत्स्न सीतायाश्चरित महत।[१]

यदि हम परिवार मे कन्या की स्थिति और उसके प्रति किये जाने वाले व्यवहार की समीक्षा करे तो यह स्वीकार करना होगा कि परिवार मे कन्या जन्म पुनीत माना जाता था। पुत्री अपने पिता की 'दयिता' अर्थात् प्रीति पात्र थी। गुणवती कन्या की प्राप्ति दीर्घ तपस्या से ही सभव है।[२] सन्तान के प्रति स्नेह मानव मनोवृत्ति का सहज लक्षण है और पुत्रियॉ स्नेह भरपूर पाती थी। उनका लालन पालन मनोयोग से किया जाता था। महाराज जनक एवॅ रानी सुनयना ने सीता को अत्यधिक स्नेह से पाला और अपना सम्पूर्ण प्यार उन्हे प्रदान किया। कन्या के बडी होने पर पिता यदि चिन्ता करता था तो उसके मूल मे माता–पिता की यह उद्विग्नता थी कि हमारी पुत्री का जीवन कैसे सुखमय हो। कन्या का श्रेष्ठ वर के साथ विवाह सम्पन्न कर देना बडे महत्व का कार्य

---

[१] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४/७

[२] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड २५/५, ६

माना जाता था। श्रेष्ठ धनुर्धर से विवाह करने के लिए राजा जनक ने स्वयवर आयोजित कर सीता का विवाह राम से किया। सीता हरण के पश्चात् राम यह सोचकर बडे दु खी हुए थे कि यदि लोगो के बीच राजा जनक मुझसे सीता की कुशलता के बारे मे पूछ बैठे तो मै उन्हे क्या उत्तर दूँगा?

कि तु वक्ष्यामि धर्मज्ञ राजान सत्यवादिनम्।
जनक पृष्टसीत त कुशल जनससदि।।[3]

कुमारी कन्याओ को मागलिक तथा उनकी उपस्थिति को शुभ माना जाता था। सुन्दर एव सुसज्जित कन्याओ का दिखायी पडना और उनके द्वारा स्वागत सत्कार किया जाना सफलता और सौभाग्य का सूचक माना जाता था। इसीलिए राम ने जब वन से लौटकर अयोध्या मे प्रवेश किया तब कुमारी कन्याएँ उनके आगे–आगे चल रही थी। उनके राज्याभिषेक मे कन्याओ ने उनके ऊपर जल छिडका था। जिस घडी से जनक ने सीता को पुत्री के रूप मे ग्रहण किया था उनके यहाँ सुख–समृद्धि की अतिशय वृद्धि होने लगी

अवाप्तो विपुलामृद्धि मामवाप्य नराधिप।[4]

रामायण के प्रमुख स्त्री पात्रो के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि तत्कालीन समाज मे स्त्रियो को अपने विवाह से पूर्व ही पुत्री रूप मे पिता के घर समुचित शिक्षा दी जाती थी क्योकि उन्हे सभी धार्मिक कृत्यो मे पति के साथ सम्मिलित होना पडता था। कभी – कभी तो धार्मिक कृत्य अकेले भी उन्हे करना पडता था अत उन्हे विवाह से पहले ही वैदिक यज्ञ एव मन्त्रो की शिक्षा दे दी जाती थी। राम के राज्याभिषेक के दिन कौशल्या अग्नि मे मन्त्रो सहित अकेली आहुति दे रही थी। सीता को सन्ध्योपासना मे तत्पर बताया गया है।

---

[3] वाल्मीकि रामायण किष्किन्धाकाण्ड १/१०६
[4] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ११८/३२

देवासुर सग्राम मे कैकेयी का अपने पति के साथ जाना यह सिद्ध करता है कि लडकियॉ सैनिक शिक्षा से वचित नही रखी जाती थी वल्कि उन्हे थोडी बहुत शिक्षा इसकी अवश्य मिलती रही क्योकि घोर युद्ध मे क्षत–विक्षत महाराज दशरथ को कुशलता के साथ कैकेयी सुरक्षित स्थान पर ले जाकर उनकी प्राण रक्षा करती है।[५] दशरथ के अश्वमेध यज्ञ मे कौशल्या घोडे का शिरोच्छेदन तलवार के तीन वार करके करती है।

कौशल्या त हय तत्र परिचर्य समन्तत ।
कृपाणैर्विससारैन त्रिभि परमया मुदा।।[६]

वाल्मीकि के अनुसार कन्याओ को व्यावहारिक एवॅ नैतिक शिक्षा दी जाती थी पतिव्रत धर्म विषयक शिक्षा से पूरी तरह अवगत रहती थी। सीता ने स्वय कहा है कि पत्नी का क्या धर्म होता है यह मैने अपने माता–पिता से अच्छी तरह सीखा है।

अनुशिष्टास्मि मात्रा च पित्रा च विविधा श्रयम्।
नास्मि सम्प्रति वक्तव्या वर्तितव्य यथा मया।।[७]

वाल्मीकि ने पत्नी की एकान्तिक निष्ठा और सेवा भावना को उसके जीवन का आदर्श माना है। पति ही पत्नी का एक मात्र आश्रय है। उसके बिना उसका जीवन सूना है। लोक परलोक दोनो मे पिता पुत्र, माता, सखियॉ, आत्मा कोई भी नारी का अपना नही है। मात्र पति ही उसका सहारा है। जैसे वीणा बिना तार के नही बज सकती, पहिये के बिना रथ नही चल सकता वैसे ही पति बिना स्त्री को सुख नही मिल सकता। पिता–माता, भाई, पुत्र ये सब अपने पुण्य कर्मो का फल भोगते हुए अपने–अपने भाग्य को प्राप्त करते है। केवल पत्नी अपने पति के भाग्य को प्राप्त करती है।

[५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २१/१५–१६
[६] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड १४/३३
[७] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/१०

भर्तुर्भाग्य तु नार्येका प्राप्नोति पुरूषर्षभ।[८]

महाराज दशरथ को छोडकर राम के साथ वन चलने को उद्यत माता कौशल्या को राम के द्वारा जो वाल्मीकि ने उपदेश दिलाया है उसमे तत्कालीन स्त्री-धर्म का आदर्श प्रस्फुटित हुआ है जो आज तक भारतीय नारी के लिए आदर्श ही नही बल्कि अनुकरणीय भी बना हुआ है। पत्नी के लिए उसका पति ही देवता, गुरू सुहृद, गति, धर्म प्रभु और सर्वस्व है अत उसकी सर्वतोभावेन भक्ति ही पत्नी का एक मात्र कर्तव्य है। सुख–दु ख मे जीवन के उतार चढाव मे पत्नी को पति की ही अनुगामिनी बनना चाहिए। पति की सेवा ही स्त्री के लिए सनातन धर्म है–

शुश्रूषा क्रियता तावत् स हि धर्म सनातन ।[९]

वाल्मीकि ने स्त्री को भी पति द्वारा स्नेहिल प्रेम एव उचित सम्मान दिलवाया है। राजा दशरथ कौशल्या मे आदर्श नारी का दर्शन करते है। दशरथ कौशल्या मे दासी, सखी, पत्नी, बहन माता आदि रूपो का दर्शन करते है। कौशल्या हर रूप मे उन्हे प्रिय एव गौरवमयी लगती है।

यदा–यदा च कौशल्या दासीव च सखीव च
भार्यावद् भगिनीवच्च मातृवच्चोपतिष्ठति।।[१०]

श्रीराम ने स्वय सीता को अत्यधिक स्नेह एव सम्मान दिया है। सीता के सुखो का ध्यान वे वन–प्रदेश मे भी करते है। सीता का हरण भी सीता के अतिशय प्रेम को रखने के कारण माया–मृग के पीछे श्रीराम के चले जाने के कारण ही हुआ था। वशिष्ठ ने पत्नी को पति की आत्मा बताया था–

आत्मा हि दारा· सर्वेषा दारा सग्रहवर्तिनाम।[११]

---

[८] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/५
[९] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २४/१३
[१०] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड १२/६८–६६
[११] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ३७/२४

स्वय पुरूष भी पत्नी के बिना अपूर्ण है क्योकि पत्नी के बिना वह सन्तानोत्पत्ति नही कर सकता अत वह तब तक अपूर्ण रहता है क्योकि पत्नी और पुत्र से युक्त होने पर ही वह पूर्णत्व को प्राप्त करता है।

तत्कालीन समाज पत्नी से कठोर अनुशासन एवॅ आत्म त्याग की अपेक्षा रखता था। उसे पति के अवगुणो को न देखकर पति की नि स्वार्थ सेवा भावना की शिक्षा दी जाती थी। अनसूया के अनुसार "अपने स्वामी नगर मे रहे या वन मे, भले हो या बुरे, जिन स्त्रियो को वे प्रिय होते है उन्हे महान अभ्युदयशाली लोको की प्राप्ति होती है। पति बुरे स्वभाव का, मनमाना वर्ताव करने वाला अथवा धनहीन ही क्यो न हो? उत्तम स्वभाव वाली नारियो के लिए वे श्रेष्ठ देवता समान है।

स्त्रीणामार्य स्वभावाना परम दैवत पति ।[१२]

सीता ने इसी दृष्टिकोण को साकार करते हुए राम के साथ वन मे रहने का निर्णय लिया था। इसी सिद्धान्त का पालन करते हुए माता कौशल्या ने राम के साथ वन न जाकर अयोध्या मे रहने का निर्णय लिया।

पतिव्रता एवॅ साध्वी नारियो की स्तुति से रामायण भरी पडी है। देवराज इन्द्र की पत्नी शची (शूची) अपने पातिव्रत्य के लिए प्रख्यात है। रोहिणी, सावित्री, दमयन्ती आदि नारियो ने कठिन परिस्थितियो मे भी पतिव्रत धर्म की रक्षा की है। नारी शिरोमणि सीता रावण के प्रलोभनो को तुच्छ समझती हुई विकट परिस्थितियो मे भी राम के प्रति अटूट प्रेम एव बिश्वास को मन मे सजोए हुए सती धर्म की रक्षा करने मे सफल होती है और उनका पतिव्रत धर्म सम्पूर्ण नारियो का आदर्श बन जाता है।

वाल्मीकि ने कौशल्या के आदर्श चरित्र का वर्णन करते हुए लिखा है कि राम के वन चले जाने के बाद कौशल्या ने पुत्र शोक से व्यथित होकर दशरथ पर राम के प्रति अन्याय करने का आरोप लगाया किन्तु जैसे ही राजा दशरथ उनसे क्षमा याचना

---

[१२] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ११७/२४

करते है त्यो ही उन्हे पतिव्रत धर्म का ध्यान होता है और वे विनय पूर्वक अपने अपराध के लिए क्षमा मॉगती है क्योकि वह स्त्री जिसके पति को उसकी अनुनय – विनय करनी पडती है, लोक परलोक मे कही भी प्रशसा की पात्र नही बन सकती–

नैषाहि सा स्त्री भवति श्लाघनीयेनधीमता।
उभयोर्लोकयोर्लोके पत्या या सम्प्रसाद्यते।।[१३]

अनन्य पति भक्ति पत्नी मे ऐसी आत्मबिश्वास उत्पन्न कर देती है कि दुष्टो के चक्र मे पडकर भी वह अपने सतीत्व की रक्षा करने मे समर्थ हो जाती थी। घर मे अकेली छोड दिये जाने पर भी वह अपने चरित्र के बल पर सुरक्षित रहती थी। अपने चरित्र पर जरा सा आक्रमण भी पतिव्रता नारी के समस्त आक्रोश, तेज, प्रतिशोध शक्ति तथा अदम्य उत्साह के विस्फोटक के लिए पर्याप्त था। सीता सौम्य एवॅ सुकुमार थी किन्तु सतीत्व रक्षा का प्रश्न आने पर वह एक निर्भीक वीरागना का रूप धारण कर लेती है। उनके सतीत्व के कारण ही रावण बल–प्रयोग का साहस उनके खिलाफ नही कर सका।

पति–परायणा स्त्रियो का अपहरण करने वाले की दुर्गति निश्चित मानी जाती थी। मन्दोदरी का विश्वास था कि पतिव्रता सीता की तपस्या ने ही रावण का नाश किया। सीता का अपहरण करते समय ही रावण जलकर खाक क्यो नही हो गया? मन्दोदरी के लिए यही आश्चर्य की बात थी गुरूजनो की सेवा मे लगी रहने वाली, धर्म परायण तथा पतिव्रत कुल–वधुओ को बिधवा बनाकर और उन्हे अपमानित कर रावण ने अपने ही सर्वनाश को आमन्त्रित किया था। सच यह है कि पतिव्रताओ के ऑसू पृथ्वी पर व्यर्थ नही गिरते–

पतिव्रताना नाक स्मात् पतन्त्य श्रूणिभूतले।[१४]

---

[१३] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ६२/१३

[१४] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १११/६७

वाल्मीकि ने पत्नी का सबसे बडा अधिकार और पति का सबसे बडा कर्तव्य उसके भरण पोषण की समुचित व्यवस्था करना है। पति का अर्थ पत्नी का सरक्षक और भर्ता का अर्थ पत्नी का भरण पोषण करने वाली है। भार्या का अर्थ पति के साधनो की व्यवस्था करके उसका सवर्धन करने वाली है। इसीलिए पत्नी का सरक्षण करना, उसकी सुख सुविधा का ध्यान रखना, उससे स्नेह एवॅ प्रीतिपूर्ण व्यवहार करना पुरूष का नैतिक कर्तव्य है। चित्रकूट मे राम भरत से पूछते है कि क्या तुम अपनी स्त्रियो को सतुष्ट रखते हो? क्या वे तुम्हारे द्वारा भली भॅाति सुरक्षित है–

कच्चित स्त्रिय सान्त्वयसे कच्चित् तास्ते सुरक्षिता ।।[१५]

रामायण कालीन नारी को समानता का दर्जा मिला हुआ था वाल्मीकि रामायण मे वाल्मीकि ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि राज्याभिषेक मे पति के साथ पत्नी सम्मिलित होती थी। यह अधिकार नारी के महत्व की स्थापना करता है। राम के राज्याभिषेक मे वशिष्ठ ने उनके साथ सीता को भी रत्न जटित सिहासन पर बैठाकर अभिषेक किया था। विधवा स्त्री को अपने पति की और्ध्य दैहिक क्रिया मे योग देने का अधिकार था कौशल्या आदि रानियो ने दशरथ की प्रज्ज्वलित चिता की प्रदक्षिणा की थी।[१६]

वाल्मीकि रामायण की नारी पुरूष की समकक्षता मे खडी दिखायी देती है। राम के राज्याभिषेक के दिन अयोध्या के नर और नारी उत्कठित होकर राजमार्गो पर खडे होकर सूर्योदय की प्रतीक्षा कर रहे थे – वे सोच रहे थे कि कब सूर्योदय हो और राम का अभिषेक महोत्सव शुरू हो। सम्पूर्ण राम का राज प्रासाद नर–नारियो से परिपूर्ण था सभी राम की जय–जयकार कर रहे थे।

नारियॅा तत्कालीन युग की राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियो को अत्यधिक रूप से प्रभावित करती थी। सीता और कैकेयी जैसी नारियो ने राष्ट्रो का भाग्य परिवर्तन कर दिया है। पत्नी सम्मान की रक्षा भावना ने दुर्धर्ष शत्रुओ से बैर के

---

[१५] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड १००/४६

[१६] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७६/२०

लिए प्रेरित किया है पत्नी का अपमान स्वय अपना, अपने कुल का अपमान है जिसकी उपेक्षा कोई भी अभिजात वशीय नही कर सकता। सीता का विरोध द्वारा अपहरण किये जाने पर राम ने कहा था कि "विदेह नदिनी का कोई पर पुरूष स्पर्श करे, इससे बढकर दुख की बात मेरे लिए दूसरी कोई नही है।"[१७]

नारी की प्रशासनिक योग्यता का एक प्रमाण वशिष्ठ के इस कथन से मिलता है जिन्होने कैकेयी को सुझाव दिया था कि राम की आत्मा होने के नाते सीता उनके वन चले जाने पर उनकी प्रतिनिधि की रूप मे राज्य का शासन सचालन करेगी।

अनुष्ठास्यति रामस्य सीता प्रकृतमासनम्।[१८]

स्त्री को इस प्रकार का अधिकार प्रदान करना सर्वथा व्यवहार्य एवॅ समीचीन रहा होगा अन्यथा अपने युग और परम्पराओ के जानकार वशिष्ठ ऐसा प्रस्ताव कैसे उपस्थित कर सकते थे।

विनम्रता की प्रतिमूर्ति होने पर भी नारी का स्वाभिमान रामायण मे अक्षुण्ण है। अनुचित रूप से लाछित या प्रताडित किये जाने पर वह निर्भीक रूप से प्रतिवाद करती है और विज्ञ होने के कारण तर्क की कसौटी पर अपने आप को सही ठहराती है। राम वनगमन के समय सीता राम से तर्क करके अपने वन जाने के औचित्य को सिद्ध करती है। जब कौशल्या सीता को वन गमन के समय दुष्टा स्त्रियो का सा आचरण न करने तथा उचित आचरण को जीवन मे उतारने की शिक्षा देती है तब सीता ने हाथ जोडकर किन्तु एक गर्विता क्षत्राणी के ओज मे यह निवेदन किया था कि आप मुझे असली नारियो के समकक्ष कैसे रख रही है?

न मामसज्जनेनार्या समानयतुमर्हति।[१९]

---

[१७] वाल्मीकि रामायण अरण्यकाण्ड २/२१

[१८] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ३७/२३

[१९] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ३९/२८

वाल्मीकि की दृष्टि मे गौ का अपने वत्स के प्रति जो ममत्व है वही मातृ स्नेह का सच्चा आदर्श है। इसीलिए वे मातृ प्रेम की प्रगाढता दिखाने के लिए उसकी उपमा गौ के वत्स प्रेम से देते है। राम को वन जाते देखकर कौशल्या उनका अनुगमन करने के लिए उसी प्रकार उद्यत हो गईं जिस प्रकार गौ अधीर होकर अपने बछडे के पीछे–पीछे दौडी चली जाती है।[२०] राम भी सभी माताओ को समान रूप मानते है उनका प्रेम अपनी माता और विमाता के प्रति समान रूप है वे सीता को वन जाने से रोकते हुए कहते है कि – तुम सभी माताओ की सेवा समान भाव से करना क्योकि स्नेह, प्रेम और सेवा इन सभी दृष्टियो से मेरे लिए सब माताएँ समान है–

स्नेह प्रणय सम्भोगै समाहि मम मातर ।[२१]

वाल्मीकि की नारी दृष्टि अत्यधिक उत्कृष्ट रही है। विधवा स्त्री को पति के साथ सती होने का समर्थन रामायण नही करता है। दशरथ अथवा रावण या बालि किसी की भी पत्नी के सती होने का उल्लेख नही मिलता है। कौशल्या आदि वशिष्ठ के समझाने पर सती होने का विचार त्याग देती है। इस प्रकार वाल्मीकि ने नारी के सती होने की प्रथा का समर्थन नही किया है।

नारियो को सब जगह अकेले अथवा सखियो के साथ आने–जाने तथा आमोद–प्रमोद के अवसर उपलब्ध थे। पुरूष यात्राओ पर नारी को साथ ले जाते थे। अश्वमेध यज्ञ मे बहुत सी स्त्रियॉ अपने पतियो के साथ आयी थी। अत नारी को स्वतन्त्रता इस अर्थ मे प्राप्त थी। वाल्मीकि ने नारी को मानवीय सवेदना एव यथार्थ के धरातल पर चित्रित किया है। वाल्मीकि ने आदर्श माता के रूप मे कौशल्या, सुमित्रा, तारा आदि का उल्लेख किया है। आदर्श माता के रूप मे कौशल्या राम और भरत को समान रूप से मानती है। जब भरत राम को मनाने चित्रकूट जाते है उस समय वे भरत की दशा देखकर अत्यन्त दु खी हो जाती है।

---

[२०] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २४/६

[२१] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २६/३२

तारा वानरी स्त्रियो का प्रतिनिधित्व करती है। तारा अपने पति को उचित सलाह देती है किन्तु उसकी सलाह न मानने के कारण ही बालि राम के हाथो मारा जाता है। इसी प्रकार मन्दोदरी राक्षसी परिवार मे रहते हुए भी एक उच्च्व आदर्श उपस्थित करती है। उसका चरित्र भी अत्यन्त निर्मल है। सौन्दर्य मे वाल्मीकि ने उसे सीता के समकक्ष ला खडा किया है। वह भी रावण को निरन्तर राम से युद्ध न करके सीता को वापस श्रीराम के पास पहुँचाने का निवेदन करती है किन्तु दभी रावण उसकी बात न मानकर अपने साथ सम्पूर्ण राक्षस जाति के बिनाश का कारण बनता है।

वाल्मीकि ने इन दो नारी चरित्रो के माध्यम से यह स्पष्ट कर दिया है कि स्त्री का कहा न मानने वाले का यही हश्र होता है। परिणाम स्वरूप नारी की महत्ता स्वय सिद्ध हो जाती है।

वाल्मीकि ने सीता के चरित्र मे नारी के समस्त गुणो को समाविष्ट कर दिया है। सीता एक आदर्श कन्या, आदर्श पुत्रवधू, आदर्श पत्नी एव एक आदर्श मॉ के रूप मे चित्रित की गई है। सीता का पुन वनवास उनके चरित्र को पूर्णत. निखार कर सामने ला देता है जब वे लक्ष्मण से कहती है कि मै जानती हूॅ कि आर्य मुझे निर्दोष मानते है किन्तु उन्होने राजधर्म के नाते मेरा परित्याग किया है उनसे कहना कि वे प्रजा को भाइयो के समान समझे और सभी के साथ न्याय करे इसी से राघव की कीर्ति बढेगी। मै उनकी कीर्ति मे लगे कलक को धोने का प्रयास करूॅगी। सीता का यह कारूणिक कथन उनके चरित्र को उदात्तता प्रदान करता है। सीता का त्याग और राम के प्रति दृढ विश्वास उनके चरित्र को अमर बना देता है।

वाल्मीकि की नारी दृष्टि अत्यधिक सम्माननीय है माता कौशल्या बडी उत्सुकता से प्रतीक्षा करती रहती है। कि सीता को आगे रथ मे बैठाकर राम वन से अयोध्या कब लौटेगे –

कदायोध्या महाबाहु पुरी वीर प्रवेक्ष्यति।
पुरस्कृत्य रथे सीता वृषभो गोवधूमिव।।[22]

वाल्मीकि की नारी दृष्टि अत्यन्त उत्कृष्ट है तथापि कुछ प्रसगो को लेकर उनकी नारी दृष्टि की आलोचना की जाती है–

रावण की कैद मे अपने दुर्भाग्य पर विलाप करती हुई सीता की उपमा वाल्मीकि एक ऐसी बालिका से देते है। जो निर्जन वन मे छोड दिये जाने के कारण क्रन्दन कर रही हो– कान्तार मध्ये विजने विसृष्टावालेवकन्या विललात् सीता।[23] क्या इस उक्ति को कोरी उपमा की मान लेनी चाहिए? क्या इससे यह ध्वनि नही निकलती कि वाल्मीकि के समय मे नवजात कन्याओ के वन मे त्याग दिये जाने की घटनाए भी हो जाया करती थी?[24]

जिस परिस्थिति मे सीता जनक को मिली, उससे भी इस प्रश्न पर प्रकाश पडता है। जब जनक यज्ञ क्षेत्र मे हल चला रहे थे, तब उन्हे पृथ्वी पर एक शिशु कन्या पडी हुई मिली, जिसके सारे अग धूल मे सने थे और जो मुठ्ठी बॉधे अपने हाथो को इधर–उधर फेक रही थी। आस पास उसका कही कोई रक्षक या अभिभावक नही था।[25] क्या इससे यह सकेत नही मिलता कि सीता किसी की परित्यक्ता कन्या थी जो जनक को सयोगवश पडी मिल गई? पौराणिक मान्यता के अनुसार सीता पृथ्वी फोडकर निकली थी– अह किलोतियता भित्वा जगती नृपते सुता, किन्तु यह बात तर्क गम्य नही जान पडती?

नारी की स्थिति और सत्ता को गिराने वाले अन्य कारणो मे तत्कालीन बहुपत्नी विवाह प्रथा प्रमुख थी यह नारी के नारकीय जीवन के लिए उत्तरदायी तो थी ही परिवार के विघटन का भी कारण यह बनती थी। कैकेयी के रूप में सौतेली मॉ का

---

[22] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ४३/११
[23] वाल्मीकि रामायण सुन्दरकाण्ड २८/२
[24] रामायणकालीन समाज – डा० शान्तिकुमार नानूव्यास पृष्ठ १५०
[25] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ११८/२६

आचार अयोध्या के राज परिवार मे तूफान ला देता है। वह दशरथ के मरण और राम के वनगमन का कारण बनती है? दासियो का उपहार स्वरूप भेजा जाना समाज मे नारी की स्थिति की दयनीयता की कथा खुद ही कह देता है। राक्षसो द्वारा नारी की इज्जत लूटना, देवताओ द्वारा मर्त्य लोक की सुन्दरियो की ओर आकृष्ट होना – जैसे इन्द्र द्वारा अहल्या का शील भग आदि नारी के गौरव को खण्डित करता है।[२६]

लका की युद्ध भूमि मे लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर राम ने विलाप करते हुए कहा था कि प्रत्येक देश मे स्त्रियॉ मिल सकती है प्रत्येक देश मे जाति भाई मिल सकते है परन्तु ऐसा कोई देश नही दिखायी देता जहॉ सहोदर भाई मिल सकता है।

देशे–देशे कलत्राणि देशे–देशे च वान्धवा ।
ते तु देशे न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदर ।।[२७]

इसी प्रकार वाल्मीकि रामायण मे नारी को दण्डित करने की बात कही गयी है–

दुर्जना शिल्पिनो दासा दुष्टश्च पटहा स्त्रिय ।
ताडिता मार्दव यान्ति न ते सत्कार भाजनम् ।।[२८]

भरत की माता की निन्दा स्त्री पुरुष सभी ने की है। कैकेयी ने वस्तुत अपना अधिकार पाना चाहा था, यद्यपि व्यापक दृष्टि से उसमे एक राज्य और देश का अहित था। परन्तु इस कृत्य के लिए सारी नारी जाति को लॉछन का भागी बनना पडा।[२९]

सीता के प्रसग मे लक्ष्मण ने भी समस्त स्त्री जाति की निन्दा की है

स्वभावस्त्वेष नारीणामेव लोकेषु दृश्यते।
विमुक्त धर्माश्चपलास्तीक्ष्णा भेद करा स्त्रिय ।।[३०]

---

[२६] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४८/२१–२२
[२७] वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड १०१/१४
[२८] रामनरेश त्रिपाठी तुलसी और उनका काव्य पृष्ठ १६२
[२९] वाल्मीकि और तुलसी साहित्यिक मूल्याकन – राम प्रकाश अग्रवाल पृष्ठ ५३६
[३०] वाल्मीकि और तुलसी साहित्यिक मूल्याकन – राम प्रकाश अग्रवाल पृष्ठ ५४१

इसी प्रकार का आरोप वाल्मीकि के ऊपर कैकेयी के चरित्र को लेकर लगाया गया है महाकवि वाल्मीकि राम वनवास के कारण निन्दा का पात्र बनी कैकेयी के विषय मे मौन ही रहे है उन्होने इस बात का प्रत्यक्ष उल्लेख नही किया कि भरत द्वारा भर्त्सना किये जाने पर वह पश्चाताप करती है या नही?[31] इस प्रकार कैकेयी के चरित्र को उठाने का प्रयास ही नही किया उसे बहेलिए का क्रूर वाण बना दिया।

इसी प्रकार सीता का राम द्वारा परित्याग अग्नि परीक्षा लेने के बाद उचित नही लगता लक्ष्मण से सीता कहती है कि– शुद्ध आचरण होने पर भी राजा ने मेरा त्याग क्यो किया? सौम्य मुनि जन पूँछेगे किस अपराध के कारण महात्मा राघव ने त्याग किया है? मै उनको क्या उत्तर दूँगी?[32] सीता के प्रश्न अनुत्तरित रह जाते है। क्या यह नारी का अपमान नही है?

इस प्रकार वाल्मीकि की नारी दृष्टि की अनेक विद्वानो ने आलोचना की है। यदि हम इन आलोचनाओ की गहराई से समीक्षा करे तो हमे ज्ञात होगा कि इन आलोचनाओ के आधार पर वाल्मीकि की नारी दृष्टि पर कोई विशेष प्रभाव नही पडता उनका नारी के प्रति दृष्टिकोण उच्चकोटि का एव सम्माननीय है।

जहाँ तक वाल्मीकि की कन्या के एकान्त अरण्य मे रोदन की बात है या सीता के प्राप्त होने की इसके उत्तर मे कहा जा सकता है कि कन्या का सम्मान रामायण काल मे था, यदि ऐसा न होता तो स्वय राजा जनक ऐसी कन्या को अपनी पालिता पुत्री क्यो बनाते? सीता को उन्होने जिस स्नेह और वात्सल्य की भावना से पाला वही इस आलोचना का समुचित एव पर्याप्त उत्तर है फिर ऐसी घटना यदि सभव हो भी जाये तो इसे अपवाद स्वरूप ही मानना चाहिए।

---

[31] रामकाव्यो मे नारी– डा० विद्या पृष्ठ ३७४ प्रथम सस्करण १९८५

[32] रामायण कथा – रघुनाथ सिह पृष्ठ २५४ प्रथम सस्करण १९६३

जहाँ तक बहुपत्नी प्रथा की बात है इसके उत्तर मे हम कह सकते है कि यह सर्वमान्य प्रथा नही थी। स्वय वाल्मीकि के नायक राम और सभी भाई एक पत्नीव्रती थे अत अपवाद स्वरूप बात को सिद्धान्त नही माना जा सकता।

विलाप की स्थिति मे राम द्वारा कहे गये कथन भावात्मक प्रसग है स्वय राम सभी स्त्रियो, सभी माताओ यहाँ तक पत्नी सीता का सम्मान करते है अत विलाप की स्थिति मे कहे गये कथन के आधार पर उनका मूल्यॉकन उचित नही है।

इसी प्रकार नारी चरित्रो के बारे मे की गयी टिप्पणियॉ चाहे वह दशरथ द्वारा हो या लक्ष्मण द्वारा सभी विशेष परिस्थितियो मे विशेष घटनाए सदर्भ मे उन्ही पात्र विशेष तक ही सीमित है अत इन्हे सभी नारी जाति के लिए मानना अनुचित है। कैकेयी के मुँह से पश्चाताप मूलक कथन न कराकर शायद वाल्मीकि ने कैकेयी को अर्न्तमुखी रखकर उसकी मलीनता एव मौन स्वीकृति को ही ज्यादा महत्व दिया है क्योकि सच्चा स्नेह तो हृदय की वस्तु है करने या वाणी मात्र से स्नेह नही झलक सकता है।

जहाँ तक सीता के पुन परित्याग की बात है इसके उत्तर मे वाल्मीकि रामायण मे सीता द्वारा कहे गये कथन ही पर्याप्त है। सीता लक्ष्मण से कहती है कि – राघव से कहना धर्मानुसार आचरण करे, जैसे भाइयो के साथ वर्ताव करते है वैसा ही प्रजा के साथ व्यवहार रखे। यही राज धर्म है इसी से दुनिया मे उज्ज्वल यश प्राप्त होगा।

यथा भ्रातृषु वर्तथास्तथा पौरेषु नित्यदा।[33]

सीता जानती थी कि राम ने उनका त्याग राजधर्म के नाते ही किया है न कि हृदय से किया है। इसका प्रमाण राम द्वारा अश्वमेध यज्ञ मे सीता की मूर्ति के साथ हवन आदि करना है। यदि राम के हृदय मे सच्चा प्रेम न होता तो वे दूसरी पटरानी के

---

[33] रामकथा के पात्र – भ० ह० राजूरकर पृष्ठ ३५२

साथ विवाह करके यज्ञ सस्कार न करते? अत नारी का सम्मान यहाँ पर भी सुरक्षित है।

वैदिक काल की नारी के उच्च आदर्श एव गरिमा वाल्मीकि रामायण की नारियो मे स्पष्टत झलकती है। कौशल्या, सुमित्रा, सीता, मन्दोदरी, तारा आदि नारी चरित्रो का स्वतत्र अस्तित्व है जो आर्य सस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।

तुलसी की नारी दृष्टि

तुलसी भारतीय सस्कृति के उन्नायक कवि है। भारतीय सस्कृति मे नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के अत्यन्त उच्च आदर्श वाले पवित्र भारत भूमि की सस्कृति और सभ्यता का प्रधान केन्द्र नारी ही रही है। 'नारी नरस्य समानधर्मा' कही गयी है। वैदिक काल की नारी शिक्षा, धर्म, कर्म आदि सभी मे पुरुषो से किसी भी स्तर पर पीछे नही थी। वाल्मीकि रामायण मे नारी के उत्कृष्ट स्वरूप का दर्शन होता है। यद्यपि मध्यकालीन युग मे नारी की दयनीय स्थिति हो जाती है और वह पतनशील अवस्था मे पहुँच जाती है किन्तु तुलसी की भावना नारी के प्रति उच्च कोटि की है। रामचरित मानस के प्रारम्भ मे ही तुलसी नारी की वन्दना श्रद्धा रूप मे करते है–

"भवानी शकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वासरुपिणौ।
याभ्या विना न पश्यन्ति सिद्धा स्वान्त स्थमीश्वरम्।।"[३४]

तुलसी सम्पूर्ण सृष्टि मे सीता और राम का दर्शन करते है

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुगपानी[३५]

तुलसी नारी के प्रति सम्माननीय दृष्टिकोण रखते है। तुलसी रामचरित मानस मे अयोध्या के सभी नर-नारियो की समान रूप से वन्दना करते है–

बदउँ अवध पुरी अति पावन। सरजू सरि कलि कलुष नसावनि।।
प्रनवउँ पुर नर-नारि बहोरी। ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी।।[३६]

तुलसी ने नर-नारियो को समान रूप से आदर दिया है। नारी के प्रति उनका दृष्टिकोण सकारात्मक है। तुलसी के प्रभु राम नर-नारियो पर समान रूप से स्नेह एव प्रेम रखते है। नारी को तुलसी ने राम-कथा के अध्ययन का अधिकारी घोषित किया–

---

[३४] रामचरित मानस बालकाण्ड श्लोक २
[३५] रामचरित मानस बालकाण्ड ८/१
[३६] रामचरित मानस बालकाण्ड १६/१

सदा सुनहि सादर नर-नारी । तेइ सुरवर मानस अधिकारी[37]

तुलसीदास कालीन समाज मे नारी की स्थिति अच्छी नही थी। कवि नारी की इस स्थिति से खिन्न था। सन्त तथा भक्त होने के कारण तुलसी सभी को उच्च नैतिक आदर्शों से युक्त देखना चाहते थे किन्तु स्थिति इसके पूर्णत प्रतिकूल थी। तुलसी वेदोक्त जीवन पद्धति के प्रतिकूल सामाजिक क्रिया-कलापो तथा नारियो के गिरते आचरण से व्यथित थे। वे नारियो के मर्यादा विरुद्ध आचरण के विरोधी थे। उन्हे सन्मार्ग पर लाने तथा उनके धर्मानुकूल आचरण के लिए प्रयत्नशील थे। किसी विपथगामी को सन्मार्ग पर लाने के लिए यह आवश्यक होता है कि उसके 'कार्य आवरण' की निन्दा करके, उसके निन्दनीय कर्मों से उसको अवगत कराया जाय। अन्य भक्त एव सन्त कवियो के समान तुलसी ने भी इसी उद्देश्य से तत्कालीन उन नारियो की ही निन्दा की है, जिनके आचरण धर्म, मर्यादा, प्रथा के प्रतिकूल थे। कवि ने इस प्रसग मे सभी नारियो की निन्दा नही की है। सामाजिक पृष्ठभूमि, नैतिक आदर्शों, मर्यादाओ के प्रतिकूल नारियो के आचरण, युग परिवेश आदि के कारण तुलसी ने विशेष परिस्थितियो मे कुछ विशेष प्रकार के नारी पात्रो की निन्दा की है। किन्तु आचरणशील एव सन्मार्ग पर चलने वाली नारी सदैव उनके लिए पूज्या रही है। कौशल्या एक आदर्श स्त्री, आदर्श माता एव आदर्श विमाता के रूप मे रामचरित मानस मे वर्णित है। कौशल्या का चित्रण तुलसी ने उच्च भाव-भूमि पर उतारा है। वह पातिव्रत्य धर्म का पालन करने वाली है। वह धर्मानुसार आचरण करने वाली है। जब राम माता कौशल्या से वन जाने की अनुमति मॉगते है उस समय कौशल्या विषम परिस्थिति मे भी धर्मानुसार निर्णय लेती है और राम के फैसले को उचित ठहराती है–

धरम सनेह उभय मति घेरी। भइ गति सॉप छुछुदरि केरी।।

राखउँ सुतहि करउँ अनुरोधू। धरमु जाइ अरु बधु विरोधू।।

x x x

बहुरि समुझि तिय धरमु सयानी। रामु भरतु दोउ सुत सम जानी।।

---

[37] रामचरित मानस बालकाण्ड ३८/१

तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका।।[३८]

सुमित्रा का चित्रण तुलसी ने त्यागमयी आदर्श माता के रूप मे किया है। धन्य है सुमित्रा जो अपने पुत्र को राम की सेवा मे सहर्ष वन भेज देती है और उन्हे जो शिक्षा देती है वह भातृ-प्रेम का अनूठा मिसाल है।

तात तुम्हारि मातु बैदेही। पिता रामु सब भॉति सनेही।।
अवध तहॉ जहॅ राम निवासू। तहॅइँ दिवसु जहॅ भानु प्रकासू।।
जौ पै सीय रामु बन जाही। अवध तुम्हार काजु कछु नाही।।[३९]

सीता का चरित्र आदर्श भारतीय नारी का प्रतीक है। तुलसी ने सीता के सौन्दर्य को अपूर्व बताया है। सीता का सौन्दर्य सुन्दरता को भी सुन्दर बनाने वाला है।

सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई। छबि गृहॅ दीपसिखा जनु बरई।।[४०]

सीता एक आदर्श पुत्री, आदर्श पत्नी एव आदर्श पुत्रवधू है। राजा जनक सीता को पुत्री रूप मे पाकर धन्य हो जाते है। कौशल्या पुत्र-वधू रूप मे पाकर प्रसन्न होती है। सीता वन जाते समय कौशल्या से कहती है कि हे माता सेवा के अवसर पर विधाता के प्रतिकूल हो जाने के कारण मै आपकी सेवा नही कर पा रही हूँ, इसके लिए मुझे क्षमा करना। सीता के निवेदन मे सेवाभाव का आग्रह है। पत्नी रूप मे तो सीता का चरित्र महान है ही। पति के साथ ही वह सुख का अनुभव करती है। पति-वियोग के समय भी वह राम के प्रति अटूट प्रेम एव विश्वास रखती है। उसी विश्वास की दृढता से वे अनेक दु खो को सहन करती है और अन्त मे पुन राम को प्राप्त करती है।

तुलसी ने तारा, मन्दोदरी आदि नारी चरित्रो के माध्यम से भी नारी के प्रति अपना सकारात्मक दृष्टिकोण ही व्यक्त किया है। मन्दोदरी और तारा को उच्च कोटि की विदुषी एव नीति तथा धर्म निपुणा के रूप मे चित्रित किया है। इस प्रकार तुलसी ने

---

[३८] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५५/२, ३ ४
[३९] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ७४/१, २
[४०] रामचरित मानस बालकाण्ड २३०/३

आर्य सस्कृति, वानरी सस्कृति एव आर्येतर सस्कृतियो का एक साथ वर्णन किया है। सभी सस्कृतियो के आदर्श नारी चरित्रो का गुणगान तुलसी ने किया है। तुलसी मर्यादावादी, नैतिकतावादी एव वेदानुसार विहित आदर्शों के समर्थक थे। इसके विपरोत आचरण करने वालो की तुलसी ने निदा अवश्य की है क्योकि वे इस प्रकार के आचरण के विरोधी थे। तुलसी के नारी विषयक दृष्टिकोण के सबध मे अधिकतर विद्वानो ने उन पर 'नारी-निन्दक' का आरोप लगाया है किन्तु तर्क पूर्ण विवेचनोपरान्त यह आरोप निर्मूल एव निराधार सिद्ध होता है।

रामचरित मानस मे विभिन्न प्रसगो मे ऐसी अनेक उक्तियॉ और पक्तियॉ है जिनसे ऐसा प्रतीत होता है कि तुलसी ने नारी निदा की है जैसे शकर के मुख से निकली उक्ति 'सुनहु सती तब नारि सुभाऊ। ससय अस न धरिअ उर काऊ।।'[४१] इसी प्रकार पार्वती के मन मे "नारि सहज जड अग्य"[४२] का विचार आया है। इसी प्रकार अयोध्याकाण्ड मे 'काह न करे अबला प्रबल केहि जग कालु न खाइ।'[४३] इसी प्रकार भरत का कैकेयी के प्रति कहा गया कथन– बिधिहुँ न नारि हृदय गति जानी'[४४] इसी प्रकार प्रतिनायक रावण का कथन "नारि सुभाउ सत्य सब कहही। अवगुन आठ सदा उर रहही।।'[४५] इसी प्रकार शबरी का कथन "अधम ते अधम, अधम अति नारी"[४६] तथा अहल्या का कथन "मै नारि अपावन प्रभु जग पावन"[४७] तथा समुद्र के द्वारा कहा गया कथन 'ढोल, गवार सूद्र पशु नारी सकल ताडना के अधिकारी'[४८] और भगवान राम द्वारा कहा गया कथन–

बरु अपजस सहतेउँ जग माही। नारि हानि विसेष छति नाही।।[४९]

---

[४१] रामचरित मानस बालकाण्ड ५१/३

[४२] रामचरित मानस बालाकाण्ड ५७ क दोहा

[४३] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ४७ दोहा

[४४] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड १६२/२

[४५] रामचरित मानस लकाकाण्ड १६/१

[४६] रामचरित मानस अरण्यकाण्ड ३६/२

[४७] रामचरित मानस बालकाण्ड २११/छन्द २

[४८] रामचरित मानस सुन्दरकाण्ड ५६/३

[४९] रामचरित मानस लकाकाण्ड ६१/६

रामचरित मानस की ऐसी अनेक उक्तियॉ है इन्ही उक्तियो के आधार पर विद्वानो ने तुलसी की नारी दृष्टि की आलोचना की है और तुलसी को नारी निदक कहा है।

डा० माताप्रसाद गुप्त के अनुसार "प्रत्येक युग के कलाकार नारी चित्रण मे प्राय उदार पाये जाते है किन्तु नारी-चित्रण मे तुलसीदास बेहद अनुदार है।"[५०]

तुलसी के कतिपय आलोचक अतिशय प्रगतिशील, आधुनिक या मार्क्सवादी सिद्धान्तो के प्रति प्रतिवद्धता होने के कारण जिस प्रकार की विचारधारा की प्रस्तुति करते है वह निश्चय ही खण्डित दृष्टि का परिणाम है। इस सदर्भ मे डा० रामचन्द्र तिवारी का मत उल्लेखनीय है "भक्त साधक, तुलसी ने नारी जाति को साक्षात् मायामूर्ति रूप मे देखा। निश्चय ही उनका नारी विषयक दृष्टिकोण स्वस्थ नही कहा जा सकता, किन्तु ध्यान रखना होगा कि यह तुलसी का नही मध्ययुग का नारी विषयक दृष्टिकोण है। तुलसी सामान्य नारी की मर्यादा के निर्धारण मे अपने युग की सीमाओ से आगे न जा सके, यह निर्विवाद है। वैसे उन्हे इस बात की गहरी पीडा थी कि नारी सभी स्तरो पर पराधीन है। वे कहते है "कत विधि सृजी नारि जग माही। पराधीन सुख सपनेहु नाही।।" किन्तु इस पराधीनता से मुक्ति का कोई उपाय शायद उनके पास नही था। सब मिलाकर देखा जाय तो निसदेह तुलसी दास पारपरिक मर्यादावाद और वर्णव्यवस्था के समर्थक है। उनका पारिवारिक जीवन का आदर्श और नारी विषयक चिन्तन भी उसी व्यवस्था का अग है। लेकिन ध्यान रखना होगा वे पुनरुत्थानवादी और रुढि पोषक नही है।"[५१]

डा० रामचन्द्र तिवारी के कथन परस्पर विरोधी प्रतीत होते है। एक तरफ वे तुलसी के दृष्टिकोण को स्वस्थ नही मानते है वही दूसरी तरफ वे तुलसी को दोषमुक्त करते हुए मध्यकालीन युग परिस्थतियो को इसके लिए दोषी ठहराते है। यह बात सत्य

---

[५०] तुलसी दास, डा० माता प्रसाद गुप्त पृष्ठ २१८

[५१] कथा राम कै गूढ – डा० रामचन्द्र तिवारी पृष्ठ ११२

है कि तुलसी ने नारी को 'माया' रूप मे वर्णित किया है किन्तु 'माया' के भी दो भेद तुलसी ने किया है– 'विद्यारुपामाया और अविद्यारुपामाया'। अविद्यारुपामाया ही नारी का कामिनी या प्रमदा रुप है तुलसी ने नारी के इसी माया रूप (प्रमदा या अविद्यारुपा) की सर्वत्र निदा की है। तुलसी तो सीता को विष्णु की माया के रूप मे स्थापित करते है अत तुलसी विद्यारुपा माया की निदा कभी नही करते है।

श्रुति सेतु पालक राम तुम्ह जगदीस माया जानकी[५२]

डा० तिवारी का यह भी कहना सत्य है कि मध्य युग मे नारी की स्थिति अच्छी नही थी उसके प्रति पतनशील समाज सवेदनशील नही था। निश्चित रूप से मध्यकाल मे नारी की स्थिति पतनगामी एव दयनीय थी, किन्तु तुलसी का नारी दृष्टिकोण किसी युग की सीमा मे वद्ध नही था। तुलसी के विचार प्रगतिशील है और वे एक कालजयी रचनाकार है। तुलसी ने पतनशील समाज के समक्ष कौशल्या, सीता, आदि नारियो के आदर्श को स्थपित किया। तुलसी ने न केवल कौशल्या, सीता के आदर्श का ही वर्णन किया बल्कि राक्षसी समाज की नारी मन्दोदरी, त्रिजटा तथा वानरी समाज की तारा को भी उच्च आदर्श के साथ उपस्थित किया है। नारी-पराधीनता के समर्थक तुलसी उस अर्थ मे नही है जिस अर्थ मे आलोचक उनकी आलोचना करते है तुलसी मर्यादावादी एव सस्कृति के पोषक कवि है। उन्होने विश्रृखलित समाज को स्थिर एव मजबूत बनाने के लिए वैदिक परम्परा के उच्च आदर्शो, लोकसम्मत विचारो एव धर्मानुकूल आचरणो पर बल दिया। वैवाहिक सबध को मजबूत आधार देने के लिए ही वे नारी को पातिव्रत्य धर्म एव सेवा भावना की शिक्षा देते है। नारी का अपने पति के प्रति समर्पण का भाव उसकी पराधीनता का द्योतक नही बल्कि उसके प्रेम और विश्वास का दृढ आधार है। तुलसी नारी और पुरुष दोनो से ही एकनिष्ठ प्रेम की अपेक्षा रखते है। राम और सीता के चरित्र के माध्यम से उन्होने इसकी पुष्टि की है। पतनशील समाज मे नारी को अर्द्धांगिनी का दर्जा दिलाने के लिए ही वे वैदिक परम्परा, सस्कृति एव मर्यादावादी

---

[५२] तुलसी एव स्वयभू के नारी पात्र – योगेन्द्र शर्मा 'अरुण' पृष्ठ २४५

विचारधारा का समर्थन करते है। तुलसी वैदिक कालीन वैवाहिक परम्परा एव सस्कृति का समर्थन करते है जिसके अनुसार पति (भर्ता) का परमकर्तव्य है कि वह अपनी पत्नी (भार्या) का भरण-पोषण करे। वाल्मीकि रामायण मे वशिष्ठ ने कहा है– पत्नी पति की आत्मा है।

आत्मा हि दारा सर्वेषा दारा सग्रहवर्तिनाम्।[५३]

इस प्रकार तुलसी अपनी युग सीमा का अतिक्रमण कर नारी को उत्कृष्ट एव सम्माननीय रूप मे स्थापित करते है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तुलसी को महान कवि घोषित करते है। शुक्ल जी लोकधर्म का पालन करने वाले आचार्य है। इसलिए उन्होने सामाजिक चेतना को विशेष महत्ता प्रदान की है। तुलसी की, उनके अनुसार समाज रक्षा, समाज कल्याण, देश-प्रेम, लोक मगल के साधन रूप है। इसी प्रसग मे उन्होने सामाजिक सवेदना की दृष्टि से तुलसीदास पर लगाये जाने वाले कतिपय आक्षेपो का उत्तर दिया है यथा ब्राह्मणो की प्रतिष्ठा, शूद्रो की अवमानना तथा नारी निन्दा। शुक्ल जी के अनुसार इन तीनो आक्षेपो के मूल मे तुलसी की कवि दृष्टि 'लोकनीति एव मर्यादा से अनुप्राणित थी। तुलसी की नारी निन्दा के सन्दर्भ मे उनका मत है कि तुलसी दास विरक्त थे और विरक्त व्यक्ति नारी के कामिनी रूप से दूर ही रहना चाहता है। इसीलिए उन्होने नारी की आलोचना की है। शुक्ल जी गोस्वामी जी द्वारा प्रतिपादित नारी की स्थिति को सिद्धान्तवाद नही अर्थवाद मानते है। यो 'ढोल गवार सूद्र पसु नारी। सकल ताडना के अधिकारी' इस चौपाई मे नारी का समावेश शुक्ल जी को भाता नही, लेकिन उन्होने लिखा है– 'स्त्री का समावेश भी सुरुचि विरुद्ध लगता है पर वैरागी समझकर उनकी बात का बुरा न मानना चाहिए।[५४]

---

[५३] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ३७/२४

[५४] रामचन्द शुक्ल गोस्वामी तुलसीदास पृष्ठ ४२

डा० राम विलास शर्मा के अनुसार मध्यकालीन सास्कृतिक परिवेश मे तुलसी जितने प्रगतिशील कवि थे उतना कोई अन्य कवि नही।

नारी-पराधीनता के सदर्भ मे डा० शर्मा ने स्पष्ट किया है कि तुलसी नारी पराधीनता के समर्थक नही है, बल्कि उनके प्रति तुलसी की गहरी सहानुभूति है। तुलसी ने स्त्रियो को राम के सान्निध्य मे बार-बार दिखाया है। राम वन गमन के प्रसग मे स्त्रियो को ही यह पूँछने का सौभाग्य मिलता है— कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखि कहहु को आहि तुम्हारे।' इसी प्रकार जब 'राम, सीता और लक्ष्मण वन से वापस आते है तो उनके स्वागत मे स्त्रियॉ ही आगे आती है। तुलसी की इस पक्ति को उद्धृत करते हुए 'कत विधि सृजी नारि जग माही – पराधीन सपनेहु सुख नाही' डा० शर्मा ने सिद्ध किया है कि नारी पराधीनता पर तुलसी की हार्दिक सहानुभूति स्त्री जाति के साथ है क्योकि तत्कालीन सामन्तीय वातावरण मे 'ऐसी परिस्थितियॉ नही थी कि पराधीनता के पाश तोडे जा सके। वह केवल इस पराधीनता पर क्षोभ प्रकट कर सकते थे और ऐसे समाज का स्वप्न देख सकते थे। जिसमे पुरुष भी एक नारी व्रतधारी हो। राम के चरित्र मे उन्होने यही दिखाया है[५५]।

आधुनिकता बोध की दृष्टि से तुलसी की नारी विषयक धारणा की निन्दा के सदर्भ मे तुलसी साहित्य के विद्वान अध्येताओ के ही सदर्भ मे यह कहा जा सकता है कि तुलसी नारी निन्दक नही है।

श्री विष्णुकान्त शास्त्री के अनुसार "परम्परा के प्रति श्रद्धा रखते हुए भी तुलसी ने अपनी 'समुझि' के आधार पर परम्परित रामकथा प्रसगो – सीता निर्वासन और शबूक बध का निषेध किया और देववाणी सस्कृत के स्थान पर जनभाषा की प्रतिष्ठा की। लेकिन इसका मतलब यह नही कि तुलसी अपनी परम्परा का सर्वथा निषेध करते है। दरअसल तुलसी का साहित्य आधुनिकता और परम्परा का सन्तुलन का साहित्य है।"[५६]

---

[५५] डा० रामविलास शर्मा – परम्परा का मूल्याकन पृष्ठ ८८

[५६] आधुनिकता की चुनौती और तुलसीदास शीर्षक लेख विष्णुकान्त शास्त्री पृष्ठ ३६६

शास्त्री जी ने अपने निष्कर्ष रूप मे कहा है 'सच्चाई यह है कि तुलसी दास मध्यकाल मे भारतीय सस्कृति के सबसे बडे सर्जनात्मक पुनर्व्याख्याकार थे।'[५७]

विद्वानो के विचारो से यह निष्कर्ष निकलता है कि तुलसी नारी पराधीनता के समर्थक नही थे और न ही उनका प्रयोजन नारी निन्दा करना था। तुलसी मध्यकालीन परिवेश मे भी नारी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते है। कौशल्या, सीता, सुमित्रा, तारा, मन्दोदरी आदि नारी पात्रो के द्वारा नारी के आदर्श चरित्र को उपस्थित करते है।

तुलसी की उक्तियो की समीक्षा के द्वारा भी यह बात सिद्ध होती है। शकर पार्वती से कहते है कि नारी स्वभाववश शकालु होती है किन्तु पार्वती की शका और उसके समाधान द्वारा ही तुलसी राम मे ब्रह्मत्व की स्थापना करते है। स्वय शकर ने कहा है–

तुम्ह रघुबीर चरन अनुरागी। कीन्हिहु प्रस्न जगत हित लागी।
राम कृपा ते पारबति सपनेहुँ तव मन माहि।
सोक मोह सदेह भ्रम मम विचार कछु नाहि।।[५८]

इसी प्रकार पार्वती द्वारा स्वय को जड अग्य सोचना, यह नारी की विनम्रता है और तुलसी ने पार्वती के मुख से शकर के समक्ष अपने किये गये अपराध बोध के रूप मे यह स्वीकारोक्ति करवाया है।

अयोध्याकाण्ड मे आयी उक्ति "काह न करै अबला प्रबल' यह विशेष परिस्थति मे कैकेयी के द्वारा राम को वन भेजने के कारण जनमानस द्वारा ऐसी प्रतिक्रिया की गयी है। वैसे भी इस प्रकार के विचार प्राकृत ग्रथ स्वयभू के परम चरित्र मे भी वर्णित है।

---

[५७] आधुनिकता की चुनौती और तुलसीदास शीर्षक लेख विष्णुकान्त शास्त्री पृष्ठ ३६६
[५८] रामचरित मानस बालकाण्ड ११२/४ तथा दोहा ११२

शबरी के द्वारा कही गयी पक्ति अधम ते अधम अधम अति नारी। उसकी भक्ति भावना की दैन्यता का भाव इसके मूल मे है। शबरी राम के दर्शन करके अपनी मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त करती है।

इसी प्रकार समर्पण का भाव अहल्या के कथनो मे भी है जिसका उद्धार राम के द्वारा किया जाता है। रावण के कथन नारि स्वभाव सत्य सब कहही "अवगुन आठ सदा उर रहही। इसके उत्तर मे यह कहा जा सकता है कि यह कथन रावण के द्वारा कहा गया है जो स्वय प्रमादी है और अपनी पत्नी मन्दोदरी की सलाह नही मानकर स्वय के सर्वनाश को आमन्त्रित करता है। हताश रावण की बातो को तुलसी की नारी विषयक मान्यताओ का आधार नही माना जा सकता।

तुलसी भगवान राम से बालि प्रसग मे कहलवाते है–

मूढ तोहि अतिसय अभिमाना। नारि सिखावनि धरसि न काना।।[५६]

तुलसी प्रभु राम के द्वारा नारी की सलाह को महत्व प्रदान करते वस्तुत नारी को महिमा मण्डित करते है।

इसी प्रकार भरत ने अत्यन्त दु:खी स्थिति मे कैकेयी को लक्ष्य करके 'विधिहुँ न नारि हृदय गति जानी' कहा है। जिस भरत के पिता की मृत्यु हो गयी उनके भाई राम, लक्ष्मण और सीता के साथ वन चले गये ऐसी विषम स्थिति मे भरत किकर्तव्यविमूढ हो जाते है। ऐसी विक्षिप्त स्थिति, क्रोधावेश मे कैकेयी के प्रति कठोर वचनो का निकलना स्वाभाविक ही था। ऐसी स्थिति मे विशेष परिस्थितियो मे विशेष पात्र को लक्ष्य करके कही गयी बात को तुलसी की नारी विषयक दृष्टि का मापदण्ड नही बनाया जा सकता है।

---

[५६] रामचरित मानस किष्किन्धाकाण्ड ६/५

इसी प्रकार प्रभु राम भाई लक्ष्मण के वियोग मे अत्यधिक भाव-विह्वल होकर नारी के प्रति कथन करते है जिसे हम परिस्थितियो का मूल्याकन किये बिना तुलसी की नारी दृष्टि को मापने लगते है। राम ने एक पत्नीव्रत के रूप मे सीता से अनन्य प्रेम किया उन्ही सीता की पुन प्राप्ति के लिए रावण जैसे शक्तिशाली राक्षस से वैर मोल लिया। वही राम जो सीता के लिए विलाप करते हुए पशु पक्षियो तक से पूँछते है। आखिर राम के इस अनन्य, एकनिष्ठ सीता के लिए सञ्चित प्रेम का मूल्याकन हम न करके, मात्र विक्षिप्तावस्था मे कहे गये कथन को ही आधार क्यो बनाते है। तुलसी की नारी दृष्टि को व्यापक आधार पर परख कर निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

एकाध उक्तियो के आधार पर तुलसी की नारी दृष्टि का मूल्याकन उचित नही प्रतीत होता है।

समुद्र के कथन को आधार बनाकर 'ढोल गॅवार सूद्र पसु नारी। सकल ताडना के अधिकारी।" तुलसी की नारी दृष्टि को मापने की चेष्टा की जाती है। समुद्र स्वय जड है अत उसके कथनो को आधार बनाकर तुलसी की नारी दृष्टि का मूल्याकन करना अनुचित है। 'ताडना' शब्द का अर्थ अनुशासित और शिक्षित के रूप मे अधिक समीचीन लगता है। क्योकि ढोल अनुशासित और शिक्षित के रूप मे अधिक समीचीन लगता है। क्योकि ढोल अनुशासित एव लयवद्ध ढग से बजाने पर ही मधुर आवाज देती है। गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित रामचरित मानस (टीकाकार हनुमान प्रसाद पोद्दार) मे ताडना का अर्थ 'शिक्षा ही दिया गया है।' 'ढोल, गॅवार, शूद्र, पशु और नारी – ये सब शिक्षा के अधिकारी है"[६०]

तुलसी भक्त कवि थे। तुलसी ने नारी के प्रमदा या कामिनी रूप की सदैव आलोचना की है। तुलसी ने नारी को माया कहा है। "माया दो प्रकार की है विद्यारुपा और अविद्यारुपा। मायारुपा होने के कारण नारी के भी दो रूप है विद्या रूपा और

---

[६०] रामचरित मानस हनुमान प्रसाद पोद्दार – गीता प्रेस गोरखपुर स० २०५४ चौवनावॉ

अविद्यारुपा। पुरुष को काम विकल कर देने वाली युवती अविद्यारुपा है। वही निदनीय या जुगुप्सनीय है। तुलसी के नारी पात्रो मे कैकेयी और शूर्पणखा इसी प्रकार की नारियॉ है। अनसूया, कौशल्या आदि विद्यारुपा नारियॉ है अत आदरणीय है। सीता सम्पूर्ण माया है। वे विद्यारुपा भी है और अविद्यारुपा भी। रावण आदि अभिमानियो के लिए वे अविद्यारुपा है। इस अविद्यामाया से अलग रहकर रावण सुखी था, इसके सबध से ही उसका सत्यानाश हुआ। हनुमान के लिए सीता विद्यामाया है।"[६१]

तुलसी ने अविद्यारुपा माया की निदा की है क्योकि यह मति को भ्रष्ट कर देती है और व्यक्ति को सर्वनाश की तरफ ले जाती है।

इस प्रकार हम देखते है कि तुलसी की नारी भावना अत्यधिक श्रेष्ठ एव उच्चकोटि की है। तुलसी का रामचरित मानस नारी मुक्ति का एक आन्दोलन है जिसमे नारी के प्रेम, त्याग एव आदर्श की कल्पना को असली जामा पहनाया गया है। जिस तुलसी का आदर्श सीता, कौशल्या, सुमित्रा, अनुसूया, शबरी, मन्दोदरी जैसी नारी पात्र हो। वे भला नारी निन्दक कैसे कहे जा सकते है। जो सभी उपमानो को छोडकर धनुष की कठोरता के प्रसग मे नारी को उपमान बनाकर उसकी दृढता को मजबूत आधार देते है–

डगहि न सभु सरासन कैसे। कामी बचन सती मन जैसे।।[६२]

निष्कर्ष रूप मे कहा जा सकता है कि गोस्वामी जी का कोई पूर्वाग्रह नारियो के प्रति नही था अन्यथा वे रामचरित मानस मे नारी के आदर्श चरित्रो की सृष्टि उच्च भाव-भूमि पर क्यो करते? उन्होने नारी के चरित्र को सदैव उठाने की चेष्टा की है।

उनकी पुरवासिनी, ग्रामवासिनी, वनवासिनी (शबरी) यहॉ तक राक्षसी मन्दोदरी, त्रिजटा तथा वानर नारी तारा आदि उत्कृष्ट शील समन्वित देवियो के रूप मे चित्रित

---

[६१] तुलसी काव्य मीमासा – उदयभानु सिह – पृष्ठ ३४७
[६२] रामचरित मानस बालकाण्ड २५१/१

हुई है। उनकी राक्षसियॉ भी नीति-निपुणा, धर्म-प्राणा, भक्ति-परायणा है। मन्दोदरी की सीख और त्रिजटा का आचरण इसके प्रमाण है।

गोस्वामी जी के रामचरित मानस की नारिया पत्नी, माता, वधू के रूप मे सारे परिवार एव समाज को एकता के प्रेमसूत्र मे बॉधती है। माता कौशल्या ने तिय धरम का जो आदर्श अपने आचरण एव चरित्र मे उपस्थित किया है वह भारतीय चिन्तन परम्परा के पूर्णत अनुरूप है और इस कारण सदैव अनुकरणीय है। वधू और पत्नी के रूप मे सीता युगो-युगो तक भारतीय नारी के आदर्श का प्रतिनिधित्व करती रहेगी। नि सदेह तुलसी की नारी दृष्टि उत्कृष्ट एव सम्माननीय है।

मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि

भारतीय सस्कृति एव दर्शन मे नारी को सदा ही विशिष्ट स्थान मिला है। हिन्दू धर्म–कथाओ मे अर्द्धनारीश्वर की कल्पना नारी की महत्ता तथा प्रधानता की द्योतक है। नर की सृष्टि नारी के सहयोग के बिना अपूर्ण है। अपनी सर्जन प्रतिभा तथा कला से नारी उसे पूर्णता और अमरता प्रदान करती है। कोमल सवेदनशीला नारी, सामाजिक व्यवस्था का एक आवश्यक अग है। सभ्यता एव सस्कृति के निर्माण मे उसने क्रियात्मक योग दिया है। उसकी लोरी के कोमल स्वर मे राष्ट्र नायको को कर्तव्य निर्देश देने की क्षमता है। तथा नारी के ही पालना झुलाने वाले करो मे विश्व पर शासन करने की शक्ति सन्निहित है। आत्म गौरव पूर्ण माता ही बालक मे कर्तव्य पालन, आत्म सम्मान और उत्सर्ग की उदात्त भावनाओ का उन्मेष कर सकती है। अत नारी का सम्मान ही देश और जाति के लिए हितकर है।

मैथिलीशरण गुप्त भारतीय सस्कृति के आख्याता है, अत उनकी नारी पूर्ण भारतीय आदर्शो की प्रतिमूर्ति होकर हमारे सामने आती है। उसका क्षेत्र घर है और आसन पुरूष का हृदय मदिर। इस रूप मे नारी के स्वतन्त्र व्यक्तित्व का हनन नही हुआ है। साकेत के नारी पात्र अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखते है। सीता मे पति भक्ति की कमी नही किन्तु उनके जीवन का भी अपना उद्देश्य है। उर्मिला माडवी और श्रुतिकीर्ति मे आत्म सम्मान एव त्याग की भावना का अनोखा संगम है। कौशल्या मे कोमल वात्सल्य एव मॉ का भावुक हृदय साकार हो गया है, किन्तु सुमित्रा मे वीरता की भावनाऍ विद्यमान है। कैकेयी स्वय अपने दोष का परिहार करने मे समर्थ है। साकेत के नारी पात्रो मे स्वय नारीत्व के गौरव की भावनाऍ विद्यमान है और इसके लिए वे सदैव सजग है। साकेत के प्रथम सर्ग मे सभाषण के मध्य लक्ष्मण उर्मिला से कहते है–

धन्य जो इस या योग्यता के पास हूँ,

किन्तु मै तो तुम्हारा दास हूँ।[६३]

उर्मिला जो उत्तर देती है उसमे शिष्टाचार के साथ नारी स्वाभिमान का भी पुट मिलता है–

दास बनने का बहाना किसलिए? क्या मुझे दासी कहाना, इसलिए।

देव होकर तुम सदा मेरे रहो, और देवी ही मुझे रखो अहो।[६४]

मैथिलीशरण गुप्त की नारी हीन न होकर मान–गर्विता है। वह पुरूषो के लिए बाधक नही बल्कि साधक है। स्त्री के ससर्ग से पुरूष पूर्णता प्राप्त करता है। जीवन स्वर्ग बन जाता है। उर्मिला और लक्ष्मण के सवाद मे गुप्त जी ने इस भाव को व्यक्त किया है–

भूमि के कोटर, गुहा गिरि, गर्त भी, शून्यता नभ की, सलिल आवर्त भी,

प्रेयसी, किसके सहज–ससर्ग से, दीखते है प्राणियो को स्वर्ग से?

x x x

कल्प वल्ली सी तुम्ही चलती हुई, बॉटती हो दिव्य फल फलती हुई।[६५]

साकेत मे नारी कल्पलता के समान है, जो अपने अनुराग और त्याग के फलो से जीवन को सरस और मधुर बनाती है। इस अनुराग और त्याग मे कायर या दीनता नही यह उसका स्वाभाविक गुण है। अपने अधिकारो के लिए वह कदम उठा सकती है। सुमित्रा अधिकारो की गर्व पूर्ण व्याख्या करती है– कौशल्या जब कैकेयी से राम की भीख मॉगने के लिए तैयार होती है तब सुमित्रा उन्हे ऐसा करने से रोकती है और गर्व के साथ कहती है–

---

[६३] साकेत – मैथिली शरण गुप्त सर्ग प्रथम पृष्ठ ८

[६४] साकेत – मैथिली शरण गुप्त सर्ग प्रथम पृष्ठ ८

[६५] रामचरित मानस और साकेत तुलनात्मक अध्ययन – श्री परमलाल गुप्त पृष्ठ ११४

स्वत्वो की भिक्षा कैसी, दूर रहे इच्छा ऐसी
पाकर वशोचित शिक्षा, मॉगेगी हम क्यो भिक्षा।
प्राप्य याचना वर्जित है, आप भुजो से अर्जित है,
हम पर भाग नही लेगी, अपना त्याग नही देगी।[६६]

मैथिलीशरण गुप्त जी के अनुसार दाम्पत्य जीवन की सफलता दोनो ओर के मधुर सबध पर निर्भर है। इसके लिए दोनो पक्षो से समान त्याग भी अपेक्षित है स्त्री केवल उपभोग की वस्तु नही, वह पुरूष की अर्द्धांगिनी है। वह सुख–दुख मे पुरूष के साथ है। त्याग मे भी वह पुरूष के साथ है। साकेत की सीता यही तर्क रखती है–

जो गौरव लेकर स्वामी होते हो कानन गामी,
उसमे अर्द्धभाग मेरा करो न आज त्याग मेरा।[६७]

साकेत की नारी पुरूष के साथ जगल मे भी मगल की कामना करती है। वह पति के साथ रहकर अपना पतिव्रत–धर्म पालन करते हुए गौरव का अनुभव करती है। सीता के कथन से इस बात की पुष्टि होती है–

स्वर्ग बनेगा अब वन मे! धर्मधारिणी हूँगी मै।
वन विहारिणी हूँगी मै।[६८]

भारतीय नारी एक योग्य पुरूष का वरण करके पूर्ण समर्पण कर निश्चिन्त हो जाती है पति का सुख–दु ख ही उसका सुख–दु ख हो जाता है वह अपनी चिता भूलकर पति की चिता मे व्यस्त रहती है। यदि पुरूष भी उसकी चिता न करे तो उसे कोई शिकायत नही। यह नारी का महान त्याग है इसकी स्वीकृति मे ही पुरूष कृतकृत्य है–

[६६] साकेत – मैथिली शरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४८
[६७] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५७
[६८] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५०

निश्चिन्त नारियॉ आत्म समर्पण करके,

स्वीकृति मे ही कृतकृत्य भाव है नर के।[६६]

साकेत की नारी मे वात्सल्य, पतिपरायणता, त्यागशीलता, क्षमाशीलता तथा अन्य कुटुम्बियो के प्रति गौरवपूर्ण पवित्र भावनाओ की कमी नही है। कौशल्या का भरत के प्रति स्नेह एव वात्सल्य राम से तनिक भी कम नही है। कौशल्या कहती है—

भानुकुल के निष्कलक मयक! मिल गया मेरा मुझे तू राम,

तू ही वही है, भिन्न केवल नाम।[७०]

उर्मिला भातृप्रेम के उच्च आदर्श का सम्मान करती हुई लक्ष्मण के मार्ग मे बाधक नही बनी उन्हे राम के साथ सहर्ष जाने दिया उसी के शब्दो मे—

यह भातृ स्नेह न ऊना हो,

लोगो के लिए नमूना हो।"[७१]

साकेत मे नारी को पुरूषो द्वारा सदैव सम्मान दिया गया है। लक्ष्मण के इस कथन से स्पष्ट है, जहॉ पर वे उर्मिला से कहते है कि —

वन मे तनिक तपस्या करके, बनने दो मुझको निज योग्य,

भाभी की भागिनी तुम मेरे अर्थ नही केवल उपभोग्य।[७२]

साकेत मे स्त्री को कमजोर और अबला के रूप मे मैथिलीशरण गुप्त ने चित्रित नही किया है, बल्कि साकेत की नारी वीरता की प्रतिमूर्ति के रूप मे चित्रित की गयी है। अयोध्या के सैनिक आह्वान पर नारियॉ पुरूषो से निर्भीक स्वर मे विजयी दर्प के साथ कहती है—

---

[६६] साकेत विचार और विश्लेषण पृष्ठ ६५
[७०] साकेत — मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ७ पृष्ठ १०७
[७१] रामचरित मानस और साकेत तुलनात्मक अध्ययन — श्री परमलाल गुप्त पृष्ठ ११६
[७२] साकेत अष्टम सर्ग पृष्ठ १४२

पुरूषवेष मे साथ चलूँगी मै भी प्यारे,

राम जानकी सग गये हम क्यो हो न्यारे।[७३]

इसी प्रकार सुमित्रा शत्रुघ्न को युद्ध मे सहर्ष भेजती है कौशल्या के शत्रुघ्न को पकडने पर वे वीरता के साथ निर्भय हो कहती है–

जीजी–जीजी उसे छोड दो, जाने दो तुम।

सोदर की गति अमर–समर मे पाने दो तुम।[७४]

साकेत की नायिका उर्मिला को मैथिलीशरण ने वीरता की प्रतिमूर्ति भवानी के रूप म अकित किया है जिस समय अयोध्या की सेना शत्रुघ्न के नेतृत्व मे लका पर आक्रमण के उद्देश्य से तैयार होकर जयघोष करती है उसी समय उर्मिला वीरता के दर्प से महिमा मडित स्वरूप धारण कर भवानी के रूप मे शत्रुघ्न के सामने आती है सभी देखकर उत्साह से भर उठते है–

आ समीप शत्रुघ्न के रूकी लक्ष्मण की रानी,

प्रकट हुई ज्यो कार्तिकेय के निकट भवानी।[७५]

नारी मे क्या शक्ति है इसका परिचय हमे साकेत के इस अश मे मिल जाता है। शत्रुघ्न जी कहते है। कि भरत खण्ड के पुरूष अभी मर नही गये है। कहकर उर्मिला को युद्ध मे जाने से मना करते है किन्तु नारी दर्प की प्रतिमूर्ति उर्मिला कहती है कि ठीक है, फिर मै साथ चलूँगी और घायल वीरो की सेवा करूँगी उनके घावो को मै धोऊँगी इस पुनीत कार्य को मै अवश्य करूँगी–

वीरो पर यह योग भला क्यो खोऊँगी मै,

अपने हाथो घाव तुम्हारे धोऊँगी मै।"[७६]

---

[७३] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २६७
[७४] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २६३
[७५] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २७२
[७६] साकेत सर्ग १२ पृष्ठ २७४

उर्मिला अपनी सेना को सावधान करती है कि पापी रावण के वैभव को समुद्र मे ही फेक देना। उर्मिला के इस दर्प मे नवजागरण की नारी का स्वाभिमान बोलता नजर आता है उर्मिला का दर्प भरा रूप कही भी असगत नही प्रतीत होता वह मातृभूमि की प्रशसा मे कहती है–

किस धन से है रिक्त कहो, सुनिकेत हमारे?
उपवन फल सम्पन्न, अन्नमय खेत हमारे।[७७]

मैथिलीशरण गुप्त जी की नारियो को देखने की दृष्टि मे पुनरूत्थानवादी विचारधारा परिलक्षित होती है। मैथिलीशरण गुप्त जी का समय परिवर्तन एवॅ सुधार का था। आधुनिक युग नारी उत्थान का युग है। फलत गुप्त जी पर परिवेश का प्रभाव पडना स्वाभाविक था। इसी कारण गुप्त जी ने परम्परा एव सस्कृति की मर्यादा का निर्वाह करते हुए नारी की आधुनिक चेतनावादी विचारो एव स्वतन्त्रता को महत्व दिया है। कौशल्या मे मातृत्व की कमजोरी है तो सुमित्रा मे नारी के गर्विता रूप का चित्रण है। उर्मिला का चरित्र परम्परा से त्याग पूर्ण है। किन्तु उसमे स्वाभिमान एव क्रान्तिकारी विचारो का समावेश मैथिलीशरण गुप्त की मौलिक दृष्टि की देन है। कैकेयी के चरित्र को बुद्धिवाद एव तर्क की कसौटी पर कसकर मानवीय दुर्बलता के रूप मे उसके द्वारा किये गये कार्यो को उचित ठहराते है। मनोवैज्ञानिक रूप मे उसके चरित्र का मूल्याकन वे करते है और उसके द्वारा पश्चाताप करवा करके उसके चरित्र के कलक उसके आसुॅओ से धुलवा देते है। इस प्रकार गुप्त जी का दृष्टिकोण नारी के प्रति उच्च एव सम्माननीय रहा है। यद्यपि गुप्त जी पर भी यह आरोप लगाया जाता है कि भरत के मुख से कैकेयी को अत्यधिक खरी–खोटी सुनायी है और नारी का अपमान कराया है भरत के इस कथन को आधार बनाकर ऐसी आलोचना की जाती है–

मृत्यु? उसमे तो सहज ही मुक्ति, भोग तू निज भावना की भुक्ति।
धन्य तेरा क्षुधित पुत्र स्नेह, खा गया तू न भून कर पति देह।[७८]

---

[७७] साकेत एक नव्य परिबोध – डा० राम विनोद सिह पृष्ठ ६८
[७८] साकेत सर्ग ७ पृष्ठ १०२

किन्तु इसके उत्तर मे कहा जा सकता है कि भरत द्वारा कवि ने नारी जाति का अपमान नही किया है भरत का यह वाक्य केवल व्यक्तिगत है। भरत पूरी नारी जाति के प्रति ऐसा भाव नही रखते। वे तो कौशल्या के चरणो मे लोटते है। भरत के विचार नारी के प्रति अच्छे है वे माण्डवी से कहते है कि –

उनमे भी सुलोचनाएँ है और प्रिये हममे भी अध।[७९]

माण्डवी के इस कथन के आधार पर भी गुप्त जी की दृष्टि की आलोचना की जाती है कि उन्होने नारी को कलहमूर्ति बताया है–

किन्तु नाथ मुझको लगती है, कलहमूर्ति ही अपनी जाति,
आत्मीयो को भी आपस मे हमी बनाती यहाँ अराति।[८०]

यह कथन साकेत मे नारी की हीनता का सूचक नही है। इससे नारी की नम्रता और सौम्यता का ही परिचय मिलता है फिर कैकेयी के चरित्र को निखार कर गुप्त जी ने सब के सामने अपनी नारी भावना का परिचय दे दिया है वे राम के साथ जन मानस से कैकेयी की जय–जयकार कराते है–

सौ बार धन्य वह एक लाल की माई
जिस जननी ने जना भरत सा भाई।
पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई
"सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।"[८१]

उर्मिला के विरह को लेकर मैथिलीशरण की नारी दृष्टि की आलोचना की जाती है कहा जाता है कि उन्होने उर्मिला के ऑसुओ से साकेत को गीला कर दिया। उनकी नारी अबला, कमजोर एवॅ बात–बात पर रोने वाली है किन्तु वास्तविक रूप मे ऐसा नही है उर्मिला साकेत की नायिका है और साकेत के केन्द्र मे उसका चरित्र है उर्मिला का

---

[७९] रामचरित मानस और साकेत तुलनात्मक अध्ययन पृष्ठ ११७
[८०] साकेत – सर्ग ११ पृष्ठ २२८
[८१] साकेत सर्ग ८ पृष्ठ १३३

चरित्र स्वाभिमान एव गर्व से तेजपूर्ण है। यह बात सत्य है कि भावुक क्षणो मे वह ऑसू निकालती है किन्तु उसके ऑसू कभी भी किसी के कर्तव्य के पथ पर बाधा नही खडी करते। उर्मिला का सम्पूर्ण चरित्र के मूल मे उसकी त्याग भावना है। क्या प्रियतम के लिए नारी को रोना या ऑसू बहाना अनुचित है। उर्मिला का चरित्र वीर क्षत्राणी के रूप मे भी साकेत मे प्रतिबिम्बित होता है जब अयोध्या की सेना लका पर आक्रमण के लिए तैयार होकर जय घोष करती है। उस समय वह भवानी के रूप मे युद्ध भूमि मे जाने के लिए प्रस्तुत होती है—

आ शत्रुघ्न समीप रूकी लक्ष्मण की रानी,
प्रकट हुई ज्यो कार्तिकेय के निकट भवानी।
गरज उठी वह "नही,नही, पापी का सोना,
यहॉ न लाना भले सिधु मे वही डुबोना।।[८२]

मैथिलीशरण गुप्त जी की नारी आधुनिक विचारो एव आदर्शो से प्रेरित है उनकी नारी पर गॉधीवादी विचारधारा का भी स्पष्ट रूप से प्रभाव है। सीता चरखे द्वारा सूत कातकर कोलभीलो की स्त्रियॉ एव कन्याओ आदि के लिए कपडे बुनती है। वे त्याग एव मानवता के प्रेम से ओत–प्रोत दिखायी देती है। साकेत के नारी पात्रो मे आदर्श प्रेम, त्याग, एव राष्ट्र तथा परिवार के लिए सब कुछ न्यौछावर कर देने की उत्कट इच्छा दिखायी देती है। आधुनिक नारी की चेतना एव स्वतन्त्र विचारो से साकेत के नारी पात्र अनुप्राणित दिखायी देते है उनमे विश्वबन्धुत्व की प्रबल भावना परिलक्षित होती है नि सदेह मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि अत्यधिक उत्कृष्ट एव सम्माननीय है।

---

[८२] साकेत – मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २७२

पंचम अध्याय

उपसंहार

वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त युग प्रतिनिधि रचनाकार है। इनकी रामकथा तीन विभिन्न युगो को अपने अन्दर समेटे हुए है। ये युगद्रष्टा कवि अपने युग सीमाओ का अतिक्रमण करके नवीन विचारो एव उच्च आदर्शों द्वारा नये युग का सूत्रपात करते है। तीनो कवियो की रचनाओ द्वारा स्थापित उच्च आदर्शों, युगबोध एव नारी दृष्टिकोण को सहज ही विश्लेषित किया जा सकता है।

वाल्मीकि रामायण मे वैदिक कालीन सस्कृति के उच्च आदर्शों, वेद सम्मत विचारो एव शुद्ध आचरणो की स्थापना की गयी है। वाल्मीकि के समकालीन एव उनके आदर्श पुत्र राम के समय की राजनीतिक परिस्थिति का वर्णन वाल्मीकि रामायण मे मिलता है। उस समय शासन का स्वरूप मर्यादित राजतन्त्र था। एक वैधानिक शासक द्वारा स्थापित सुदृढ शासन व्यवस्था मे जनता का परम विश्वास था। राज्य का पद कुल परम्परागत था किन्तु नये राजा की नियुक्ति सभा की अनुमति से ही की जाती थी। राजा न्याय प्रिय एव धर्मात्मा होता था। न्याय वितरण की पद्धति सरल, सस्ती एव तात्कालिक थी। अपराध बहुत कम होते थे। वाल्मीकि ने राम राज्य का उच्च आदर्श रामायण मे प्रस्तुत किया है। न्याय का स्पष्ट सिद्धान्त था कि "निरपराध होने पर भी यदि जिन लोगो को मिथ्या दोष लगाकर दण्ड दिया जाता है उनकी ऑखो से निकले ऑसू पक्षपात पूर्ण शासन करने वाले राजा के पुत्र और धन–धान्य का नाश कर डालते है।

तानि पुत्र–पशूनि घ्नन्ति प्रीत्यर्थमनुशासत ।।[1]

---

[1] वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड १००/५६

प्राचीन भारतीयो के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे धर्म का सर्वोपरि स्थान था। वेदो का सर्वोच्च महत्व था। तर्क–वितर्क के शुद्ध आक्षेपो से उन पर कोई ऑच नही आ सकती थी। लोग वेदो के अनुसार धर्मपालन एव जीवन–यापन करते थे। स्त्री पुरूष सभी वैदिक मन्त्रो एव यज्ञ–हवन विधि मे दक्ष थे। कौशल्या को राम की मगल कामना हेतु यज्ञ–हवन करते दिखाया गया है।

देव और मानव मे निकट का सम्पर्क था। देव मानवो की सर्वथा सहायता करते थे। कर्म और पुर्नजन्म का सिद्धान्त सभी को मान्य था। आश्रमव्यवस्था का लोग पालन करते थे। कर्म को विशेष प्रधानता दी गयी थी।

वैदिक युग के आर्य सम्पन्न थे। कृषि, गोचारण, उद्यान–चर्या व्यापार उद्योग, यातायात आदि की समुन्नत स्थिति का वर्णन वाल्मीकि रामायण मे मिलता है।

रामायण मे उच्च सामाजिक स्थिति का वर्णन मिलता है। जन सामान्य वर्णो और आश्रमो मे विभक्त होते हुए भी, सहयोग और सौहार्द के तन्तुओ से परस्पर जुडा हुआ था। परिवार का रूप पितृ–प्रधान था, तथापि परिवार मे माता का स्थान उच्च एव गरिमामय था। लोग सनातन धर्म के अनुसार आचरण करते थे। स्त्रियॉ पतिपरायणा एव धर्मनिष्ठ होती थी। पत्नी को पति से भरण पोषण एव एकनिष्ठ प्रेम पाने का अधिकार प्राप्त था। वाल्मीकि रामायण मे स्त्री को पुरूष के समान आदर पूर्ण स्थान प्राप्त था वह पति के साथ समस्त मागलिक कार्यो एव कर्मकाण्डो में बराबर की हिस्सेदार थी। वाल्मीकि रामायण मे समाज के उत्कृष्ट रूप का वर्णन हुआ है।

तुलसी के रामचरित मानस मे मध्यकालीन समाज की पतनशीन स्थिति का वर्णन मिलता है। तुलसी ने कलियुग वर्णन मे तत्कालीन विषय राजनीतिक आदि परिस्थितयो का वर्णन किया है। मुगलो का युग वैभव सम्पन्न माना जाता है किन्तु सामान्य जनता का जीवन स्तर निम्न ही था। राजा धर्मानुसार आचरण नही करता था और प्रजा को कठोर दण्ड देता था–

नृप पाप परायन धर्म नही। करि दण्ड विडम्ब प्रजा नित ही।[2]

तुलसी ने ऐसे अत्याचारी शासको की निदा करते हुए उन्हे नरक का अधिकारी माना है। तुलसी ने राम के अवतार की कल्पना को साकार करके ऐसे अत्याचारी शासको का अन्त निश्चित बताया और जनमानस के समक्ष अपनी युग सीमाओ का अतिक्रमण करते हुए राम राज्य के उच्च आदर्शों को स्थापित किया। राजा राम प्रजा के समक्ष कहते है कि यदि मै अनीति की बात करूँ तो आप मुझे निर्भय होकर टोके।

तुलसी के समय धर्म मे आवश्यक बुराइयॉ आ गयी थी। धार्मिक शक्ति विभिन्न धार्मिक मतो, सम्प्रदायो के कारण एक से अनेक भागो मे विभक्त था। गोरखपथी, सूफी, कबीरपथी अघोरी आदि योगी पतियो की काफी धूम थी। लोग वैदिक भक्ति भूलकर मिथ्या चारो मे जकड गये थे। तुलसी ने शुद्ध हृदय से की गयी राम भक्ति का प्रतिपादन किया। तुलसी ने शैव और वैष्णव धर्म को एकता के सूत्र मे बॉधने के लिए प्रभु राम से शकर की पूजा करवायी और शकर के मुँह से "उमाराम सम हित जग माही" कहलवाया। तुलसी ने धर्म के रूप मे सत्य को परिभाषित किया "धरम न दूसर सत्य समाना"[3]। जीवन की सत्यनिष्ठता एव आचरण की शुचिता पर बल दिया। वेद सम्मत मार्ग के अनुसरण की शिक्षा जन मानस को दिया।

यद्यपि मध्यकालीन विपन्न आर्थिक दशा का चित्रण तुलसी ने मानस के उत्तर काण्ड मे कलियुग वर्णन मे किया है। तथापि राम राज्य के वैभवशाली दशा का आदर्श चित्र उन्होने जनमानस के सामने रखा है।

तुलसी के समय का समाज पतनगामी था। समाज विश्रृखलित एव जर्जर अवस्था मे था। समाज मे जातीय भेद–भाव समाज की एकता को दूषित कर रहे थे तुलसी ने ऐसे समय मे राम को शबरी के जूठे बेर खिलाए, निसाद जो शूद्र जाति–का

[2] रामचरित मानस उत्तरकाण्ड दोहा १०३/छन्द ३

[3] अयोध्याकाण्ड सटीक – डा० सतीश कुमार पृष्ठ ७६

था, उसे राम का सखा बताकर भरत और वशिष्ठ के गले मिलवाया, और समाज को एकता के सूत्र मे पिरोने का स्तुत्य कार्य किया। एक तरफ तुलसी ने जहॉ मध्ययुगीन पतनगामी समाज की आलोचना की वही दूसरी ओर अपनी युग सीमा का अतिक्रमण करते हुए उन्नतशील समाज का आदर्श रामचरित मानस मे प्रस्तुत किया। तुलसी के राम आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श प्रजा पालक और मर्यादा पुरूषोत्तम है। सीता आदर्श पत्नी, लक्ष्मण–भरत आदर्श भाई है तो हनुमान आदर्श सेवक और कौशल्या आदर्श माता है। तत्कालीन समाज मे नारी की स्थिति दयनीय थी। वह पर्दा प्रथा के कारण चारदीवारियो मे घिरी हुई थी। उसका जीवन स्तर निम्न था किन्तु ऐसे समाज के समक्ष सीता, कौशल्या, मन्दोदरी जैसी पुनीत नारियो के आदर्श चरित्र को रखकर तुलसी ने नारी को पुन गौरव पूर्ण स्थान दिलाने का प्रयास किया है।

आधुनिक काल मे अग्रेजो के अधीन भारतीय समाज गरीब एव पिछडा हुआ था। अग्रेज शासक सब प्रकार से जनता का शोषण करके राजकीय कोष को लूट रहे थे। जनता का जीवन स्तर निरन्तर गिरता जा रहा था। ऐसे मे १९८५ मे स्थापित काग्रेस सस्था ने भारतीयो मे एक नयी चेतना का सचार किया और भारतेन्दु, मैथिलीशरण गुप्त आदि कवियो ने चेतना को आवाज दी। मैथिलीशरण गुप्त के साकेत मे तत्कालीन परिस्थिति का वर्णन हुआ है– "है अपनो को छोड मुक्ति भी अपनी कारा, पर अपनो के लिए नरक भी स्वर्ग हमारा।"[४] राजा के लिए राज्य सुख का साधन नही अपितु त्याग एव सेवा का उच्च आदर्श है। साकेत मे गुप्त जी कहते है कि राज्य है बलि पुरूष का भोग, मूल्य जिसका प्राण विनियोग।"[५]

साकेत मे आर्य धर्म की स्थापना मैथिलीशरण गुप्त ने किया है। साकेत मे राम धर्म सस्थापनार्थ ही जन्म लेते है। मै आर्यो का आदर्श बताने आया' यही साकेत के राम कहते है। मैथिलीशरण गुप्त मानवतावादी धर्म और विश्वधर्म का समर्थन करते है

---

[४] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २७१

[५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ६ पृष्ठ १०३

सहिष्णुता एव उदारता को वे मानवतावादी धर्म का मूल मानते है वे राम की स्थापना मानव के रूप मे करते है – राम तुम मानव हो? ईश्वर नही हो क्या?

आधुनिक काल की तत्कालीन आर्थिक विपन्नता के विपरीत भारतीय बौद्धिक समृद्धि के चित्र साकेत मे कवि ने खीचा है। साकेत के राम कहते है कि –

मै आया उनके हेतु कि जो तपित है, जो विकल विवश बल हीन, दीन शापित है[६]।

साकेत मे धन सग्रह करके जो त्याग नही करता है उसे दस्यु कहा गया है और उसकी आलोचना की गयी है। राजा का प्रथम कर्त्तव्य है कि वह प्रजा के सुख का ध्यान रखे।

साकेत मे मैथिलीशरण गुप्त ने आदर्श समाज का चित्रण किया है। साकेत मे राम कथा की व्याख्या नये सदर्भो मे की गयी है। गुप्त जी ने विघटित समाज के सामने उच्च आदर्श प्रस्तुत कर समाज को पुन एक सूत्र मे पिरोने का कार्य किया है। साकेत मे व्यक्ति के त्याग और सेवा को महत्व दिया गया है। आधुनिक युग नारी उत्थान का युग है। साकेत के स्त्री पात्रो मे स्थान–स्थान पर आधुनिक नारी का स्वाभिमान एव जागरूक हृदय अपने अधिकारो के प्रति सचेष्ट दिखायी देता है। सुमित्रा का कथन–स्वत्वो से भिक्षा कैसी? दूर रहे इच्छा ऐसी।[७] मे आधुनिक नारी का स्वाभिमान एव विवेक परिलक्षित होता है।

राम कथा के तीनो महाकवियो ने नारी पात्रो को गरिमामय ढग से प्रस्तुत किया है। पात्र संकल्पना की दृष्टि से तीनो महाकवियो के नारी पात्रो का चरित्र महिमा मडित है। तीनो महाकाव्यो की पात्र सकल्पना पर तत्कालीन परिस्थिति, सस्कृति, कवियो की अपनी दृष्टि, धर्म, दर्शन आदि का प्रभाव स्पष्टत परिलक्षित होता है। तीनो ग्रथो के

---

[६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १२४
[७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४८

कथानक का मूलाधार राम कथा है तथापि पात्र कल्पना मे भिन्नता है इसका कारण कवियो का अपना युगबोध एव उनकी अपनी जीवन दृष्टि है।

वाल्मीकि रामायण मे नारी पात्रो का चित्रण यथार्थ एव मानवीय धरातल पर किया गया है। इसमे कौशल्या अयोध्यापति दशरथ की प्रधान महिषी, राम की माता, समदर्शी, पति–प्रिया, पुत्र वत्सला, धर्मशीला, परमक्षमाशीला, त्यागशीला तथा सौम्यरूप मे चित्रित की गयी है। कौशल्या का पारम्परिक रूप प्राय उनके मातृत्व की ही प्रतिष्ठा करता है। वाल्मीकि रामायण मे कौशल्या मे माता की स्वाभाविक दुर्बलताएँ भी प्रकट हुई है तथा उनमे सपत्नी भाव भी प्रबल है। कौशल्या के चरित्र का पूर्णत विकास राम के राज्याभिषेक एव वन गमन प्रसग मे होता है। वह राम के राज्याभिषेक की मगलकामना के लिए पूजा–पाठ करती है और अत्यधिक प्रसन्न रहती है किन्तु राभ के मुख से वनवास की बात सुनकर वे फरसे से काटी गयी शालवृक्ष की शाखा के समान पृथ्वी पर गिर पडती है। होश मे आने पर वह विह्वल हो कहती है कि इससे अच्छा होता कि मै वन्ध्या ही होती जिससे मुझे केवल वन्ध्या होने का दु ख होता। वह राम के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाती है। वह सपत्नी के दु खो का वर्णन भी राम से करती है किन्तु राम उन्हे पति सेवा ही पत्नी का सनातन धर्म है" ऐसा समझाकर वन जाने की आज्ञा प्राप्त करते है, किन्तु कौशल्या राम के वन जाते समय अत्यधिक विकल होकर उसी प्रकार उनके पीछे दौडती है जैसे गाय अपने बछडे के लिए दौडती है। यद्यपि वह दशरथ के प्रति राम के वन जाने के बाद क्षोभ व्यक्त करती है किन्तु अपने पतिव्रत धर्म का ध्यान आते ही उनसे क्षमा मॉगती है। अपने पति के अन्तिम क्षणो मे वे उनके पास ही रहती है। भरत को वे गोद मे बिठाकर गले लगाती है और उन्हे निर्दोष मानती है। भरत के साथ वे चित्रकूट भी जाती है। वे भरत की दशा को देखकर दु खी होती है। इस प्रकार वाल्मीकि ने कौशल्या को सरला, सामान्या और यथार्थ रूप में चित्रित किया है। कौशल्या का चरित्र नारी मनोविज्ञान के आधार पर गढा गया है और उसको मानवीय सवेदना के धरातल पर प्रतिष्ठित किया गया है।

कैकेयी दशरथ की द्वितीय रानी, भरत की माता एव कैकेय नरेश की पुत्री के रूप मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित है। राम के राज्याभिषेक का समाचार पाकर कैकेयी अत्यधिक प्रसन्न होती है वह मन्थरा को आभूषण प्रदान करती है। मन्थरा उसे राम के खिलाफ भडकाती है किन्तु सरल ह्दय कैकेयी कहती है कि –

रामे व भरते वाह विशेष नोपलक्षये।
तस्मात् तुष्टास्मि यद् राजा राम राज्येऽभिषेक्ष्यति।[८]

मन्थरा हर प्रकार से राम के राज्याभिषेक से होने वाली क्षति के प्रति सजग करती है वह कहती है कि तुम कौशल्या की दासी बनोगी और भरत को राम की गुलामी करनी पडेगी। और आगे मन्थरा कहती है कि राम के बाद उसका पुत्र राजा होगा और भरत राज्य परम्परा से ही निष्कासित हो जोयेगे। सभव है राम उन्हे देश निकाला दे दे या उनकी हत्या करा दे। ऐसे मे कैकेयी का भयभीत होना स्वाभाविक था और कैकेयी ने मन्थरा के कथनानुसार कार्य किया और कोप भवन मे जाकर वह सब कुछ किया जिससे अपने बेटे भरत को राजा बना सके। कैकेयी ने पहले वरदान से भरत के लिए राज्य और दूसरे से राम को चौदह वर्षो का वनवास मॉगा। जिसके परिणाम स्वरूप राम का वन गमन और दशरथ का मरण हुआ। अपने पुत्र भरत द्वारा उपेक्षित होने पर कैकेयी अत्यधिक दु खी एव अन्तर्मुखी हो जाती है। भरत के साथ कैकेयी चित्रकूट राम को मनाने जाती है और विजयोपरान्त राम के अयोध्या आने पर वह राम का स्वागत करती है।

सुमित्रा के चरित्र को वाल्मीकि ने त्यागमयी माता के रूप मे चित्रित किया है। धर्मे स्थिता धन्य सुमित्रा[९] के रूप मे सुमित्रा का परिचय वाल्मीकि ने दिया है। सुमित्रा का माता रूप अत्यन्त उज्ज्वल एव आदर्श पूर्ण रहा है। राम के वन जाते समय वे

---

[८] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ७/३५
[९] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ४४/१

लक्ष्मण को राम के साथ वन जाने की सहर्ष आज्ञा दे देती है और कहती है कि ससार मे सत्पुरूषो का यही धर्म है कि सर्वदा अपने बडे भाई की आज्ञा के अधीन रहे–

एषा लोके सता धर्मो यज्जेष्ठ वशगो भवेत।[१०]

वे लक्ष्मण से कहती है कि राम को ही अपना पिता दशरथ समझो, जनक नदिनी सीता को ही अपनी माता मानो और वन को ही अयोध्या जानो। अब तुम सुख पूर्वक वन को प्रस्थान करो। वह कौशल्या को भी धीरज बँधाती है और कहती है कि राम ने पिता की आज्ञा मानकर धर्म का पालन किया है अत आप शोक न करे। निश्चित रूप से सुमित्रा का चरित्र उच्च कोटि का है।

वाल्मीकि रामायण मे ताटका का परिचय सुकेत यक्ष की कन्या तथा सुन्द की पत्नी और मारीच की मॉ के रूप मे दिया गया है। अगस्त्य के शाप से ताटका राक्षसी हो गयी थी। वह भयकर राक्षसिनी अत्यधिक बलशालिनी एव मुनियो आदि का भक्षण करने वाली थी जिसका विश्वामित्र के कहने पर श्रीराम ने वध किया।

अहल्या के चरित्र पतन, शाप एव उद्धार की कथा का वर्णन वाल्मीकि रामायण मे मिलता है। इन्द्र के साथ समागम करने के कारण गौतम मुनि के शाप से अहल्या अदृश्य रूप हो गयी थी जिसका उद्धार विश्वामित्र के कहने पर राम ने किया। अहल्या दोनो भाइयो राम और लक्ष्मण का आतिथ्य शास्त्रीय विधि से किया और तप· शक्ति से विशुद्ध रूप प्राप्त कर मुनि का साथ पाकर खुशी हुई।

वाल्मीकि रामायण मे सीता के चरित्र के महत्व को प्रकट करते हुए कहा गया है – काव्य रामायण कृत्स्न सीतायाश्चचरित्र महत्।[११] आदि काव्य की सीता निश्चयात्मक बुद्धिवाली, निष्कपट, सरल ह्रदय, विनय सम्पन्न किन्तु आत्म सम्मान की· भावनाओ से युक्त एक क्षत्राणी का चित्र पाते है। सीता का चरित्र भारतीय नारीत्व का

---

[१०] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड ४०/५, ६

[११] वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड ४/७

महान आदर्श है। वाल्मीकि ने सीता की उत्पत्ति पृथ्वी से बतायी है वह जनक पालिता विदेह कन्या के रूप मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित है। सीता राम के साथ वन जाने के लिए दृढ प्रतिज्ञ दिखायी देती है। वे कहती है कि "केवल पत्नी ही अपने पति के भाग्य का अनुसरण करती है अत आपके साथ मुझे भी वन मे रहने की आज्ञा मिल गयी है" –

भतुर्भाग्य तु नार्येका प्राप्रोतिपुरूर्षम्।[५२]

वे वन के भीषण कष्टो से विचलित नही होती और आदर्श पत्नी के रूप मे पति का अनुसरण करती है। पति–वियोग की स्थिति मे भी वे एकनिष्ठ राम के प्रति दृढ विश्वास एव प्रेम रखती है और इसी विश्वास के कारण वे पुन राम से लका विजय वाद मिलती है। वाल्मीकि ने सीता के वनवास एव धरती मे समाने की करूण कथा का वर्णन किया है। यह वर्णन सीता के आदर्श त्याग एव प्रेम को और भी उत्कृष्ट बना देता है।

वाल्मीकि रामायण मे उर्मिला, माण्डवी और श्रुर्तिकीर्ति का केवल विवाह के समय ही परिचय मिलता है। राजा जनक उर्मिला, माण्डवी और श्रुर्तिकीर्ति का पाणिग्रहण कमश लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न के साथ करते है विवाहोपरान्त ये सभी सासो द्वारा मगलगीत के साथ अयोध्या मे परछी जाती है और देवपूजा तथा सास–ससुर का आर्शीवाद प्राप्त करके अपने–अपने पति के साथ सुख पूर्वक रहने लगती है।

मन्थरा का चरित्र वाल्मीकि रामायण मे महत्वपूर्ण है क्योकि कथा को मोड मन्थरा का चरित्र ही देता है। मन्थरा अत्यन्त वाकपटु एव ईर्ष्यालु के रूप मे वाल्मीकि रामायण मे चित्रित है अपने तर्कों द्वारा वह कैकेयी के सरल हृदय को बेध डालती है और उन्हे सब कुछ करने के लिए बाध्य कर देती है जैसा वह चाहती है। कैकेयी

---

[५२] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २७/५

मन्थरा को ही अपनी सबसे बडी हितैषिनी मान लेती है। जिसके परिणामस्वरूप कैकेयी का चरित्र निदनीय बन जाता है।

शूर्पणखा, वाल्मीकि रामायण मे अतृप्त काम वाली, इच्छानुसार रूप धारण कर लेने वाली अत्यधिक बलशालिनी, कुशल राजनीतिज्ञा एव क्रूर राक्षसी के रूप मे चित्रित की गयी है। शूर्पणखा ही कथा प्रवाह को यूद्ध भूमि मे पहुँचा देती है। राम और लक्ष्मण से प्रणय निवेदन मे असफल होने पर वह भयकर रूप धारण करती है। राम के इशारे पर लक्ष्मण उसकी नाक-कान काट लेते हैं। शूर्पणखा ही खर–दूषण का राम से युद्ध कराती है। सीता के सौन्दर्य से मुग्ध होकर ही रावण सीता का हरण करता है इस हरण के पीछे शूर्पणखा की वाकपटुता दिखायी देती है।

वाल्मीकि रामायण मे शबरी का चरित्र महत्वपूर्ण है। राम के प्रति उनमे विकट अनुराग है। वह राम और लक्ष्मण का पूजन एव सत्कार करती है। शबरी सिद्धा, धर्मपरायण तपस्विनी और धर्मानुष्ठान मे निरत रहने वाली है। वह कहती है मतग ऋषि की बात सत्य सिद्ध हो गयी। उन्होने कहा था कि "राम और लक्ष्मण इस आश्रम पर आयेगे जिनका तुम विधिवत सत्कार कर उनका दर्शन करके अक्षय लोक को प्राप्त होगी।" शबरी राम और लक्ष्मण का दर्शन करके अक्षयलोक को चली गयी।

वाल्मीकि ने तारा को सुषेण की पुत्री एव बालि की पत्नी के रूप मे वाल्मीकि रामायण मे वर्णित किया है। तारा बालि को युद्ध से रोकती है और कहती है कि सुग्रीव की सहायता स्वय राम कर रहे है, किन्तु तारा की बात न मानकर बालि राम के हाथो मारा जाता है। तारा का विलाप वाल्मीकि के रामायण मे उच्च्व कोटि के कवित्व की सृष्टि करता है उसमे कोरा विलाप नही बहुत सारी नीति एव धर्म परक विचारो का समावेश है। क्रोधित लक्ष्मण जब सुग्रीव के नगर को जलाने के लिए उद्यत हो जाते हैं तब तारा ही उन्हे अपनी वाक्–चातुर्य से शान्त कराती है।

त्रिजटा का चरित्र वाल्मीकि रामायण मे महत्वपूर्ण है वह सीता को धीरज बँधाती है तथा राम के शक्ति और पौरूष का वर्णन करके उन्हे विश्वास दिलाती है कि राक्षसो का अन्त निश्चित है। रावण राम के हाथो मारा जायेगा और तुम अपने प्रियतम राम से पुन मिलोगी। राक्षसी माया एव भ्रम मे पडी सीता जब राम और लक्ष्मण को नाग फॉस से बेहोश देखकर मरा समझकर विलाप करती है तब त्रिजटा उन्हे वास्तविकता से परिचय कराती है और कहती है कि "यह पुष्पक विमान विधवा स्त्री को नही ढो सकता अत राम और लक्ष्मण अवश्य जीवित है।"

मन्दोदरी का चरित्र वाल्मीकि रामायण मे गरिमामय है वह सत्य पथ पर चलने वाली, नीति कुशला एव स्पष्टवादी है। हनुमान जी उसे देखकर सीता समझ बैठते है अत कवि ने उसे अत्यधिक रूप सौन्दर्य वाली स्त्री के रूप मे चित्रित किया है। वह रावण को हर प्रकार से समझाती है कि सीता का यहॉ रहना ठीक नही है। इससे राक्षसो का नाश अवश्यभावी है। किन्तु अहकारी रावण उसकी बात न मानकर अपने सर्वनाश का मार्ग ही चुनता है और अन्त मे राम के द्वारा युद्ध मे मारा जाता है। मन्दोदरी पतिपरायणा पत्नी है अत वह रावण की वीरता एव उसके गुणों की प्रशसा करती है, किन्तु स्पष्टवादी होने के कारण वह रावण के द्वारा किये गये असत् कार्यों की निदा करती है। वह राम के सद्गुणो की प्रशसा भी करती है। मन्दोदरी का विलाप धर्म एव नीतिपरक विचारो की खान है। वह मात्र कोरा विलाप नहीं है उसमे उच्च कोटि का जीवन दर्शन है।

तुलसी ने नारी पात्रो को उच्च भावभूमि एव आदर्श के धरातल पर उतारा है। उनके अधिकतर स्त्री पात्रो के चरित्र मे अलौकिकता परक गुणो के दर्शन होते है। तुलसी की कौशल्या ब्रह्म राम की मॉ के रूप मे चित्रित की गयी है अत वे राम के वन गमन को सुनकर दु खी अवश्य होती है और वात्सल्य की पीडा से वे सहम जाती है किन्तु वे धर्म एव मर्यादा के अनुपालन के लिए राम के वन जाने के निर्णय को उचित मानती है।

तात जाउँ बलि कीन्हेहु नीका। पितु आयसु सब धरमक टीका।।[93]

माता कौशल्या कैकेयी के प्रति सर्वोच्च भाव प्रदर्शित करती है और कहती है कि यदि पिता और माता की आज्ञा प्राप्त हो गयी है तब वन ही तुम्हारे लिए "सत्अवध समाना" है। माता कौशल्या राम को सहर्ष वन जाने की आज्ञा दे देती है। सीता के एकनिष्ठ प्रेम को देखकर वे सीता को फिर रोकने की चेष्टा नही करती है। भरत के प्रति माता कौशल्या के हृदय मे अपार प्रेम है। वे रोते भरत को गोद मे ले लेती है उन्हे लगता है जैसे उनका राम ही वापस आ गया हो। पति के प्रति भी कौशल्या मे अपार निष्ठा दिखायी देती है। वे पुत्र को वन भेजने के लिए राजा दशरथ को कभी दोष नही देती है। रामचरित मानस मे कौशल्या का आदर्श चरित्र चित्रित किया गया है।

कैकेयी राम के अभिषेक को सुनकर प्रसन्न होती है और उसे तो लगता है कि उसका राम युवराज बनने जा रहा है जैसे उसके मन की मुराद पूरी हो गयी हो। कैकेयी कहती है "प्रान ते अधिक राम प्रिय मोरे"। राम प्राणो से मुझे प्रिय है उनका राजतिलक सुनकर मन्थरा तू क्यो दु खी है। मन्थरा सुरमाया के वश मे होकर कैकेयी को राम के राज्याभिषेक से होने वाली हानि को समझाती है और उसे पुत्र के भविष्य एव सौति के डाह का भय दिखाकर, वर मॉगने के लिए विवश करती है। सुरमाया से प्रेरित मन्थरा की बातो मे आकर कैकेयी वह सब कुछ करती है जिसके कारण उसका चरित्र निदनीय बन जाता है। भरत की उपेक्षा उसे अत्यधिक पीडादायक स्थिति मे पहुँचा देती है। कैकेयी अन्तर्मुखी हो जाती है और पश्चाताप की आग मे जलती हुई अपने भीतर ही अत्यधिक क्षोभ का अनुभव करती है। तुलसी ने सुरमाया की कल्पना करके कैकेयी के चरित्र को दोषमुक्त करने की चेष्टा की है इसके लिए उन्होने सामान्य जन एव विद्वत मुनियो के कथनो से कैकेयी को निर्दोष सिद्ध करने की चेष्टा की है।

---

[93] रामचरित मानस अयोध्याकाण्ड ५५/४

सुमित्रा को रामचरित मानस मे त्यागमयी माता के रूप मे चित्रित किया गया है। वह राम के साथ लक्ष्मण को सहर्ष वन जाने की आज्ञा दे देती है। और कहती है कि तुम्हारा अवध वही है जहॉ राम निवास करेगे।

तुलसी ने ताडका को मुनि विरोधिनी के रूप मे चित्रित किया है जिसका वध मुनि के कहने पर राम करते है और उसे परम पद प्रदान करते है। अहल्या के उद्धार की कथा केवल तुलसी ने दी है। मुनि विश्वामित्र के द्वारा जानकारी प्राप्त करने के पश्चात् प्रभु राम अहल्या का उद्धार करते है और वह राम के चरणो मे नमन करके पतिलोक चली जाती है।

तुलसी की सीता आदर्श भारतीय नारी के रूप मे रामचरित मानस मे वर्णित है। वे सहर्ष पति के साथ वन जाने के लिए तैयार हो जाती है और अपने विनम्रतापूर्ण वचनो द्वारा पति के साथ वन जाने के औचित्य को सिद्ध करती है। सीता के मन मे श्रीराम के प्रति अटूट प्रेम एव दृढ विश्वास है। वियोग की स्थिति मे भी वे दृढ विश्वास एव प्रेम के सहारे अत्यधिक कष्टो को सहती हुई अन्त मे प्रभु श्रीराम से मिलती है। उर्मिला, माण्डवी, श्रुर्तिकीर्ति का वैवाहिक परिचय रामचरितमानस मे मिलता है। उर्मिला लक्ष्मण की पत्नी के रूप मे, माण्डवी भरत की पत्नी के रूप मे और श्रुतिकीर्ति शत्रुघ्न की पत्नी के रूप मे मानस मे वर्णित है। मन्थरा का चरित्र रामचरितमानस मे भी वाक्पटु एव ईष्यार्लु के रूप मे वर्णित है। किन्तु मन्थरा मानस मे सुरमाया से प्रेरित होकर यह कार्य करती है। वह कथा को नया मोड देती है। अपनी वाक्पटुता से सरलमना रानी को कठोर रानी के रूप मे निदनीय बना देती है। मन्थरा की प्रेरणा से ही कैकेयी वरदन मॉगकर अपना सब कुछ गवॉ देती है और पुत्र भरत के द्वारा भी वह उपेक्षित की जाती है। शूर्पणखा का परिचय तुलसी कामरूपा स्त्री के रूप मे देते है जो राम और लक्ष्मण से प्रणय निवेदन करती है और असफल होने पर आक्रमण के लिए भयकर रूप धारण करने के कारण लक्ष्मण द्वारा नाक–कान विहीन कर दी जाती है और वही रावण को प्रेरित करके सीता का हरण करवाती है। अत कथा को युद्ध भूमि

तक पहुँचाने मे शूर्पणखा का योगदान है। शबरी का चरित्र मानस मे तपस्विनी के रूप मे वर्णित है जो राम और लक्ष्मण का आतिथ्य सेवा करके मोक्ष का वरदान प्राप्त करती है। तारा का चरित्र मानस मे सक्षिप्त है वह अपने पति बालि को युद्ध करने से रोकती है और राम के बल–पौरूष को बताती है, किन्तु हठी बालि राम के हाथो मारा जाता है। तारा के विलाप करने पर प्रभु राम उसकी माया दूर करके उसे ज्ञान की शिक्षा देते है। त्रिजटा सीता को अशोक वाटिका मे धीरज बँधाती है और हर प्रकार से राम के बल–पौरूष का वर्णन करके उसे राम के पुन मिलने का विश्वास दिलाती है। वह सीता द्वारा माता सबोधन से सबोधित की जाती है।

मन्दोदरी का चरित्र रामचरितमानस के सुन्दर काण्ड मे सर्वप्रथम मिलता है वह रावण के चरणो को पडकर विनतीपूर्वक सीता को वापस राम के पास भेजने को कहती है किन्तु दभी रावण उसकी बात नही मानता है। लकाकाण्ड मे वह रावण को समझाने की चेष्टा करती है किन्तु रावण उसकी बातो को न मानकर राम के हाथो युद्ध मे मारा जाता है। मन्दोदरी विलाप करते हुए राम की प्रशसा करती है कि प्रभु राम कितने दयालु है कि तुम्हे जोगी, मुनियो की जो गति दुर्लभ है वह तुम्हे प्रदान कर रहे है।

साकेत मे नारी पात्रो को आदर्श एव मानवीय रूप मे प्रस्तुत किया गया है। साकेत की कौशल्या महनीय माता एव पतिपरायणा पत्नी के रूप मे चित्रित की गयी है। उनमे स्वाभाविक कोमलता है पुत्र राम के राज्याभिषेक की मगलकामना करने वाली कौशल्या जब वास्तविकता से परिचित होती है कि राम को कैकेयी के कारण वन मिला है तो वे कॉप उठती है और कहती है कि –

मुझे राज्य का खेद नही, राम–भरत मे भेद नही।

x x x

भरत राज्य की जड न हिले, मुझे राम की भीख मिले।।[९४]

---

[९४] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ४७

वेद–धर्म की सरक्षिका होने के कारण कौशल्या राम को वन जाने की आज्ञा दे देती है–

पूज्य पिता–प्रण रक्षित हो, मॉ का लक्ष्य सुरक्षित हो।[१५]

वे भरत के प्रति भी उच्च भाव रखती है और उन्हे हृदय से लगाकर कहती है– मुझे मेरा राम मिल गया, तू वही है केवल तेरा नाम ही भिन्न है।

राजा दशरथ जब कौशल्या से कुछ मॉगने के लिए कहते है तब कौशल्या जो मॉगती है वह कौशल्या के चरित्र को ऊँचा उठा देता है–

कैकेयी हो चाहे जैसी, सुत वचिता न हो मुझ जैसी।।

कैकेयी के चरित्र को साकेत मे उठाने की चेष्टा मैथिलीशरण गुप्त ने की है। राम के राज्याभिषेक से वह अत्यधिक प्रसन्न है। खिन्नमना मन्थरा को वह डॉटती है–

वचने क्यो कहती तू वाम, नही क्या मेरा बेटा राम?[१६]

मन्थरा के किसी भी तर्क को वह मानने को तैयार नही किन्तु वाक्‌पटु मन्थरा का यह कथन कि

"भरत से सुत पर भी सदेह,
बुलाया तक न उसे जो गेह।"[१७]

कैकेयी को अन्दर तक बेध डालता है और वह पुत्र के भविष्य को लेकर दृढ सकल्प ले लेती है जिसके कारण राम का वनवास और दशरथ का मरण होता है वह भरत द्वारा उपेक्षित की जाती है। चित्रकूट सभा मे कैकेयी को मुखर बनाकर मैथिलीशरण गुप्त ने पश्चाताप के आसुँओ से उसके कलकित चरित्र को धुल डाला है। चित्रकूट सभा मे राम के साथ सभी लोग उसे निर्दोष घोषित करते है।

---

[१५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५१–५२
[१६] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १८
[१७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग २ पृष्ठ १८

पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई
सौ बार धन्य वह एक लाल की माई।।[१८]

चित्रकूट प्रसग मे उसकी मुखरता और आत्म स्वीकृति उसके चरित्र को निर्मल बना देती है।

सुमित्रा का चित्रण वीर माता के रूप मे साकेत मे हुआ है। वह कौशल्या के द्वारा 'राम की भीख' मॉगने के प्रस्ताव का विरोध करती है। एक त्यागमयी माता के रूप मे वह राम की सेवा मे लक्ष्मण को सहर्ष वन जाने की आज्ञा दे देती है।

आत–तायिनी ताडका का वध श्रीराम के हाथो कराकरके मैथिलीशरण गुप्त इसे बहुत बडा राष्ट्रीय कर्तव्य बताया है। अहल्या के उद्धार का उल्लेख मात्र साकेत मे हुआ है। सीता का चरित्र आधुनिक परिवेश मे गुप्त जी ने गढा है जो पति राम के साथ वन मे सब प्रकार से सुख का अनुभव करती है। सीता कहती है कि मेरी कुटिया मे राज भवन मन भाया। पति से वियोग की स्थिति मे भी वे राम के प्रति दृढ विश्वास एव श्रद्धा रखती है। वे अनेक दु खो का सहन करते हुए अन्त मे पुन राम से मिलती है।

उर्मिला का चरित्र साकेत के केन्द्र मे है। उर्मिला के असीम त्याग एव बलिदान की अनुपम झॉकी गुप्त जी ने साकेत मे खीची है। वह कभी भी पति मार्ग मे बाधक नही बनती। उसके ऑसू बहते जरूर है किन्तु किसी के मार्ग की बाधा नही बनते। उर्मिला का परिचय साकेत मे गुप्त जी इस प्रकार देते है–

स्वर्ग का यह सुमन धरती पर खिला,
नाम है इसका उचित ही उर्मिला।।[१९]

---

[१८] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १३३
[१९] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १ पृष्ठ ७

उर्मिला का सम्पूर्ण चरित्र एक पक्ति मे बद्ध दिखायी देता है– कहा उर्मिला ने "हे मन! तू प्रिय पथ का विघ्न न बन।"[३०]

माण्डवी के चरित्र को पूर्ण गरिमा के साथ कवि ने उतारा है उसकी स्थिति जल मे प्यासी मीन की तरह थी। वह नित्य प्रति पति का दर्शन करके चली जाती थी। उसने अपने प्रेम को व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित कर सेवा भावना को ही जीवन का सार मान लिया था। श्रुतिकीर्ति को एक वीर पत्नी के रूप मे चित्रित किया गया है जो शत्रुघ्न को युद्ध भूमि मे जाने के लिए सहर्ष भेजती है। मन्थरा का चरित्र असद् वृत्तियो की खान है। वह वाक्पटु एव गभीर तर्क वाली है। वह कैकेयी के हृदय पर चोट पहुॅचा कर उसके हृदय को बदल देती है उसका कथन 'भरत से सुत पर भी सदेह' कैकेयी के अन्त मन को व्यथित कर देता है जिसका परिणाम उसका भयकर सकल्प बनता है। शूर्पणखा का वर्णन गुप्त जी ने कथा को मोड देने के लिए पूर्ववत् ही किया है। यहॉ पर वर्णन अति सक्षेप मे है। मैथिलीशरण गुप्त के भाव के भूखे राम शबरी का आतिथ्य स्वीकार करते है। तारा का उल्लेख भी साकेत मे लक्ष्मण के क्रोध को शान्ति करने के अर्थ मे हुआ है। साकेत मे त्रिजटा के स्थान पर सरमा का चरित्र मिलता है सरमा त्रिजटा के समान ही सीता को धैर्य धारण कराती है और उसे विजय का विश्वास दिलाती है। उसका विभीषण पत्नी के रूप मे चित्रण किया गया है। मन्दोदरी का चरित्र साकेत मे नही मिलता है।

तीनो महाकवियो के नारी पात्रो के चरित्रो मे मुख्य बात यह है कि जहॉ पर वाल्मीकि ने नारी पात्रो को मानवीय एव यथार्थ के धरातल पर उतारा है, वही पर तुलसी के नारी पात्र अलौकिकत्व को लिए हुए आदर्श के धरातल पर उतारे गये है जबकि मैथिलीशरण गुप्त के नारी पात्र आदर्श एव मानवीय सवेदना के धरातल पर चित्रित किये गये है।

---

[३०] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५३

तीनो कवियो की नारी दृष्टि पर उनके युग का प्रभाव भी स्पष्टत दिखायी देता है। वाल्मीकि रामायण की नारियो मे स्पष्टत वैदिक सस्कृति का उच्च आदर्श एव गरिमा परिलक्षित होता है। वाल्मीकि ने नारी–पात्रो को उच्च भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित करके उन्हे महिमा मण्डित किया है। हिन्दू कन्याओ की प्रात स्मरणीया पॉच महानारियो, अहल्या, द्रौपदी, तारा, कुन्ती और मन्दोदरी मे से तीन रामायण से ही प्रसूत है। केवल द्रौपदी एव कुन्ती महाभारत से सबद्ध है। रामायण मे नारी चित्रण इतना सजीव एव प्रमुख है कि वह उसे नारी प्रधान रचना बना देता है वाल्मीकि ने स्वय लिखा है – काव्य सामायण कृत्स्न सीतायाश्चरित महत्।

पुत्री अपने पिता की "दयिता" अर्थात प्रीति पात्र थी, गुणवती कन्या की प्राप्ति दीर्घ तपस्या से ही सभव माना जाता था। राजा जनक ने सीता को स्नेह से पाला था। कन्या का विवाह श्रेष्ठ वर से करने की परम्परा थी। कुमारी कन्याओ की उपस्थिति मागलिक एव शुभ माना जाता था। कन्याओ द्वारा स्वागत, सफलता और सौभाग्य का सूचक माना जाता था। कन्या को धर्म–कर्म की शिक्षा के साथ सैनिक शिक्षा भी अवश्य दी जाती थी क्योकि कैकेयी अपने पति के साथ इन्द्र और शवर राक्षस से युद्ध के समय सारथी का काम कर रही थी उन्होने कुशलता से राजा के प्राण बचाये थे।

वाल्मीकि ने पत्नी की एकान्तिक निष्ठा और सेवा भावना को उसके जीवन का आदर्श माना है। पत्नी को पति से भरण-पोषण पाने का अधिकार प्राप्त था। वह पति के साथ याज्ञिक कर्मो मे भाग लेती थी। स्त्री का माता के रूप मे महत्त्वपूर्ण स्थान था। स्त्री और पुरूष का स्थान समता का द्योतक था रामायण मे पत्नी को पति की आत्मा कहा गया है–

आत्मा हि दारा सर्वेषा दारा सग्रहवर्तिनाम।[२१]

[२१] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २६/३२

पतिपरायणा स्त्रियो का अपहरण करने वाले की दुगर्ति निश्चित मानी जाती थी। मन्दोदरी का विश्वास था कि पतिव्रता सीता की तपस्या ने ही रावण का नाश किया है। भरत से राम ने चित्रकूट सभा मे पूछा था कि क्या तुम अपनी स्त्रियो को सतुष्ट रखते हो? क्या वे तुम्हारे द्वारा भली भॉति सुरक्षित है।

वाल्मीकि की दृष्टि नारी के प्रति उत्कृष्ट एव मनोवैज्ञानिक है। वे सीता, कौशल्या, सुमित्रा, मन्दोदरी, त्रिजटा, तारा आदि नारी चरित्रो के माध्यम से आर्य सस्कृति, वन्य सस्कृति एव आर्येतर सस्कृति तीनो को प्रस्तुत करते है। आदर्श एव उत्कृष्ट नारी चरित्रो की सृष्टि करके वाल्मीकि ने समाज के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

तुलसी भारतीय सस्कृति के पोषक एव उन्नायक कवि है भारतीय सस्कृति मे यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता के रूप मे नारी को देखा गया है तुलसी भी नारी की वन्दना श्रद्धा रूप मे करते है–

भवानी शकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ।
याम्या विना न पश्यन्ति सिद्धा स्वान्त स्थमीश्वरम्।।[२२]

तुलसी सम्पूर्ण सृष्टि को सीताराममय मानकर प्रणाम करते है–

सीय राम मय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।[२३]

तुलसी ने अवधपुरी के सभी नर–नारियो की वन्दना की है और नारियो को राम कथा के अध्ययन का अधिकारी माना है।

तुलसी ने नारी को पुरूष के प्रति समर्पित दिखाया है। पतिव्रत धर्म की शिक्षा एव स्त्री के सतीत्व पर अधिक बल दिया है। किन्तु इसका यह अभिप्राय निकालना सर्वथा गलत है कि तुलसी नारी को पराधीन मानते है। मध्यकालीन समाज विश्रृखलित

---

[२२] रामचरित मानस बालकाण्ड श्लोक २

[२३] रामचरित मानस बालकाण्ड ८/१

एव जर्जरित था। वैवाहिक सबध ढीले पड गये थे और समाज मे कामाचार बढता जा रहा था अत तुलसी ने समाज को मजबूत आधार देने के लिए पतिव्रत धर्म एव सतीत्व को महत्व दिया। पतिव्रतधर्म जहॉ स्त्री से पूर्ण समर्पण की अपेक्षा रखता है, उसे पति के अधीन एव अनुकूल चलने की शिक्षा देता है वही पत्नी को पति से भरण–पोषण एव एकनिष्ठ प्रेम पाने का अधिकार भी प्रदान करता है। तुलसी ने पति–पत्नी के सबधो को मजबूत बनाने एव वैवाहिक सस्कार को दृढ आधार देने के लिए ही वैदिक कालीन पतिव्रत धर्म एव सतीत्व जैसे उच्च मूल्यो की स्थापना रामचरित मानस मे की। नारी की गिरती स्थिति को उठाने के लिए इन मूल्यो की शिक्षा दी है। पुरूष के प्रति पत्नी का सेवा भाव एव समर्पण को पराधीनता कहना कहॉ का न्याय है। "रामायण मे पत्नी को पति की आत्मा कहा गया है।"[२४] इस उच्च भाव को ही केन्द्र मे रखकर तुलसी ने पतिव्रत धर्म एव सतीत्व धर्म की शिक्षा नारी को दी है।

तुलसी ने नारी की निन्दा प्रमदा या कामिनीरूप मे ही किया है "माया के दो रूप है विद्यामाया और अविद्यामाया। माया रूपा होने के कारण नारी के भी दो रूप है विद्या रूपा और अविद्यारूपा। पुरूष को काम विकल कर देने वाली युवती अविद्या रूपा है वही निन्दनीय या जुगुप्सनीय है। तुलसी के नारी पात्रो मे कैकेयी और शूर्पणखा अविद्यारुपा नारियॉ है अत वे निदनीय है अनसूया, कौशल्या आदि विद्यारुपा नारियॉ है अत आदरणीय है"।[२५] अत यह कहना अनुचित है कि तुलसी ने नारी जाति को माया रूप मानकर उसकी निन्दा की है जैसाकि डा० रामचन्द्र तिवारी ने लिखा है "भक्त कवि तुलसी ने नारी जाति को साक्षात् माया मूर्ति के रूप में देखा। निश्चय ही उनका नारी दृष्टिकोण स्वस्थ नही कहा जा सकता"[२६] डा० तिवारी की यह आलोचना उचित नही प्रतीत होती। विनय पत्रिका मे तुलसी ने सीता को 'राम तुम भगवान माया जानकी के' रूप मे उल्लिखित किया है। सीता के प्रति तुलसी की दृष्टि पूज्य भाव की है अत

[२४] वाल्मीकि रामायण अयोध्याकाण्ड २६/३२
[२५] तुलसी काव्य मीमासा उदयभानु सिह पृष्ठ ३४७
[२६] कथा राम कै गूढ डा० रामचन्द तिवारी पृष्ठ ११२

नारी जाति के प्रति तुलसी निन्दा का भाव रखते है या उसे "माया मूर्ति" मानते है ऐसा कहना समीचीन नही।

तुलसी की नारी दृष्टि की आलोचना सामान्यत कुछ उक्तियो के आधार पर की जाती है जैसे सुनहि सती तव नारि सुभाऊ। ससय अस न धरिय उर काऊ, भरत का कथन विधिहुँ न नारि हृदय गति जानी। इसी प्रकार मै नारि अपावन प्रभु जग पावन" अहल्या का कथन, भक्तिन शबरी का कथन – अधम ते अधम अधम अति नारी, ढोल, गवॉर सूद्र पसु नारी। सकल ताडना के अधिकारी समुद्र का कथन, प्रतिनायक रावण का कथन – नारि सुभाव सत्य सब कहही, अवगुन आठ सदा उर रहही, राम का कथन "नारि हानि विशेष छति नाही। इन उक्तियो को आलोचना का आधार बनाकर तुलसी की नारी दृष्टि को मापने की चेष्टा आलोचक करते है–

डा० माता प्रसाद के अनुसार "प्रत्येक युग के कलाकार नारी चित्रण मे उदार पाये जाते है किन्तु नारी चित्रण मे तुलसी बेहद अनुदार है।"[२७]

उक्तियो की व्याख्या यदि सदर्भो के साथ की जाय तो इनकी आलोचना निर्मूल हो जाती है। पार्वती के हृदय मे शका करा करके ही तुलसी राम मे ब्रह्मत्व की स्थापना करते है। स्वय शकर कहते है कि श्रीराम मे अतिशय अनुराग होने के कारण तुम्हे सदेह नही हो सकता किन्तु फिर यदि तुम जगत के कल्याण के लिए पूछती हो तो ठीक ही है।[२८] अहल्या और शबरी के कथन मे दैन्य एव भक्ति का भाव है। प्रतिनायक रावण जो अहकारी एव प्रमादी है उसके कथन को तुलसी की नारी दृष्टि का मापदण्ड नही बनाया जा सकता। भरत का कैकेयी के प्रति कथन अतिशय ग्लानि युक्त मानसिकता का द्योतक है। इस कथन को उन्होने कैकेयी को लक्ष्य करके कहा है अत सम्पूर्ण नारी जाति के लिए इसका प्रयोग उचित नही। भरत माता कौशल्या की गोद मे ही बैठकर शान्ति का अनुभव करते है। सीता के प्रति उनका दृष्टिकोण

---

[२७] माता प्रसाद गुप्त– तुलसी दास पृष्ठ २१८

[२८] रामचरित मानस बालकाण्ड दोहा ११२ तथा ११३/१

अत्यधिक सम्माननीय है अत भरत के द्वारा विशेष परिस्थिति मे कहे गये कथन को ही व्याख्यायित करना चाहिए। भाई लक्ष्मण की मरणासन्न स्थिति मे विकल राम के मुख से निकले विलाप की व्याख्या नारी दृष्टि की द्योतक नही हो सकती। जो श्रीराम प्राण–प्रिया सीता की तलाश मे वन–वन भटकते है पशु–पक्षियो तक से पूछते है, रावण से बैर मोल लेते है। आलोचको को उनकी इन पक्तियो मे सीता के प्रति राम के दृष्टिकोण का परिचय कैसे नही मिलता है। समुद्र जड है उसके कथन को आधार बनाना अनुचित है फिर ताडना शब्द अनुशासन एव शिक्षा के अर्थ मे अधिक समीचीन प्रतीत होता है। गीता प्रेस गोरखपुर द्वारा प्रकाशित रामचरित मानस– हनुमान प्रसाद पोद्दार सवत् २०५४ मे ताडना का अर्थ शिक्षा के रूप मे ही दिया गया है। ढोल, गवॉर सूद्र, पशु और नारी सभी शिक्षा के अधिकारी है। ढोल, गवॉर आदि के साथ नारी के समावेश पर आलोचको ने सर्वाधिक आपत्ति की। वस्तुत तुलसी का अभिप्राय इस वर्ग मे निहित जडता से है जिसके परिष्कार की आवश्यकता है जहॉ कही भी जडता है तुलसी उसमे चेतना का सचार करना चाहते है।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल तुलसी को महान कवि घोषित करते है। तुलसी की नारी निदा के सदर्भ मे उनका मत है कि तुलसी दास विरक्त थे और विरक्त व्यक्ति नारी के कामिनी रूप से दूर रहना चाहता है। इसी रूप मे उन्होने नारी की आलोचना की है।"[२९]

डा० राम विलास शर्मा के अनुसार "मध्यकालीन सास्कृतिक परिवेश मे तुलसी जितने प्रगतिशील कवि थे उतना कोई अन्य कवि नही। नारी पराधीनता के सदर्भ मे डा० शर्मा का मत है कि तुलसी नारी पराधीनता के समर्थक नही है, बल्कि उनके प्रति तुलसी की गहरी सहानुभूति है। राम वन गमन प्रसग मे स्त्रियो को ही यह पूछने का सौभाग्य मिलता है – कोटि मनोज लजावन हारे। सुमुखि कहहु को आहि तुम्हारे।"[३०]

---

[२९] रामचन्द्र शुक्ल तुलसी दास पृष्ठ ४२

[३०] डा० राम विलाश शर्मा – परम्परा मूल्याकन पृष्ठ ८८

विष्णुकान्त शास्त्री ने तुलसी के सबध मे निष्कर्ष रूप मे कहा है "सच्चाई यह है कि तुलसी दास मध्यकाल मे भारतीय सस्कृति के सबसे बडे सर्जनात्मक पुर्नव्याख्याकार थे।"[31]

मैथिलीशरण गुप्त भारतीय सस्कृति के आख्याता है अत उनकी नारी पूर्ण भारतीय आदर्शों की प्रतिमूर्ति होकर हमारे सामने आती है उसका क्षेत्र घर है और आसन पुरूष का हृदय–मदिर। भारतीय सस्कृति एव दर्शन मे नारी को सदा ही विशिष्ट स्थान मिला है। हिन्दू धर्म कथाओ मे अर्द्धनारीश्वर की कल्पना नारी की महत्ता का द्योतक है। नर की सृष्टि नारी के सहयोग के बिना अपूर्ण है। अपनी सर्जन प्रतिभा तथा कला से नारी उसे पूर्णता और अमरता प्रदान करती है। साकेत के नारी पात्र अपना स्वतन्त्र व्यक्तित्व रखते है। सीता मे पतिभक्ति की कमी नही किन्तु उनके जीवन का भी अपना उद्‌देश्य है। उर्मिला, माण्डवी और श्रुतिकीर्ति मे आत्मसम्मान एव त्याग की भावना का अनोखा सगम है। कौशल्या मे कोमल वात्सल्य एव मॉ का भावुक हृदय साकार हो गया है किन्तु सुमित्रा मे वीरता की भावनाएँ विद्यमान है। कैकेयी स्वय अपने दोष का परिहार करने मे समर्थ है। साकेत के नारी पात्रो मे स्वय नारी के गौरव की भावनाएँ विद्यमान है और इसके लिए वे सदैव सजग है साकेत के प्रथम सर्ग के सभाषण के मध्य लक्ष्मण उर्मिला से कहते हैं

धन्य जो इस योग्यता के पास हूँ
किन्तु मै भी तो तुम्हारा दास हूँ।[32]

उर्मिला का उत्तर नारी स्वाभिमान एव जागरूकता का द्योतक है –

दास बनने का बहाना किस लिए? क्या मुझे दासी कहाना इसलिए
देव होकर तुम सदा मेरे रहो और देवी ही मुझे रखो अहो।[33]

---

[31] श्री विष्णुकान्त शास्त्री – आधुनिकता की चुनौती और तुलसी दास शीर्षक लेख पृष्ठ ३६६
[32] साकेत मैथिलीशरण गुप्त प्रथम सर्ग पृष्ठ ८
[33] साकेत मैथिलीशरण गुप्त प्रथम सर्ग पृष्ठ ८

मैथिलीशरण गुप्त की नारी हीन न होकर मान–गर्विता है वह पुरूषो के लिए बाधक नही बल्कि साधक है। उर्मिला का चरित्र इस बात का प्रमाण है। साकेत मे नारी की कोमलता कौशल्या के चरित्र मे स्पष्टत परिलक्षित होती है। साकेत मे नारी कल्पलता के समान है, जो अपने अनुराग और त्याग के फलो से जीवन को सरस एव मधुर बनाती है इस अनुराग या त्याग मे कायरता या दीनता नही, यह उसका स्वाभाविक गुण है। अपने अधिकारो के लिए वह कदम उठा सकती है। सुमित्रा अधिकारो की गर्व पूर्ण व्याख्या करती है– कौशल्या जब कैकेयी से राम की भीख मॉगने के लिए तैयार होती है तब सुमित्रा उन्हे ऐसा करने से रोकती है और गर्व के साथ कहती है–

स्वत्वो की भिक्षा कैसी? दूर रहे इच्छा ऐसी।
पाकर वशोचित शिक्षा, हम क्यो मॉगेगी भिक्षा
प्राप्य याचना वर्जित है आप भुजो से अर्जित है।[३४]

साकेत मे पत्नी को पुरुष की अर्द्धांगनी के रूप मे प्रस्तुत किया गया है। वह उपयोग की वस्तु नही। वह सुख दुख मे पुरुष के साथ है। त्याग मे भी वह पुरुष के साथ है साकेत की सीता कहती है–

जो गौरव लेकर स्वामी होते हो कानन गामी।
उसमे अर्द्धभाग मेरा, करो न आज त्याग मेरा।[३५]

सीता जगल मे भी पति के साथ मगल मनाती है। उर्मिला का जीवन त्याग के उच्च आदर्श की स्थापना करता है। वह भातृ-प्रेम की भावना का सम्मान करती है–

यह भातृ स्नेह न ऊना हो, लोगो के लिए नमूना हो[३६]

---

[३४] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ ४८
[३५] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ४ पृष्ठ ५७
[३६] रामचरित मानस और साकेत तुलनात्मक अध्ययन श्री परम लाल गुप्त पृष्ठ ११६

साकेत मे नारी को पुरुषो द्वारा सदैव सम्मान दिया गया है। लक्ष्मण के इस कथन से स्पष्ट है जहा पर वे उर्मिला से कहते है कि–

वन मे तनिक तपस्या करके बनने दो मुझको निज योग्य।
भाभी की भगिनी तुम मेरे अर्थ नही केवल उपभोग्य।[३७]

साकेत की स्त्री कमजोर और अबला नही वह वीरता की प्रतिमूर्ति है–

पुरुषवेष मे साथ चलूगी मै भी प्यारे, रामजानकी सग गये हम क्यो हो न्यारे।

साकेत मे युग-युग की उपेक्षिता उर्मिला का चरित्र दीप्तमान है तथा कलकिता कैकेयी के चरित्र के साथ पूरी तरह से न्याय किया गया है राम स्वय– 'सौ बार धन्य वह एक लाल की माई' कहते है और पागल सी प्रभु के साथ सभा चिल्लाई।' का वर्णन साकेत मे मिलता है। साकेत की उर्मिला गर्व से कहती है कि –

किस धन से है रिक्त कहो सुनिकेत हमारे?
उपवन फल, सम्पन्न अन्तमय खेत हमारे।"[३८]

मैथिलीशरण गुप्त की नारियो को देखने की दृष्टि मे पुनरुत्थानवादी विचारधारा परिलक्षित होती है। मैथिलीशरण गुप्त जी का समय परिवर्तन एव सुधार का था। आधुनिक युग नारी-उत्थान का युग है फलत गुप्त जी पर परिवेश का प्रभाव स्पष्टत दिखायी देता है। गुप्त जी की रचना मे आधुनिक नारी का स्वरूप मुखरित हुआ है। साकेत मे गुप्त जी ने परम्परा एव सस्कृति की मर्यादा का निर्वाह करते हुए नारी की आधुनिक चेतनावादी विचारो एव स्वतन्त्रता को महत्व दिया। कौशल्या मे मातृत्व की कमजोरी है तो सुमित्रा मे नारी के गर्विता रूप का चित्रण है। उर्मिला का चरित्र परम्परा से त्यागपूर्ण है किन्तु उनमे स्वाभिमान एव क्रान्तिकारी विचारो का समावेश मैथिलीशरण गुप्त की मौलिक दृष्टि की देन है।

---

[३७] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग ८ पृष्ठ १४२
[३८] साकेत मैथिलीशरण गुप्त सर्ग १२ पृष्ठ २६७

इस प्रकार वाल्मीकि की नारी मे वैदिक कालीन नारी के उच्च आदर्श एव गरिमामय जीवन की झॉकी मिलती है। तुलसी की नारी दृष्टि मर्यादावादी है मध्यकालीन परिवेश उनकी रचना मे परिलक्षित होता है। किन्तु नारी दृष्टि के मामले मे वे अपने युग सीमा का अतिक्रमण करके नारी के आदर्श चरित्रो की सृष्टि करते है और एक नूतन समाज की स्थापना करते हे। उन्होने नारी के आदर्श मूल्यो के रूप मे पातिव्रत धर्म एव सतीत्व का समर्थन किया। मैथिलीशरण गुप्त की नारी मे आधुनिक विचारो एव स्वतन्त्रता की भावना स्पष्ट रो परिलक्षित होती है। वाल्मीकि, तुलसी और मैथिलीशरण गुप्त की नारी दृष्टि उत्कृष्ट एव सम्माननीय है। तीनो कवि अपनी युग सीमाओ का अतिक्रमण करके नारी के उच्च आदर्श को स्थापित करते है।

परिशिष्ट.. ग्रन्थ सूची

१ श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण – प्रथम भाग – गीता प्रेस गोरखपुर – स० २०५४ अठारहवॉ सस्करण

२ श्री मद्वाल्मीकीय रामायण – द्वितीय भाग – गीता प्रेस गोरखपुर – स० २०५४ – अठारहवॉ सस्करण

३ रामचरित मानस – हनुमान प्रसाद पोद्दार – गीता प्रेस गोरखपुर – स० २०५४ – चौवनावॉ सस्करण

४ श्री मद्ववाल्मीकीयरामायण – कथा-सुधा-सागर – आचार्य कृपाशकर रामायणी – गीता प्रेस गोरखपुर – स० २०५७ प्रथम सस्करण

५ साकेत – श्री मैथिलीशरण गुप्त – साहित्य सदन झॉसी सस्करण २००१

६ साकेत एक नव्यपरिबोध – डा० राम विनोद सिह – अभिनव भारती प्रकशन इलाहाबाद १९७५ प्रथम सस्करण

७ मैथिलीशरण गुप्त और साकेत नवम सर्ग – श्री राकेश – प्रकाशन केन्द्र लखनऊ

८ रामायण कालीन सस्कृति – डा० शान्ति कुमार नानू व्यास सत्साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली १९५८ प्रथम सस्करण

९ रामकाव्य परम्परा और प्रभाव डा० आशा भारती – शारदा प्रकाशन नयी दिल्ली १९८० प्रथम सस्करण

१० वाल्मीकि और तुलसी साहित्यि का मूल्याकन – डा० राम प्रकाश अग्रवाल – प्रकाशन प्रतिष्ठान मेरठ १६६६

११ रामकथा उत्पत्ति एव विकास – फादर कामिल वुल्के – हिन्दी परिषद प्रकाशन प्रयाग १६६२ द्वितीय सस्करण

१२ रामचरित मानस और साकेत (तुलनात्मक अध्ययन) श्री परमलाल गुप्त – नेशनल पब्लिशिग हाउस दिल्ली १६६१ प्रथम सस्करण

१३ स्वय भू एव तुलसी के नारी पात्र -- योगेन्द्र शर्मा 'अरुण' – कल्पना प्रकाशन मेरठ १६७६ प्रथम सस्करण

१४ तुलसी दास और उनका सदेश - रत्नाकर पाण्डेय – भार्गव भूषण प्रेस वाराणसी १६७५ प्रथम सस्करण

१५ विश्व साहित्य मे पाप – डा० आशा द्विवेदी – ए टू जेड पब्लिकेशन इलाहाबाद सस्करण २०००

१६ मानस के राम और सीता – द्वारका प्रसाद मिश्र – राधा कृष्ण प्रकाशन दिल्ली – १६६७

१७ रामराज्य – सीताराम चतुर्वेदी – सयुक्त प्रकाशन अ० भा० वि० परिषद काशी १६६२

१८ साकेत–विचार और विश्लेषण – वचन कुमार देव – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद १६७६ प्रथम सस्करण

१६ साकेत एक अध्ययन – डा० नगेन्द्र – आगरा प्रकाशन सस्करण १६४८

२० तुलसी की काव्य कला – डा० भाग्यवती सिह – आगरा प्रकाशन सस्करण १९६२

२१ तुलसीदास – डा० माता प्रसाद गुप्त – हिन्दी परिषद प्रयाग प्रकाशन सस्करण १९५३

२२ हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास – डा० रामकुमार वर्मा – प्रयाग प्रकाशन सस्करण १९४८

२३ तुलसी और उनका काव्य – रामनरेश त्रिपाठी – दिल्ली प्रकाशन सस्करण १९५३

२४ तुलसी एक अध्ययन – राम रतन भटनागर प्रयाग सवत २००३

२५ तुलसी साहित्य रत्नाकर – रामचन्द्र द्विवेदी – काशी सस्करण १९८६

२६ भारतीय धर्म साधना और सूर साहित्य – कानपुर – सवत २०१०

२७ मानस मीमासा – रजनीकान्त शास्त्री – इलाहाबाद प्रकाशन सस्करण १९४६

२८ हिन्दी साहित्य का इतिहास – डा० नगेन्द्र (सम्पादक) – मयूर पेपर वैक्स नोयडा १९७३ प्रथम सस्करण

२९ हिन्दी साहित्य का इतिहास – आचार्य रामचन्द्र शुक्ल – नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी सवत २०४५

३० रामकथा और तुलसी – डा० भ० ह० राजूरकर – पुस्तक सस्थान नेहरू नगर कानपुर – प्रकाशन वर्ष जनवरी १९७४

३१ रामायण के पात्र – नानाभाई भट्ट (अनुवादक काशीनाथ त्रिवेदी) १६७७ सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन नयी दिल्ली प्रथम संस्करण १६७७

३२ राम कथा के पात्र – डा० भ० ह० राजरकर – ग्रन्थम् प्रकाशन् रामबाग कानपुर प्रथम सस्करण १६७२

३३ रामचरित मानस तुलनात्मक अनुशीलन – डा० सज्जन राम केणी – पुस्तक सस्थान नेहरू नगर कानपुर प्रकाशन वर्ष १६७४

३४ रामायण कालीन समाज – डा० शातिकुमार नानू राम व्यास – सत्साहित्य प्रकाशन नयी दिल्ली प्रथम सस्करण १६५८

३५ तुलसी – डा० माता प्रसाद गुप्त – हिन्दी परिषद प्रकाशन प्रयाग १६४६

३६ अयोध्याकाण्ड सटीक – डा० सतीश कुमार – अशोक प्रकाशन नयी दिल्ली – १६६४

३७ वाल्मीकि युगीन भारत – डा० मंजुला जायसवाल – महामति प्रकाशन इलाहाबाद

३८ वाल्मीकि रमायण एव रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन – डा० विद्या मिश्र – विश्वविधालय हिन्दी प्रकाशन लखनऊ

३६ भक्ति कालीन काव्य में नारी – डा० गजानन शर्मा – रचना प्रकाशन इलाहाबाद १६७२ प्रथम संस्करण

४० रामचरित मानस और राम चन्द्रिका तुलनात्मक अध्ययन – डा० जगदीश नारायण अग्रवाल राज्य श्री प्रकाशन मथुरा १६७२–७३

४१ रामचरित मानस और वाल्मीकि रामायण – राधिका प्रसाद त्रिपाठी – आनन्द प्रकाशन फैजाबाद १६७४ प्रथम सस्करण

४२ तुलसी दास– परिवेश, प्रेरणा, प्रतिफलन – हरिकृष्ण अवस्थी– काशी नगरी प्रचारिणी सभा वाराणसी सवत् २०३२ प्रथम सस्करण

४३ रामकाव्यो मे नारी – डा० विद्या – प्रकाशन सस्थान दिल्ली – प्रथम सस्करण १६८५

४४ रामायण कथा – रघुनाथ सिह – हिन्दी प्रचारक पुस्तकालय – १६६३ प्रथम सस्करण

४५ भारत दुर्दशा सपादक – कृष्णदेव शर्मा – अशोक प्रकाशन नयी दिल्ली १६६८ सस्करण

४६ विनय पत्रिका (तुलसी) सम्पादक – राजनाथ शर्मा – विनोद पुस्तक भडार आगरा १६६१ दशम सस्करण

४७ श्री रामायण दर्शनम् एक मूल्यांकन डा० पी० एम० वामदेव – सजय बुक सेण्टर वाराणसी १६८०

४८ तुलसी काव्य मीमासा – डा० उदयभान सिह – राधाकृष्ण प्रकाशन प्रकाशन संस्करण १६६६

४६ तुलसी की साधना – आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र – लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद प्रकाशन संस्करण १६७८

५० मानस की महिलाएँ – रामानन्द शर्मा, कन्याकुमारी प्रकाशन मद्रास १६६२

५१ मानस चरित्रावली (सभी भाग) – रामकिंकर उपाध्याय – प्रकाशन – बिरला अकादमी, ऑफ आर्ट एण्ड कल्चर कलकत्ता प्रकाशन सस्करण १९७३

५२ मानस मुक्तावली – राम किकर उपाध्याय – प्रकाशन बिरला अकादमी कलकत्ता प्रकाशन सस्करण १९७३

५३ रामायण मीमासा – स्वामी करपात्री जी, प्रकाशन धर्म सघ शिक्षा मण्डल दुर्गा कुण्ड वाराणसी प्रकाशन सस्करण १९७७

५४ रामकाव्य के प्रगतिशील अध्याय – डा० लक्ष्मी नारायण दूबे – सतेन्द्र प्रकाशन अल्लापुर इलाहाबाद १९८२

५५ मानस पीयूष (सभी भाग) – (सम्पादक) श्री अजनी नन्दन शरण प्रकाशन गीता प्रेस गोरखपुर

५६ त्रिवेणी – आचार्य राम चन्द्र शुक्ल – सम्पादक कृष्णानन्द – प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी १९७५

५७ हिन्दी भाषा और साहित्य – डा० श्याम सुन्दर दास – प्रकाशन इण्डियन प्रेस प्रयाग प्रथम संस्करण

५८ सस्कृत आलोचना – प० बलदेव मिश्र प्रकाशन – उ० प्र० हिन्दी सस्थान लखनऊ

५९ केशव और उनकी राम चन्द्रिका – देशराज सिंह भाटी – अशोक प्रकाशन दिल्ली

६० श्रीमद्भागवत और तुलसी साहित्य तुलनात्मक अनुशीलन – डा० हरिशंकर मिश्र सरस्वती प्रकाशन इलाहाबाद १९८५

६१ रामकाव्य मे नारी – डा० पूर्णिमा केडिया – जय भारती प्रकाशन इलाहाबाद

६२ रामचरित मानस के रचना शिल्प का विश्लेषण – डा० योगेन्द्र प्रताप सिह – हिन्दी परिषद प्रकाशन प्रयाग

६३ मानस मगल (रामचरित मानस) –सीतेश आलोक – प्रकाशन मेधा बुक्स नयी दिल्ली

६४ जन रामायण (अवधी महाकाव्य) – डा० महेश अवस्थी – प्रकाशन सस्करण १६८६

६५ कम्ब रामायण और रामचरित मानस के नारी पात्र एक तुलनात्मक अध्ययन – डा० रवीन्द्र नाथ सिंह – प्रकाशक हिन्दुस्तान ऐकडमी

६६ श्री मद्भगवतगीता – टीकाकार जय दयाल गोयन्दका – गीता प्रेस गोरखपुर

६७ प्राचीन भारतीय सस्कृति – डा० वीरेन्द्र कुमार सिह – अक्षयवट प्रकाशन इलाहाबाद प्रकाशन वर्ष १६६७

६८ सस्कृति साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास – डा० कपिलदेव द्विवेदी – इलाहाबाद प्रकाशन सस्करण १६६७

पत्रिकाएं

१ कल्याण (नारी अक भाग १, २) – सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार – प्रकाशक गीता प्रेस गोरखपुर प्रकाशन संस्करण १६४८

२ भक्त चरित्राक सम्पादक हनुमान प्रसाद पोद्दार – गीता प्रेस गोरखपुर १९५३

३ कल्याण (वाल्मीकीय रामायण) – गीता प्रेस गोरखपुर – प्रकाशन सस्करण १९५३

४ कल्याण (मासिक) – गीता प्रेस गोरखपुर

५ मानस चरित्र कोश – डा० भ० ह० राजूकर – पचशील प्रकाशन जयपुर

६ रामलीला विशेषांक (पत्रिका) पथर चट्टी रामलीला कमेटी इलाहाबाद

७ कौमुदी पत्रिका – हिन्दी परिषद इलाहाबाद विश्वविद्यालय इलाहाबाद